मौलाएल गाछक फूल

मौलाएल गाछक फूल

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

MAULAYAL GACHHAK PHOOL
A Maithili novel by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-48865-28-1
दाम: 495/- (भा.रु.)
स्वत्वाधिकार: © डॉ. उमेश मण्डल
आठम संस्करण: 2025 (पहिल संस्करण: 2009, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: +91 62006 35563; +91 99316 54742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। स्वत्वाधिकारी अथवा प्रकाशक केर लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलवारी लगौनिहार
संगे नव विहान अननिहारकेँ

अनुक्रमः

अप्पन बात/07

पहिल पड़ाव/09

दोसर पड़ाव/19

तेसर पड़ाव/29

चारिम पड़ाव/51

पाँचिम पड़ाव/68

छठम पड़ाव/85

सातम पड़ाव/97

आठम पड़ाव/107

नअम पड़ाव/122

दसम पड़ाव/127

एगारहम पड़ाव/140

बारहम पड़ाव/150

तेरहम पड़ाव/163

अन्तिम पड़ाव/178

जगदीश प्रसाद मण्डलक रचना संसार/189

अप्पन बात

जहिया एम.ए.क विद्यार्थी रही तहिये नोकरीसँ विराग भऽ गेल। आठ बीघा जमीन रहए। खेतीसँ जीवन-यापन करैक विश्वास भऽ गेल। बिनु गार्जनक–पुरुष गार्जनक–परिवार 1960 इस्वीमे भऽ गेल। पितेक अमलदारीसँ परिवारमे दू भाँइ पिसियौत रहै छला। तत्काल गार्जनी हुनके दुनू भाँइपर छेलैन। कोसीक उपद्रवसँ भागल पीसा बेरमेमे, माने सासुरेमे रहि गेल रहैथ।

पिताक मृत्युक समय तीन बर्खक अपने रही आ छअ बर्खक जेठ भाय छला। पिसियौत भाय 1960 इस्वीमे अप्पन गाम 'हरिनाही' चलि गेला। दुनू भाँइ, भैया श्री कुलकुल मण्डल 1954 इस्वीमे आ अपने 1957 इस्वीमे गामक स्कूलसँ निकैल अपर प्राइमरी स्कूल, कछुबीमे नाओं लिखौने रही। 1960 इस्वीसँ दुनू भाँइक ऊपर परिवारक बोझ पड़ल। पुरुष विहीन भेनौं, माए ओहन परिवारक छेली जइ परिवारमे मामा 1942 इस्वीमे अंगरेजक गोली खा चुकल छला, साहसी माए अप्पन गहना, जमीन बेचि देल बच्चाकेँ पढ़बै खातिर।

पैंतीस साल धरि समाज सेवा केलाक बाद अप्पन हहरैत शरीर देखि किछु लिखै-पढ़ैक विचार जगल। 2002-4 इस्वीमे डॉ. तारानन्द 'वियोगी'जीक सम्पादनमे देशज पत्रिका निकलल। 2005-6 पोथी हाथमे आएल। पढ़लौं। तइसँ पहिनहि किछु-किछु लिखब शुरू केने रही। फोनपर वियोगीजी सँ सम्पर्क भेल मुदा ढीले-ढाल। जखन मधुबनी एला आ सामने-सामनी बैस गप्प भेल तखन काफी प्रेरित भेलौं। तइसँ पहिने पटनामे उमेशक माध्यमसँ किछु उपन्यास आ किछु कथा संग्रह ऊपरे-झापड़े देखने रहैथ। पहिल भेँट छल तँए गप्पे करब जरूरी बुझलैन। सएह भेल।

रहुआ (मधेपुर)मे 'सगर राति दीप जरय' (8.11.2008) कथा गोष्ठीमे भाग लइले कहलैन। ताधैर नइ जनैत रही। लक्ष्मीनाथ गोसाँइक स्थानमे कार्यक्रम भेल। सिद्धपीठ। ओना, केतेक बेर राजनीतिक मंचपर रहुआमे बाजि चुकल छेलौं, कर्म क्षेत्र छल तँए कथाक वाचनमे संकोच नइ भेल। ओना, एकर दोसरो कारण छल। ओ कारण छल किनको चिन्हैत नै रहिऐन। भिनसरुपहर डॉ. अशोक अविचलजी सँ पुरना चिन्हारेक नवीकरण भेल। रहुआ गाम लग रहितो

गाड़ी दुआरे पाछू गेलौं। भैंटक लावा शीर्षक कथाक पाठ केलौं। सभ प्रशंसा केलैन। डॉ. रमानन्द झा 'रमण'जी ओ कथा मांगि लेलैन। किछुए मासक उपरान्त 'घर बाहर' पत्रिकामे प्रकाशित केलैन। सिद्ध पुरुषक स्थानमे प्रतिष्ठा भेटल। डायरी-कलम भेटल। गमछा-पाग भेटल। लक्ष्मीनाथ गोसाँइक मुर्ति सेहो भेटल।

मैथिली साहित्यक लेल 'सगर राति दीप जरय' कथाकारक ट्रेनिंग कौलेज सदृश अछि। विद्वान कथाकार सभक गाइड-लाइन। नव पीढ़ी-ले ऐसँ उपयोगी भऽ की सकैए...।

'मौलाएल गाछक फूल' 2004 इस्वीमे लिखल पहिल उपन्यास छी। अखन तक पाँचटा उपन्यास आ किछु कथा, लघुकथा आ नाटक सभ लिखल अछि। छपबैक जे मजबूरी बहुतो रचनाकारकेँ छैन से हमरो रहल। मुदा तइसँ लिखैक क्रम नै टुटल। 'भैंटक लावा' कथा सेहो दू-हजार चारि इस्वीमे लिखल पहिल कथा छी। ओइसँ पहिलुका कथादिक ठौर-ठेकान नइ अछि। घर बाहरमे 'भैंटक लावा' आ 'बिसांढ़' कथा छपल आ तेकर किछुए दिनक बाद मिथिला दर्शन पत्रिकामे 'चुनवाली' कथा सेहो छपल। ऐ कथासभकेँ पढ़िते अनेको बधाइ फोन आएल जेना- पञ्जीकार विद्यानन्द झाजीक। एकटा महत्वपूर्ण फोन श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक रहल। हिनकर फोन सुनिते जिनगीक ओहन चौबट्टी टपि गेलौं जे चौबीस घन्टाक खुशी मनमे आनि देलक। जहिना बाल्यकालमे हनुमान सूर्यकेँ ग्रहण (बाल समय रवि भक्ष लियो) कऽ नेने छला तद्सदृश गजेन्द्रोजीक टीम छैन। नवयुवक सभ छैथ, हम तँ बेसी-सँ-बेसी यएह ने कहि सकै छिऐन जे हमरो औरदा लऽ अहीं सभ जीबू।

अन्तमे, तीनू भैंयो (सुरेश, उमेश, मिथिलेश) आ समाजोकेँ कहि दिअ चाहै छिऐन जे मिथिला अहाँक देश छी। ऐठामक माटि-पानिसँ लऽ कऽ साहित्य-कला धरिक विकास करब सभक दायित्व छी।

ऐठाम एतबे। आगाँ, आगू...।

-जगदीश प्रसाद मण्डल

बेरमा, मधुबनी
2009 इस्वी

पहिल पड़ाव

दू सालक रौदीक उपरान्तक अखाढ़। गरमीसँ जेहने दिन तेहने राति। लोकसभ भरि-भरि राति बिऐन हौंकि-हौंकि समय काटि रहल छल। सुतली रातिमे उठि-उठि पानि पीबए पड़इ। भोर होइते घाम अप्पन उग्र रूप पकैड़ लइत। जहिना कियो केकरो मारैले लग पहुँच जाइए तहिना सुरुजो सभक लगमे आबि गेल छला। रस्ता-पेराक माटि जमल सिमेन्ट जकाँ सक्कत भऽ गेल छल। चलै बेर पएर पिछड़ैत रहइ। इनार-पोखरिक पानि अप्पन अस्मिता बँचबैले पतालक रस्ता पकैड़ लेलक। दू सालसँ एक्को बुन्न पानि धरतीपर नै पड़ने धरतीक सुन्दरता धीरे-धीरे नष्ट हुअ लागल।

पानिक चलैत दुबिसभ पाण्डु रोगी जकाँ पीअर भऽ-भऽ प्राण तियागए लागल। गाछ-पात बेदरंग भऽ गेल। लताम, दारिम, नारिकेल इत्यादि अनेको तरहक फलक गाछसभ सुखए लगल। आम, जामुन, गम्हाइर, शीशो इत्यादि गाछक निच्चाँ पातक पथार लगि गेल।

दसे बजेसँ बाधमे लू चलए लगैत। नमहर-नमहर दरारि फाटि धरतीक रूपकेँ तहस-नहस कऽ देलक। की खाएब? की पीब? केना जीब? सभकियो अपनामे एक-दोसराक बीच बतियाइत। घास-पानिक दुआरे मालो-जाल सुइख कऽ संठी सन भऽ गेल। अनधुन मरबो कएल। अनुकूल समय पाबि रोगो-वियाधि बुतगर भऽ गेल। माल-जालसँ लऽ कऽ लोको सभक जान अवग्रहमे पड़ि गेल।

खेती-बाड़ी चौपट्ट होइत देखि थारी-लोटा बन्हकी लगा-लगा लोकसभ मोरंग, दिनाजपुर, ढाका भागए लगल। जएह दशा किसानक वएह दशा बोनिहारोक। कहिया इन्द्र भगवानक दया हेतैन, ऐ आशामे लोकसभ अनधुन कौबुला-पाती करए लगला।

तीन दिनसँ अनूपक घरमे चुल्हि नै पजरल। नल-दमयन्ती जकाँ दुनू परानी अनूप दुखक पहाड़क तरमे पड़ल एक-दोसराक मुँह दिस टुकुर-टुकुर ताकि रहल छल। केकरो किछु बजैक साहस नहि। बारह बर्खक बौएलाल

बोरापर पड़ल-पड़ल माएकेँ कहलक- “माए, भूखे प्राण निकलल जाइए। पेटमे बगहा लगैए। आब नइ जीबौ।”

बेटाक बात सुनि दुनू परानी रधिया-अनूपक आँखिमे नोर आबि गेल। मुँहक बोल बुताए लगलइ। लगमे बैसल रधिया उठिकऽ डोल-लोटा हाथमे लऽ इनार दिस विदा भेल।

इनारोक पानि निच्चाँ ससैर गेल अछि, जइसँ डोलक उग्हैनियो छोट भऽ गेल। केतबो निहुरि-निहुरि रधिया पानि पेबए चाहैत, मुदा डोल पानिसँ ऊपरे! रधियाक मनमे एलै, जखन अधला होइबला रहै छै तखन अहिना कुसंयोग होइ छइ। बौएलाल नै बँचत.! एक तँ पाँचटा सन्तानमे एकटा पिहुआ बँचल, सेहो आइ जाइए.! हे भगवान.! कोन जन्मक पापक बदला लइ छह..?

इनारसँ डोल निकालि लहरेपर छोड़ि रधिया उग्हैन जोड़ैले डोरी आनए आँगन आएल। रधियाक निराश चेहरा देखि अनूप पुछलक-

“की भेल?”

टुटल मने रधिया बाजल-

“की हएत! जखन दैवेक डाँग लगल अछि तखन की हएत। उग्हैन छोट भऽ गेल तँए जोड़ैबला जौड़ी लइले एलौं हेन।”

रधियाक बात सुनि अनूप घरक ओसारेक बनहन खोलि देलक। खड़ौआ जौड़ लऽ रधिया इनारपर जा उग्हैन जोड़लक। उग्हैन जोड़ि पानि भरलक। पानि भरि लोटामे लऽ रधिया आँगन आबि बौएलालकेँ पीबैले कहलक।

पड़ल बौएलालकेँ उठिये ने होइ। ओसारपर लोटा रखि रधिया बौएलालकेँ बाँहि पकैड़ उठाकऽ बैसौलक। अपने हाथे रधिया लोटासँ चुरुकमे पानि लऽ बौएलालक आँखि-मुँह पोछलक। बौएलालक देह थरथर कँपैत रहइ। बौएलालक देहक थरथरी देखि रधियोकेँ अपन देहमे जेना थरथरी पसि गेलइ। लोटा उठा बौएलालक मुँहमे लगबए लगल आकि रधियाक थरथराइत हाथसँ लोटा खसि पड़लै जइसँ पानि बोरापर पसैर गेलइ। दुनू हाथे छाती पीटैत रधिया जोरसँ चिचिया उठल- “आब बौएलाल नइ जीत! जइ घड़ी, जइ पहर अछि.!”

रधियाक बोल सुनि अनूप जोरसँ कानए लगल। अनूपक कानब सुनि टोलक धियो-पुतो आ जनिजातियो एक्के-दुइये आबए लगल। सभक मुँह सुखाएले। के केकरा बोल-भरोस देत। सभक एक्के गति। अनूपक कानब सुनि रूपनी अप्पन अँगनेसँ चिचियाइत दौगल आएल। रूपनी अनूपक ममियौत बहिन। बौएलालकेँ देखि ओ बाजल-

"भैया, बौआक देहमे परान छेबे करह। किए अनेरे दुनू परानी कानै छह। जाबे शरीरमे साँस अछि ताबे जीबैक आश अछि। चुप हुअ, चुप हुअ.!"

कहि रूपनी बौएलालकेँ समेट कऽ अपना कोरामे बैसौलक आ अप्पन तरहत्थीसँ ओकर चाइन रगड़ए लगल। किछुए कालमे बौएलाल आँखि खोलि बाजल-

"दीदी, भूखसँ पेटमे बगहा लगैए.!"

बौएलालक बात सुनि रूपनी पुछलक- "रोटी खेमे, बौआ?"

मुड़ी डोलबैत बौएलाल बाजल- "हँ।"

बौएलालक 'हँ' सुनि रधिया घरमे धएल फुलही लोटा–जे रधियाकेँ दुरागमनमे पिता देने रहैन–निकालि अनूपकेँ देलक। लोटा नेने अनूप दोकान दिस दौगल। दोकानमे लोटा बेचिकऽ गहुम किनने आएल। पतिकेँ अँगना अबिते रधिया हबड़-हबड़ चुल्हि पजारिकऽ गहुम उलौलक। उलाओल गहुमकेँ दुनू परानी जत्तामे पिसए लगल। एक रोटी-जोकर चिक्कस होइते रधिया समेट कऽ रोटी पकबए चुल्हि लग चलि आएल। बाँकी गहुम अनूप असगरे पिसैत रहल।

तैबीच रोटी पका रधिया बौएलाल लग लऽ गेल। अपनेसँ रोटी तोड़ि खाइक साहस बौएलालकेँ नइ भेलइ। छाती दाबि-दाबि रधिया ओकरा रोटी खुआबए लगल। सौंसे रोटी बौएलाल खा लेलक। रोटी खाइत-खाइत बौएलालोकेँ हूबा जगलै। अपने हाथे लोटा उठा पानि पीलक। पानि पीविते हाफी भेलइ। भुँइए मे ओंघरा गेल।

जत्ता लगक चिक्कस समेट कऽ रधिया चुल्हि लग आनि सूपमे सानए लगल। अनूप अप्पन जांघपर पड़ल चिक्कसकेँ तौनीसँ झाड़ि ओतएसँ आबि गेल आ लोटा-डोल नेने इनार दिस बढ़ल। इनारपर हाथ-पएर धोइ, लोटामे

पानि लऽ आँगन आबि खाइले बैसल।

छिपलीमे रोटी आ नून-मेरचाइ नेने रधिया अनूपक आगूमे देलक। भूखे अनूपकेँ होइ जे सौंसे रोटी मोड़ि-सोड़िकऽ एक्केबेर मुँहमे लऽ ली, मुदा से नहि कऽ तोड़ि-तोड़ि खाए लगल। छिपलीक रोटी सठिते अनूप रधिया दिस देखए लगल, मुदा तीनियेँ टा रोटी पका रधिया चिक्कसक मुजेला कोठीपर रखि आएल छल। रधियाकेँ देखि अनूप चुपचाप दू लोटा पानि पीब उठि गेल।

दिन अछैते नथुआ दौगल आबि हँसैत अनूपकेँ कहलक-

“गिरहत काका बड़की पोखैर उराहथिन। काल्हिसँ हाथ लगतै। तोहूँ दुनू गोरे काज करए चलिहह।”

नथुआक बात सुनिते रधियाकेँ जेना अशर्फी भेट गेल होइ तहिना ओकर मन खुशीसँ भरि गेल। अनूपोक मुहसँ हँसी निकलल। अनूपक खुशी देखि नथुआ फेर बाजल- “अपने मुसना काका मेटगीरी करत। वएह जन सभक हाजरी बनौत।”

नथुआ, अनूप आ रधियाक बीच गप-सप्प होइते छल कि बिच्चेमे मुसना सेहो धड़फड़ाएल पहुँच गेल। मुसना दिस देखि नथुआ बाजल-

“हैया! मुसनो काका तँ आबिए गेला। आब सभ गप फरिछा कऽ बुझबहक।”

मेटगीरी भेटलासँ मुसनाक मन तरे-तर गदगद रहबे करइ। ओना, कहियो मुसना मेटगीरी केने नहि अछि, मुदा गामक बान्ह-सड़कमे मेट सभक आमदनी आ रोब तँ देखनहि अछि तँए ओकरा मनमे बेहद खुशी छइ। ओ मने-मन सोचैत रहए जे जेकरा मन हएत तेकरा जनमे रखब आ जेकरा मन नइ हएत तेकरा नइ रखब। ई तँ हमरे जुतिक काज रहत किने। जेकरा मन हएत ओकरा बेसियो कऽ हाजिरी बना देबइ। पावर तँ पावर होइए। जँ पावर भेटए आ ओकर उपयोग फाजिल करिकऽ नइ करी तखन ओहन पावरे लऽ कऽ की! जँ से नहि करब तँ मुसना आ मेटमे अनतरे की हएत। लोक की बुझत..!

मुस्कियाइत मुसना अनूपकेँ कहलक- “भैया, काल्हिसँ बड़की पोखैरमे काज चलतै, तोंहू चलिहह। दू सेर धान आ एक सेर मड़ुआ भरि

दिनक बोइन हेतह। तेतेटा पोखैर अछि जे कहुना-कहुना रौदी खेपीए जेबह। सुनै छी जे आनो गामक जनसभ अबैले अछि मुदा ओकरा सभकेँ माटि नै काटए देबइ।"

मुसनाक बात सुनि बौएलाल फुड़फुड़ा कऽ उठि बाजल-

"काका, हमरो गिनती कऽ लिहह। हमहूँ माटि काटए जेबह।"

"बेस बौआ, तीनू गोरे चलिहह। हमरे हाथक काज रहत। दुपहरमे भानस करैले भौजीकेँ पहिनहि छुट्टी दऽ देबइ।"

कहि मुसनो आ नथुओ चलि गेल।

दोसर दिन भोरे, माने पोखैरमे हाथ लगैसँ पहिनहि, चौगामाक जनसभ, कियो कोदारि-टाला तँ कियो पथिया-कोदारि लऽ लऽ पोखरिक महारपर पहुँच थहाथही करए लगल। मेला जकाँ लोकक करमान लागि गेल। जेतेक गामक जन छल तइसँ कए गुना बेसी आन गामक जनसभ पहुँच गेल। जनक भीड़ देखि मुसनाक मनमे जेना अहलदिली पसि गेलइ। एका-एक तामसो आ डरोसँ मुसनाक देह थरथर काँपए लगलइ। अनायास ओकरा मनमे उठलै जे आब हमर बात के सुनत? माथपर दुनू हाथ लऽ मुसना बैस गेल। किछु फुरबे ने करइ। ठकमुड़ी लगि गेलइ। सौंसे पोखैर गौंआँ-सँ-अनगौंआँ धरिक लोकसँ भरि गेल। जगह छेक-छेक लोकसभ कोदारि लगा टल्ला ठाढ़ केने। सोचैत-सोचैत मुसनाक मनमे एलै जे गिरहत काका लग जा कऽ हुनका सभ बात कहिऐन। मुसना उठिकऽ रामाकान्त बाबूसँ भेँट करए विदा भेल।

तैबीच गौंआँ-अनगौंआँ जनमे रक्का-टोकी शुरू भेल। अनगौंआँ सभ जोर-जोरसँ बजैत- "कोनो भीख मंगैले एलौं हेन। सुपत काज करब आ सुपत बोइन लेब।"

तहिना गौंआँ जनसभ कहइ- "हमरा गामक काज छी, तँए हमसभ अपने करब।"

सुखेतक भुटकुमरा आ गामक सिंहेसरा एक्केठाम पोखरिक माटि दफानने छल। दुनूक बीच गारि-गरौऐल हुअ लगलइ। सभकियो हल्ला करैत, तँए केकरो बात कियो सुनबे ने करए। सभ अपने बजैमे बेहाल छल। गारि-गरौऐल करिते-करिते भुटकुमरो सिंहेसर दिस बढ़ल आ सिंहेसरो भुटकुमरा

दिस बढ़ल। दुनूक बीच गारियो-गरौऐल होइत-होइत पकड़ा-पकड़ी सेहो हुअ लगल। दुनू गोरे जेना एक-दोसरकेँ पटैक एक-दोसराक छातीपर बैसए चाहैत। दुनू बुतगर। पहिने तँ भुटकुमरे सिंहेसराकेँ पटकलक, किएक तँ सिंहेसराक पएर घुच्चीमे पड़ि गेलै, जइसँ ओ धड़फड़ा कऽ खसि पड़ल, मुदा सिंहेसरो हारि नै मानलक। ओहो हिम्मत करिकऽ उठि भुटकुमरोकेँ छिटकी लगा खसौलक।

इम्हर रामाकान्त बाबू अप्पन दरबज्जापर बैस बखारीक धान-मड़ूआक हिसाब मिलबैत रहैथ। तैबीच हलचलाएल मुसना लगमे पहुँचलैन। मुसनाकेँ देखि रामाकान्त पुछलखिन जे की बात छिऐ? मुदा मुसनाक बोली साफ-साफ निकलबे ने कएल। थोड़ेकालक बाद मुसना बाजल-

"काका, तेतेक ने अनगौंआँ जनसभ आबि गेल अछि जे गौंआकेँ जगहे ने हएत। केतबो मनाही केलिऐ कोइ मानैले तैयारे नै भेल। कनी अपनेसँ चलिकऽ देखियौ।"

कागज-कलम घरमे रखि रामाकान्त विदा भेला। आगू-आगू रामाकान्त आ पाछू-पाछू मुसना। पोखैरसँ फरिक्केमे जखन रामाकान्त बाबू रहैथ कि तखनेसँ पोखैरमे हल्ला होइत सुनलखिन। हुनकर मन चौंक गेलैन। मनमे हुअ लगलैन जे अनगौंआँ सभ बात मानत की नहि! अगर काज बन्न कऽ देब तँ गौंओक कमाइ मरत आ जँ काज बन्न नै करब तँ अनगौंआँ मानत कि नहि मानत.! विचित्र स्थितिमे रामाकान्त पड़ि गेला। निआरल सभकिछु जेना गड़बड़ भऽ रहल छेलैन।

पोखरिक महारपर रामाकान्तकेँ अबिते चारूभरसँ जनसभ घेर लेलकैन। सभ हल्ला करैत जे जँ काज चलत तँ हमहूँ सभ खटब।

ततमतमे पड़ल रामाकान्त बाबू अनगौंआँ सभकेँ कहलखिन-

"देखू, रौदियाह समय अछि। सभ गाममे काजो अछि आ करौनिहारो छथिए। चलै चलू, हमहूँ अहाँ सभक संगे चलै छी आ हुनको सभकेँ कहबैन जे अपना-अपना गामक बोनिहारकेँ अपना-अपना गाममे काज दियउ।"

अनगौंआँ सभ अप्पन-अप्पन कोदारि, छिट्टा आ टल्ला नेने विदा भेल। रामाकान्तो बाबू संगे विदा भेला।

किछु दूर बढ़िते रामाकान्त बाबू मुसनाकेँ इशारामे कहि देलखिन जे

जखन आन गामक लोकसभ निकैल जाएत तखन गौंआँ जनकेँ काजमे लगा दिहक। तैबीच कियो जा कऽ सिंहेसराक घरवालीकेँ कहि देलक जे पोखैरमे तोरा घरबलाकेँ ओंघरा-ओंघरा मारलकौ। घरबलाकेँ मारलक, सुनिते सिंहेसराक घरोवाली आ धियो-पुतो गामेपर सँ गरियबैत पोखैर दिस विदा भेल। मुदा तइसँ पहिनहि अनगौंआँ सभ चलि गेल छल। पोखैरमे माटि काटब शुरू भऽ गेल छल। तीनू गोरे अनूप एक्केठाम खत्ताक चेन्ह लगा, माटि काटब शुरू केलक। कोदारिसँ माटि काटि-काटि अनूप पथियामे भरै छल आ रधिया दुनू माय-पुत माथपर लऽ लऽ महारपर फेकै छल। बारह बाजि गेल। रामाकान्त घुमिकऽ आबि पोखरिक पछबरिया महारपर ठाढ़ भऽ देखए लगला। नजैर पड़िते मुसना दौग कऽ रामाकान्त बाबू लग पहुँचल। मुसनाकेँ पहुँचते रामाकान्त बाबू अप्पन आँगुरक इशारासँ बौएलालकेँ देखबैत पुछलखिन-

"ओ के छी? ओकरा साँझमे कहिहक भेँट करैले।"

कहि रामाकान्त बाबू घर दिसक रस्ता पकड़लैन। बारह बर्खक बौएलालक माटि उघब देखि सभकेँ छगुन्ता लगैत रहइ। जाबे दोसर कियो एकबेर माटि फेकैत ताबे बौएलाल तीन बेर फेंक अबैत।

बौएलालक काज देखि अनूप मने-मन सोचए लगल जे बोनियातीसँ नीक ठिक्का होइतए। मुदा हमरे सोचलासँ की हएत...। ताबे मुसनो रामाकान्तकेँ अरियाति घुमिकऽ अनूप लग आबि कहलक-

"भैया, मालिक दुनू बापूतकेँ साँझमे भेँट करैले कहलखुन हेन।"

'मालिककेँ भेँट करब' सुनि अनूपक हृदयमे जेना खुशीक हिलकोर उठए लगलै, मुदा अपनाकेँ सम्हारि अनूप मुसनाकेँ कहलक-

"जखन मालिक भेँट करैले कहलैन तँ जरूर भेँट करबैन।"

सुरुज पच्छिम दिस एकोशिया भऽ गेला। घुमैत-फिरैत मुसना अनूप लग आबि रधियाकेँ कहलक- "भौजी, अहाँ जाउ। भरि दिनक हाजरी बना देने छी। भानसक बेर उनैह जाएत।"

रधिया आँगन विदा भेल। अनूप आ बौएलाल काज करिते रहल। चारि बजे बेरुपहरमे सभकियो काज छोड़ि देलक। गामपर आबि अनूप दुनू बापूत नहाकऽ खेलक। कौल्हुके गहुमक चिक्कसक रोटी आ अरिकंचन

पातक पतौरा बना पकाकऽ चटनी बनौने छल। खा कऽ तीनू गोरे–अनूप, बौएलाल आ रधिया–ओसारपर बैस गप-सप्प करए लगल। अनूप रधियाकेँ कहलक-

"भगवान बड़ीटा छथिन! सभपर हुनकर नजैर रहै छैन। देखियौ एहेन कहात समयमे कोन चक्कर भगवान लगा देलैन।"

गप-सप्प करिते गोसाँइ डुमि गेल। झलफल होइते अनूप दुनू बापूत रामाकान्तक ऐठाम विदा भेल। रस्तामे दुनू बापूतकेँ ढेरो तरहक विचार मनमे उठबो करै आ खतमो होइ। ओना, दुनू बापूतक मन गदगद रहइ।

दरबज्जापर बैस रामाकान्त बाबू मुसनासँ जन सभक हिसाब करबैत रहैथ। मुसना जन सभक नाओं तँ कागजपर लिखने छल मुदा अप्पन नाओं छुटल छेलै तँए हिसाब मिलबे ने करइ। अही घों-घाँ मे दुनू गोरे लागल रहैथ। तैबीच दुनू बापूत- अनूप पहुँचल। फरिक्केसँ अनूप दुनू हाथ जोड़ि रामाकान्त बाबूकेँ गोड़ लागि बिछानपर बैसल। बौएलालो गोड़ लगलकैन। बौएलालकेँ देखि बिहुँसैत रामाकान्त बाबू अनूपकेँ कहलखिन- "अनूप, तूँ अप्पन ई बेटा हमरा दऽ दएह।"

मने-मन अनूप सोचए लगल जे ई की कहि रहल छैथ! मुदा थोड़ेकालक धरि गुम्म रहि अनूप बाजल-

"मालिक, बौएलाल की हमरे टा बेटा छी, समाजक छिऐ। जक्खन अपनेकेँ जरूरत हएत लऽ लेब।"

अनूपक उत्तर सुनि सभकियो छगुन्तामेँ पड़ि गेला। मास्टर साहैब अनूपकेँ निहारि-निहारि देखए लगलखिन। एकटा युवक जे दू दिन पहिने भाग्यक मारल आएल छल, ओहो आशा-निराशामे डुमि गेला। ओइ युवककेँ तीन बरख कृषि विज्ञानक पढ़ाइ पूरा भेल छेलैन, मात्र एक बरख बाँकी छेलैन। मुदा तैबीच अप्पन बीमार पिताक इलाजक खातिर सभटा खेत-पथार बेचि लेलैन। ओना, एतेक इलाजक बादो ओ स्वस्थ नहि भेला आ किछु दिनक पछाइत मरि गेला। कर्जा लऽ पिताक श्राद्ध-कर्म केलैन। खरचा दुआरे पढ़ाइयो छुटि गेलैन आ जीबैक कोनो उपय सेहो नहियेँ रहलैन।

जिनगीक कठिन मोड़पर आबि ओ युवक निराश भेल बैसल छला। साल भरि पहिने बिआहो भऽ गेलैन। एकदिस बुढ़ माए आ स्त्रीक भार आ

दोसर दिस, अपना जीबैक कोनो रस्ता नहि। सोगसँ माइयोक देह दिने-दिन निच्चेँ मुहेँ हहरल जा रहल छैन। रामाकान्त बाबूक उदार विचार सुनि ओ युवक हिनका लग आएल छैन।

रामाकान्त बाबू सभदिन चारि बजे बेरुपहरमे पिसुआ भाँग पीबै छैथ। दोसर-तेसर साँझ होइत-होइत हिनका भाँगक निशाँ चढ़ि जाइ छैन। ई आदत हिनका अप्पन पितासँ लागल छैन।

रामाकान्तक पिता न्यायशास्त्रक विद्वान रहैथ। ओना, ओ गाममे कम्मे-सम्म रहै छला, बेसी काल बाहरे-बाहर रहैथ। हुनके प्रभाव रामाकान्तक ऊपर पड़ल छैन। तँए रामाकान्त जेहने इमानदार तेहने उदार विचारक लोक सेहो छथिए। पोखरिक चर्च करैत रामाकान्त मुसनाकेँ कहलखिन-

"काल्हिसँ बौएलालकेँ दोबर बोइन दिहक।"

'दोबर बोइन' सुनि मुसना गुम्म भऽ गेल। कनीकालक बाद ओ बाजल-

"मालिक, एक गोरेकेँ बोइन बढ़ेबै ते दोसरो-तेसरो जन ने मांगत। एनामे तँ झंझटे शुरू भऽ जाएत। झंझट भेने काजो बन्न भऽ सकैए।"

काज बन्न होइक बात सुनि रामाकान्त उत्तेजित भऽ कऽ बजला-

"काज किए बन्न हएत! जे जेतेक काज करत ओकरा ओतेक बोइन देबइ।"

रामाकान्त बाबूक विचारकेँ सभकियो मुड़ी डोला समर्थन केलैन। सभक समर्थन देखि गदगद होइत रामाकान्त बाबू फेर बजला-

"अखन बौएलालकेँ बोइन बढ़ेलौं, बादमे दू बीघा खेतो देबइ। मास्टर साहैब, अहाँ राति-के बौएलालकेँ पढ़ा दियौ। सिलेट-पेंसिल आ किताब संग सभटा खरच हम देबइ।"

खेतक चर्च सुनि मुसना बाजल-

"गरीब तँ बौएलालेटा नहि, गाममे बहुतो अछि?"

मुसनाक प्रश्न सुनि रामाकान्तक हृदयमे सत्ययुगक हरिश्चन्द्र पसि गेलैन। उदार विचार, इमानमे गम्भीरता, मनुक्खक प्रति सिनेह, रामाकान्त

बाबूक विवेककेँ जेना घेरए लगलैन। अखन तक ने सूदिखोर महाजनक चालि आ ने धन जमा करैबला जकाँ अमानवीय बेवहार हिनकामे प्रवेश केने छेलैन। नीक समाजमे जहिना धनकेँ जिनगी नइ बुझि, जिनगीक साधन मानि उपयोग कएल जाइए तहिना रामाकान्तोक परिवारमे रहलैन।

जखन रामाकान्तक पिता गाममे रहै छला आ हुनकासँ कियो किछु मांगए आबैन तँ ओ खाली हाथ किनको नहि घुमए देथिन। जे रामाकान्तो अपना आँखिसँ देखने रहैथ। सदिखन पिता कहथिन जे जँ किनको ऐठाम पाहुन-परक अबैन आ ओ किछु मांगए अबैथ तँ जरूर देबैन। किएक तँ ओ गामक प्रतिष्ठा बँचाएब छी। गामक प्रतिष्ठा बेकतीगत नहि, सामूहिक होइत अछि। तैठाम जँ कियो सोचत जे गाम सभक छिऐ हमरा ओइसँ कोन मतलब, ओ सोलहन्नी गलती हएत। गाममे अधिकतर लोक गरीब आ मुरुख अछि, तँए ओ ऐ प्रतिष्ठाकेँ नइ बुझैए, मुदा जे बुझनिहार छैथ हुनकर ई खास दायित्व बनि जाइ छैन। ऐ धरतीपर जेतेक जीव-जन्तुसँ लऽ कऽ मनुक्ख धरि अछि, सभकेँ जीबैक अधिकार छइ। तँए, जे मनुक्ख केकरो हक छिनए चाहैए ओ ऐ भूमिपर सभसँ पैघ पापी छी। जनकक राज मिथिला छिऐ तँए मिथिलावासीकेँ जनकक चलल रास्ताकेँ पकैड़ चलक चाही। जइसँ ओ प्रतिष्ठा सभदिन बरकरार रहत। ❑

दोसर पड़ाव

सुखी-सम्पन्न रामाकान्त जेहने उदार तेहने इमानदार, समाजमे बुझल-मानल जाइ छैथ। मरौसी जमीन तँ बेसी नहि छैन मुदा पिताक अमलदारीमे जत्था बहुत भेलैन। पितो किनने तँ नहियेँ रहथिन मुदा पुरस्कार स्वरूप पैघ-पैघ दरबारसभसँ भेटल छेलैन। मधुकान्त अध्यात्म, वैयाकरण आ न्याय- शास्त्रक प्रसिद्ध विद्वान छला।

बच्चेसँ मधुकान्तक झुकाउ अध्ययन दिस देखि पिता हिनका बनारस पढ़ैले पठौलखिन। बनारसमे अध्ययन केलाक बाद मधुकान्त तीन बरख काशीक एकटा न्यायशास्त्रक पण्डित ऐठाम सेहो अध्ययन केलैन। अध्ययनोपरान्त मधुकान्त पूर्णरूपेँण बदैल गेलैथ। अध्ययन-अध्यापनक असुविधा दुआरे गाममे हिनका मन नहि लगैन। ने अप्पन मनोनुकूल लोक भेटैन आ ने क्रिया-कलापमे सामंजस होइन। तँए, जिनगीक अधिकांश समय ई अप्पन गामसँ बाहरे बितबैत रहैथ।

जेहने प्रतिष्ठा मधुकान्तकेँ अपना राज्यमे तेहने आनो-आनो राज्यमे रहैन। भारतीय चिन्तनकेँ बुनियादी ढंगसँ व्याख्या करब हिनकर खास विशेषता रहैन। सामाजिक बेवस्थाक गुण-अवगुणक चर्च ई अप्पन अनेको लेखमे उद्धृत केने छला जे असुविधाक चलैत अप्रकाशिते रहलैन। अनेक तगमा आ प्रशस्ति-पत्र टाँगि दरबज्जाक शोभा बढ़ौने छला। जखन गाममे रहै छला तखन सभक ऐठाम जा-जा सामाजिक बेवस्थाक कुरीतिकेँ बुझाबथिन। खास कऽ कर्मकाण्डक। समाजमे सभकियो हिनका चाहैन। ई अपनो जिनगीक बात दोसरकेँ कहथिन आ दोसरोक जिनगीक अध्ययन करैत रहै छला।

क्षल-प्रपंचक मिसियो भरि गन्ध मधुकान्तक जिनगीकेँ नहि छुलकैन। समाजमे मनुक्ख केना मनुक्खक जिनगीमे बाधा बनि ठाढ़ अछि आ ओइसँ केना छुटकारा भेटतै, तइ सभ बातकेँ मधुकान्त नीक-नहाँति लोककेँ बुझेबाक प्रयास करैथ। ओ सत्तैर जाड़ ऐ धरतीपर कटलैन।

सभदिन चारि बजे बेरुपहरमे रामाकान्त भाँग खा, चाह पीब, एक खिल्ली पान मुँहमे लऽ टहलैले निकैल दोसर साँझ धरि घुमिकऽ घरपर अबै छैथ। घरपर अबिते हाथ-पएर धोइकऽ दरबज्जापर बइसै छैथ। टोल-पड़ोसक लोक सेहो एका-एकी आबि-आबि लगमे बइसै छैन। दुनियाँ-दारीक गप-सप्पक संग चाहो-पान आ हँसियो-मजाक चलैत अछि। मास्टर साहैब, माने हीरानन्द आ युवक शशि शेखर सेहो टहैल-बुलि कऽ एला। चाह पीब रामाकान्त शशि शेखरकेँ पुछलखिन- "बौआ, अहाँ की चाहै छी?"

मजबूरीक स्वरमे शशि शेखर कहलकैन- "एहेन दलदलमे हम फँसि गेल छी जे एकटा पएर निकालै छी तँ दोसर धँसि जाइए। हम ऐ दलदलसँ केना निकलब?"

कृषि कौलेजमे प्रवेशक लेल प्रतियोगिता परीक्षामे सफल होइते शशि शेखरकेँ सुखद भविष्यक ज्योति भेटल छेलैन। पिताकेँ सेहो बेटाक सफलता सुनि हजार गुना उत्साह बढ़ि गेल छेलैन। ओ ओतेक उत्साहित भऽ गेल छला जेतेक अपना जिनगीमे कहियो नै भेल छेलैन। जहिना काँटक गाछमे अमर-फल (बेल) फड़ैए, गुलाबक फूल फुलाइए तहिना पछुआएल परिवारमे शशि शेखर भेला। शशि शेखरक पिता मनमे अरोपि लेलैन जे बीत-बीत कऽ खेत किएक ने बीकि जाए मुदा बेटाकेँ कृषि वैज्ञानिक बना कऽ छोड़ब। शशि शेखरोक मनमे पैघ-पैघ अरमान आबए लगलैन। कृषि वैज्ञानिक हएब, नीक नोकरी भेटत, माए-बाबूक सेहन्ता पूरा करब। सिरिफ परिवारेक नहि, जहाँ धरि भऽ सकत समाजोक सेवा करब। मुदा बिच्चेमे समय एहेन मोड़पर आनि देलकैन जे सभ अरमान हवामे उड़ि गेलैन। जहिना बीच धारमे नाह चलौनिहारक हाथसँ करूआरि छुटि गेलापर खेबनिहारक संग नाहपर सवार यात्रीकेँ होइत, तहिना शशि शेखरोकेँ भेलैन। चारि सालक कोर्समे तीन साल पूरा भेलाक बाद पिता दुखित पड़लखिन। चारिम सालक पढ़ाइ छोड़ि शशि शेखर पिताक सेवामे जुटि गेला। एकदिस पिताक इलाज तँ दोसर दिस परिवारक बोझ सेहो शशि शेखरक माथपर पड़ि गेलैन। आमदनीक कोनो स्रोत नहि, मात्र खेते टा। खेतो बहुत अधिक नहि। तहूमे आधासँ बेसी बीकिये गेल छेलैन।

शशि शेखरकेँ बचपना बुधि। जिनगी आ दुनियासँ भेँट नहि। छोट बुधिसँ पैघ समस्याक समाधाने ने होइ छेलैन। अन्तमे निराश भऽ कऽ खेत

बेचि-बेचि परिवारो आ पितोक इलाज करबए लगला। बीत-बीत कऽ खेत बीकि गेलैन। जखन कि समस्या बरकरारे रहलैन। पछाइत पितो मरि गेलखिन।

वेवश शशि शेखर कर्ज करिकऽ पिताक श्राद्ध-कर्म केलैन। दुनियाँमे केतौ इजोत देखबे ने करैथ। सौंसे दुनियाँ अन्हारे-अन्हार लगए लगलैन।

अन्तमे शशि शेखर मने-मन सोचए लगला जे अपने जँ ट्यूशनो पढ़ाकऽ आगू पढ़ए चाहब मुदा परिवारक की दशा हएत? ट्यूशनसँ ओतेक तँ नहियेँ कमा सकै छी जइसँ अपनो पढ़ि लेब आ परिवारो चला लेब। अधिक कमाइले अधिक समैयो लगबए पड़त किने जे सम्भव नइ अछि। जँ सभटा समय ट्यूशने पढ़ैमे लगा देब तखन अपने कखन पढ़ब आ क्लास केना करब? जहियासँ पिता मुइला तहियासँ माइयोक देह सोगसँ हहरले जा रहल छैन। एक तँ ओ बुढ़ भेली आ दोसर, सोगसँ सेहो सोगाएल छैथ। मनुक्खमे जन्म लेलापर कियो माए-बाबूक सेवा नै करए तखन ओ मनुक्खे की। मनुक्खक मात्र नकल भेल। हम से नहि करब। चाहे दुनियाँक लोक नीक कहए वा अधला, हमरा तेकर गम नइ अछि। डिग्री लऽ कऽ हम नीक नोकरी करब। नीक दरमाहा भेटत। जइसँ खाइ-पीबै, ओढ़ै-पहिरै आ रहैक सुविधा तँ भेटत, मुदा जिनगी तँ ओतबे-टा नइ अछि। जिनगी लेल ज्ञान, कर्म आ बेवहारक जरूरत सेहो होइए। जिनगी पाबि जँ मनुक्ख प्रतिष्ठित नहि बनि सकल तँ ओ जिनगीए की। आइ जँ हम माएकेँ छोड़ि दिऐन आ हुनका जे कष्ट हेतैन तेकर भागी के बनत? दिन-राति हुनका सेवाक जरूरत छैन, उठौनाइ-बइसौनाइसँ लऽ कऽ खुऔनाइ-पिऔनाइ धरि। हमसभ ओइ धरतीक सन्तान छी, जैठाम श्रवणकुमार सन बेटा जन्म लऽ चुकल छैथ।

यएह विचार शशि शेखरक पढ़ाइ छोड़ौलकैन। दुनियाँमे कोनो सहारा नै देखि शशि रामाकान्तक ऐठाम एला। अप्पन जीवनक सभ बात हीरानन्दकेँ कहलखिन।

शशिक बातसँ हीरानन्दक हृदय पघिल गेल छेलैन। मने-मन सोचए लगला जे, जे नवयुवक देश सेवामे एकटा खुट्टाक काज करत ओ अपने नष्ट भऽ रहल अछि, तँए ओहन युवककेँ सोंगर लगा ठाढ़ करैक जरूरत अछि। सोझमतिया रामाकान्त दोहरबैत शशि शेखरकेँ पुछलखिन- "नीक जकाँ

अहाँक बात हम नइ बुझि सकलौं?"

बिच्चेमे मास्टर साहैब रामाकान्त बाबूकेँ बुझबैत कहलखिन- "शशि महाग संकटमे फँसि गेल छैथ। हिनका अहींक मदैतिक जरूरत छैन। ई तखने उठिकऽ ठाढ़ हेता।"

मास्टर साहैबक बात सुनि धाँइ-दे रामाकान्त बाबू बजला-

"अगर हमर मदैतसँ शशिकेँ कल्याण हेतैन तँ हम जरूर मदैत करबैन।"

रामाकान्तक अश्वासनसँ शशि शेखरक हृदयमे, जहिना भोरक सुरुज देखि दिनक आश जगैए तहिना, विश्वास जगलैन। अनायास शशिक मुहसँ हँसी फुटलैन। जिनगीक अमावसिया, पूर्णिमामे बदलए लगलैन। गम्भीर भऽ हीरानन्द शशिकेँ कहलखिन-

"शशि, अहाँ चिन्ता छोड़ू। नव जिनगी दिस डेग उठाउ। ई कर्मभूमि छिऐ। ऐठाम कर्मनिष्ठे लोक मनुक्खक जिनगी पाबि सकैए।"

हीरानन्दक विचार सुनि शशि शेखर उठिकऽ ठाढ़ भऽ हुनक हाथ पकैड़ मने-मन जिनगी भरिक मित्रताक व्रत लैत बजला-

"जहिना कोनो रोगाएल गाछकेँ माली तामि-कोरि पानि दऽ पुनः नव जिनगी दइए तहिना अहाँ दुनू गोरे हमरा देलौं। तइले हम ऋणी छी। जहाँ धरि भऽ सकत सेवा करैत रहब।"

शशिक विचार सुनिते रामाकान्त बाबूक हृदयमे कर्णक रूप सन्हिया गेलैन। खुशीसँ गदगद होइत बजला-

"बौआ, हम तँ पढ़ल-लिखल नइ छी। पिताजी गाममे नै रहै छला तँए परिवार सम्हारए पड़ै छल। ओना, कोनो वस्तुक अभाव जिनगीमे ने पहिने भेल आ ने अखन अछि। जहिया पिताजी गाम अबै छला तहिया बुझा-बुझा कऽ जे किछु सिखौलैन-कहलैन, अखनो मनमे वएह विचार अछि।"

रामाकान्तकेँ दूटा बेटा, दुनू डॉक्टरी पढ़ि मद्रासमे नोकरी करै छैन। कहियो काल दू-एक दिन खातिर गाम अबै छैन। दुनू भाँइ मद्रासेमे बिआहो कऽ नेने छथिन। दुनू पुतोहुओ डॉक्टरे छथिन। एक परिवारमे चारि डॉक्टर, तँए आमदनियो नीक छैन। दस बर्खक नोकरीमे कमाकऽ ढेर लगा नेने छैथ।

अप्पन तीन मंजिला मकान मद्रासेमे बनौने छैथ। चारि टा गाड़ी सेहो रखने छैथ। अप्पन क्लिनिक सेहो बनौने छैथ। बेटा लग जाइक विचार रामाकान्त बाबू बहुत दिनसँ कऽ रहल छैथ मुदा दुरस्तक दुआरे नियारिये कऽ रहि जाइ छैथ। पुनः रामाकान्त बाबू बजला- "पोखरियोक काज सुढ़ियाइये गेल अछि ओकरा सम्पन्न करिकऽ मद्रास जाएब। मद्राससँ एलाक बाद अहाँक सभ जोगार कऽ देब। ताधैर अहाँ पत्नियोँ आ माइयोकेँ अहीठाम लऽ अबियौन आ एतै रहू।"

बेरुपहर हीरानन्द आ शशि शेखर टहलैले निकलला। दरबज्जाक सोझे पोखरिक महारक निच्चाँ, उत्तर-पूब कोणमे एकटा भरिगर सरही आमक गाछ अछि। दुनू गोरे ओही गाछक निच्चाँक दुबिपर बैस गप-सप्प करए लगला। हीरानन्द अप्पन खेरहा शशि शेखरकेँ कहए लगलैन-

"शशि, हम मैट्रिक पास केलाक बाद मास्टरी लेल इन्टरभ्यू दइले गेलौं। जखन ओइठाम गेलौं आ देखलिऐ तँ बुझि पड़ल जे इन्टरभ्यू मात्र देखाबा अछि। मोल-जोल तेजीसँ चलैत रहइ। मुदा सोझे घुमियो जेनाइ उचित नइ बुझि ओतए रूकि गेलौं। मनमे आएल जे मोल-जोलक विरोध करी। संगी भँजियाबए लगलौं। मुदा मोले-जोलक पाछू सभकियो लागल छल। एक्को गोरे संग दइबला नहि, मनकेँ असथिर केलौं। फेर भेल जे विरोध कऽ हंगामा ठाढ़ कए दिऐ। मुदा दुनू पक्ष एक दिशाहे, सिरिफ हमहींटा कातमे। तामसे देह थरथर कँपैत छल। लाभ-हानिक हिसाब जोड़ी तँ हानियेँ बेसी बुझि पड़ल। मुदा मन तैयो मानैले तैयार नै हुअए। मनमे भेल जे, जे कियो बहालीक ऊपरका सीढ़ीपर अछि, ओकरा चारि धौल लगा दिऐ। दस दिन जहलेमे रहब। मुदा फेर अपने मनमे भेल जे जखन डिग्री आ योग्यता अछि तखन एहेन-एहेन नोकरी केतेको आएत जाएत। जैठाम हजारो नवयुवक देशक आजादी-ले खून बहौलैन तैठाम हमरा बुते एतबो नइ हएत। एका-एक समुद्रक लहैर जकाँ मनमे संकल्प-विकल्प उठबो करैत आ शान्तो होइत रहल। सभकियो चलि गेल। हम असगरे रहि गेलौं। अचता-पचता कऽ ओइठामसँ विदा भेलौं। डेगे ने उठै छल, मुदा तैयो घरपर एलौं। घरपर अबिते पत्नी बुझि गेली। मुदा आशा जगबै दुआरे लोटामे पानि नेने आगू आबि कहलैन- "थाकि गेल हएब। हाथ-पएर धोइ लिअ, थाकैन कमि जाएत। जलखै नेने अबै छी।"

जाबे हम पएर-हाथ धोलौं तइसँ पहिनहि थारी नेने पत्नी पहुँचल छेली। जेना ओ पहिनहिसँ जलखैक ओरियान करिकऽ रखने रहैथ। जलखै खा, दरबज्जेक चौकीपर कुरता खोलिकऽ रखि देलिऐ आ बाँहिक सिरमा बना पड़ि रहलौं। पड़िते मनमे ढेरो रंगक विचार सभ आबए-जाए लगल। मुदा दू तरहक विचार सोझमे आबि जेना ठाढ़ भऽ गेल। पहिल ई जे शिक्षकेक बहालीटा-मे घूसखोरी अछि आकि सभ विभागमे अछि? आँखि उठा-उठा चारूकात देखए लगलौं तँ बुझि पड़ल जे अहूसँ बेसी आन-आन विभागमे घूसखोरी अछि। मनमे उठल जे जखन सभ विभागमे घूसखोरी अछि तखन देश आगू-मुहेँ केना ससरत? निच्चासँ ऊपर धरि एक्के रोग सगतर पकड़ने अछि.! मन औना गेल। औनाइत मनमे दोसर विचार उपकल। मनकेँ असथिर केलौं कि अनासुरती एकटा विचार मनमे उठल। ओ ई जे जहिना पुरबा-पछबा हवा धरती-सँ-अकास धरि बहैए तहिना ई बेवस्थाक हवा छी। तँए, एकरा बदलैक एक्केटा रास्ता अछि बेवस्थाक परिवर्तन। मुदा बेवस्थाक परिवर्तन धिया-पुताक खेल तँ छी नहि। कठिन काज छी। बेवस्था सिरिफ लोकक चालिए-ढालि धरि सीमित नइ अछि। ओ तँ मनुक्खक चालि-ढालिसँ लऽ कऽ बुधि-विचारक संग विवेक धरिमे अछि। मनुक्खकेँ जेहेन बुधि रहै छै ओहने विचार मनमे अबै छै आ जेहेन विचार मनमे अबै छै तेहने ओ काज करैए। तँए, जाधैर मनुक्खक बुधि नहि बदलत ताधैर ओकर क्रिया-कलाप नहि बदैल सकैए। जाधैर क्रिया-कलाप नहि बदलत ताधैर बेवस्था बदलब मात्र बौद्धिक व्यायाम टा हएत। तँए, जरूरत अछि मनुक्खमे नव बुइधिक सृजन कऽ नव क्रिया-कलाप पैदा करब। नव क्रिया-कलाप एलापर नव रास्ता बनत। नव रास्ता बनलाक बादे कियो नव स्थानपर पहुँचत। नव जगह पहुँचलापर मनुक्ख, मनुक्खक बराबरीमे औत। पछाइत छोट-पैघ-धनीक-गरीब आ ऊँच-नीचक खाधि समतल हएत।

तखन भक्क खुगल। भक्क खुजिते हाइ स्कूलक शिक्षक देवेन्द्र बाबू मोन पड़ला। देवेन्द्र बाबू, सदिखन छात्र सभकेँ कहथिन- "मनुक्खकेँ कखनो निराश नै हेबा चाहिऐ। जखने मनुक्खमे निराशा अबै छै तखने ओकरा लगमे मृत्यु लग चलि अबै छइ। तँए, मनुक्खकेँ सदिखन आशावान भऽ जिनगी बितेबाक चाहिऐ। कठिन-सँ-कठिन समय किएक ने आबए मुदा विवेकक सहारा लऽ कऽ सदिखन आगू मुहेँ डेग उठबैत रहक चाहिऐ।"

देवेन्द्र बाबूक विचार मोन पड़िते संकल्प लेलौं, जखन शिक्षक बनैले डेग उठेलौं तँ शिक्षक बनिकऽ रहब। चाहे जेते विघ्न-बाधा आगूमे उपस्थित हुअए। जखन देवेन्द्र बाबू कौलेजमे पढ़ैत रहैथ तखन देशमे आजादीक आन्दोलन उग्र रूप धेने छल। पाँच-सात टा संगी सभक संग देवेन्द्र बाबू पोस्ट ऑफिसमे आगि लगा देलखिन। पोस्ट-ऑफिस जरि गेलइ। तीन दिनक बाद हुनका पुलिस पकैड़ लेलकैन। मारबो केलकैन आ जहलो लऽ गेलैन। जहल जाइसँ पहिने हुनका थोड़ेक डरो होइ छेलैन। किएक तँ लोकक मुहेँ सुनने रहथिन जे जहलमे खाइले नै दइ छइ। ऊपरसँ दुनू साँझ मारबो करै छइ। मुदा जहलक भीतर गेलापर देखलखिन जे हजारो देशप्रेमी-क्रान्तिकारी जहलमे छैथ। हुनका सभ लेल जेहने घर तेहने जहल। एक बरख ओहो जहलमे रहला। ओइ बरख दिनमे ओ बहुत सिखलैन। जिनगीए बदैल गेलैन। आब देवेन्द्र बाबू सिरिफ अपने आ अपना परिवारे टा लेल नइ सोचै छैथ, बल्कि ओ बुझि गेला जे देशक अंग समाज आ समाजक अंग बेकती वा परिवार होइए। तँए, सभकेँ अपनासँ लऽ कऽ देश धरिक सेवा करबाक चाहिऐ। जहलसँ निकैल बी.ए.क फार्म भरलैन। बी.ए. पास केलापर हाइ स्कूलक शिक्षक बनला। हाइ स्कूलमे बहुतो शिक्षक छला मुदा हुनकर जिनगी सभसँ भिन्न छेलैन। खानगी पढ़ौनीकेँ ओ पाप बुझि क्लासमे तेना पढ़बैत रहथिन जे कोनो विद्यार्थीकेँ ट्यूशन पढ़ैक जरूरते ने रहै छेलइ। स्कूलक पजरेमे टटघर बना असगरे ओ रहै छला। महिनामे एक दिन गाम जा कऽ बालो-बच्चाकेँ देखैथ आ दरमहो उठा परिवारमे दऽ आबथिन।"

गप-सप्प करैत दुनू गोरे ओइठामसँ विदा भऽ गेला। हीरानन्द अपना दरबज्जापर एला। किछुए कालक पछाइत एकटा अनठिया आदमी पहुँचलैन। ओना, हुनका चिन्हलखिन नहि, मुदा दरबज्जाक लाज रखैले आँगनसँ एक लोटा पानि आनि पएर धोइकऽ बैसैले कहि आँगन जा पत्नीकेँ कहलखिन- "एकटा अतिथि एला हेँ, तँए झब-दे चाह बनाउ।"

दरबज्जापर आबि हीरानन्द ओइ आदमीक नाओं-गाओं पुछलखिन। नाओं-गाओं पुछि काजक गप उठैबिते रहैथ कि आँगनसँ पत्नी हाथक इशारासँ चाह लऽ जाइले कहलकैन। गपकेँ विराम दैत हीरानन्द अप्पन दुनू हाथमे चाहक गिलास लऽ दरबज्जापर आबि दहिना हाथक गिलास अतिथिकेँ देलखिन आ बामा हाथक गिलास दहिना हाथमे लऽ अपनो चाह

पीबए लगला। गप्पो चलैत छल आ चाहो पीबैत रहैथ तँए पीबैमे देरी लगलैन। चाह सठलो ने छल कि आँगनसँ पत्नी जलखैक इशारा देलखिन। पत्नीक इशारा देखि हाथेक इशारासँ थोड़ेकाल बिलैम जाइले कहलखिन।

चाह पीब लगले जलखै करब नीक नै होइए। हँ, चाह पीबैसँ पहिने जलखै नीक जरूर होइए। चाह पीब, पान खा दुनू गोरे पुन: गप-सप्प करए लगला। अतिथिकेँ हीरानन्द पुछलखिन-

"केम्हर-केम्हर अहाँ एलौं?"

"एकटा बुढ़ हमरा गाममे छैथ। सामाजिक सम्बन्धे ओ हमर दादी हेती। बिधवा छैथ। बेटो नै छैन। हुनका विचार भेलैन जे बच्चा सभकेँ पढ़ैले एकटा स्कूल बनाबी। चारि बीघा खेत छैन। समाजोक सभ आग्रह केलकैन जे सम्पैत तँ राइ-छित्ती भइये जाएत, तइसँ नीक जे स्कूल बना दियौ। अखन ओ दू बीघा खेत स्कूलमे देथिन आ दू बीघा अपना-ले रखती। जखन दादी मरि जेती तखन चारू बीघा स्कूलेक हेतइ।"

धियानसँ अतिथिक बात सुनि मुस्कियाइत हीरानन्द बजला-

"बडड् नीक विचार छैन।"

"ओइ स्कूलकेँ चलबैले अहाँकेँ कहए एलौं हेन।"

"जरूर जाएब। अहाँ राति एतै बीता लिअ, भोरे अहाँक संगे चलब।"

"कोसे भरि तँ अछि दोसर साँझ धरि पहुँचिये जाएब, रहब नहि।"

"एते धड़फड़ाउ नहि, हमहूँ थाकल छी। भोरे चाह पीब दुनू गोरे संगे चलब।"

हीरानन्दक आग्रह अतिथि मानि गेला। अँगनाक टाट लगसँ पत्नी दुनू गोरेक सभ बात सुनैत रहथिन।

दुनू गोरे तमाकुल खा लोटा लऽ मैदान दिस विदा भेला। घुमैत-फिरैत साँझमे घरपर एला। घरपर आबि दरबज्जापर बैस दुनू गोरे गप-सप्प करए लगला। भानस भेल, दुनू गोरे खेनाइ खा कऽ सुति रहला।

चारि बजिते दुनू गोरेक नीन टुटि गेलैन। जाबे पैखानासँ आबि दतमैन करै गेला ताबे आरती, माने हीरानन्दक पत्नी, चाह बनौलैन। चाह पीविते रहैथ कि सुरुजक उदय भेल।

औझुका सुरुजमे एक विशेष रंगक आकर्षण तीनू गोरेकेँ बुझि पड़लैन। सुरुजक रोशनीमे विशेष आकर्षण छल आकि सभक हृदयमे छेलैन? आरतीक मनमे विशेष आकर्षण छेलैन जे पति नोकरी करए जा रहल छैथ। तहिना हीरानन्दक हृदयमे जिनगीक एक सीढ़ी बढ़ैक आकर्षण रहैन आ अतिथि-मटकन-क हृदयमे अप्पन बेटाक पढ़ैक आकर्षण छल।

चाह पीब हीरानन्द झोरामे धोती-तौनी लऽ दुनू गोरे गप-सप्प करैत विदा भेला। गप-सप्पक क्रममे बुझि पड़लैन जे स्कूल बनबैमे रामाकान्तक विशेष हाथ छैन, तँए गाम पहुँचते मटकनकेँ कहलखिन-

"पहिने रामाकान्तसँ भेँट कऽ लेबैन तखन दादी ऐठाम जाएब।"

दुनू गोरे रामाकान्त ऐठाम पहुँचला। साठि वर्षीय रामाकान्त गाइक नादिमे अपनेसँ कुट्टी-सानी लगबैत रहैथ। दलानपर दुनू गोरेकेँ देखि हाँइ-हाँइ हाथ धोइ लग आबि बैसैले कहलखिन। हीरानन्द चौकीपर बैसला मुदा मटकन ठाढ़े रहल। मटकनकेँ रामाकान्त कहलखिन-

"तूँ आगू बढ़ि जाह। हम दुनू गोरे पाछूसँ अबै छी। जखन मास्टर साहैब दुआरपर एला हेन तँ बिना जलखै केने केना जाए देबैन.?"

मटकन आगू बढ़ि दादी लग पहुँच सभ समाचार सुनौलक। समाचार सुनि दादीक मन खुशीसँ नाचि उठलैन। मनमे हुअ लगलैन जे आब गामक बच्चा अन्हारसँ इजोत दिस बढ़त।

जलखै कऽ चाह पीब रामाकान्त आ हीरानन्द दादीक ऐठाम विदा भेला। दादीक घर थोड़बे हटल छैन। रास्तामे रामाकान्तक मनमे आबए लगलैन जे स्कूल तँ बेकतीगत संस्था छी नहि, छी तँ सामाजिक संस्था। तँए सामाजिक संस्थामे सभक सहयोग हेबा चाही। धन्यवाद भौजीकेँ दइ छिऐन जे अप्पन सभटा सम्पैत समाजकेँ दऽ रहल छथिन, मुदा हमरो सभक तँ किछु दायित्व बनिते अछि। से नहि तँ मास्टर साहैबक भोजन आ रहैक जोगार हम कऽ देबैन। दरमाहा रूपमे खेतक उपजा हेतैन आ समाजक सभ मिलिकऽ जँ स्कूलक घर बना दइ तँ सर्वोत्तम होएत। ..एते बात मनमे नचिते छेलैन कि दादी ऐठाम पहुँच गेला। दादीकेँ रामाकान्त 'भौजी' कहै छथिन। किएक तँ सामाजिक सम्बन्धमे दादीक पतिसँ हिनका भैयारीक सम्बन्ध रहैन। दादियो मास्टर साहैबक रास्ता तकिते छेली। हुनका लगमे पहुँचते

रामाकान्त मटकनकेँ कहलखिन- “मटकन, स्कूल गामक एक पैघ संस्था छी। तँए समाजोक लोककेँ खबर दहुन। सभ मिलिकऽ सोचि-विचारि आगूक डेग उठाएब। ओना, भौजीक तियागक प्रशंसा जेतेक कएल जाए ओ कम हएत। जइ सम्पैत खातिर लोक नीच-सँ-नीच काज करैले उतैर जाइए ओइ सम्पैतिक तियाग भौजी कऽ रहली हेन। जखन मास्टर साहैब आबिए गेल छैथ तखन हड़बड़ करैक जरूरत नहि। पहिने सौंसे गामक लोकसभकेँ कहि दहुन, बेरुपहर सभकियो एकठाम बैस विचारि लेब।”

बेर टगि गेल। समाजक सभकियो एका-एकी आबए लगला। सभक मनमे जिज्ञासा रहैन, तँए सभकियो विशेष उत्सुक छला। सभक बीचमे रामाकान्त बजला-

“समाजक सभकियो जनिते छी जे भौजी अप्पन सभटा सम्पैत बच्चासभ लेल दऽ रहल छैथ। जइसँ हमरे अहाँक कल्याण हएत। मुदा हमरो अहाँक दायित्व बनैए जे अपनो सभ किछु भागीदार बनी। जाधैर हम जीबैत रहब ताधैर शिक्षकक रहैक आ भोजनक प्रबन्ध करैत रहबैन आ अहाँसभ स्कूलक घर बना दियौ।”

रामाकान्तक विचारकेँ सभकियो थोपड़ी बजा समर्थन केलखिन। मुस्कियाइत हीरानन्द बजला-

“घर बनैमे किछु समय लगत, तैबीच अहाँसभ अप्पन-अप्पन बच्चाकेँ पठाउ। हम पढ़ाइ शुरू कऽ देब।”

मास्टरो साहैबक विचारकेँ सभ थोपड़ी बजा समर्थन केलैन। थोपड़ी बन्न होइते दुखिया ठाढ़ भऽ अप्पन विचार रखैत बाजल-

“खेती करैले केतए-सँ ओते हर-जन अनता। हमसभ जेतेक बोनिहार छी, सभकियो मिलिकऽ खेती कऽ देबैन। किएक तँ जहिना मास्टर साहैब हमरा सभक सेवा करता तहिना तँ हमहूँ सभ मिलिकऽ हुनकर सेवा करबैन।” ❑

तेसर पड़ाव

छअ माससँ सोनेलालक स्त्री अस्सक छथिन। परोपट्टाक डॉक्टर, बैद, हकीम आ ओझा-गुनी सभकियो थाकि गेला मुदा सुगियाक रोग एक्कैसे होइत गेल जे उन्नैस नइ भेल। फेदरैत-फेदरैतमे सोनेलाल पड़ल रहला। दिन-राति एक्को क्षण मन चैन नहि रहलैन। कखनो डॉक्टर ऐठाम तँ कखनो दवाइ आनए बाजार दौड़ैत रहला। कखनो बच्चा-ले दूध आनए जाथि तँ कखनो माल-जालकेँ खाइ-पीबैले देथिन। अप्पन खाइयो-पीबैक सुधि नै रहलैन। कखनो मनतरियाकेँ बजा आनैथ, तँ कखनो साँढ़-पाराकेँ रोमैले खेत दिस दौड़ैथ। स्त्रीकेँ मरैक जेते चिन्ता होनि तइसँ बेसी चिन्ता तीन बेटीपर सँ भेल चारिम बेटाक रहैन। कोरैले बेटा जन्मैत काल सुगियाकेँ दुख पकैड़ लेलकैन। बच्चा जन्मैत काल तेहेन विक्राल समय भऽ गेल जे सोनेलाल डॉक्टर ऐठाम नइ जा सकला। एक तँ जाड़क मास दोसर, अनहरिया राति। तैपर सँ पछिया हवा सेहो सिहकैत रहइ। बर्खाक बुन्न जकाँ गाछ सभपर सँ पालाक बुन्न टप-टप खसैत। समय देखि सोनेलाल बेवस भऽ गेला। पल्हैनिक घर लगमे रहितो सोनेलाल बजबैले नहि जा सकला। डरो होइत रहैन जे हम ओम्हर जाइ आ एम्हर हिनका किछु भऽ जाइन। गुप-गुप अन्हार। हाथ-हाथ नइ सुझैत। विचित्र संकटमे सोनेलाल पड़ि गेल छला।

जहियासँ बच्चाक जन्म भेल आ स्त्री बीमार पड़लैन, तहियासँ सोनेलालक कोनो दशा बाँकी नै रहलैन। मुदा सोनेलालो हिम्मत नहि हारला। जे कियो जे दवाइ वा प्रतिकारक कोनो वस्तुक नाओं कहैन ओ आनि सोनेलाल सुगियाकेँ देथिन। अन्तमे पाँच कट्ठा खेत पाँच हजारमे भरना लगा लहेरियासराय जाइक विचार कऽ लेलैन। बच्चो सभ छोट-छोट तँए घरो आ बाहरो सम्हारैले आदमीक जरूरत भेलैन। घर सम्हारैले सारि आ लहेरियासराय जाइले सोनेलाल अप्पन बहिनकेँ बजौलैन। स्त्रीक दूध सुइख गेलैन तँए बच्चाकेँ बकरीक दूध उठौना केने छला। बहिनक छोटका बच्चा नमहर भऽ गेल छेलै तँए ओकरो दूध सुइख गेल। मुदा बच्चाक दशा देखि

बहिन मौसरी दालिक झोड़ो पीबए लगल आ बच्चोकेँ छाती चटबए लगल, जइसँ कनी-कनी दूध पोनगए लगलइ।

लहेरियासराय जाइक तैयारीमे सोनेलाल लगि गेला। मालक घरमे टाँगल खाटकेँ उताइर झोल-झाल झाड़ए लगला। खाटक झोलो झाड़लैन आ केतौ-केतौ जे जौड़ टुटल रहै ओकरो जोड़ि-जोड़ि बान्हलैथ। बहिनकेँ सोनेलाल कहलखिन-

"दाइ, नुआँ-वस्तर आइये खीच लएह, भोरके गाड़ी पकड़ए विदा हएब। दस दिन-जोकर चाउरो-दालि लइये लेब। चाउर तँ कोठीए मे छह, खाली दालि दर्ड़रए पड़तह। सभ ओरियान आइये करिकऽ रखि लएह।"

भाइक विचार सुनि बहिन बजली-

"भैया, तोहर कोन-कोन कपड़ा साफ कऽ देबह?"

"दाइ, एक जोड़ धोती, अँगा आ चद्दैर हम्मर आ तूँ अपनो कपड़ा खीच लीहह। अखन तँ एकटा धोती पहिरनहि छी। अलगन्नीपर धोती छह, ओकरा अखने खीच दहक जइसँ नहाइ बेर तकमे सुइख जाएत। नहाकऽ उ धोती पहिर लेब आ अखन जे पहिरने छी, एकरा खीच लेब।"

सारि सेहो लगेमे ठाढ़ छेली, हुनका देखि सोनेलाल बजला-

"अहाँ दुआर-दरबज्जासँ केतौ बाहर नइ जाएब। अँगने-घरमे बच्चो सभकेँ राखब आ मालो-जालकेँ खाइ-पीबैले देबइ। समय साल गड़बड़ अछि, तोहूमे ऐ गाममे देखिते छिऐ जे नव-कबरिया छौड़ासभ भाँग-गाँजा पीब लइए आ अनेरो लोककेँ गरियबैत रहैए। जँ कियो उकट्ठे कऽ दिअए।"

बहिन कोठीसँ मौसरी दालि आ चाउर निकालि अँगनेमे बिछानपर सुखैले देलक। नवकुटुए चाउर तँए सूरा-फाड़ा नहियेँ लगल छल। बहिन कपड़ा खीचए गेल आ सारि मौसरी दर्ड़ए लगली। सोनेलाल खाट ठीक कऽ दूटा बरहा दुनू भागक पाइसमे बान्हलैन। कपड़ा खीच बहिन सोनेलालकेँ पुछलकैन- "भैया, केते चाउर-दालि लऽ जेबहक?"

सोनेलाल बजला- "दाइ, दुइये गोरे खेनिहार रहब ने, तइ हिसाबसँ चाउरो आ दालियो लऽ लएह। तीमन-तरकारी ओतै किनब।"

बहिन- "भैया, नून तँ ओतौ कीनि लेब मुदा मिरचाइ, हरदी आ

करुतेल एतैसँ नेने जाएब। एकटा थारी, एकटा लोटा आ दुनू छोटकी डेकची सेहो लइये लेब। डेकचीए-मे सभ सामान लऽ लेब, किएक तँ फुट-फुट कऽ लेलासँ अनेरे नमहर मोटरी भऽ जाएत। खाइयोक चीज-वौस रहत आ लत्तो-कपड़ा रहत मुदा तैयो मोटरी नम्हरे भऽ जाएत।"

सोनेलाल- "मोटरी नम्हरे हएत तँ की करबै। जखन गाड़ामे ढोल पड़ल अछि तखन तँ बजबै पड़त किने।"

लहेरियासराय जाइक तैयारी करैत बहिनक मनमे उठलैन जे भगवान भारी विपैतमे भैयाकेँ फँसा देलैन। जँ कहीं भौजी मरि जाएत तँ भैया फटो-फन्नमे पड़ि जाएत। असगरे की करत। बच्चो सभ लिधुरिये छइ। केना खेती सम्हारत, धिया-पुताकेँ देखत आकि माल-जालकेँ देखत! हे भगवान! एहेन विपैत सात-घर मुद्दैयोकेँ नै दिहक। हमहीं की करबै। हमहूँ तँ असगरूए छी। हमरो चारि टा धिया-पुता आ माल-जाल अछि। छी ऐठीम आ मन टाँगल अछि गामपर। मुदा एहेन बेरमे जँ भैयोकेँ नै देखबै तँ लोक की कहत। लोके की कहत जे अपनो मन थोड़े नीक कहत.?

साँझ पड़िते सोनेलाल टीशन जाइले दूटा जन ताकए गेला। ओना तँ अपनो दियाद-वाद छैन्हे मुदा बेरपर केकर के होइए। अचताइत-पचताइत सोनेलाल फुद्दिया ऐठाम पहुँचला। फुद्दियाक जेहने नाओं तेहने काज। सोनेलालकेँ देखिते ओ पुछलकैन-

"केम्हर-केम्हर एलह, भाय?"

"तोरेसँ काज अछि, फुद्दी।"

"की, बाजह ने?"

"काल्हि, भोरुका गाड़ी पकड़ब। रेखिया माएकेँ लहेरियासराय लऽ जेबइ। अपनेसँ चलैयो-फिरैवाली ने अछि, खाटपर लऽ जाए पड़त। तँए दू गोरेक काज अछि।"

फुद्दिया बाजल- "तोरा जँ हमर खूनक काज हेतह तँ हम सेहो देबह। तोहर उपकार हम जिनगी भरि नै बिसरब, भैया। हमरा ओहिना मोन अछि जे बेटी विदागरी करैले तीन दिनसँ जमाए बैसल रहैथ आ कपड़ा दुआरे विदागरी नै करिऐ। मुदा जहिना आबिकऽ तोरा कहलियह तहिना तोहूँ रुपैआ निकालि कऽ देने रहह। एहेन उपकार हम बिसैर जाएब।"

सोनेलाल-

“समाजमे अहिना सभक काज सभकेँ होइ छै आ होइत रहतै। जँए तोरापर भरोस छल तँए ने एलौं हेन। पाँच बजे भोरेमे गाड़ी अछि। एक घन्टा पहिने घरपर सँ विदा हएब।”

“बड़बढ़ियाँ, चारिए बजेमे हमरा सभदिन नीन टुटि जाइए। हम दुनू भाँइ चलि एबह। तोहूँ अप्पन तैयारीमे रहिहह। भऽ सकैए जे कहीं नीन नै टुटए तँए एक लपकन चलि अबिहह।”

फुद्दी ऐठामसँ आबि सोनेलाल बहिनकेँ कहलखिन-

“दाइ, सभ चीज एकठीन सेरियाकऽ रखि लएह, नहि तँ जाइत काल हड़बड़मे छुटि जेतह।”

सोनेलालक बात सुनि बहिन मने-मन सोचए लगली जे कोनो चीज छुटि तँ ने गेल। गुनधुन करैत बजली-

“भैया, एकबेर फेरसँ सभ चीजक नाओं कहि दएह। अखने मिलाकऽ सेरिया लेब।”

दुनू भाए-बहिन एक-एक करिकऽ सभ वस्तुक नाओं लेलैन। सभ वस्तु देखि सोनेलाल बजला-

“दाइ, चारि बजे उठैक अछि जँ भानस भऽ गेलह तँ अखने खाइले दऽ दएह।”

हाथ-पएर धोइकऽ सोनेलाल खाइले बैसला। चिन्तित मन रहैन तँए खाएले ने होनि मुदा तैयो जीह जाँतिकऽ कहुना-कहुना चारि कौर खेलैथ। खा कऽ मालऽ घर गेला। माल-जालकेँ खाइले दऽ आबिकऽ सुति रहला। बहिनो खा कऽ बच्चाकेँ छाती लगा पड़ि रहली। पड़ले-पड़ल बहिन भौजाइकेँ पुछलैन-

“भौजी, मन नीक अछि किने?”

“हँऽऽ।”

ओछाइनपर पड़ल सोनेलालकेँ नीने ने होइन। विचित्र द्वन्द्वमे पड़ल छला। एकदिस भोरे उठै दुआरे सुतए चाहैथ तँ दोसर दिस पत्नीक चिन्ता नीनकेँ आबइ ने दैन। कछ-मछ करैत सोनेलालकेँ केत्ता-रातिमे हाँफी भेलैन,

नीन एलैन। मुदा लगले चहाकऽ उठि बहिनकेँ पुछलखिन- “दाइ, भोर भऽ गेल?”

बहिनो जगले छल, बाजल- “भैया, अखने तँ खा कऽ कड़ देलौं हेन। लगले भोर केना भऽ जाएत?”

तीन बजे भोरे दुनू भाँइ फुद्दिया आबि डेढ़ियापर सँ शोर पाड़लक-

“सोनेलाल भाय? हौ सोनेलाल भाय? अखन तक सुतले छह? उठह-उठह, भुरूकबा उगि गेलह!”

फुद्दियाक आवाज सुनि दुनू भाए-बहिन सोनेलाल धड़फड़ा कऽ उठलैथ। आँखि मिड़िते सोनेलाल बाहर निकैल फुद्दीकेँ कहलखिन-

“की कहियह, बड़ी रातिमे नीन भेल। भने तूँ आबिकऽ जगा देलह। हम चीज-वौस निकालै छी आ तूँ खाटकेँ सुढ़ियाबह।”

अन्हारक दुआरे बहिन दूटा डिबिया नेसलक। एकटा डिबिया ओसारक खुट्टा लग रखलक आ दोसर, घरमे देलक। खाट निकालि फुद्दी पाइसमे बान्हल बरहाकेँ अजमाकऽ देखलक जे सक्कत अछि किने। दुनू कात पाइसमे बान्हल बरहाकेँ देखि फुद्दी सोनेलालकेँ कहलकैन-

“भाय, बरहा तँ ठीक छह। बाँसक टोन कहाँ अछि?”

बाँसक टोन घरक पँजरेमे राखल छल। टोनकेँ ओंगरीसँ देखबैत सोनेलाल कहलखिन-

“हैवैह छह।”

बाँसक एकटा टोन आनि फुद्दी डिबियाक इजोतमे देखए लगल जे गिरह सभ छीलल अछि कि नहि। छीलल छेलइ। खाटपर बिछबैले सोनेलाल एक पाँज पुआर नेने आबि बजला-

“फुद्दी, तोरा अँटियबैक लूरि छह, कनी पुआर सेरियाकऽ चौरस करिकऽ खाटपर बिछा दहक।”

पुआरकेँ सेरिया, फुद्दी बाजल- “भाइ, ऐपर बिछेबहक की?”

सोनेलाल घरसँ शतरंजी आ सिरमा आनि फुद्दीकेँ देलखिन। बिछान सेरिया फुद्दी बाजल- “भाय, रास्तामे कान्ह बदलैत काल कहीं भौजी गिर-तिर ने पड़ैथ तँए पँजरोमे दुनू भागसँ डोरी बान्हि देबइ?”

फुद्दीक विचार सोनेलालकेँ जँचलैन। कनी गुम्म भऽ बजला-

“की कहियह फुद्दी, दुख पड़लापर मनो वौआ जाइत अछि। तोहूँ की अनाड़ी छह जे नइ बुझबहक। जे नीक बुझि पड़ह, से करह।”

खाटपर रोगीकेँ चढ़ा दुनू भाँइ फुद्दी कान्हपर उठौलक। कान्हपर उठैबिते सोनेलालकेँ मोन पड़लैन, बजला-

“फुद्दी, घरमे तँ धिए-पुते रहत, कियो चेतन नहियेँ अछि। सारि सेहो आएल अछि, ओहो अनठीए अछि तँए तूँ राति-के एतै खैहह आ सुतिहह।”

‘बड़बढ़ियाँ’ कहि फुद्दी आगू बढ़ल। चाउर-दालि आ बरतन-बासनक मोटरी माथपर लऽ सोनेलालो निकलला। बच्चाकेँ छाती लगौने बहिनो निकलली। डेढ़ियापर अबिते सुगिया खाटेपर सँ बजली- “कनी अँटैक जाउ।”

फुद्दी ठाढ़ भऽ पुछलकैन-

“किए रोकलौं?”

खाटेपर सँ सुगिया बजली-

“हे साधु-गुरु, अगर निकेना घुमिकऽ आएब तँ पचास मुरतेक भनडारा करब।”

फुद्दी खाट उठा विदा भेल। रास्तामे कियो किछु ने बजैत। मने-मन सभ, सभ रंगक बात सोचैत। फुद्दी सोचैत जे भगवानो केहेन बेइमान अछि जे सोनेलाल भाय सन सुधा आदमीकेँ एहेन विपैत देलखिन।

सोनेलाल सोचैथ जे तीन बेटीपर बेटा भेल, जँ घरवाली मरि जाएत तँ बेटो हाथसँ चलि जाएत। चुमौन जँ करबो करब तइसँ बेटाक कोन गारंटी। जँ कहीं बेटीए भेल तखन तँ खनदानोक अन्त हएत आ जिनगी भरि अपनो बिआहे दानक बनर-फाँसमे पड़ल रहब...।

बहिन सोचैत जे जँ कहीं भौजी मरि जेती तँ जिनगी भरि भैयाकेँ दुखे-दुख होइत रहत। हे भगवान.! एना किए करै छहक.!

स्टेशन पहुँच सोनेलाल मोटरी रखि गाड़ीक भाँज लगबए गेला। टिकट कटैत देखि बुझि पड़लैन जे गाड़ी अबैमे लगिचा गेल अछि। हमहूँ टिकट कटाइये लइ छी। टिकट कटौलैन।

कनीए कालक बाद गाड़ी आएल। तीनू गोरे मिलिकऽ हाथे-पाथे सुगियाकेँ गाड़ीमे चढ़ौलैन। सोनेलाल गाड़ीए-मे रहला। मोटरी उठाकऽ फुद्दी देलकैन। मोटरी रखि सोनेलाल बहिनक कोरासँ बच्चाकेँ अपना कोरामे लेलैन। बहिनो चढ़ल। गाड़ी खुजिते दुनू भाँइ फुद्दी खाट उठा घर दिस विदा भेल।

गाड़ी दरभंगा पहुँचल। छोटी लाइन दरभंगे तक चलैए। दू घन्टाक बाद फेर घुमिकऽ गाड़ी निर्मलीए जाएत। गाड़ीसँ यात्री सभ उतरए लगला। मुदा सोनेलाल सबतूर बैसले रहैथ। मनमे कोनो हड़बड़ी नइ रहैन। जखन सभ यात्री उतैर गेला तखन सोनेलाल सीटपर सँ उठि बहिनकेँ कहलखिन-

"दाइ! तूँ एतै रहह, हम कोनो सवारी भँजियौने अबै छी।"

कहि सोनेलाल गाड़ीसँ उतैर प्लेटफार्मक बाहर एकटा टेम्पू लग पहुँचला। ड्राइवर निच्चाँमे ठाढ़ भऽ पसिंजर सभकेँ ताकि रहल छल। सिरसिराइत सोनेलाल ड्राइवरकेँ कहलखिन-

"भाय, हमरा डाकडर ऐठाम जेबाक अछि, चलबह?"

सोनेलालक बोलीसँ ड्राइवर बुझि गेल जे देहाती आदमी छी तँए एना बाजल अछि। मुदा सोनेलालक प्रति ड्राइवरक आकर्षण बढ़ि गेलैन। असथिरसँ पुछलखिन-

"रोगी कहाँ छैथ?"

"गाड़ीए-मे।"

"बजौने अबियौन।"

"अपने पएरे अबैवाली नै छैथ। पकैड़ कऽ आनए पड़त।"

गाड़ीकेँ सोझ कऽ ड्राइवर सोनेलालक संग प्लेटफार्मपर एला। गाड़ी लग पहुँच ड्राइवर रोगी आ सामान सभकेँ देखि मने-मन विचारलैन जे एक आदमीक काज आरो पड़त। प्लेटफार्म दिस नजैर उठाकऽ हियाबए लगला। गाड़ी साफ करैले दू गोरेकेँ अबैत देखि शोर पाड़ैत बजला-

"भैया?"

'भैया' सुनि झाड़ूबला आँखि उठौलक तँ ड्राइवरकेँ देखलक। ड्राइवरकेँ देखिते लफैर कऽ लगमे आबि बजला- "की?"

ड्राइवर कहलखिन- “भाय, एकटा दुखित महिला ऐ कोठरीमे छैथ, हुनका उतारिकऽ टेम्पूमे बैसा दियौन।”

झाड़ू रखि दुनू झाड़ूओबला आ ड्राइवरो सुगियाकेँ उताइर टेम्पू दिस बढ़ला। सोनेलाल मोटरी लेलैन आ बहिन बच्चाकेँ कन्हा लगा विदा भेल। सुगियाकेँ टेम्पूपर चढ़ाकऽ झाड़ूबला गाड़ी साफ करैले घुमए लगल। दुनू झाड़ूबलाकेँ रोकि सोनेलाल एकटा दसटकही निकालि दिअ लगलखिन। रुपैआ देखि, अधबेसू झाड़ूबला कहलकैन- “भाय, हमहूँ रेलवेमे सरकारी नोकरी करै छी। दरमाहा पबै छी। अहाँक मदैत केलौं। अखन जइ मोसीबतमे अहाँ छी, ओइमे हमरा देहो आ रुपैओसँ मदैत करक चाही। मुदा गरीब छी, कहुना-कहुना कमाकऽ गुजर कऽ लइ छी। किएक तँ अहूँ बुझिते हेबै जे सभ दुख गरीबेकेँ होइ छइ। धनीक लोक सोनाक मुरूतकेँ खोआ-मलाइ चढ़ा धर्म करैए। हमर भगवान यएह मरल-टुटल लोक छैथ। हम सेवा केलौं। भगवान करैथ जे हँसी-खुशीसँ अहाँ घर जाइ। ई दसटकही अहाँ अपने राखू।”

झाड़ूबलाक बात सुनि सोनेलाल अचम्भित भऽ गेला जे जेकरासँ लोक छूत मानैए, ओकर आत्मा केतेक पवित्र अछि.!

टेम्पू आगू बढ़ल। थोड़ेक दूर गेलापर सोनेलाल ड्राइवरकेँ कहलखिन-

“डरेबर साहैब, हम अनभुआर छी। कहियो ऐठाम नै आएल छी। अहाँ एतए रहै छी, सभटा बुझल-गमल अछि। तेहेन डाकडर लग चलू जे हमरा रोगीकेँ छुटि जाए।”

ड्राइवर कहलकैन- “बड़बढ़ियाँ।”

मने-मन ड्राइवर सोचए लगला जे सरकारी अस्पतालमे भरती करौनाइ नीक नै हेतैन। एक तँ अस्पतालमे बेवस्थो बढ़ियाँ नै छै आ दोसर, जेकरे लागि-भागि छै तेकरे सभकेँ सभ सुविधो भेटै छइ। तँए सभसँ बढ़ियाँ डॉक्टर बनर्जी लग लऽ चलिऐन। डॉक्टर बनर्जी रिटायर भऽ अप्पन घरो आ क्लिनिको बनौने छैथ। डॉक्टरो नीक आ मनुक्खो नीक छैथ।

बारह बाजि गेल छल। डॉक्टर बनर्जीक पहिल पाली आठ बजे भिनसरसँ बारह बजे तक आ दोसर पाली चारि बजे बेरुपहरसँ सात बजे साँझ धरिक होइ छैन। सभ रोगीकेँ देखि डॉक्टर बनर्जी अप्पन डेरा जाइक

तैयारी करिते रहैथ कि तैबीच टेम्पूकेँ ड्राइवर सोझे फाटकसँ भीतर, ओसार लग लऽ गेल। टेम्पू देखि डॉक्टर बनर्जी फेर बैस रहला। टेम्पू रोकि ड्राइवर उतरिकऽ सोझे डॉक्टर बनर्जी लग जा कऽ बाजल- "डॉक्टर साहैब, रोगी अपनेसँ चलै-फिरैवाली नै छैथ, तँए पहिने एकटा डेरा दियौन।"

आँखिक इशारासँ डॉक्टर बनर्जी कम्पाउण्डरकेँ कहलखिन। बगलेमे अप्पन डेरा रहैन। कम्पाउण्डर जा कऽ एकटा कोठरी खोलि कुँजी सोनेलालकेँ दऽ देलकैन। कम्पाउण्डर घुमिकऽ आबि, नोकरकेँ संग कऽ स्ट्रेचरपर सुगियाकेँ लऽ जा दुजनियाँ चौकीपर सुता देलकैन। स्ट्रेचर रखि कम्पाउण्डर डॉक्टर साहैब लग आबि बाजल- "सभ बेवस्था कऽ देलिऐन।"

डॉक्टर बनर्जी आगू-आगू आ कम्पाउण्डर, ड्राइवर आ सोनेलाल पाछू-पाछू लगमे गेला। सुगियाकेँ देखिते डॉक्टरकेँ रोग परखमे आबि गेलैन, मुदा आरो मजगूती लेल किछु-किछु पुछए लगलखिन।

हतास मन सोनेलालक। मुँह सुखाएल। आँखि नोराएल। बहिनक आँखिसँ नोरक ठोप खसैत। डॉक्टर बनर्जी कम्पाउण्डरकेँ सूइ लगबैले कहलखिन। कम्पाउण्डर सूइ आनए गेल। सोनेलाल डॉक्टर बनर्जीकेँ पुछलखिन-

"डागडर साहैब, रोगीक दुख छुटतै किने?"

सोनेलालक प्रश्न सुनि डॉक्टर बनर्जीक हृदय पघिल गेलैन। उत्साह दैत सोनेलालकेँ कहलखिन-

"चौबीस घन्टाक भीतर रोगी टहलए-बुलए लगती। अखन एकटा सुइया दइ छिऐन। पाँच बजे तक सूतल रहती। उठेबैन नहि। अपने नीन टुटतैन। नीन टुटलापर कुर्ड़ा-आचमन करा चाह बिस्कुट देबैन।"

ताबे कम्पाउण्डर आबि सुगियाकेँ सूइ लगौलक। सूइ पड़िते सुगियाकेँ नीन आबि गेल। डॉक्टर बनर्जी सोनेलालकेँ कहलखिन- "आब अहाँसभ खाउ-पीबू-गे।"

डॉक्टर चलि गेला। ड्राइवर सोनेलालकेँ किछु-किछु बुझबैत कहलखिन- "पानिक कल बगलेमे अछि। भानस करैले चुल्हो अछिए। अपने भानस करब। बाहर चलू, दोकान देखा दइ छी। ऐसँ बाहर नै जाएब। ऐठाम लुच्चे-लम्पट बेसी अछि। जेबीसँ पाइ निकालि लेत, तँए जेतबे काज हुअए

तेतबे पाइ मुट्ठीमे नेने जाएब आ सामान कीनि लेब। आब हम जाइ छी। ऐठाम कोनो चीजक डर नै करब। सभ भार डॉक्टर साहैबक छैन।"

पाँच बजिते सुगिया आँखि खोलली। सुगियाक लगेमे सोनेलालो आ बच्चाकेँ कोरामे नेने बहिनो बैसल छल। आँखि खोलिते सुगिया पड़ले-पड़ल बजली-

"किछु खाइक मन होइए।"

सुगियाक बात सुनिते सोनेलालकेँ मोन पड़लैन जे डॉक्टरो साहैब कहने रहैथ। उठिकऽ चाह-बिस्कुट आनि सुगिया लग रखलैन। कलपर सँ लोटामे पानि आनिकऽ कुड़ी करैले देलखिन। बैसले-बैसल सुगिया कुड़ी करि चाहेमे डुमा-डुमा बिस्कुट खेलैन। चाह-बिस्कुट खा मुँह पोछलैन। सुगियाकेँ मुँह पोछिते सोनेलाल पुछलखिन-

"मन केहेन लगैए?"

"कनी हल्लुक लगैए।"

सोनेलालो आ बहिनोक मनमे खुशी आएल। मने-मन बहिन भगवानकेँ कहए लगलैन-

"हे भगवान.! कहुना भौजीकेँ नीक कऽ दियौन!"

सुगियाकेँ सुधार हुअ लगलैन। तेसर दिनसँ बुलए-टहलए लगली। दिनमे दू बेर डॉक्टरो साहैब आबि-आबि देखैत रहथिन। सभ तरहक तरद्दुत सोनेलाल करैले हरिदम तैयार।

दसम दिन सुगियाकेँ डॉक्टर साहैब छुट्टी दऽ देलखिन। सोनेलाल कम्पाउण्डरसँ सभ हिसाब केलैन। जेते हिसाब सोनेलालकेँ भेलैन तइसँ पाँच साए रुपैआ अधिक लऽ डॉक्टर साहैबक आगूमे रखि देलकैन। रुपैआ गनि डॉक्टर साहैब फजिलाहा पाँचो साए रुपैआ घुमबैत बजला-

"गनैमे पाँच साए बेसी आबि गेल। ई पाँचो साए रखि लिअ।"

डॉक्टर साहैबक बात सुनि सोनेलाल कहलकैन-

"गनैमे गलती नै भेल, पाँच साए अहाँकेँ खुशनामा दइ छी।"

'खुशनामा' सुनि डॉक्टर बनर्जी गुम्म भऽ गेला। मनमे एलैन, वेचाराक बगए-वाणि कहैए जे पैंच-उधार करिकऽ आएल हएत, मुदा तखनो देखू

हिनकर उद्गार.! हमरा कोन चीजक कमी अछि जे ऐ वेचाराक फाजिल पाइ छुबै? मोन पड़लैन जमीनदारीक समैयक पुनाह...।

जमीन्दार सभ सालमे एकबेर पुनाह करै छला। जमीन्दारक कचहरीमे पुनाह होइ छेलइ। पुनाह होइसँ पनरह दिन पहिनहि रैयत सभकेँ जानकारी दऽ देल जाइ छल। जमीन्दार दिससँ मोतीचूड़ लड्डू बनौल जाइ छल। एक रुपैआमे एक लड्डू देल जाइ छल। रैयतोमे दू विचारक लोक छला, एक ओ जिनका खाली अन्नेक आमदनी छेलैन। ओइ तरहक रैयतक हालत कमजोर रहैन। मुदा दोसर तरहक जे रैयत होइ छला हुनका अन्नक संग-संग नगदो आमदनी रहैन। जेना, कोनो-कोनो जातिकेँ दूध-दहीक, तँ कोनो-कोनो जातिकेँ तीमन-तरकारीक आ कोनो जातिकेँ पानक तँ कोनो जातिकेँ छोट-छोट कौल्ह इत्यादि..। पुनाह धर्मसँ जोड़ल शब्द अछि। धार्मिक भावना सभक मनमे रहै छल तँए एक-दोसरकेँ निच्चाँ देखबैले मने-मन प्रतियोगिता सदृश आयोजन होइत छल। एकटा लड्डूक दाम मोसकिलसँ दू पाइ होइत हेतइ। किएक तँ आठ अने चिन्नी आ रुपैआमे चारि सेर खेरही वा आन कोनो अन्न भेटै, जेकर लड्डू बनैए। प्रतियोगिता दू तरहक होइ छल। पहिल, बेकती-विशेषमे आ दोसर, जाति-विशेषमे। लोक खूब खुशी रहै छला। गामे-गाम मालगुजारीसँ बेसी पुनाहमे जमीन्दारसभ रुपैआ असुल कऽ लइ छला। जइ समाजमे मालगुजारीक चलैत लोकक खेत निलाम होइ छेलै, ओइ समाजमे पुनाहक नाओंपर लूट सेहो चलै छल। वएह बात डॉक्टर बनर्जीकेँ मोन पड़लैन। हँसैत डॉक्टर बनर्जी सोनेलालकेँ कहलखिन- "अहाँ, खुश भऽ कऽ ऐठामसँ जा रहल छी यएह हमर खुशनामा भेल। भगवान करैथ परिवार फड़ए-फुलए।"

तीनू गोरे गामक रास्ता धेलैन। बच्चाकेँ सुगिया कोरामे नेने, बहिन बर्तनक मोटरी माथपर नेने आ खालीए देहे सोनेलाल विदा भेला। सभकियो दरभंगा स्टेशनपर आबि गाड़ी पकड़लैन।

अपना स्टेशनपर, माने तमुरिया स्टेशनपर, उतैर तीनू गोरे हँसी-खुशीसँ गाम दिसक रास्ता धेलैन। रेलवे कम्पाउण्डसँ निकैल सुगिया सोनेलालकेँ कहलकैन- "दरभंगा जाइत काल पचास मुरते साधुक भनडारा कौबुला केने रही। कौबुला-पाती उधार नै रखक चाही। काल्हिखिन ओहो

कौबुला पुराइये लेब।"

सोनेलालोक मन खुशी रहैन। चाउर-दालि घरेमे अछि। रुपैओ किछु उगरले अछि। मुस्कियाइत सुगियाकेँ कहलखिन- "काल्हिए भनडारा नइ सम्हरत। दही पौरैक अछि, हाटसँ तीमन-तरकारी, नून-तेल आनए पड़त। चारि-पाँच दिनमे भनडारा कए लेब। अखन दाइयो आएले अछि।"

'दाइ' सुनि बहिन बाजल-

"भैया, तूँ तेहेन गड़ूए मे पड़ि गेल छेलह जे हम अप्पन सभकिछु छोड़िकऽ छिअ। तूँ नइ बुझै छहक जे हमरो कियो दोसर करताइत नइए। काल्हि हम चलि जेबह।"

सोनेलालक मन गदगद रहबे करैन। जहिना चुल्हिपर चढ़ौल पानि देल बर्तनमे निच्चासँ आगिक ताउ लगिते निचला पानि गर्म भऽ ऊपर-मुहेँ उठैए तहिना सोनेलालक मन खुशीसँ ऊपर उठि रहल छेलैन। स्टेशनसँ निकैल बजला-

"अहाँ दुनू गोरे अहीठाम बैसू। लगले हम चीज-वौस किनने अबै छी।"

सुगियो आ बहिनो, रस्ते कातमे आमक गाछक निच्चाँमे बैसली। सोनेलाल स्टेशन दिस विदा भेला। स्टेशने कातमे आठ-दस टा दोकान अछि। एकटा दोकान माछक आ दोसर, मुरगी आ अण्डाक, एकटा सुधा दूधक, एकटा चाहक, एकटा पानक आ पान-छअ टा दोकान तीमन-तरकारीक सेहो अछि।

सोनेलालक मनमे एलैन जे पान-सात रंगक तरकारियो, दूधो आ राहरिक दालि सेहो कीनियेँ लेब। किएक तँ छअ मासँ ने भरि पेट अन्न खेलौं आ ने कहियो मन असथिर रहल। तँए आइ राति अपनो सभ परिवार आ फुद्दियो दुनू भाँइकेँ नौत दऽ खुआ देबइ।

रेलवेक कम्पाउण्डमे जे तरकारी, दूध, माछ इत्यादिक दोकान अछि ओ स्थायी नहि अछि। साधारण छपरी टाँगि-टाँगि लोक दोकान चलबैत अछि। कोनो दोकानदार रेलवेसँ दोकानक पट्टो नहि बनौने अछि। स्टेशनेक स्टाफ दोकानदारकेँ दोकान लगबए देने छै, जइसँ बट्टीक बदला सभकेँ परिवार-जोकर तरकारी सभदिन भऽ जाइ छइ। जहिया कहियो रेलवेक

अफसरक आगमनक योजना बनैए, तइसँ पहिनहि स्टाफ दोकानदार सभकेँ कहि दइ छै जइसँ सभ दोकानदार अप्पन-अप्पन दोकानक छपरी हटा लैत अछि।

दोकान आ रेलवेक बीच मोड़पर ठाढ़ भऽ सोनेलाल सोचए लगला जे दोकानमे जे राहरिक दालि बिकाइए ओ अरबा रहैए। तँए दालिकेँ उलबए पड़त। घरमे तँ लोक पहिने राहैर उला लइए। बिनु उलौल राहरिक दालि तँ खेसारीए जकाँ होइए। मुदा उलौलाक बाद आमील देल राहरिक दालि तँ दालिए होइए! सभसँ नीक...।

लटखेना दोकानपर पहुँच सोनेलाल एक किलो राहरिक दालि आ आधा किलो चिन्नी किनलैन। दुनू सामानक दाम दऽ तरकारीबला लग आबि सात-आठ रंगक तरकारी सेहो किनलैन। तड़ै-जोकर गोलका भाँटा-भाँटिन, गंगाकातक बड़का परोर आ टेबिकऽ हैदराबादी ओल सेहो किनलैन। दू किलो सुधा दूध सेहो लेलैन। सभ सामानकेँ गमछामे बान्हि, हाथमे लटकौने घुमिकऽ सुगिया लग एला...।

गमछामे बान्हल सामान देखि बहिन पुछलकैन-

"भैया, की सभ कीनि लेलहक?"

बहिनक मनमे भेलै जे धिया-पुता सभ-ले भरिसक लाइ-मुरही कीनि लेलैन। मोटरी सेहो नमहर रहइ। बहिनक बात सुनि सोनेलाल हँसैत बजला-

"दाइ, खाइ-पीबैक समान सभ किनलौं हेन। आइ सभ परानी मिलि नीक-निकूत खाएब। वेचारा फुद्दियो नोकर जकाँ घरक ओगरबाही करैत हएत। तँए ओकरो दुनू भाँइकेँ नौत दऽ खुआ देबइ। तीमन-तरकारी, दूध आ दालि कीनि लेलौं। भानस करैले तोहूँ तीन गोरे छेबे करह। एक्को दिन तँ तोरो सभक मेजमानी हुअए। दाइ, जेते अनका भाइयोसँ सुख नै होइ छै, तइसँ बेसी तोरासँ हमरा भेल अछि। तोहर उपकार जिनगीमे हम कहियो नइ बिसरब। भगवान तोरा सन बहिन सभकेँ देथुन।"

सोनेलालक बात सुनि गदगद होइत बहिन उत्तर देलकैन-

"भैया, हम तँ अप्पन काज केलौं हेन। तोहर उपकार थोड़े केलियह हेन। एहेन बेरपर जे तोरा नै देखितौं तँ हमरा सन बहिन केकरो रहिये कऽ की हेतइ?"

ननैदिक बात सुनि सुगिया पति दिस तकैत बजली- “दाइ तँ औगुताइए। कहैए जे काल्हि भोरे चलि जाएब। घरमे एकोटा धराउ साड़ियो ने अछि जे देबैन। बिना साड़ी देने केना जाए देबैन, केहेन हएत?”

भौजाइक बात सुनि मुस्कियाइत ननैद बाजल- “भौजी, चारू बेटा-बेटीक बिआहमे तँ हमरा-ले चारि जोड़ साड़ी रखले अछि। एहेन बेरमे साड़ीक कोन काज अछि। अपने तँ भैया पैंच-उधार लऽ कऽ काज चलौलक हेन। तैपर सँ हमरो-ले करजा करत। हमरा जँ दियौ चाहत तँ नइ लेबइ।”

घरपर अबिते परिवारसँ गाम धरि खुशीक बरखा बरिसए लगल। तीनू बच्चा सुगियाक गरदैनमे लटपटा गेल। सुगिया बच्चाकेँ कोरामे लऽ लऽ मुँह चुमए लगली। जहिना जाड़क मासमे गाछ-बिरीछ पालाक मारिसँ ठिठुइर जाइए आ गरमी धबिते नव रूप धारण कऽ लइए तहिना सभकेँ भेलइ। छअ मासक तबाही, सोग, निराश सोनेलालकेँ छोड़ि पड़ा गेल। पास-पड़ोसक जनिजाति सभ आबि-आबि सुगियाकेँ देखबो करैत आ बीमारीक इलाजक क्रममे दरभंगाक खिस्सो सुनैत। एक्के-दुइये सौंसे अँगनासँ धियो-पुतोक आ जनिजातियोक भीड़ हटल। तीनू गोरे भानसक जोगारमे लगि गेली। केते दिनसँ सोनेलाल भरि इच्छा नहाएल नै छला। साबुन लऽ कऽ नहाएले गेला।

भानस भेल। सभकियो भरि मन खेनाइ खेलैन। खाइते सभकेँ ओंघी आबए लगलैन। सभकियो जा-जा कऽ सुति रहला।

पत्नीक संग सोनेलालकेँ लहेरियासराय जाइते गाममे चरचा चलए लगल छल। एकदिस जनिजाति सभ सोनेलालक बाहवाही करैत तँ दोसर दिस मरदा-मरदीक बीच इलाजक खर्चाक चर्च चलैत।

सबेरे स्कूलमे छुट्टी दऽ खसल मने हीरानन्द चलि एला। हीरानन्दकेँ आएल देखि रामाकान्त पुछलखिन- “सबेरे स्कूल बन्न कए देलिऐ, मास्टर साहैब?”

ओना, रामाकान्तोकेँ सोनेलालक सम्बन्धमे बुझल छेलैन मुदा जइ गम्भीरतासँ हीरानन्द सोचै छला ओइ गम्भीरतासँ ओ नहि सोचने छला तँए हुनका मनमे कोनो तेहेन विचार नइ रहैन।

हीरानन्द उत्तर देलखिन- “बच्चा सभकेँ पढ़बैमे मन नै लगै छल तँए छुट्टी दऽ देलिऐ।”

"किए नै पढ़बैमे मन लागल।"

चिन्तित हीरानन्द बजला-

"एक तँ बाढ़िक मारल वेचारा सोनेलाल, तैपर सँ अप्पन पत्नीक बीमारीक चपेटमे तेना पड़ि गेला जे कोनो कर्म बाँकी नै रहलैन। यएह बात मनमे घुरियाए लगल। पढ़बैमे एक्को रत्ती नीके ने लगैत रहए।"

सोनेलालक बात सुनिते रामाकान्तक मन मौलाए लगलैन। मौलाइत-मौलाइत जहिना हीरानन्दक मन रहैन तहिना भऽ गेलैन। पैरमे ठेँस लगलापर जहिना कियो मुहेँ भरे खसैए जइसँ छातीमे सेहो चोट लागि जाइ छै, तहिना रामाकान्तक हृदयमे मनक चोट लगलासँ भेलैन। मुदा जोरसँ नहि, चुप्पेचाप कुहरए लगला। मनमे एलैन, जइ गाममे चारि-चारि टा डॉक्टर छैथ ओइ गामक लोक रोगसँ कुहरए, ई केतेक दुखक बात छी। एहेन डॉक्टरकेँ लोक भगवान बुझि पूजतैन ई कहाँ धरि उचित अछि? जइ पढ़ल-लिखल लोककेँ अपना गामसँ सिनेह नहि, अप्पन कुटुम्ब परिवार सर-समाजसँ सिनेह नहि, खाली अपने सुख-भोगक पाछू बेहाल रहैथ, तखन हुनका अनेरे दाइ-माइ किए छठियार दिन छातीमे लगा जीबैक आसिरवाद देलकैन। ..फेर मनमे एलैन, जहिना माल-जालकेँ डकहा बीमारी होइ छै तहिना तँ मनुक्खोकेँ चटपटिया बीमारी होइते अछि। जे छने-मे-छनाँक कऽ दइ छइ। चारि टा बेटा-पुतोहु डॉक्टर हमरे छैथ, जँ कहीं अपने कि महेन्द्रक माइयेकेँ वएह चटपटिया बीमारी भऽ जाइन तखन की करता ओ सभ हमरा सभकेँ..?

रामाकान्तक मन घोर-घोर भऽ गेलैन। सकदम भऽ गेला। जेना हुनकर बाके हरण भऽ रहल छेलैन।

तीन दिनक बाद सोनेलाल भनडाराक कार्यक्रम बनौलैन। खाइ-पीबैक सभ ओरियान दिल खोलिकऽ कऽ लेलैन। तुलसीफुलक अरबा चाउर, राहरिक दालि, एगारह टा तरकारी, तैसंग दही-चिन्नीक नीक बेवस्था केलैन।

गाममे दू पंथक साधू। पहिल पंथक महंथ रमापति दास आ दोसर पंथक गंगा दास। रमापति दास राम-जानकी मन्दिर बनौने छैथ। दुनू साँझ पूजा करै छैथ। मुदा गंगा दासकेँ से सभ नइ छैन। ओना, दुनूकेँ अप्पन गामसँ लऽ कऽ आनो-आन गाममे सेवकान छैन्हे।

सोनेलालक मनमे क्षल-प्रपंचक मिसियो भरि लसि नहि छैन, तँए पच्चीस मुरते साधुक दल रमापति दासकेँ देलखिन आ पच्चीस मुरतेक दल गंगा दासकेँ सेहो देलखिन। दल देलाक बाद सोनेलाल अप्पन दुआर-दरबज्जाकेँ चिक्कन-चुनमुन करए लगला। भानस करैक बरतन-बासन सभ धोइ-माँजि कऽ तैयार केलैन। खाइले केराक पात काटि चिक्कनसँ धोइकऽ राखि लेला।

एक गाममे रहितो दुनू पंथक बीच अकास-पतालक अन्तर अछिए। पहिल पंथमे ऊँच जातिक बोलवाला छैन जखन कि दोसर पंथमे ऊँच जातिक कम मुदा निम्न जातिक बेसी बोलवाला अछि। ऐ पंथमे छूत-अछूतक कोनो भेद नहि अछि। दिनुके समयमे भनडारा हएत।

दोसर पंथक साधु सभ सबेरे आबि चरण पखारि भजन शुरू केलैन। भजन शुरू होइते टोल-पड़ोसक जनिजातियो सभ आ धियो-पुतो सभ आबए लगल। सौंसे खरिहाँन लोकसँ भरि गेल। खरिहाँनेमे बैसारो केने रहैथ। तीनटा भजन समाप्त भेलाक बाद रमापति दास अप्पन चेला सभक संग पहुँचला। फरिक्केसँ दोसर पंथक साधुकेँ देखि रमापति दास मने-मन जरए लगला। मुदा क्रोधकेँ दाबि सोनेलालक दरबज्जापर आबि बइसै गेला। हिनका सभकेँ दरबज्जापर बैसते रमापति दास सोनेलालकेँ कहलखिन-

“हमरा सभक बैसार फूटमे करू।”

रमापति दासकेँ प्रणाम कऽ सोनेलाल दलान दिस इशारा दैत कहलकैन-

“अपने सभ दरबज्जेपर बैसियौ।”

सोनेलालक विचार सुनि रमापति दास मने-मन सोचए लगला जे जँ अखन दोसरठाम बैसार बनबैले कहबै तँ से औगुताइमे आब सम्भव नै हेतइ। जँ झगड़ा करै छी तँ केकरासँ करूँ। वेचारा घरवारी की करत। घरवारी-ले तँ जहिना हमसभ दल पाबि एलौं अछि तहिना तँ ओहो सभ आएल अछि। तँए जेहने हमसभ तेहने ओहोसभ। अगर ओहो साधु सभसँ कहा-कही करै छी तँ दू धार्मिक पंथक बीच विवाद उठत। मुदा ऐठाम तँ भनडारा छी, पंथक नीक-अधलाक विवेचनाक मंच तँ छी नहि। जँ अपनाकेँ उन्नैस मानि लइ छी तखन तँ सोलहन्नी कायरता हएत..!

विचित्र स्थितिमे रमापति दास पड़ि गेला। गुम्म-सुम्म भेल रमापति दास दरबज्जा आ खरिहाँनक बीच खुट्टा जकाँ ठाढ़ रहैथ। ने डेग आगू बढ़ैन आ ने पाछू। मनमे उठलैन जे जेते गोरे हमरा संग आएल छैथ जँ हुनका सभसँ विचार पुछबैन आ ओ सभ हमरा मनक विपरीत विचार दैथ तखन की करब? आइ धरि तँ सेहो नै केलौं। करब उचितो नहि। गुरु-चेलाक अन्तर समाप्त भऽ जाएत.!

रमापति दासक मन औनाए लगलैन। चाइनपर पसेनाक रूप चमकलैन। ताबे कान्हपर हरमुनिया रखने-रखने हरमुनियाँबलाक कान्ह अगिया गेलै, ओ आगू बढ़ि ओसारक चौकीपर हरमुनियाँ रखि देलक। हरमुनियाँ रखैत देखि ढोलकियो ढोलक रखि देलक। अहिना एका-एकी सभकियो अप्पन-अप्पन कमण्डल-गिलास धरि राखि-राखिकऽ ठाढ़ भऽ गेला। एकर कारण ईहो छल जे बिनु चरण पखारबौने बैसब केना। आ जाबे गुरु महाराज नइ बैसता ताबे हमसभ केना बैसब।

सभकेँ अप्पन-अप्पन सामान रखैत देखि रमापति दासकेँ गर भेटलैन। विक्षिप्त मने बजला-

"जखन सभक मोन अछि तखन किएक ने दरबज्जेपर बैसल जाए, घरवारियो तँ आदर करिते छैथ?"

एकदिस रमापति दासकेँ मन जरैत रहैन आ दोसर दिस खुशी सेहो होइत रहैन जे चरण पखाइर स्वागतक संग घरवारी हमरे बेसी महत्व देलैन। सभकियो चरण पखरबा कऽ बैस रहै गेला।

बिढ़नी जकाँ सुगिया आँगनमे नाचैत। कखनो घर जा दही देखि अबैत, जे कहीं बिलाइ ने आबिकऽ छुइ दिअए। तँ कखनो ओसारपर राखल सामान सभकेँ देखैत जे कौआ ने आबिकऽ छूता दइ। फेर लगले अँगनामे राखल टौकना, कराह आ बाल्टिनोकेँ देखैत जे धिया-पुता ने गन्दा कऽ दइ। तँ लगले आबि दलानक पाछूमे ठाढ़ भऽ टाटक भुरकी देने दरबज्जो दिस देखैत जे लोकसँ भरल दरबज्जा-खरिहाँन अछि, कहीं मारिये ने शुरू भऽ जाइ। सुगियाक मनमे जेना अहलदिली पसि गेल। तहिना इम्हर मगज परक पसेना केशक तर देने गरदैनपर होइत सोनेलालक धोतीकेँ भिजबैत रहैन...।

भजन सुननिहारमे धिया-पुतासँ लऽ कऽ गामक स्त्री-पुरुष धरि

बैसल। मोतियाक माए, जे पचास बर्खक बुढ़ छैथ। भजन बन्न भेल देखि बुचाइ दासकेँ टोकि देलखिन-

"हे यौ बुचाइ दास, बिना भजन गौने जे पङ्गहैत करबै तँ पाप नै लिखत?"

मोतिया माइक करूआएल बात सुनि बुचाइ दास उत्तर देलखिन-

"बड़ीकाल गाजा पीना भऽ गेल तँए पहिने कनी गाँजा पीब लइ छी तखन नाचो देखा देब आ कबीर साहैब की कहलखिन सेहो सुना देब। कनीए काल और छुट्टी दिअ। हुअ हौ रघुदास, जल्दी गुल दहक।"

बिना साजे बाजक बुचाइ दास घुन-घुना कऽ गाबए लगला-

"हटल रहियौ सन्तो बिलइया मारे मटकी...।"

बुचाइ दासक पाँति आ मुँहक चमकी देखि धियो-पुतो आ जनिजातियो सभ जहिना खापैड़मे देल जनेरक लाबा भरभरा कऽ फुटैए, तहिना सभ हँसल।

दलानोमे आ खरिहाँनोमे भजन शुरू भेल। दोसर पंथक बैसारमे ढोलक, झालि आ खौजरीक संग थोपड़ियो बाजए लगल। मुदा पहिल पंथ दिस पखौज, झालर, हरमुनियाँक संग सितार बाजब शुरू भेल, संगे एक सूर एक लय आ एक तालमे भजनो आरम्भ भेल-

"केशव! कही न जाए का कहिए..!"

मुदा दोसर पंथ दिस भजन तेते जोरसँ होइत जे पहिल पंथक भजन सुनियेँ ने पड़ै छल। महंथ रमापति दास बाहर निकैल घुमबो करैथ आ भजनो सुनैथ। रमौथ भजनक आवाज दलानक घरसँ बाहर निकलबे ने करै छल। जइसँ रमापति दास तामसे माहुर भेल छला। मने-मन भनभनेबो करैथ। सोनेलालकेँ शोर पाड़ि कहलखिन-

"ई कोन बखेरा ठाढ़ करबा देलिऐ?"

थरथराइत दुनू हाथ जोड़ि सोनेलाल उत्तर देलकैन-

"सरकार! हम तँ अनाड़ी छी। नइ बुझलिऐ जे एना होइ छइ। जे भऽ गेलै से तँ भइये गेलइ। अपने तमसाइयौ नहि। जँ कनी गलतीए भऽ गेल तँ हमरा माफ कऽ दिअ। अपनेसभ समुद्र छिऐ। नीक-अधला पचबैक सामर्थ्य

अछि। अखन तक भोजन बनबैक अहरियो ने खुनल गेल अछि, आदेश दियौ।"

तरैंग कऽ रमापति दास बजला-

"हमर जेतेक साधु छैथ ओ फुटेमे अहरियो खुनता आ भोजनो बनौता। तँए बर्तनसँ लऽ कऽ चाउर-दालि, तीमन-तरकारी धरि सभकिछु हमरा सभक फुटा दिअ।"

'बड़बढ़ियाँ' कहि सोनेलाल सभकिछु दू भागमे देलकैन। चारि-चारि गोरे भानसक जोगारमे लगि गेला। दूटा अहरी, हटि-हटि कऽ खुनल गेल। सोनेलाल सभ बरतनो आ चाउरो-दालि आनि-आनि दुनू अहरी लग रखि देलकैन।

दलानक भजन बन्न भऽ गेल। मुदा खरिहाँनक भजन चलिते रहल। बुचाइ दास अगुआ मुरते। भजनियाँ सभ गोल-मोल भऽ कऽ भेल बैसल छला, तँए बीचमे जगह खाली रहए। ओइ खाली जगहमे बुचाइ दास ठाढ़ भऽ कऽ आगू-आगू भजनक पाँतियो गाबए आ नाचबो करए आ तैसंग बीच-बीचमे पाँतिक अर्थ सेहो अर्थाबए।

रमापति दास सोनेलालकेँ हाथक इशारासँ शोर पाड़ि कहलखिन-

"बड्डु अनघोल होइए। भजन बन्न करबा दियौ।"

बुचाइ दास लग आबि सोनेलाल कहलखिन-

"गोसाँइ साहैब, भजन बन्न कऽ दियौ। महंथजीकेँ तकलीफ होइ छैन।"

सोनेलालक आग्रह सुनिते, के छोट के पैघ सभकियो एक्के बात बाजए लगला जे 'हमसभ बिना भजन गौने पङ्गहैत नइ करब'।

सोनेलाल अवाक भऽ गेला। हिनकर सौंसे देह केराक भालैर जकाँ डोलए लगलैन। मुदा की करितैथ। कियो तँ बिनु दले नै आएल छैन। तँए सभ साधुक महत्व बरबैर बुझैथ।

अँगनाक टाट लग ठाढ़ भेल सुगिया मने-मन सोचै छेली जे जँ कहीं साधु सभ अपनामे झगड़ा कऽ बिना भोजन केने चलि जेता तखन तँ हमर कौबुला पूरा नइ हएत। कौबुला पूर नइ भेने दुखो घुमिकऽ आबि सकैए।

आब जँ दुखित पड़ब तँ जीब की मरब तेकर कोन ठेकान। हे भगवान! साधु सभकेँ मति बदैल दियौन जे असथिर भऽ जेता। मने-मन भगवान-भगवानक जाप सुगिया करए लगली।

दू बजैत-बजैत निर्गुण पंथ दिस भोजन बनिकऽ तैयार भऽ गेल। भोजन तैयार होइते गंगा दास सोनेलालकेँ कहलखिन-

"भोजन बनि गेल। आब भोजनक जगह तैयार करू।"

गंगा दासक आढ़ैत सुनि सोनेलालक करेज आरो थरथर काँपए लगलैन। ई केहेन हएत? एकदिस साधु सभ भोजन करता आ दोसर दिस बनिते अछि! एक तँ जखनेसँ साधु सभ दरबज्जापर एला तखनेसँ झंझट होइए। कहुना-कहुना अखन तक पार लगल हेन, मुदा आब आखरी बेरमे ने कहीं झगड़ा फँसि जाए। ..बाढ़ैन आनै लाथे सोनेलाल आँगन गेला। आँगन जा बाढ़ैन ताकैक लाथे बैस रहला। बैसैक कारण रहैन, समय लगाएब। कनीए कालक बाद सुनलैन जे हिनको सभक भोजन तैयार भऽ गेलैन। बाढ़ैन नेने सोनेलाल अँगनासँ निकैल खरिहाँन आबि बाहरए लगला। खरिहाँन बहारि सोनेलाल पानिक छिच्चा मारलैन। छिच्चा दऽ खरही बिछौलैन। खरही बिछैबिते साधु सभ हरे-हरे कऽ उठि खरहीपर बइसै गेला। खरहीपर बैसते पात उठल। पातक बँटबारा शुरू होइते रमापति दास अपना सत्तैरमे घुमि-घुमिकऽ जय-जयकार करए लगला। दोसर दिस भजन मंगल शुरू भेल।

सभ साधु भोजन केलैन। भोजन कऽ सभकियो उठै गेला। दोसर पंथ दिसक सत्तैरमे एक्कोटा अन्न वा कोनो वस्तु पातपर छूतल नहि। जखन कि पहिल पंथक सत्तैरमे बरियातीक भोजन जकाँ छूतल छल। सभकेँ उठिते चारूभरसँ कौआ-कुकुर आबि-आबि खाए लगल।

भोजन कऽ दोसर पंथबला सभ ढोलक-झालि लऽ विदा हुअ लगला। मुदा रमौथ दिससँ दछिनाक तगेदा भेल। अनाड़ी सोनेलाल सिक्कीक चडेरीमे पान-सुपारी लऽ बीचमे ठाढ़ रहैथ। हाथक इशारासँ रमापति दास सोनेलालकेँ शोर पाड़ि कहलखिन- "आब हमसभ चलब तँए झब-दे दछिना लाउ।"

सोनेलाल बजला- "केना की दछिना..?"

रमापति दास आदेश दैत कहलखिन- "एक साए एकाबन स्थानक चढ़ौआ, एक साए एक हमर, साधु सभकेँ एकाबन-एकाबन आ भोजन बनौनिहारकेँ एकासी-एकासी दऽ दियौन।"

भोजन बनौनिहारक आ महंथजीक दछिना तँ सोनेलालकेँ जँचल मुदा...।

इम्हर गंगा दास आ बुचाइ दास सेहो सभ देखैत-सुनैत रहैथ। आँखिक इशारासँ गंगा दासकेँ बुचाइ दास कहलखिन- "अधिकार तँ अधिकार छी। जेतेक दछिना रमापति दासकेँ हेतैन तइसँ एक्को पाइ कम हमहूँ सभ नै लेबैन।"

हिसाब जोड़ि सोनेलाल अँगनासँ रुपैआ आनि रमापति दासक हाथमे दऽ देलकैन। रुपैआ ठीकसँ गनि रमापति दास सोनेलालकेँ आसिरवाद दैत उठिकऽ विदा भेला। रमापति दासक पाछू-पाछू सोनेलालो अरियातने किछु दूर धरि गेला। फेर घुमिकऽ आबि गंगा दास लग ठाढ़ भऽ पुछलकैन- "गोसाँइ साहैब, अहाँकेँ दछिना केते हएत?"

सोनेलालक कलपैत मोनकेँ गंगा दास अँकलैन। दयासँ हुनकर हृदय बरफ जकाँ धीरे-धीरे पानि बनए लगलैन। मुहसँ बोली फुटि नहि रहल छेलैन। सोनेलालकेँ की कहथिन से फुरबे ने करैन। बुचाइ दास दिस देखि बजला-

"की यौ बुचाइ दास, अहूँ तँ अगुआ मुरते छी, बिना अहाँ सभक विचार नेने हम केना सोनेलालकेँ किछु कहबैन। किएक तँ ऐठाम दूटा प्रश्न अछि। पहिल दू पंथक अधिकारक सवाल अछि, जइसँ दोसर पंथकेँ निच्चाँ-मुहेँ जेनाइ हएत आ तेसर, सोनेलाल कौबुला पुरबैले भनडारा केलैन अछि। एक तँ बीमारीक फेड़मे पड़ि पश्त भेल छैथ, तैपर सँ हमहूँ सभ भार दिऐन, ई हमरा नीक नइ बुझि पड़ैए।"

गंगा दासक प्रश्न सुनि दोसर पंथक सभ साधु गुम्म भऽ मने-मन सोचए लगला जे की कएल जाए? मुदा सोचबोक रास्ता अलग-अलग होइ छइ। एक्के प्रश्नक उत्तर पबैले वैरागीक रास्ता अलग होइए, जखन कि रागीक विचार अलग। भलेँ दुनू गोरे एक्के रंग विद्वान किएक ने होइथ। तेतबे नहि, आध्यात्मिक चिन्तक आ भौतिकवादी चिन्तकक बीच सेहो अहिना

होइए। जखन कि निष्पक्ष चिन्तकक अलग होइए। पंथक बीच बँटल समाजमे निष्पक्ष चिन्तक होएब कठिन अछिए। किएक तँ पंथ खाली वैचारिके टा नहि, बेवहारिक सेहो होइए। जे परिवार आ समाजसँ जोड़ल रहैए जइसँ जिनगीक गाड़ी चलै छइ।

कोनो विषयपर गम्भीर चिन्तन करैले एकटा आरो भारी उलझन अछि। ओ अछि भूखल आ पेट भरल शरीरक मन। मनकेँ बहुत अधिक प्रभावित करैए शरीरक इन्द्रिय। इन्द्रियकेँ संचालित करैए शरीरक उर्जा। उर्जाक निर्माण करैए उर्जा पैदा करैक वस्तु। ओ वस्तु प्राप्त होइत अछि भोजनसँ। ओना, सिरिफ भोजनेटा-सँ उर्जा पैदा नै होइए। उर्जा पैदा करैक दोसरो वस्तु अछि जेकर भोजन शरीरक भोजनसँ अलगो होइए।

बीच-बचाउ करैत बुचाइ दास गंगा दासकेँ विचार देलखिन-

“गोसाँइ साहैब, हमहूँ सभ अपना पंथक सिपाही छी, तँए मरै-दम तक पाछू हटब धोखाबाजी हएत। पवित्र धर्मक रक्षा करब सेहो हमरे सभपर अछि, तँए सोनेलाल जेते रुपैआ रमापति दासकेँ देलखिन, तेते हमरो सभकेँ दऽ दौथ। छअ मासक दुख-तकलीफ हमसभ सोनेलालक सुनबे केलौं तँए हुनकर दुखमे हमहूँ सभ शामिल भऽ पछाइत रुपैआ घुमा देबैन।”

सएह भेल। सभकियो हँसी-खुशीसँ भनडारा सम्पन्न कऽ जय-जयकार करैत विदा भेला। ❑

चारिम पड़ाव

मद्रास रेलवे स्टेशनपर गाड़ी पहुँचते रामाकान्त नमहर साँस छोड़लैन। लगातार दू राति आ तीन दिनसँ गाड़ीमे बैसल-बैसल सभक, माने रामाकान्त, श्यामा आ जुगेसरक, देह अकैड़ गेल छेलैन। गाड़ीकेँ रूकिते रामाकान्त हुलकी मारि प्लेटफार्म दिस तकलैन तँ दोसरो-तेसरो लाइनपर गाड़ीए सभकेँ ठाढ़ भेल देखलखिन। अपना सभक स्टेशन जकाँ नहि जे कखनो काल गाड़ियो अबैत आ भीड़-भाड़ नै रहने पुलोक जरूरत नहि, सगतर रस्ते। जेम्हर मन हुअए तेम्हर विदा भऽ जाउ। गाड़ियो छोट आ लाइनो तहिना।

गाड़ीमे रामाकान्तकेँ अनभुआर जकाँ नइ बुझि पड़लैन किएक तँ बिहारेक गाड़ी आ बिहारेक पसिंजरो।

गाड़ीसँ यात्री सभ उतरए लगला। तीनू गोरे रामाकान्तो अप्पन-अप्पन झोरा-मोटरी नेने गाड़ीसँ उतैर थोड़ेक आगू बढ़ि पुलपर चढ़ए लगला। पुलपर लोकक करमान लगल, मुदा अपनासभ स्टेशन जकाँ एँड़ी-दौड़ी नै लगैत। जेकरा हियासिकऽ रामाकान्त अपनो चेत गेला आ श्यामो-जुगेसरकेँ कहि देलखिन। अखन तक स्टेशनमे दुनू कात गाड़ीए देखि पड़ैन मुदा पुलपर जेना-जेना ऊपर चढ़ैत गेला तेना-तेना आनो-आनो चीज-वौस सभ देखए लगला।

पुलक सीढ़ीपर चढ़ैत-चढ़ैत श्यामो आ रामाकान्तोक जांघ चढ़ि गेलैन। पुलक ऊपर पहुँचते रामाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन- "जुगे, मोटरी कतबाहिमे रखि दहक आ कनी तमाकुल लगाबह। ताबे हमहूँ कनी सुस्ता लइ छी।"

जुगेसर अप्पन हाथक मोटरीकेँ भुइयेँमे राखि तमाकुल चुनबए लगल। गाड़ीक जेते चिन्हार पसिंजर रहैन, सभ हेरा गेल। नव-नव लोककेँ पुलोपर आ निच्चोमे देखए लगला। खाली लोके टा नव नहि, ओकर पहिराबा-ओढ़ाबा सेहो नव आ बोली-वाणी सेहो नव। तमाकुल खा झोरा-

मोटरी उठा तीनू गोरे पुलपर सँ उतैर हियाबए लगला जे केकरोसँ पुछि लिऐन। मुदा केकरो बाजब बुझबे नै करैथ। रामाकान्तो लोकसभकेँ देखैथ आ लोको सभ रामाकान्तसभकेँ देखैन। जेना, एक-दोसराक लेल एक-दोसर तमाशा बनल रहैथ। रामाकान्त आ जुगेसरक धोती पहिरब देखि ओइठामक लोक निहारि-निहारि देखैत आ रामाकान्तो तीनू गोरे ओइठामक मरदो आ मौगियो सभक पहिराबा देखि मने-मन हँसबो करैथ। अनुभवी लोकसभ तँ बुझि जाइ छला जे ई सभ बिहारी छैथ। मुदा जेकरा नइ बुझल छेलै ओ सभ ठाढ़ भऽ भऽ हिनका सभ दिस तजबीज करैन।

एक जेर मौगी रास्ता धेने गप-सप्प करैत जा रहल छेली, ओ सभ अपने सभक मरद जकाँ ढेका खोंसने रहैथ। मौगी सभक ढेका देखि मुस्कियाइत श्यामा रामाकान्तकेँ कहलखिन- "देखियौ! ऐठामक मौगी सभ ढेका केना खोंसने अछि!"

श्यामाक बात सुनि रामाकान्त हँसए लगला, मुदा किछु बजला नहि। रामाकान्तो अप्पन आँखि उठा-उठा चारू दिस ताकि-ताकि मने-मन सोचैथ जे वाह रे ऐठामक सरकार! केतेक सुन्दर आ चिक्कन-चुनमुन जगह बनौने अछि! केतौ बैस जाउ..! केतौ सुति रहू..! सरकार बनौने अछि..! अपनासभ दिस कोनो स्टेशन एहेन नइ अछि जैठाम भरि ठेहुन गन्दगी नहि। प्लेटफार्मेपर केराक खोंइचा, पानक पीक, चिनियाँ बदामक खोंइचा, कागजक टुकड़ी, रंग-बिरंगक गुटखा सभक पन्नी छिड़ियाएल रहैए। तेतबे नहि, जेरक-जेर भिखमंगा, पौकेटमार, उचक्का सेहो रेलवे स्टेशनसँ लऽ कऽ बस स्टेण्ड धरिमे पसरल रहैए। मुदा ऐठाम से सभ नइ अछि। एक्कोटा उचक्का कहाँ नजैर पड़ैए।

गाड़ीक झमारसँ तीनू गोरेक देह भँसियाइत रहैन। मुदा की करितैथ। जुगेसर तमाकुल चुनबैत रहए आ मने-मन रामाकान्त सोचैत रहैथ जे बड़का फेड़ामे पड़ि गेल छी। की करब। किछु फुरबे नहि करैए। बड़ीकाल धरि सभकियो उगैत-डुमैत रहला। जइ गाड़ीसँ गेल रहैथ ओइ गाड़ीक भीड़ छँटल। लोक पतराएल। तैबीच एक गोरे मोटर साइकिलसँ आबि रामाकान्तेक आगूमे गाड़ी लगौलक। रामाकान्त ओइ आदमी दिस ताकए लगला आ ओहो आदमी रामाकान्त दिस देखए लगलैन। जेना नजैरेसँ दुनू गोरेक बीच चिन्हा-परिचए भऽ गेल होइन।

रामाकान्त उठिकऽ ओइ आदमी लग जा कऽ ठाढ़ भेला आ अपना जेबीसँ पुरजी निकालि देखए देलखिन। पुरजीमे पता लिखल देखि ओ आदमी एकटा टेम्पूबलाकेँ हाथक इशारासँ शोर पाड़लक। टेम्पूबलाकेँ अबिते पता बता लऽ जाइले कहलखिन।

तीनू गोरे टेम्पूमे बैस विदा भेला। मुदा ड्राइवर ने हिन्दी जनैत आ ने मैथिली। तँए ड्राइवरक संग कोनो गप-सप्प रास्तामे नै होइ छेलैन। स्टेशनक हातासँ निकैलते रामाकान्त आँखि उठा-उठा बाजारो दिस देखैथ आ लोको सभकेँ। बाजारमे ओते अन्तर नइ बुझि पड़ैन जेते लोक आ बोलीमे। मने-मन रामाकान्त अपना इलाकासँ ऐ इलाकाकेँ मिलबए लगला। अपना ऐठाम पिंडश्याम आ गोर वर्ण एकरंगाह अछि मुदा ऐठाम पिंडश्याम वर्णक लोक अधिक अछि। लोकक बाजबो दोसरे रंगक छइ। जेना मधुमाछी भनभनाइए, तहिना। मुदा अपना ऐठामक लोक जकाँ ठक ऐठाम नइ बुझि पड़ैए...।

बाजारक रास्तासँ जाइत रहैथ तँए गरीबी-अमीरीमे अन्तर बुझिए ने पड़ैन। मुदा अपना इलाकाक बाजारसँ ऐठामक बाजार बेसी चिक्कन-चुनमुन आ सुन्दर बुझि पड़ैन। गन्दगीक केतौ दरस नहि।

मुख्य मार्गसँ निकैल पूब-मुहेँ एकटा रास्ता गेल अछि। ओही रास्तामे डॉक्टर महेन्द्रक घरो आ क्लिनिको छैन आ जइ अस्पतालमे महेन्द्र नोकरी करै छैथ ओ मुख्य मार्गमे अछि।

ओही गलीक मोड़पर टेम्पूक ड्राइवर तीनू गोरेकेँ उताइर भाड़ा लऽ आगू बढ़ि गेल। सड़कक दुनू भाग बड़का-बड़का मकान सभ अछि। मोड़पर तीनू गोरे मोटरी रखि बैस रहला। गाड़ीक झमारसँ सभक देह-हाथ तेतेक बथि रहल छेलैन जे किनको ठाढ़े ने रहल होइन। जहिना अमावस्याक रातिमे बादल पसैर आरो अन्हार कऽ दइए तहिना रामाकान्तोकेँ होइ छेलैन। एक तँ अनभुआर जगह, तैपर सँ बोलीक भिन्नता। मनुक्ख, मनुक्खक बीच बोली केतेक दूरी बनबैए ई बात रामाकान्त आइये बुझलैन। श्यामा मने-मन सोचैथ जे हे भगवान केहेन जगह अछि जे अछैते मनुक्खे हमसभ हेराएल छी! तीनू गोरे निराशाक समुद्रमे डुमल रहैथ। मने-मन रामाकान्तकेँ होनि जे आब की करब? आइ धरि जिनगीमे एहेन फेड़ा नै पड़ल छल। अप्पन सभटा बुधि-अकील हेरा गेल अछि...।

रामाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन- "जुगेसर, मन घोर-घोर भऽ गेल अछि। कनी तमाकुल लगाबह।"

जुगेसर तमाकुल चुनबए लगल। सभ सभक मुँह देखि नजैर निच्चाँ कऽ लइ छला। तैबीच रामाकान्तक जेठ बेटा डा. महेन्द्र फिएट कारसँ अस्पतालसँ अप्पन घर आबि रहल छला कि सड़कक कातमे हिनका तीनू गोरेकेँ बैसल देखलैन। पहिने तँ थोड़ेक धखेला मुदा चिन्हल चेहरा तँए मेन रोडसँ गाड़ी बढ़ा अप्पन रस्तापर लगौलैथ। गाड़ीसँ उतैर लगमे आबि पिताकेँ गोड़ लगलैन। पिताकेँ गोड़ लागि माएकेँ गोड़ लगलैन आ पिताक हाथक झोरा लऽ गाड़ीमे रखैले बढ़ला। पाछूसँ ईहो तीनू गोरे उठि गाड़ी दिस बढ़ला। जुगेसरो अपना हाथक मोटरी गाड़ीमे रखलक। चारू गोरे गाड़ीमे बैसला आ गाड़ी आगू बढ़ल।

महेन्द्र अपनेसँ ड्राइवरी करैत रहैथ। महेन्द्रकेँ गाड़ी चलबैत देखि माए पुछलकैन-

"बच्चा, मोटर अपने हँकै छह?"

"हँ।"

"डरेबर नै छह?"

माइक प्रश्न सुनि महेन्द्र मुस्कियाइत बजला-

"जखन गाड़ीमे रहै छी तखन दोसर काजे कोन रहैए जे डरेबर राखब। अनेरे खरचो बढ़त।"

घरक आगू गाड़ी पहुँचते महेन्द्र गाड़ीक हौरन बजेलखिन। गाड़ीक आवाज सुनि भीतरसँ नोकर आबि गेटक ताला खोलि देलकैन। महेन्द्र गाड़ी भीतर लऽ गेला। जगहपर गाड़ी ठाढ़ कऽ उतैर गाड़ीक तीनू फाटक खोलि तीनू गोरेकेँ उतारलैन। गाड़ीसँ उतैरिते रामाकान्त मकान दिस ताकए लगला। तीन-तल्ला बड़का मकान। आगूमे फुलवारी। रामाकान्त मने-मन सोचए लगला जे सम्पैत तँ गामोमे बहुत अछि मुदा एहेन घर, अपना कोन जे परोपट्टामे सेहो केकरो नइ अछि। मनमे उठलैन जे अप्पन कमाइसँ महेन्द्र एहेन घर बनौलक कि बैंक-तैंकसँ करजा लऽ कऽ आकि भाड़ामे नेने अछि? ओना, कहने छेलए जे जमीन कीनिकऽ मकान बनेलौं। मकानक बनाबट देखि सभकियो अचम्भित रहैथ। मुदा एहेन घर बनबैमे पचास लाखसँ ऊपरे

खरच भेल हेतै, एतबे दिनमे केते कमा लेलक! आगू-आगू महेन्द्र आ तइ पाछू तीनू गोरे मकानमे प्रवेश केलैन। सभ कोठरीमे टाइल्स लागल। पहिल दिन रहने सभक पएर पिछड़ैत रहैन।

डॉ. महेन्द्र सभसँ ऊपरका तल्लामे लऽ जा एकटा कोठरी रामाकान्त आ जुगेसरकेँ सुमझा देलखिन आ दोसर कोठरी माएकेँ। हाथो-पएर नै धोलैन आ रामाकान्त पलँगपर पड़ि रहला। पंखा चलि रहल छल। दूटा पलँग कोठरीमे लगौल। दूटा टेबूल, एकटा नमहर ऐना, देवी-देवताक फोटो सेहो देबालमे टाँगल। नील रंगसँ कोठरी रंगल। दूटा अलना सेहो देबाल दिस राखल। खूब मोटगर गद्दीदार ओछाइन पलँगपर बिछौल। मसनद सेहो दुनू पलँगपर राखल। मुँह-हाथ धोइले कोठरीक मुहेँपर, केबाड़क बगलमे बेसिन लगौल। पड़ल-पड़ल रामाकान्त सभकिछुपर नजैर दइये रहल छला कि तैबीच जलखै आ पानि नेने नोकर पहुँच गेलैन।

पलँगपर सँ उठि रामाकान्त कुरुर कऽ जलखै करए लगला। दू कौर खा पानि पीब चाह पीबए लगला। जुगेसरो जलखै करिकऽ चाह पीबए लगल आ महेन्द्रो हाथमे कप लेने ठाढ़े-ठाढ़ चाह पीबए लगला। ..चाहक चुस्की लैत रामाकान्त महेन्द्रकेँ पुछलखिन-

"बौआ, मकान अपने छी?"

"हँ।"

"बनबैमे केते खरच भेल?"

खर्चाक नाओं सुनि मुस्कियाइत महेन्द्र बजला-

"बाबू, खर्च तँ डायरीमे लिखल अछि, तँए बिना देखने नीक-नाहाँति नै कहि सकब, मुदा तीन लाखमे जमीन किनलौं से मोन अछि। जखन जमीन भऽ गेल तखन चारू गोरे कमेबो करी आ घरो बनबी। केना कि खर्च होइत गेल तेकर ठेकान नहि अछि। ओना, डायरीमे मुख्य-मुख्य खर्च लिखल अछि। मुदा सेहो, ठीकसँ बिना डायरी देखने नै कहि सकै छी।"

टेबुलपर कप रखि रामाकान्त बजला-

"चारि दिन नहेना भऽ गेल, देहमे एक्को रत्ती लज्जैत नइ बुझि पड़ैए तँए पहिने नहाएब-खाएब आ भरि मन सूतब।"

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि महेन्द्र कोठरीसँ निकैल नोकरकेँ कहलखिन- "तीनू गोरेकेँ फोनसँ कहि दहक जे माए-बाबू एला हेन।"

नोकरकेँ कहि पिता-लग आबि महेन्द्र कहलखिन- "चलू, नहाइक घर देखा दइ छी।"

आगू-आगू महेन्द्र आ पाछू-पाछू रामाकान्त आ जुगेसर चलला। स्नान घरक केबाड़ खोलि महेन्द्र बजला-

"दूटा जोड़ले कोठरी अछि, दुनू गोरे नहाउ।"

कहि दुनू कोठरीक बौल जरा देलखिन।

कोठरीकेँ निहारि-निहारि दुनू गोरे देखए लगला। पानिक झरना, टंकी, साबुन रखैक चक्का, कपड़ा रखैक अलगनी इत्यादि सभकिछु...।

रामाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन-

"जुगे, चाह तँ पीलौं मुदा तमाकुल खेबे ने केलौं। मन लुलुआएले अछि, जा पहिने तमाकुल नेने आबह।"

जुगेसर स्नान घरसँ निकैल कोठरी आबि, तमाकुल-चुन लऽ तरहत्थीपर चुनबए लगल। तमाकुल चुना रामाकान्तोकेँ देलकैन आ अपनो ठोरमे लेलक। थूक फेकैत रामाकान्त बजला-

"जुगे, गाममे हमहूँ सम्पैतबला लोक छी मुदा आइ धरि एहेन पैखाना कोठरी आ नहाइक घर नै देखने छेलिऐ। सभदिन खुल्ला मैदानमे पैखाना जाइ छी आ पोखैरमे नहाइ छी।"

"काका, अपनासभ गाममे रहै छी ने। ई सभ शहर-बाजारक छिऐ। जँ शहर-बाजारक लोक गाम जकाँ चाहबो करत से थोड़े हेतइ। ऐठाम लोक बेसी अछि आ जगह कम छै, तँए लोककेँ एना बनबए पड़ै छइ। मुदा पोखैरमे लोक पानिमे पैस कऽ नहाइए आ ऐठाम पानि ढारिकऽ नहाइए। अपनासभ कहियो काल जहिना लोटासँ पानि ढारिकऽ नहाइ छी तहिना। मुदा पानिमे पैस कऽ नहेलासँ जे संतोष होइ छै से थोड़े एतए हएत।"

"एहेन जिनगी जीनिहारकेँ गाममे रहब पार लगतै, जुगे?"

"से केना लगतै।"

"बाबू हमरा बेसी काल कहै छला जे मनुक्खक शरीर देखैमे एकरंग लगनौं जीबैक जे ढंग ओकरा दू रंग बना दइ छइ।"

"अहाँक गप हम नइ बुझलौं, काका?"

"देखहक, जे आदमी भरिगर काज सभदिन करैए ओकरा जइ दिन भरिगर काज नइ हेतै तँ देहो-हाथ दुखैतै आ अन्नो रुचिगर नै लगतै। तहिना जे आदमी हल्लुक काज करैए, ओकरा जँ कोनो दिन भरिगर काज करए पड़तै तँ ओकरो देह-हाथ ओते दुखेतै जे अन्नो ने रुचिगर लगतै।"

"हँ, से तँ होइते छै, हमरो कए दिन भेल अछि।"

"तहिना, गामक लोक जे शहर-बाजारमे आबि जिनगी बदैल लइए, ओ फेर गाम अही दुआरे नै जाए चाहैए।"

"काका, गामक लोक गरीब अछि, खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ ओढ़े-पहिरै, रहै-सहै सँ लऽ कऽ दवाइ-दारू आ पढ़ै-लिखैक अभाव छै, तँए लोक गाममे नै रहए चाहैए।"

महेन्द्र पिताकेँ स्नानघर पहुँचा घुमिकऽ अपना कोठरी आबि पत्नी, भाए आ भावोकेँ, माने डॉक्टर रवीन्द्रकेँ, डॉक्टर जमुनाकेँ आ डॉक्टर सुजाताकेँ, फोनसँ कहि देलखिन जे गामसँ माए-बाबू आ जुगेसर एला हेन। तीनू गोरेकेँ जानकारी दऽ अपने भनसा घर जा मने-मन सोचए लगला जे ऐठामक जे खान-पान अछि से हुनका सभकेँ पसिन हेतैन की नहि? तँए गामक जे खान-पान अछि, सएह सभ बनौनाइ नीक हएत। लगले फेर महेन्द्रक मनमे उठलैन जे भनसिया तँ ऐठामक छी, ओ थोड़े ओइठामक व्यंजन बना पौत। से नहि तँ अपनेसँ बनाएब। ओना, भात-दालि आ रसगर तरकारी तँ भनसियो बना सकैए। खाली तेतैर परहेज करैक अछि। तेतैरिक अलगसँ खटमिट्ठी बना लेब। जँ तरूआ तरकारी नहि बनाएब तँ पिता अपमान बुझता। ओना, दूधो-दही जरूरी अछि। मुदा एक्कोटा चीजसँ काज चलि सकैए। दहियो तँ घरमे नहियेँ अछि। लगक दोकान सभक दही दब रहै छै तँए रवीन्द्रकेँ कहि दिऐन जे दरभंगाबला होटलसँ दही किनने औत। ई बात मनमे अबिते महेन्द्र मोबाइलसँ रवीन्द्रकेँ कहलखिन। रवीन्द्र अस्पतालसँ सोझे दरभंगाबला होटल विदा भेला।

महेन्द्र अपनेसँ तिलकोरक पात, परोर, झिंगुनी, भाँटा आ आलू तड़ए

लगला। गैस चुल्हि, तँए लगले सभकिछु बनि गेलैन।

पैखाना जाइसँ पहिनहि रामाकान्त हाथ मटियबैले माटि ताकए लगला। मुदा माटिक केतौ पता नहि। नहाइसँ लऽ कऽ हाथ धोइ तकमे साबुनेक बेवहार। रामाकान्त जुगेसरकेँ पुछलखिन- "जुगेसर, बिना माटिए हाथ केना मटियाएब?"

रामाकान्तक बात सुनि मुस्कियाइत जुगेसर बाजल- "काका, जेहेन देश तेहेन भेस बनबए पड़ै छइ। गाममे तँ भरि दिन माटिए-पर रहै छी मुदा ऐठाम तँ माटिसँ भेँटो हएब मुस्किल अछि। देखिते छिऐ, ऐठाम माटि तरमे पड़ि गेल अछि। ने माटिक घर अछि आ ने रस्ता-पेरा। साबुनो तँ गमकौए छी। की हेतै साबुनेसँ हाथ धोइ लेब।"

"कहलह तँ ठीके मुदा हाथ धुअब आ मनकेँ मानब दुनू दू चीज होइए किने। हाथ धोइये लेब मुदा मन नहि मानत तँ ओ केहेन हाथ धुअब भेल?"

"हँ काका, ई बात तँ हमहूँ मानै छी मुदा गन्दगी साफ करैक सवाल छै किने, से तँ साबुनसँ आरो नीक जकाँ साफ हएत। मनकेँ बुइधे चलबै छै किने तँए मनकेँ बुधि मना लेत।"

"तोहूँ तँ आब बच्चा नै छह जे नइ बुझबहक। एकटा बात कहह जे लोक पेटमे खाइए, पेट भरै छै, तखन लोक किए कहै छै जे भरि मन खेलौं वा पेट भरला पछाइतो कहै छै जे मन नै भरल?"

"अपनासभ काका मिथिलामे रहै छिऐ ने। मिथिलाक माटियो पवित्र अछि। मुदा ई तँ मद्रास छी, तँए ऐठामक लोक जे करैत हुअए सएह करब उचित।"

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि दुनू गोरे अप्पन क्रिया-कलापमे लगि गेला।

रामाकान्त आ जुगेसर स्नाने घरमे रहैथ, तैबीच रवीन्द्र, जमुना आ सुजाता- तीनू गोरे अप्पन-अप्पन गाड़ीसँ पहुँचलैथ। सभक मनमे अप्पन-अप्पन ढंगक जिज्ञासा रहैन तँए गाड़ीसँ उतैरिते कियो पिता रामाकान्तकेँ, तँ कियो ससुर रामाकान्तकेँ देखैले उताहुल रहैथ। मुदा कोठरीमे अबिते पता चललैन जे ओ नहाइ छैथ। नहाएब सुनि सभकियो अप्पन-अप्पन कपड़ा बदलए अपना-अपना कोठरीमे चलि गेलैथ।

पैन्ट-शर्ट खोलि रवीन्द्र लुंगी पहिरते माइक कोठरी दिस बढ़ला। कोठरीमे पहुँचते माएकेँ गोड़ लागि आगूमे ठाढ़ भेला।

रवीन्द्रकेँ माए चिन्हलकैन तँ नहि मुदा गोड़क जवाब बिनु चिन्हनहि दऽ देलखिन। रवीन्द्र मुस्कियाइत रहैथ। मुदा अनचिन्हार जकाँ माए बेटाक मुँह दिस टुकर-टुकर तकैत। तैबीच जमुना आ सुजाता सेहो आबि श्यामाकेँ गोड़ लगलकैन। दुनू पुतोहुओकेँ साउस आसिरवाद देलखिन। रवीन्द्र बुझि गेला जे माए नइ चिन्हलैन। मुस्कियाइत बजला-

"माए, हम रवीन्द्र छी!"

'रवीन्द्र' सुनिते श्यामा हक्का-बक्का भऽ गेली। अनासुरती मुहसँ निकललैन- "रवीन्द्र.!"

चारि सालसँ रवीन्द्र गाम नइ आएल छला। पहिने रवीन्द्रक देह एकहारा छेलैन। खिरकिट्टी जकाँ। जे अखन मस्त-मौला भऽ गेला अछि। पुष्ट देह भेने रवीन्द्रक रूपे बदैल गेलैन अछि। कोरैला बेटा होइक नाते माइक ममता बाढ़िक पानि जकाँ उमैड़ गेलैन। मुँहक बोली पड़ा गेलैन। खाली आँखिए-टा क्रियाशील रहलैन मुदा ओहो अश्रुधारासँ सिमसल जा रहल छेलैन।

आँचरसँ नोर पोछिते श्यामाकेँ ओ दिन मनमे नचए लगलैन जइ दिन रवीन्द्र ऐ आँचरमे नुकाएल रहै छल। सौंझुका तरेगन जकाँ श्यामाक हृदयमे सुखद जिनगीक मनोरथ सभ चमकए लगलैन। हाथक इशारासँ माए दुनू पुतोहुकेँ बैसैले कहलखिन। दुनू पुतोहु माइक दुनू भाग बैसली। दुनू गोरेक कान्हपर अप्पन दुनू हाथ दऽ श्यामा ओइ दुनियाँमे वौआए लगली जइ दुनियाँमे दुखक कोनो जगह नहि होइत। मुदा सुखोक तँ दूटा दुनियाँ अछि। एक दुनियाँ श्यामाक आ दोसर रवीन्द्रक। जे दुनियाँ श्यामा दुनू परानीक भेल जा रहल छैन ओ तियाग, करूणा आ दयाक सवारीसँ वैरागक मंजिल दिस बढ़ि रहल छैन। जखन कि दुनू भाँइ रवीन्द्रक जिनगी अधिक-सँ-अधिक धनोपार्जनक भावनामे दैहिक सुख दिस अग्रसर छैन।

रामाकान्त आ जुगेसर नहाकऽ कोठरी एला। नहेला पछाइत दुनू गोरेक देहक थकान मेटा गेलैन नव स्फूर्ति आ ताजगी आबि गेलैन। नव ताजगी अबिते भूखो जगलैन।

तैबीच रवीन्द्र कोठरीसँ निकैल पिताक कोठरी दिस बढ़ला। महेन्द्र सेहो पिता लग आबि भोजन करैक आग्रह केलकैन।

एम्हर साउस लग दुनू पुतोहु बैस एक-दोसराक खनदान, परिवार आ मानवीय सम्बन्ध बनबैले वस्तु-जात एकत्रित करए लगली। गामक देहाती जिनगी बितौनिहारि पचपन बर्खक साउस आ बाजारू जिनगी जीनिहारि दुनू पुतोहु, तीनूक मन अप्पन-अप्पन जिनगीक रास्तासँ भ्रमण करैत रहैन। मुदा साउस-पुतोहुक रास्तामे केतौ सम्बन्ध नहि रहनौं मानवीय संवेदना आ जिनगीक बेवहारिक प्रक्रिया, तीनूकेँ लग आनि सटबैत रहैन। बीतल जिनगी तँ स्मृति आ इतिहास बनि जाइए मुदा अबैबला जिनगीक रूप-रेखा तँ अखने निर्धारित हएत। एककेँ जिनगीक पचपन बर्खक अनुभव तँ दोसर-तेसर आधुनिक शिक्षासँ भरल-पूरल। सोचमे दूरी रहनौं, सभकियो एक्के परिवारक छी, ई विचार सभकेँ बलजोरी खींच कऽ एकठाम सटबैत रहैन। श्यामाक मनमे प्रश्न उठैत रहैन जे जखन हम हजारो कोस हटिकऽ बेटा-पुतोहुसँ दूर रहै छी तखन हमरा पुतोहुक सुख केते हएत? समाजमे देखै छी जे अस्सी बर्खक बुढ़-पुरानसँ लऽ कऽ पेटक बच्चा धरि एकठाम रहि हँसी-खुशीसँ जिनगी बितबैए। खाएब-पीब कोनो वस्तु नइ छी। किएक तँ जेकरा हम नीक वस्तु बुझै छिऐ ओहो भोज्य-पदार्थ छी आ जेकरा दब वस्तु बुझै छिऐ ओहो भोज्ये-पदार्थ छी। हँ, ई विषमता समाजमे जरूर अछि जे कियो नीक वस्तु थारीमे छूता कऽ उठैए, जेकरा कुकुर खाइए आ कियो भूखल सुतैए। मुदा हम देखै छी हजारो किस्मक भोज्य-वस्तु घरतीपर पसरल अछि, जेकरा ने सभ चिन्हैए आ ने उद्यम कऽ आनए चाहैए...।

जखन कि जमुना आ सुजाताक मनमे उठि रहल छेलैन जे परिवारकेँ आगू बढ़बैले सन्तान जरूरी अछि। नोकर-दाइक सहारासँ छोट बच्चाक पालन तँ हएत मुदा सेवा नहि, किएक तँ माए अप्पन बच्चाकेँ दूधो नइ पीआबए चाहैत अछि। बच्चा जखन स्कूल जाइ-जोकर होइए तखन ओकरा आवासीय विद्यालयमे भरती करा शिक्षा-दीक्षा देल जाइए। शिक्षा प्राप्त केलाक बाद कमाइक जिनगीमे प्रवेश करैए। जिनगीक एक चक्र ईहो छी।

जहिना जमुना आ सुजाताक मनमे अप्पन अनुभव चकभौर लऽ रहल छेलैन तहिना श्यामाक मनमे अप्पन खनदानी परिवारक फुलवारी औना

रहल छेलैन जइसँ ने आगूक रास्ता देखि पबै छेली आ ने पाछूक। आगूक रास्ता कठिन अछि आकि सघन आकि संवेदन रहित वा सहित? एक-दोसर मनुक्खक बीच मानवीय सम्बन्ध हेबाक चाही जे ओ जरूरीए टा नहि, अनिवार्य आ आवश्यक सेहो अछि। जे मनुक्ख ऐ धरतीपर जन्म लेलक, ओकरो ओतेक जीबैक अधिकार छै जेते दोसरकेँ छइ। जँ से नइ अछि तँ लड़ाइ-दंगाकेँ कोन शक्ति रोकि सकैए? मुदा प्रश्न जटिल अछि, आइ धरिक जे दुनियाँक मनुक्खक जिनगी बनि गेल अछि ओ एतेक विषम बनि गेल अछि जे सामूहिक मनुक्खक कोन बात, दू सहोदर भाइक बीच समता रहब कठिन भऽ गेल अछि, तँए..?

भोजनालय। नमगर-चौड़गर कोठरी। देबालपर बहुरंगी फूलक चित्र बनौल। सुन्दर हल्का गुलाबी रंगसँ कोठरी रंगल, एअरकण्डीशन लागल। गोलनुमा नमगर-चौड़गर खेनाइ-खाइक टेबुल। जेकर चारूकात खेनिहार लेल पनरहोसँ बेसीए कुरसी लगल। देबालमे सेट कएल साउण्ड बॉक्स, जइसँ मधुर स्वरमे गीतक ध्वनि बहराइत।

भोजन करैक बाजारू बेवस्थाकेँ महेन्द्र अपनौने। मुदा माता-पिताक एलासँ धर्म-संकटमे पड़ि गेला। मने-मन सोचए लगला जे हम दुनू भाँइ आ दुनू दियादनी मिला चारू गोरे तँ एक्के टेबुलपर खाइ छी मुदा माए तँ बाबूक सोझमे नइ खेती। तेतबे नहि, हमरा दुनू भाँइक संगे तँ ओ खेता मुदा दुनू पुतोहुक संग तँ नै खेता। जँ जोर करबैन तँ कहीं बिगैड़ ने जाथि। जँ बिगैड़ जेता तँ आरो विचित्र भऽ जाएत। की करब नीक हएत? गुनधुनमे महेन्द्र पड़ि गेला। मुदा लगले अनासुरती हुनका मनमे एलैन जे माएसँ विचार पुछि लिऐन। माए लग जा महेन्द्र पुछलखिन- "माए, हमसब तँ एक्के टेबुलपर खाइ छी, मुदा.?"

महेन्द्रक बात सुनि श्यामा बुझबैत बजली- "बौआ, हमरो उमेर पचास-साठि बर्खक भेल हएत। आइ धरि जइ काजकेँ अधला बुझलिऐ ओ आब केना करब। केते दिन आब जीबे करब। तइले किए अप्पन बाप-दादाक बतौल रास्ताकेँ तोड़ब। एहेन बेवहार सिरिफ अपने परिवार टामे तँ नइ अछि, समाजोमे अछि। जाधैर ऐठाम छी ताधैर, मुदा गाम गेलापर तँ फेर वएह बेवहार रहत। तइले एहेन काज करब उचित नहि। गामक जिनगीक अनुकूल चलैन अछि। कोनो चलैन समाज आ जिनगीक अनुकूल बनैए जे जिनगी

लेल नीक होइए। भलेँ दोसर तरहक जिनगी जीनिहारकेँ ओ अधला लगउ।"

माइक विचार सुनि महेन्द्र दू तोरमे खाएब नीक बुझलैन। पहिल तोरमे अपने, जुगेसर आ पिता तथा दोसर तोरमे बाँकी सभकियो।

भोजन करिते रामाकान्त हफुअए लगला। जुगेसर सेहो हफुअए लगल। हाथ-मुँह धोइकऽ दुनू गोरे सुति रहला।

एक तँ तीन रातिक जगरना, तैपर अन्नक निशाँ सेहो चढ़ि गेलैन। एक्केबेर चारि बजे रामाकान्तकेँ नीन टुटलैन। नीन टुटिते, सुतले-सूतल हुनकर नजैर देबालक घड़ीपर गेलैन। चारि बजैत। भाँग पीबैक बेर भऽ गेल रहैन। भाँगक आदत रामाकान्तकेँ पहिनहिसँ छैन। तँए मद्रास अबैये काल झोरामे भाँगक पत्ती लऽ नेने छला। श्यामो बुझि गेली जे हुनका भाँग पीबैक बेर भऽ गेलैन अछि।

भाँगक मेजन–मरीच, सोंफ–अननहि छी। सिरिफ पीसैक जरूरत अछि। पलँगपर सँ उठि झोरा खोलि भाँगक सभ सामान निकालए लगला। तैबीच सुजाता ब्राण्डीक किलोबला बोतल आ गिलास नेने साउस लग आबि ठाढ़ भऽ गेली। खाइए बेरमे साउस पुतोहकेँ कहि देने रहथिन जे बुढ़ा सभदिन चारि बजे बेरुपहरमे पीसुआ भाँग पीबै छैथ। भाँगक सम्बन्धमे सुजाता अनाड़ी रहैथ। किछु ने बुझल रहैन। मुदा ब्राण्डीक सम्बन्धमे तँ बुझल छैन्हे। सुजाता, श्यामा आ रामाकान्त- सभकियो अपना-अपना ढंगसँ साकांच रहैथ।

रामाकान्त जुगेसरकेँ जगा टंकीपर मुँह-हाथ धोइले गेला। खट-खुटक आवाज सुनि श्यामा बुझि गेली। बोतल लऽ सुजाता तैयारे रहैथ। मुदा सुजाताक मनकेँ भितरे-भितर मिथिलाक संस्कृति झकझोरि रहल छेलैन। किएक तँ मिथिलाक संस्कृतिक बेवहारिक पक्षकेँ ओ नइ जनै छेली तँए जहिना अनभुआर जंगलमे कोनो जानवर औनाइत अछि तहिना सुजातो औना रहल छेली। हुनका मनमे उठि रहल छेलैन जे ऐठाम जहिना पुतोहु ससुरक बीच बेवहार होइए तहिना मिथिलामे होइत हएत कि नहि होइत हएत? दोसर प्रश्न ईहो उठि रहल छेलैन जे पढ़ल-लिखल समाजमे तँ पुरान बेवहारो बदैल नव रूप लऽ लइए मुदा...। सुजाता अपना हाथमे ब्राण्डीक बोतल आ गिलास रखने वैचारिक दुनियाँमे वौआ रहल छेली। रामाकान्तकेँ

भाँग पीबैक समय भऽ गेल छेलैन तँए हुनकर विचारमे मधुरता आबि गेल रहैन। तखने लगमे आबि श्यामा कहलकैन- "अखन भाँग नै पिसलौं हेन। पुतोहुजनी एकटा बोतल रखने छैथ से की कहै छिऐन?"

भाँग नै पिसब सुनिते रामाकान्तक मन पहिने तँ क्रोधित भेलैन मुदा बोतलक नाओं सुनि पछाइत असथिर भऽ मुस्कियाइत बजला- "बेटी आ पुतोहुमे की अन्तर छइ। जहिना बेटी, तहिना पुतोहु। तहूमे छोटकी पुतोहु, ओ तँ कोरैला बेटी सदृश होइत अछि। एक तँ दुनियाँमे कोनो सम्बन्ध अधला होइते ने अछि मुदा तखन जखन ओ अपना सीमामे रहए। जखन सीमाक उल्लंघन होइए तखन लाज आ परदाक जरूरी भऽ जाइ छइ। जे परम्परा बनि आगूमे ठाढ़ भऽ गेल अछि। मुदा ओहनो पैछला बेवहार निपुआंग मरि नहियेँ गेल अछि। तँए नीक बेवहार जिनगीमे धारण करब अधला तँ नहि।"

रामाकान्तक बात सुजातो सुनि रहल छेली। मने-मन हुनका खुशियो भऽ रहल छेलैन जे ज्ञानवान ससुर छैथ। मुदा बिना सासुक सहमतिसँ आगू बढ़ब उचित नहि। तँए बोतल-गिलास नेने सुजाता अढ़मे ठाढ़ छेली। पतिक विचार सुनि श्यामा सुजाताकेँ कहए आगू बढ़ली। पर्दाक अढ़मे सुजातोकेँ ठाढ़ देखि बजली-

"जाउ, भगवान अहाँकेँ भोलेनाथ ससुर देने छैथ। मुदा ससुर जकाँ नहि पिता जकाँ बेवहार करबैन।"

बामा हाथमे बोतल आ दहिना हाथमे गिलास नेने सुजाता ससुर लग आबि मुन्ना खोललली। मुन्ना खुलिते सौंसे कोठरी महक पसैर गेल। महकसँ हवोमे जेना मस्ती आबि गेल। एक गिलास पीब रामाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन- "जुगेसर, तोंहू एक गिलास पीबह।"

जुगेसर बाजल-

"काका, अहाँ लग बैस हम केना पीब?"

"जुगेसर, अखन ने तूँ छोट छह आ ने हम पैघ छी। सभ मनुक्ख छी। मनुक्ख तँ मनुक्खे लगमे रहि ने जिनगी बितौत।"

तैबीच सुजाता एकटा गिलास जुगेसरो दिस बढ़ौलैन। जुगेसर एक्के सुढ़िमे भरल गिलास पीब गेल। पेटमे ब्राण्डी पहुँचते गुदगुदबए लगलइ। दोसर गिलास पीविते रामाकान्त सुजाताकेँ कहलखिन- "बेटी, किछु

नमकीन सेहो लाउ?”

रामाकान्तक आढ़ैत सुनि सुजाता बोतलकेँ टेबुलपर रखि कीचेनसँ दूटा पलेटमे मद्रासी भुजिया नेने एली। एकटा पलेट रामाकान्तक आगूमे आ दोसर जुगेसरक आगूमे राखि देलखिन। दू-चारि फँक्का भुजिया फाँकि रामाकान्त फेर दू गिलास ब्राण्डी पीब लेलैन। ओना, भाँग-दे रामाकान्तकेँ बुझल जे पीलाक घन्टा-दू-घन्टाक बाद ओकर निशाँ चढ़ैए मुदा ब्राण्डीक निशाँ तँ पीविते चढ़ि गेलैन। ओना, जुगेसर दुइये गिलास पीलक मुदा तहीमे मन उनैट गेलइ। सौंसे बोतल पीविते रामाकान्तकेँ ढकार भेलैन। ढकार होइते सुजाताकेँ कहलखिन-

“बेटी, इलायची देल पान खुआउ?”

साउस पतिक खान-पानक सम्बन्धमे सभ बात कहि देने रहथिन। तँए सुजाताकेँ बुझल रहबे करैन। दू खिल्ली पान, सुअदगर तेज जर्दाक डिब्बा, इलायची आ सेकल सुपारीक कतरा पलेटमे नेने सुजाता आबि ससुरक आगूमे रखि देलखिन। शराबक रंगमे जहिना रामाकान्त, तहिना जुगेसर रंगि गेला। बजैले दुनूक मन लुसफुसाए लगलैन। पान मुँहमे लैत रामाकान्त सुजाताकेँ पुछलखिन-

“बेटी, अहाँ डॉक्टरी केना पढ़लौं?”

ससुरक सवाल सुनि सुजाता बगलमे राखल कुरसीपर बैस बिनु संकोचे बाजए लगली-

“बाबूजी! हमर पिता आ माए अप्पन महल्लाक कपड़ा साफ करैत रहैथ। यएह हुनका सभक सभदिना काज छेलैन। अही जेना-तेना गुजर चलै छेलैन। एक्केटा घर रहए। अनके कलपर नहेबो करै छेलौं आ पानियोँ पीबै छेलौं। पिता ताड़ी पीबैथ। एक दिन साँझूपहरमे ताड़ी पीब अबैत रहथिन। हुनका बहुत बेसी निशाँ लगि गेल रहैन। रास्तापर एकटा खाधि रहै, ओइ खाधिमे ओ खसि पड़ला। तखने एकटा ट्रक, बिना इजोतेक पास करैत रहइ। ट्रक हुनका ऊपरे देने टपि गेल कुड़कुट-कुड़कुट सौंसे शरीर, हड्डी सहित भऽ गेलैन। हमसभ बुझबो ने केलिऐ। दोसर दिन भिनसरमे हल्ला भेलै तखन हमहूँ, हमर माइयो आ भाए, तीनू गोरे देखए गेलौं। देहक दशा देखि चिन्हबो ने केलिऐन। मुदा कपड़ा आ चप्पल देखि मन खुट-खुट करए लगल। तीनू

गोरे दुनू वस्तुकेँ चिन्हि गेलिऐ। तखन हुनका उठाकऽ आनि जरौलिऐन। बिच्चेमे जुगेसर बाजि उठल-

"अरे बाप रे!"

जुगेसरक 'अरे बाप रे' सुनि सुजाताक आँखिमे नोर आबि गेलैन।

सुजाताक बातकेँ रामाकान्त आँखि मुइन कऽ सुनैत रहैथ। जुगेसरक बात सुनिते आँखि खोललैन। हृदय पसीज गेल रहैन। ताड़ी पीआकक बात सुनि रामाकान्तक मनमे उठलैन जे निशाँपान तँ हमहूँ करै छी मुदा ऐठामक जिनगी आ गामक जिनगीमे बहुत अन्तर अछि। तेतबे नहि, पेटबोनियाँ आदमीक सवाल सेहो अछि। हमरा सभक ग्रामीण जिनगी शान्तिपूर्ण अछि। धनक अभाव तँ जहिना एतौ छै तहिना गामोमे अछि। ऐठाम किछु गनल-गूथल उद्योग आ बेपारी-कारोबारी अछि जे समृद्धशाली अछि। मुदा पेटबोनियोँ ओकरे देखौंस करए चाहैए जइसँ ओकर जिनगी अशान्त भऽ जाइ छइ। ओइ अशान्तिकेँ शान्त करै दुआरे लोक सड़ल-गलल निशाँपान करए लगैए जइसँ ओकर जिनगी, जिनगीक बाटेमे टुटि जाइत अछि।

एते बात मनमे अबिते रामाकान्त पलँगसँ उठि पीक फेकैले निकलला। बाहरक नालीमे पान थुकैड़ कऽ फेंक, टंकीपर कुरुर केलैन। पछाइत पुन: कोठरी आबि सुजाताकेँ कहलखिन-

"बेटा, चाह पिआउ?"

आँचरसँ आँखि पोछैत सुजाता चाह बनबैले किचेन दिस बढ़ली। रामाकान्तक हृदयमे सुजाताक प्रति विशेष आकर्षण बढ़ि गेल रहैन। जेना हनुमानक हृदयमे सीता-राम बैसल रहथिन तहिना सुजातो रामाकान्तक हृदयमे एकटा छोट-छीन घर बना लेली। आइ धरि जे बात सुजातासँ कियो ने पुछने छेलैन से बात रामाकान्त पुछलकैन। जइसँ हिनका प्रति सुजाताक हृदयमे एकटा नीक तस्वीर बनए लगलैन। इम्हर रामाकान्तोक हृदय पघिल रहल छेलैन। जरूर रामाकान्तक हृदयमे सुजाता अप्पन जगह बना लेली। चाहक कप आनि सुजाता हिनको हाथमे आ जुगेसरोक हाथमे पकड़ा देलकैन। हाथमे चाहक कप पकैड़िते रामाकान्त अप्पन अस्तित्व बिसैर गेला। सुजाताक आँखिमे अप्पन आँखि दऽ एक-टकसँ देखए लगला। आर्द्र भऽ रामाकान्त सुजाताकेँ पुछलखिन- "ओइ समैयक जिनगी ओहिना मोन

अछि आकि बिसरबो केलौं?"

नोराएल आँखि सुजाताक, तँए ओ नोर पोछैत बजली- "बाबूजी, हम बिसरब केना! ओ घटना तँ हमर जिनगीक इतिहासक एक महत्वपूर्ण कालखण्ड छी!"

मुड़ी डोलबैत रामाकान्त बजला- "तेकर बाद की भेल?"

सुजाता पुन: अपना स्मृतिमे डुमि बाजए लगली- "हम, दू भाए-बहिन छी। तहिया हम एगारह बर्खक रही आ आठ बर्खक हमर भाए छल। दुनू गोरे स्कूल जाइत रही। महल्लेमे स्कूल छल। भाए तँ छोट रहए तँए कोनो काज नइ करै मुदा हम माइक संग कपड़ो खिंची आ परतीपर सुखेबो करी, संगे लोहो दिऐ आ माइक संग महल्लासँ कपड़ा आनबो करी आ दैयो अबिऐ। ओइसँ जे कमाइ हुअए तइसँ गुजर करी। पढ़ल-लिखल परिवारसँ लऽ कऽ बनियाँ-बेकाल धरिक परिवारमे हमरा सभक आबा-जाही रहए। पढ़ल-लिखल परिवारमे जखन जाइ तँ फाटल-पुरान किताब मांगि ली। ओइसँ पढ़ैले किताब भऽ जाए। खाइक जोगार तँ कमाइयेसँ भऽ जाए। ऐ तरहेँ मैट्रिक फस्ट डिविजनसँ पास केलौं। जखन मैट्रिकक रिजल्ट निकलल रहए, तखन महल्ला भरिक लोक वाहवाही केलकैन। हमरो उत्साह बढ़ल। मनमे अरोपि लेलौं जे बी.एस.सी. करब। ओइ समय हमरा मनमे डॉक्टरक विचार रहबे ने करए। रहबो केना करैत। जेतबे बुधि छल, जएह साधन छल तही हिसाबे ने सोचितौं-विचारितौं। खाएर.., कौलेजमे एडमीशन शुरू भऽ गेल छल। महेन्द्र भैयाक कपड़ा दइले हम तीनू गोरे भिनसुरके पहरमे आएल रही। भैया ताबे अस्पतालेक क्वाटरमे रहै छला। तखन ओसारपर बैस ओ दाढ़ी बनबै छला। हमर माए कपड़ाक मोटरी रखि जमुना दीदीकेँ शोर पाड़ि कहलखिन- "मलिकाइन, कपड़ा लिअ।"

हम-दुनू भाए-बहिन ठाढ़े रही। कोठरीसँ निकैलते दीदीक नजैर हमरापर पड़लैन। जमुना दीदी माएकेँ कहलखिन- "बेटी पास केलक, मिठाइ खुआउ।"

जमुना दीदीक बात सुनि महेन्द्र भैया दाढ़ी बनेनाइ छोड़ि हमरा दिस मुड़ी उठाकऽ तकलैन। बिना किछु बजने थोड़ेकाल धरि देखि, फेर हाँइ-हाँइ कऽ दाढ़ी काटए लगला। दाढ़ी काटि, सभ सामान सैंत कऽ रखि शोर पाड़लैन। हमरा मनमे कोनो तरहक विचार उठबे ने कएल। किएक तँ तीन-

दिन-चारि-दिनपर बरबैर अबिते-जाइते रही। दीदीकेँ भैया कहलखिन- "कनी चाह बनाउ।"

भैयाक बोली हम नइ बुझलयैन मुदा दीदी बुझि गेलखिन। ओ पाँच कप चाह बनौलैन। दू कप अपने दुनू परानी आ तीन कप हमरा तीनू गोरेकेँ देलैन। पहिल दिन हम भैयाक डेरामे चाह पीने रही। भैया हमर नाओं पुछलैन, हम कहलयैन। मैट्रिकक रिजल्टक सम्बन्धमे पुछलैन। सेहो कहलयैन। भैया नाओं लिखबैसँ लऽ कऽ किताब-कॉपी धरिक भार उठबैत हमरा माएकेँ कहलखिन-

"स्कूल-कौलेज तँ लगेमे अछि, माने महल्लेमे अछि तँए बाहर जा कऽ पढ़ैक समस्ये ने अछि। घरेपर रहि पढ़ि सकैए। तखन स्कूल-कौलेजक खर्चसँ लऽ कऽ पढ़ैक सभ सामग्रीक खर्च आइसँ दुनू भाए-बहिनक हम देब।"

भैयाक बात सुनि खुशीसँ हमर मन नाचि उठल। हम बड़ीकाल धरि टुकर-टुकर भैयाक मुँह दिस तकिते रहि गेल रही। जाधैर डॉक्टर बनलौं ताधैरिक सभ खरचा भैया दइते रहला।"

सुजाताक बात सुनि रामाकान्तक मनमे एलैन जे जँ कनियोँ मदैत गरीबकेँ कएल जाए तँ जिनगीक उद्धार भऽ सकैए। पितो बहुत केलैन। बेटो केलक। बीचमे हम तँ किछु नै केलौं..! ओना, दोसरा-ले रामाकान्तो बहुत किछु केनौं रहैथ आ करबो करैथ। मुदा सभ केलहा जेना बिसैर गेला।

रातिक आठ बाजि गेल। एका-एकी तीनटा गाड़ी आएल। महेन्द्र अप्पन गाड़ीसँ उतैर कोठरीमे आबि कपड़ा बदललैन आ सोझे पिता लग एला। महेन्द्रकेँ देखिते रामाकान्त कहलखिन-

"बौआ, हम बेसी दिन नै अँटकब। हम तँ दस गोरेमे समय बितबैबला लोक छी। ऐठाम असगरमे नीक नइ लागत।"

महेन्द्र असथिरसँ बजला-

"गाड़ीक झमारल छी तँए पहिने चारि दिन आराम करू। तेकर बाद देखि-सुनि कऽ जाइक विचार करब।" ❑

पाँचम पड़ाव

मद्रास एला रामाकान्तकेँ आइ दस दिन भऽ गेलैन। ऐठाम दस दिन केना बित गेलैन से बुझबे ने केलाह। ऐ दस दिनक बीच महेन्द्र अपने गाड़ीसँ तीनू गोरेकेँ, माने माता-पिता आ जुगेसरकेँ, मद्रासक मुख्य-मुख्य दर्शनीय स्थान- उदगमण्डलम्, कोडैकानल आ एकडि हिलस्टेशन सहित शुचीन्द्रम्, रामेश्वरम्, तिरुचेंदूर, मदुराइ, पलनी, तिरुचिरापल्ली, श्रीरंगम, तंजावूर, कुम्बकोणम, नागोर, वेलांकन्नी, वैदीश्वरन् कोयिल, चिदम्बरम्, तिरुवण्णामलै, कांचीपुरम, तिरुत्तणि आ कन्याकुमारी घुमा देलकैन। सभठाम घुमि-फीरिकऽ देखलैन। अपनासभ सँ भिन्न रीति रेवाज, बेवहार आ जीबैक ढंग ओइठामक लोकक बुझि पड़लैन। तैसंग ईहो बुझि पड़लैन जे अपनासभ सँ ऐठामक लोक अधिक मेहनतियो आ इमानदारो अछि।

भारतक आजादीक उपरान्त राज्य-पुनर्गठन अधिनियमक अन्तर्गत चौदह जनवरी उन्नैस साए उनहत्तैरमे मद्रास राज्यक नाओं तमिलनाडु राखल गेल। पुरना केरलक किछु हिस्सा आ आन्ध्र प्रदेशक किछु हिस्सा जोड़िकऽ ऐ राज्यक निर्माण भेल।

तमिलनाडु द्रविड़ सभ्यताक केन्द्र अदौसँ रहल अछि। ई.पू. चारिम शताब्दीमे चोल, पाण्ड्य आ चेर राजवंशक समयमे द्रविड़ सभ्यता अप्पन चरम सीमापर फुलाएल-फड़ल।

तेरहमी शताब्दीक आरम्भमे ऐठाम काकतीयक शासन रहल। तेरह साए तेइस इस्वीमे दिल्लीक तुगलक सुल्तान काकतीय शासककेँ भगौलक। गोलकुंडाक कुतुबशाही सुल्तान अखनुका हैदरावादक न्यों लेलक। सम्राट औरंगजेब सुल्तानकेँ हेरा आसफ जा केँ गवर्नर बना देलक। मुगल शासनक आखिरी समयमे आसफ जा अपनाकेँ निजामक उपाधि धारण कऽ स्वतंत्र शासक घोषित कऽ लेलक।

सोलह साए उनचालीस इस्वीमे ईस्ट इंडिया कम्पनीक पएर मद्रासमे जमि गेल, ताधैर देशक अधिकांश भागमे अंगरेजक अधिकार भऽ गेल

छेलइ। तमिलनाडुक पूबमे बंगालक खाड़ी, दच्छिनमे हिन्द महासागर, पच्छिममे केरल आ उत्तरमे कर्नाटक आ आन्ध्रप्रदेश अछि।

पैछला राति गप-सप्प करैत सभकेँ डेढ़ बाजि गेलैन। सात दिनक देखल मद्रास, तँए विषय नमहर छल।

अढाइ बजे भोरमे एकठाम सड़क दुर्घटना भऽ गेल। चारू डॉक्टरकेँ फोन एलैन जे जल्दी दुर्घटनाक जगहपर अबिऐ। फोन सुनि महेन्द्र तीनू गोरे– रवीन्द्र, जमुना आ सुजाता–केँ जानकारी दैत कहलखिन-

"जल्दी-जल्दी तैयार भऽ चलै चलू।"

एक्के गाड़ीसँ चारू गोरे विदा भेला। दुर्घटनाक जगहपर पहुँच महेन्द्र देखलखिन जे गाड़ी एकटा सड़कपर राखल रौलरसँ टकरा गेल अछि। जइसँ सभकियो थौआ-थाकर भेल अछि। ..गाड़ीमे एक्के परिवारक आठ गोरे सवार छला। उद्योगपतिक परिवार। दू गोरेक हालत बड़ गड़बड़ छल। एकटा बुढ़क माथ फटि गेल रहैन, जइसँ ओ अर्र-दर्र बकि रहल छला आ दोसर, एकटा महिलाक छाती टुटि गेल रहैन। ओ वायपर कखनो-कखनो बजबो करै छली। एकटा जुआन महिलाक दुनू जांघ टुटि गेल रहैन। दूटा ढेरबा बच्चियाक एक-एक टा आँखि फुटि गेल रहैन आ एक-एक टा डेन सेहो टुटि गेल रहैन। अबोध बच्चाकेँ किछु नै भेल छेलइ। डॉ. महेन्द्रकेँ पहुँचते धाँइ-धाँइ अस्पतालक आनो-आनो डॉक्टर, नर्स सभ आबए लगला। स्थानीय थानाक पुलिससँ लऽ कऽ जिला पुलिस धरि सेहो पहुँच गेल। डॉक्टर सभ रोगी सभकेँ देखि विचार केलैन जे अस्पताले लऽ जेनाइ नीक होएत। डॉक्टर सभक संगमे सिरिफ अले टा रहैन। ने कोनो दवाइ आ ने कोनो औजार रहैन।

आठो गोरेकेँ उठा-पुठा कऽ अस्पताल आनल गेल। अस्पतालमे जाँच-पड़ताल होइते काल दू गोरेक मृत्यु भऽ गेलैन।

साढ़े पाँच बजे भिनसरमे चारू गोरे डेरा पहुँचला। गाड़ीक हरहरेनाइ सुनि रामाकान्तोक नीन टुटि गेलैन।

सुतैक समय नै देखि चारू गोरे गाड़ीसँ उतैर अप्पन-अप्पन नित्य-कर्ममे लगि गेला। ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल रामाकान्त सोचए लगला जे आइ एगारहम दिन छी मुदा एक्को टा पोता-पोतीक मुँह नइ देखि सकलौं! जइ परिवारमे पाँच-पाँच टा पोता-पोती रहत ओइ परिवारक बच्चासँ भेँट

नइ हुअए, ई केतेक दुखक बात छी। माए-बाबू, दादा-दादीक सिनेह बच्चाक प्रति की होइ छै तेकर कोनो नामो-निशान ऐठाम नइ देखि रहल छी। जइ बच्चाकेँ माए-बाबूक सिनेह नै भेटतै ओइ बच्चाकेँ माता-पिताक प्रति केहेन धारणा बनत? हँ, ई बात जरूर जे दुनियाँक सभ मनुक्ख, मनुक्ख छी तँए सभक प्रति सभकेँ सिनेह हेबा चाही। मुदा जइ परिवेशमे हमसभ जीब रहल छी, जैठाम बेकतीगत सम्पैत आ जवाबदेहीक बीच मनुक्ख चलि रहल अछि, तैठाम सिनेह तँ खण्डित होइए। मनुक्खक जिनगी स्थायी नहि, अस्थायी होइए। उमेरक हिसाबसँ शरीर क्रियाशील रहैए। जहिना बच्चाक उत्तरदायित्व माए-बाबूपर रहै छै तहिना रोगसँ ग्रसित वा अधिक वयस भेलापर जखन शरीरक अंग शिथिल हुअ लगै छै, तखन माइयो-बापक उत्तरदायित्व तँ बच्चापर होइ छइ। जँ से नहि होइ तखन जिनगी कष्टमय हेबे करत। लोक एक राज्यसँ दोसर राज्य, एक देशसँ दोसर देश कमाइले जाइए, किएक? अहीले ने जे अपनो आ परिवारोक जिनगी चैनसँ चलत...। रंग-बिरंगक प्रश्न सभक बीच रामाकान्त पड़ल छला।

महेन्द्रकेँ तीन आ रवीन्द्रकेँ दू सन्तान। दुनू मिलाकऽ पाँच भाए-बहिन। महेन्द्रक जेठ बेटा हाइ स्कूलमे पढ़ैए, बाँकी चारू नर्सरीमे अछि। महेन्द्रक जेठ बेटाक नाओं 'रमेश' छिऐ, जे हाइ स्कूलक होस्टलमे रहैए आ बाँकी चारू आवासीय स्कूलमे अछि। महिना-दू-महिनापर महेन्द्र अपनेसँ जा कऽ सभक खरचा पहुँचबै छथिन।

बाबा-दादीक जोर केलापर बच्चा सभकेँ भेँट करैक कार्यक्रम महेन्द्र बनौलैन। रबि दिन स्कूलो बन्न रहत, तँए भेँट-घाँट करैमे सुविधा हएत। सात बजे डेरासँ चलबाक कार्यक्रम बनल। रामाकान्त, श्यामा आ जुगेसर समयसँ पहिनहि तैयार भऽ गेला। मुदा भरि रातिक जगरना दुआरे महेन्द्र पछुआएल रहैथ। ओंघीसँ देह भँसियाइत रहैन। मुदा नीन तोड़ैक दवाइ खा पिता लग आबि बजला- "बाबू, हम तँ भरि राति जगले रहि गेलौं। जखन ओछाइनपर गेलौं, नीन पड़लो ने रही कि फोन आबि गेल जे एकटा सड़क दुर्घटना भऽ गेल, जइमे सवार एक्के परिवारक आठ गोरे छला, ओ पैघ उद्योगपतिक परिवार छल। हुनके सभकेँ देखैत-सुनैत भिनसरमे एलौं।"

बिच्चेमे जुगेसर बाजल- "मरबो केलइ?"

"हँ! जे दुनू मुख्य कारोबारी छला, ओ मरि गेला। एक गोरेकेँ ब्रेन

हेम्रेज भऽ गेलैन। आब ओ सभदिन पगलाएले रहता। एक गोरेकेँ छातीक हड्डी थौकचा भऽ गेल छैन, ओ दू-चारि मासक मेहमान छैथ। तीनटा अधमरू भऽ कऽ जीता। एकटा चारि सालक बच्चा टा सुरक्षित रहल।"

रामाकान्त महेन्द्रक बातो सुनैथ आ मने-मन सोचबो करैथ जे यएह छी जिनगी। अहीले लोक एते नीच-सँ-नीच काजपर उतैर मनुक्खकेँ मनुक्ख नइ बुझैए। मुदा अनका बुझबैले धर्मक नाटक रचि पूजा-पाठ, कीर्तन-भजन करैए। तैसंग हजारो-लाखो रुपैआ खरच करिकऽ पाथरक मूर्ति सेहो स्थापित करैए, नीक-नीक प्रसाद सेहो चढ़बैए। मुदा जइ मनुक्खकेँ पेटमे अन्न नहि, देहपर वस्त्र नहि, रहैक घर नहि आ जीबैक कोनो ठेकान नहि अछि, ओकरा देखिनहारो कियो नहि! यएह छी कर्मकाण्डक आडम्बर आ चक्रव्यूह!

पिताकेँ गम्भीर मुद्रामे देखि महेन्द्र मुस्कियाइत बजला-

"नोकरीक जिनगीए एहेन होइ छइ। एक रातिक कोन बात जे एकलखाइत पाँचो राति जगल रहब तैयो किछु नइ बुझबै। एहेन-एहेन दवाइ सभ अछि जे खाइत देरी नीन निपत्ता भऽ जाइए। जाबे अहाँसभ चाह-पान करब ताबे हमहूँ तैयार भऽ जाइ छी।"

कहि महेन्द्र उठिकऽ तैयार होइले अपना कोठरी चलि गेला।

चारू गोरे कारमे बैस विदा भेला। दुनू स्कूल एक्केठाम। एक दोसरसँ थोड़बेक हटल अछि। चारू गोरे पहिने रमेशक होस्टल पहुँचला। छहरदेवालीक बीचमे होस्टल अछि। अबै-जाइक एक्केटा दरबज्जा छै, जइ दरबज्जामे लोहाक फाटक लागल, ओतए सदिखन एकटा दरमान बैसल रहैए। दरमान महेन्द्रकेँ चिन्हैत रहैन। किएक तँ मासे-मास ओ अबिते रहै छैथ। चारू गोरे भीतर गेला। भीतरमे गार्जन सभ-ले एकटा खुला घर अछि, जइमे चारूकात कुरसी सजल छइ। चारू गोरे ओइ घरमे बइसै गेला। महेन्द्र रमेशकेँ समाद देलखिन। रमेश आबि पिताकेँ गोड़ लागि ठकुआ कऽ आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। ने रमेश बाबा दादीकेँ चिन्हैत आ ने बाबा-दादी रमेशकेँ। ठकुआएल ठाढ़ देखि रमेशकेँ महेन्द्र कहलखिन-

"बौआ, बाबा-दादीकेँ गोड़ लगहुन ने!"

महेन्द्रक कहलापर रमेश तीनू गोरेकेँ गोड़ लगलकैन। शिष्टाचार

निमाहैत तीनू गोरे आसिरवाद देलखिन। मुदा रामाकान्तक मनमे तूफान उठि गेलैन। सोचए लगला- जे पोता चिन्हबो ने करैए ओ सेवा की करत? पढ़ब-लिखब जरूर सभ मनुक्ख लेल जरूरी अछि, ऐसँ ज्ञान होइ छै जे जिनगी जीबैक ढंग सिखबैए, मुदा जँ बच्चाकेँ परिवारसँ अलग जिनगी बना पढ़ौल-लिखौल जाए तँ ओ परिवारकेँ केना चिन्हत आ परिवारक दायित्वकेँ केना बुझत? परिवारोक तँ सीमा अछि। एक परिवार पैछला पीढ़ीकेँ जोड़ि बनैए जे संयुक्त परिवार कहबैए। संयुक्त परिवार मिथिलाक धरोहर छी। आ दोसर परिवार अपने लगसँ आगू बढ़ि बनैए जे एकल परिवार कहबैए। जइमे लोक बापो-माएकेँ बीरान बुझि कुभेला करै छैन। जँ ऐ तरहक परिवारक संरचना हुअ लगत तँ बापो-माएकेँ धिया-पुतासँ कोन मतलब रहतैन। तखन समाजक की दुर्दशा हएत? जँ से हएत तखन मनुक्ख आ जानवरमे अन्तरे की रहत? अखने देखि रहल छी जे अप्पन खून रहितो बुझि पड़ैए जे जहिना हाट-बाजार वा मेला-ठेलामे हजारो मनुक्ख एकठाम रहितो एक-दोसरकेँ अनचिन्हारे-अनचिन्हार बुझि पड़ै छै, तहिना भऽ रहल अछि। ऐसँ नीक जे जखन मनुक्खक समूहसँ परिवार बनैए आ परिवारक समूहसँ समाज, तखन समाजेक सदस्यकेँ किएक ने अंगीकार कएल जाए, जइसँ जिनगी हँसैत-खेलैत बितैत रहत...।

पिताकेँ गुम्म देखि महेन्द्र बजला-

“बाबू, आब ऐठामसँ चलू। ऐठाम सभ बच्चाक रूटिंग बनल अछि। अगर अपनासभ बेसी समय अँटकब तँ बच्चा-सभक रूटिंग गड़बड़ाएत।”

ममता भरल मनकेँ मारि रामाकान्त उठिकऽ ठाढ़ होइत बजला- “हँ, हँ, चलह। ओहू बच्चा सभकेँ देखैक अछि।”

रमेशो चलि गेल आ ईहो चारू गोरे गाड़ीमे बैस रहला। गाड़ी आगू बढ़ल।

नर्सरी विद्यालय लगेमे, लगले सभकियो पहुँचला। महेन्द्रकेँ दरमान चिन्हिते रहैन, तँए कोनो रोक-राक नहियेँ भेलैन। चारू बच्चाकेँ दरमान बजा अनलक। चारू बच्चा आबि महेन्द्रकेँ गोड़ लगलकैन। गोड़ लागि चारू गोरे ठमैक गेल। हाथक इशारासँ रामाकान्त आ श्यामाकेँ देखबैत बच्चा सभकेँ महेन्द्र कहलखिन- “बौआ, बाबा-दादी छथुन। गोड़ लगहुन।”

महेन्द्रक कहलापर चारू बच्चा तीनू गोरेकेँ गोड़ लगलकैन। रामाकान्तो आ श्यामोक मन तरे-तर टुटए लगलैन। मुदा की करितैथ। मन कहलकैन, की सोचि ऐठाम एलौं आ की देखि रहल छी? आब एक्को दिन ऐठाम रहब उचित नहि, मुदा जखन आबि गेलौं तखन तँ बेटे-पुतोहुक विचारसँ ने गाम जाएब। किछु देखैले बाँकी सेहो अछिए। टुटल मने रामाकान्त बजला-

"बच्चा सभकेँ देखिए लेलौं, आब ऐठामसँ चलू। गामक सुरता घीचि रहल अछि। जल्दीए चलि जाएब।"

पिताक बात महेन्द्र नइ बुझि सकला। जाधैर महेन्द्र गाममे रहला, विद्यार्थीए छला। डॉक्टर बनलाक बाद मद्रासे चलि एला। जइसँ मद्रासेक परिवेशमे ढलि गेला।

बेर टगिते चारू गोरे ब्रह्मचारी आश्रम देखैले विदा भेला। बह्मचारी आश्रममे मन्दिर नहि। मात्र दूटा घर। एकटा घर धर्मशाला जकाँ सार्वजनिक आ दोसर घरमे ब्रह्मचारीजी अपने रहै छैथ। एक भागमे सुतै छैथ आ दोसर भागमे भानस-भात सेहो करै छैथ। तैसंग बरतनो-बासन सभ ओही घरमे रखै छैथ। ब्रह्मचारीजी मिथिलेक छिआ। अद्वैत दर्शनक प्रकाण्ड पण्डित छैथ। ब्रह्मचारीजीक नस-नसमे अद्वैत दर्शन समाएल छैन।

ब्रह्मचारीजीक आश्रम लगमे रहितो महेन्द्रक जनतबमे पहिने नइ रहैन। मुदा जखन रामेश्वरम् गेल छला तँ ओतै एकटा पुजेगरी कहलकैन।

मुख्य मार्गसँ ब्रह्मचारीक आश्रम करीब दस लग्गी पच्छिम अछि। एकपेड़िया रास्ता तँए महेन्द्र मुख्य मार्गक कतबाहिमे गाड़ी लगा, चारू गोरे आश्रम दिस बढ़ला। आश्रमक सीमापर पहुँचते रामाकान्तो आ महेन्द्रो आँखि उठा-उठा तजबीज करए लगला। आश्रममे ने कोनो तरहक तरक-भरक आ ने लोकक भीड़-भाड़। घर तँ ईंटाक बनल अछि, मुदा धर्म स्थान जकाँ नइ बुझि पड़इ। साधारण गिरहस्तक घर जकाँ आश्रम। मुदा एकटा नव चीज दुनू गोरेकेँ बुझि पड़लैन। बुझि पड़लैन जे हमसभ मद्रासक जमीन छोड़ि मिथिला चलि एलौं अछि।

ब्रह्मचारीजी करजानमे हाँसू लऽ कऽ केरा गाछक सुखल डपोर सभकेँ काटैत रहैथ। केरा गाछक अढ़, तँए ने ब्रह्मचारीजी रामाकान्त सभकेँ

देखलखिन आ ने रामाकान्त सभ ब्रह्मचारीजीकेँ देखैथ। मुदा गाड़ीक आवाज ब्रह्मचारीजी सुनने छला। ओना, गाड़ी तँ सदिखन चलिते रहैए, तँए गाड़ीक आवाजपर ब्रह्मचारीजी धियाने नै देलैन। अप्पन काजमे मस्त छला।

करीब एक बीघा जमीन आश्रममे हएत, जइमे सभकिछु बनल अछि। दू कट्ठामे दुनू घर, आँगन आ गाइक थैर सेहो छैन। चारि कट्ठाक एकटा छोटेटा पोखैर सेहो अछि आ करीब पाँच कट्ठामे गाछी-कलम सेहो हएत। दू कट्ठामे गाए-ले घासक खेती आ सात कट्ठामे अन्न उपजबै छैथ।

सभसँ पहिने चारू गोरे पोखरिक घाटपर पहुँचला। पोखरिक घाट पजेबा-सिमटीसँ बनल अछि। घाटपर ठाढ़ भऽ चारू गोरे पोखैरकेँ हियासि-हियासिकऽ देखए लगला। पोखरिक किनछैरमे पान-सात टा मिथिलेक बौगुला चरौर करैत रहए। एक टकसँ रामाकान्त बौगुला सभकेँ देखि सोचए लगला जे जहियासँ ऐठाम एलौं, आइये अप्पन इलाकाक बौगुलापर नजैर पड़ल। ओना, बौगुला तँ एतौ अछि मुदा मिथिलाक बौगुला तँ दोसरे चालि-ढालिक होइए।

बौगुलापर सँ नजैर हटा पोखैरमे देलैन। पोखैरमेँ दस-बारह टा कुमहीक छोट-छोट समूह फूल जकाँ छिड़ियाएल, जे हवाक सिहकी पाबि नाचि रहल छल। तैबीच दूटा पनिडुम्मी भुक-दे जागल, जेकरा अपनासभ पिहुओ कहै छिऐ। पिहुआकेँ ई सभ तजबीज करिते रहैथ कि एक जेर सिल्ली उड़ैत आबि पोखैरमे बैसल। तैबीच जुगेसर बाजल-

"काका, ई तँ अपने इलाकाक पुरैन गाछ छी। फूलो ओहने बुझि पड़ैए।"

जुगेसरक बात सुनि रामाकान्त मुड़ी उठा पुरैनकेँ देखि बजला-

"हँ हौ जुगेसर, छी तँ कमले।"

हाथ-पएर धोइकऽ चारू गोरे घाटक ऊपरका सीढ़ीपर आबि ब्रह्मचारीजीकेँ हियाबए लगला। ब्रह्मचारीजीकेँ नै देखि रामाकान्तकेँ बुझि पड़लैन जे भरिसक केतौ गेल छैथ। तैबीच जुगेसरक नजैर करजान दिस गेल। करजानमे ब्रह्मचारीजीकेँ देखि जुगेसर बाजल-

"काका, एक गोरे करजानमे काज कऽ रहल अछि। हम जा कऽ पुछिऐन जे ब्रह्मचारीजी केतए छैथ?"

जुगेसरक बात सुनि रामाकान्तो आ महेन्द्रो आँखि उठाकऽ देखलैन। मुदा ओइ बेकतीक छुछुन चेहरा देखि रामाकान्तकेँ भेलैन जे कियो जन-मजदूर काज करैए। तैबीच हुनको कानमे रामाकान्तक आवाज पहुँचलैन, कानमे आवाज पहुँचते ब्रह्मचारीजी अप्पन हाथक हँसुआ नेनहि पहुँचला।

ब्रह्मचारीजी अनेको भाषा आ बोलीक जानकार लोक, चारू गोरेकेँ देखिते बुझि गेला जे ई मिथिलेक छैथ किएक तँ जुगेसर आ रामाकान्तकेँ मिथिलेक ढंगसँ धोती पहिरने देखलैन। मुदा महेन्द्रकेँ देखि ततमतमे पड़ल छला। श्यामाक साड़ी पहिरब देखि ब्रह्मचारीजीक मन मानि गेलैन जे ई सभ मिथिले वासी छैथ। तैबीच रामाकान्त हुनका पुछलखिन-

"ब्रह्मचारीजी केतए छैथ?"

ब्रह्मचारीजी साधारण धोती पहिरने रहैथ। सेहो फाँड़ बन्हने। देहपर अंगपोछा टा रहैन। ने बाबरी छटौने आ ने दाढ़ी रखने, तहिना ने गरदैनमे कण्ठी-माला आ ने देहमे जनेउ...।

मुस्कियाइत ब्रह्मचारीजी उत्तर देलखिन-

"अहाँसभ मिथिलासँ एलौं हेन। एना ठाढ़ किए छी। चलू बैसकऽ गप-सप्प करब। ब्रह्मचारीजी अपनहि आबि जेता।"

कहि पोखरिक घाटपर हाँसू रखि हाथ-पएर धोइकऽ अँगनेमे मोथीक बिछान बिछौलैन। चारू गोरेकेँ बैसा घरसँ एक घौर केरा निकालि अनलैन।

केराक रंग-रूप देखि रामाकान्त बुझि गेला जे ई तँ मिथिलेक गौरिया-मालभोग छी, अँठियाहा नइ छी। घौरो नमहर अछि। गछपक्कू, जुआकऽ अँठि-अँठि गेल अछि। सुआदो नीक हेतै, अपनेसँ पूर्ण जुआ कऽ पाकल अछि। धुकलाहा नइ छी।

केराक घौर बीचमे राखल आ सभकियो हाथ बगने। जुगेसर सोचैत जे तेते खेने छी जे पेटमे जगहे ने अछि, नहि तँ सौंसे घौर खा जैतिऐन।

रामाकान्त बजला-

"अखने, एक घन्टा पहिने भोजन केलौं, तँए खाइक क्षुधा नइ अछि। मुदा ब्रह्मचारी आश्रमक परसाद छी तँए दू छीमी जरूर खाएब।"

कहि दूटा छीमी केरा ऊपरका हत्थासँ तोड़ि रामाकान्त खेलैन।

रामाकान्तकेँ देखि महेन्द्रो आ जुगेसरो दू-दू छीमी तोड़ि खेलैन। श्यामा हाथ बगने चुपचाप बैसल छेली। श्यामाकेँ हाथ बागल देखि ब्रह्मचारीजी बजला- "बहिन, अहाँ जइ दुआरे हाथ बगने छी ओ हमहूँ बुझै छी। मुदा अप्पन मिथिलामे दुनू चलैन अछि। पतिक आगूमे पत्नी नै खाइ छैथ मुदा बिआहक प्रकरणमे समाजक माए-बहिन मिलि मौहक सेहो करै छैथ, जइमे पति-पत्नीकेँ संगे खुऔल जाइए। तँए अहूँकेँ लजेबाक नै चाही। ई तँ सहजे आश्रम छी आ धर्म स्थान सेहो छी।"

ब्रह्मचारीजीक विचार सुनि श्यामाक मन डोललैन, मुदा बेवहार मनकेँ रोकिते छेलैन। असमंजसमे श्यामाकेँ देखि जुगेसर फनैक कऽ बाजल- "काकी, जखन हमरा घरनीक ओंगरी ढेकीमे कटि गेल रहैन तखन हम अपने हाथे हुनका खुअबै छेलिऐन। अहाँ तँ सहजे वृद्ध भेलौं।"

जुगेसरक बात सुनि रामाकान्त मुड़ी झुका लेलैन। दू छीमी केरा श्यामो खेलैन। चारू गोरे केरा खा हाथ-मुँह धोलैन।

ब्रह्मचारीजी रामाकान्तकेँ पुछलखिन- "ऐठाम अपने सभ केना-केना एलिऐ?"

महेन्द्रकेँ देखबैत रामाकान्त बजला- "ई जेठ बेटा छैथ। डॉक्टरी पढ़ि नोकरी करए ऐठाम चलि एला। सालमे एकबेर अपनो गाम जाइ छैथ। बाल-बच्चा आ स्त्री आइ धरि गाम नइ गेलखिन। ओहो सभ अहीठाम रहै छैथ। हमरा दुनू परानीक मनमे आएल जे देशो-कोस आ बच्चो सभकेँ देखि आबी, तँए एलौं?"

महेन्द्र दिस देखि ब्रह्मचारीजी बजला- "केतेक दिनसँ ऐठाम छी?"

थोड़ेकाल गुम्म रहि, समयकेँ मोन पाड़ैत महेन्द्र बजला- "ई बाइसम बरख छी।"

"एतेक दिनसँ ऐठाम रहै छी मुदा कहियो भेँट-घाँट नै भेल?"

अप्पन विवसता देखबैत महेन्द्र उत्तर देलखिन- "एक तँ नोकरी करै छी, तैपर डॉक्टरी एहेन पेशा अछि जे भरि मन कहियो आरामो नइ कऽ पबै छी। घुमनाइ-फिरनाइक कोन बात। मुदा तैयो कहुना समय निकालि ऐबो करितौं से बुझले ने छल।"

"आइ केना एलौं?"

"चारिम दिन हमसभ रामेश्वरम् गेल रही, ओहीठाम एकटा पुजेगरी अपनेक सम्बन्धमे कहलैन।"

महेन्द्रक बात सुनि ब्रह्मचारीजी मुस्कियाइत बजला-

"मासमे एक बेर हमहूँ रामेश्वरम् जाइ छी। समाज-रूपी समुद्रक कातमे स्थापित रामेश्वरम् लग जा समुद्रमे उठैत लहैरकेँ धियानसँ देखबो करै छी आ विचारबो करै छी। दुनू तरहक लहैर समुद्रमे उठैए- नीको आ अधलो। नीक लहैर देखि मन प्रसन्न होइए आ अधला देखि मन जरए लगैए। मुदा तैयो सोचैत रहै छी जे अधला लहैर बेसी उग्र नै हुअए आ नीक लहैर सदिखन उठैत रहए।"

ब्रह्मचारीजीक विचार जेना महेन्द्रक सूतल बुधिकेँ जगा देलकैन। अनासुरती हुनका मनमे उठलैन जे अन्हार-सँ-इजोतमे आबि गेलौं आकि इजोते-सँ-अन्हारमे चलि गेलौं?

विचित्र स्थितिमे महेन्द्र पड़ि गेला। जइ रूपमे माए-बाबू आ जुगेसरकेँ अखन तक देखै छला ओ जेना बदलए लगलैन। बिच्चेमे उठि महेन्द्र गाछी दिस टहैल गेला। ब्रह्मचारीजी बुझि गेलखिन।

तैबीच रामाकान्त ब्रह्मचारीजीकेँ पुछलखिन-

"अपने मिथिला छोड़ि ऐठाम किए आबि गेलौं? जखन कि ई इलाका दोसर धर्म, दोसर संस्कृति आ दोसर जातिक छी?"

मुस्कियाइत ब्रह्मचारीजी बजला- "कोनो जाति, कोनो पंथ आकि कोनो संस्कृति जे अछि तेकर अधार होइ छै जिनगी। जिनगीक अधार छी मनुक्खक बुधि, विचार आ कर्म। जखने मनुक्ख अप्पन सुपत कर्मसँ जिनगी ठाढ़ करैए तखने धर्म, संस्कृति, विचार आ आचार सभकिछु बदैल, सही मनुक्खक निर्माण करैए। जेकरा हम महामानव, धर्मात्मा आकि उच्च कोटिक मनुक्ख बुझै छी जे मिथिलांचलमे क्षीण भऽ रहल अछि! ओना, सोलहन्नी मरल नइ अछि मुदा दबाइत-दबाइत दुब्बर भऽ गेल अछि। मिथिलाक जे मूल वासी छैथ हुनका सभकेँ अभिजात वर्ग वा कही तँ परजीवी वर्ण, वा बाहरी लोक आबि सभकिछुकेँ बदैल एहेन सामाजिक ढाँचामे ढालि देलकैन जे अदौसँ अबैत संस्कृतिकेँ दाबि अभिजात-संस्कृतिकेँ बढ़ा देने अछि। जिनगीक सच्चाइकेँ दाबि बनौआ जिनगीमे बदैल

देने अछि। जइसँ लोकक जीवन वास्तविकतासँ हटिकऽ वौआ गेल अछि। ओना, निर्मूल नष्ट नै भेल अछि मुदा एतेक क्षीण जरूर भऽ गेल जे नीक-अधलाकेँ बेराएब कठिन अछि। हमसभ मनुक्खकेँ मनुक्ख बुझै छी। ने कियो कारी अछि आ ने कियो गोर। मुदा जिनगीक ढाँचा एहेन बनि गेल अछि जे स्पष्ट रूपमे एक-दोसरसँ पैघ आ एक-दोसरसँ छोट बनि गेल अछि आ बनलो जा रहल अछि। ओना, देखबै तँ बुझि पड़त जे सभ एक दोसरसँ पैघ आ एक-दोसरसँ छोट अछि। मुदा मकड़ा जकाँ अपने पेटसँ सूत निकालि अपनेसँ जाल बुनि, ओइमे सभकियो ओझरा गेल अछि।"

अप्पन आँखि बन्न केने ब्रह्मचारीजी बजिते छला कि तइ बिच्चेमे रामाकान्त पुन: पुछि देलखिन- "अपने तँ प्रकाण्ड पण्डित छी, तखन मिथिलाकेँ छोड़ि ऐठाम किए चलि एलौं?"

रामाकान्तक दोहराएल प्रश्नपर ब्रह्मचारीजी गम्भीर होइत बाजए लगला-

"अहाँक बात हम मानै छी, मुदा पढ़ल-लिखलसँ मुरुख धरिक विचार एहेन बनि गेल अछि जइमे नीक विचारकेँ सन्हियाइये नै देल जाइए। कहलो गेल छै जे 'असगर ब्रहस्पतियो फूसि'। तेतबे नहि, जेकरा कल्याणक जरूरत अछि ओहो नीक रास्ता धड़ैले तैयारे नहि! 'जेकरा-ले चोरि करी सएह कहए चोरा'। की करबै! जँ सिरिफ वैचारिके स्तरपर संघर्ष होइ तँ संघर्ष कएल जा सकैए मुदा तेतबे नइ अछि। जिनगीक क्रियामे उपद्रव जे करैए से तँ करबे करैए जे जानोसँ खेलबाड़ करैसँ नै चुकैए। अभिजात वर्ग एतेक सशक्त बनि गेल अछि जे जहिना कोनो साँढ़-पारा चलैतकाल पाँकमे फँसि जाइए आ परोपट्टाक नढ़िया, कुकुर, गीध आ कौआ आबि-आबि जीवितेमे ओकर आँखि फोरि-फोरि खाए लगै छै, तहिना इमानदार मनुक्खोक संग ओइठाम भऽ रहल अछि। ओना, हारि मानैले ने हम तैयार छी आ ने मानब। मुदा जहिना नव सुरुजक संग नव दिनक शुरूआत होइत अछि, तहिना नव मनुक्ख नव जिनगी बनबैक दिशामे बढ़बो करैत अछि, तँए संतोष अछिए।"

रामाकान्त पुछलखिन- "अपनेक परिवारमे के सभ छैथ?"

ब्रह्मचारी बजला-

"पिता गिरहस्त छला। पनरह बीघा खेत रहैन। ओइ खेतकेँ माता-

पिता दुनू परानी उपजबै छला, जइसँ परिवार नीक जकाँ चलै छेलैन। ओना, रौदी-दाही होइते छेलै मुदा तैयो सहि-मरिकऽ ओहीसँ गुजर करै छला। हम दू भाँइ छी। घरे लग नवानी विद्यालयमे हम पढ़लौं, किछु दिन लोहना पाठशालामे सेहो पढ़लौं। हमर छोट भाए बच्चेसँ पिताजीक संग खेती करै छला। ओ पढ़लैन नहि। माइयो आ बाबूओ मरि गेला। हम बिआह नै केलौं। भाएकेँ बिआह करा सभकिछु छोड़ि अपने घरसँ निकैल गेलौं। मनमे छेलए जे जइ कुरीति, कुबेवस्था आ कुचालिमे मिथिलाक समाज फँसल अछि ओकरा सुधारि सुरीति, सुबेवस्था आ सुचालि दिस लऽ चली। तइ पाछू लगि गेलौं। मुदा वेबस भऽ छोड़ि चलि एलौं। कारण ओइठामक निआमक आ हुनका सभक पाछू पढ़ल-लिखल लोक, जे अपनाकेँ बुधियार बुझै छथिन, तिनका लगा अभिजात लोकैन सभ, मनुक्खक साँचकेँ ओहन बना देने छैथ, जइसँ कुपात्र छोड़ि सुपात्रक निर्माणे ने होइए। जेकरा चलैत छीना-झपटी, बलात्कारी, चोरी-डकैती, छिनरपनी, जातीय उन्माद, धार्मिक उन्माद वा ई कहियौ जे मनुक्ख बनैक जेतेक रास्ता अछि ओ सभटा नष्ट भऽ गेल अछि! सभक जड़िमे सम्पैत घुइस कऽ काज कऽ रहल अछि। जइ पाछू पड़ि सभ बताह भऽ गेल अछि। सभसँ दुखद बात तँ ई अछि जे नीक-सँ-नीक, पैघ-सँ-पैघ आ विद्वान-सँ-विद्वान धरि बजता किछु आ करता किछु! जइसँ समाजक बीच सत्य बाजबे मेटा गेल अछि! एहेन समाजमे नीक लोकक रहब केना सम्भव हएत? तँए हम सभकिछु छोड़ि मिथिलासँ पड़ाकऽ ऐठाम चलि एलौं। देहक सुखक पाछू सभ आन्हर भऽ गेल अछि।"

ब्रह्मचारीजीक बात सुनि रामाकान्तकेँ धनक प्रति मोह भंग हुअ लगलैन। सोचए लगला जे हमरो दू साए बीघा जमीन अछि, ओते जमीनक कोन प्रयोजन? जँ ओइ जमीनकेँ निर्भूमि-गरीबक बीच बाँटि दिऐ तँ केते परिवार आ केते लोक सुख-चैनसँ जिनगी जीबए लगत। जेकरा-ले जमीन रखने छी ओ तँ अपने तेतेक कमाइ छैथ जे ढेरी लगल छैन। अदौसँ मिथिला तियागी महापुरुषक राज्य रहल, किएक ने हमहूँ ओइ परम्पराकेँ अपनाए पुनर्जीवित कऽ दिऐ? एते बात मनमे अबिते रामाकान्त ब्रह्मचारीजीकेँ पुछलखिन- "अपने ऐ जिनगीसँ सन्तुष्ट छी?"

रामाकान्तक प्रश्न सुनि हँसैत ब्रह्मचारीजी बजला- "हँ, हम बिल्कुल सन्तुष्ट छी। ऐसँ नीक जिनगी की भऽ सकैए। दुनियाँक जेतेक भाषा अछि,

ओइ भाषाक उद्भव, विकास आ साहित्यक सभ पोथी पुस्तकालयमे रखने छी। तेतबे नहि, दुनियाँमे जेतेक धार्मिक सम्प्रदाय अछि ओकरो पुस्तक रूपमे रखने छी आ अध्ययन करै छी। वेद, उपनिषद, ब्राह्मण संहिता, याज्ञवल्क्य, ज्योतिष, पुराण, रमायण, संवर्त, शंख, गार्गेय, देवल, शरतातय आ शातातप स्मृतिक संग बाइबिल, कुरान शरीफ, गुरु ग्रन्थ सेहो रखने छी। सभ दर्शनक पोथी लगमे राखि अध्ययन करै छी। शरीर निरोग रखै दुआरे किछु समय शारीरिक श्रम करै छी, बाँकी समय अध्ययन आ चिन्तन-मननमे लगा रमल रहै छी। मासमे एक दिन सभ धार्मिक सम्प्रदायक पण्डित सभकेँ बजा, अप्पन-अप्पन सम्प्रदायपर व्याख्यान करबै छी। मासमे एक दिन राजनीतिक व्याख्यान, एक दिन साहित्यिक व्याख्यान सेहो करबै छी। ऐ सभक अतिरिक्त बेरा-बेरी किसान गोष्ठी, चिकित्सा गोष्ठी, विज्ञान गोष्ठी आदि-आदिक संग आजुक वैश्वीकरणक नीक-अधलापर वैज्ञानिक ढंगसँ विचार-विमर्श सेहो करबै छी। समय केना खटि जाइए से बुझबे ने करै छी।”

ब्रह्मचारीजी बजिते रहैथ कि महेन्द्र सेहो आबि गेला। महेन्द्रक चेहरा पागल सदृश उन्मत्त बुझि पड़ैन। रामाकान्तो बाहरी दुनियासँ निकैल भीतरी दुनियाँक बाट पकैड़ नेने छला।

चारू गोरे ब्रह्मचारीजीकेँ पएर छुबि गोड़ लागि ओइठामसँ चलैक विचार केलैन। चारू गोरेकेँ अरियाति ब्रह्मचारीजी गाड़ीमे बैसा अपने घुमि गेला। गाड़ीमे कियो केकरोसँ गप-सप्प नै करए चाहैत। सभ अपने-आपमे डुमल। डेरा अबिते रामाकान्त महेन्द्रकेँ कहलखिन-

“बौआ, आब हम एक्को दिन नै अँटकब। गामक सुरता घीचि लेलक, तँए जेते जल्दी भऽ सकह विदा कऽ दएह?”

“बड़बढ़ियाँ! आइये टिकट बनबा लइ छी। ऐठामसँ दरभंगाक गाड़ी सप्ताहिक अछि तँए अपना औगुतेने तँ नहि हएत। अगर टिकटो बनि जाएत तैयो पाँच दिन रहइ पड़त।”

आठ बजे रातिमे सभकियो एकठाम बैस अप्पन गामक सम्बन्धमे गप-सप्प शुरू केलैन। गाममे अप्पन बीतल दिनक चर्च करैत महेन्द्र बजला-

“की जिनगी छल आ अखन की अछि; ऐ विषयपर अखन तक सोचै-विचारैक अवसरे नै भेटल। जहिना अकासमे चिड़ै-चुनमुनी उन्मुक्त भऽ

उड़ैए तहिना बच्चामे छेलौं। ने कोनो चिन्ता आ ने फिकिर छल। जहिना मध्यम गतिसँ गाड़ी-सवारी चलैए तहिना छल। ने कोनो प्रतियोगिता परीक्षाक चिन्ता आ ने नोकरीक जिज्ञासा रहए। साधारण गतिसँ आई.एस-सी. पास केलौं आ मेडिकल कौलेजमे नाओं लिखा डॉक्टर बनलौं। डॉक्टर बनलाक बाद नोकरी आ पाइक भूख तेना जागि गेल जे अप्पन गाम, अप्पन इलाकाकेँ छोड़ि हजारो कोस दूर आबि गेल छी। ऐठाम आबि बाजारू समाज आ संस्कृतिमे फँसि अप्पन परिवार, अप्पन समाज, अप्पन लोकवेद सभ छुटि गेल। जेते पाइ कमा सुख-भोगक कल्पना करै छी ओते काजक बोझ बढ़ल जाइए। सुख-भोग लेल समय कहाँ बँचैए! समयक एतेक अभाव रहैए जे केता दिन अखबारो ने पढ़ि पबै छी। जिनगीक सम्बन्धमे अखन तकक जे अप्पन विचार छल, आइ बुझै छी जे ओ सभटा भ्रम छल। एते दिन अपने सुख टाकेँ सुख बुझैत रहलौं मुदा आब बुझि पड़ैए जे अपने सुखटा सुख नइ छी। हर मनुक्खकेँ जिनगी चलैक जे आवश्यक वस्तु अछि ओ पूर्ति हेबा चाहिऐ, तखने सभकियो चैनसँ जिनगी बिता सकैए। मनुक्खेसँ परिवार बनैए आ परिवारेसँ समाज। हर मनुक्खक कर्तव्य बनैए जे सभसँ पहिने ओ अपना पैरपर ठाढ़ भऽ परिवारकेँ ठाढ़ करए। जखन परिवार ठाढ़ भऽ जाएत आकि समाज स्वतः अपने ठाढ़ भऽ आगू मुहेँ बढ़ए लगत। ओना, सुख की छी? सभसँ पहिने ऐ बातक विचार कऽ लेबा चाही। पंचभौतिक शरीर आ आत्माक संयोगसँ मनुक्ख बनैए। सुख-दुख, नीक-अधला आत्माक अनुभूति छी, नहि कि शरीरक। ओना, दुनियाँमे जेतेक मनुक्ख अछि सभकेँ एक स्तरसँ चलक चाहिऐ मुदा से तँ अछि नहि। दुनियाँ देशमे बँटल अछि आ देशक शासन-बेवस्था आ समाज, खण्ड-पखण्ड भेल भिन्न-भिन्न भाषा, भिन्न-भिन्न संस्कृति आ भिन्न-भिन्न जातिमे बँटल अछि, जइसँ खान-पान, रीति-रेबाज, चालि-ढालिमे भिन्नता छइ। कहैले तँ हमहूँ मनुक्खेक सेवा करै छी, मुदा पाइक दुआरे मात्र पाइबलाक सेवा करै छी। बिनु पाइबलाक सेवा कहाँ भऽ पबै छइ। जखन कि ओकरा सभसँ बेसी जरूरत छइ। अभावमे ओ खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ घर-दुआर, कपड़ा-लत्ता, दवाइ-दारू आदि सभकिछु सँ वंचित रहि जाइए। जइक चलैत गरीब लोकक जिनगी जानवरोसँ बत्तर बनि गेल अछि। ओ सभ मनुक्खक शकलमे जानवर बनि जीबैए। जइ मनुक्खक जरूरत ओकरा सभकेँ छै ओ अपने

पाछू तबाह अछि।”

डॉक्टर महेन्द्रक बात सभकियो धियानसँ सुनलैन। मुड़ी डोलबैत रामाकान्त बजला-

“बौआ, जइ गाममे तोहर जन्म भेलह आ जइ माटि-पानिमे रहि तूँ डॉक्टर बनलह, ओइ गामक लोक उचित इलाजक दुआरे मरि जाए, ई केतेक दुखक बात छी?”

रामाकान्तक प्रश्न सुनि सभकियो गुम्म भऽ गेला। कियो किछु नै बाजि पबैथ। सभ सभक मुँह देखैथ। हजारो कोसपर गाम अछि। केना ऐठामसँ ओइठाम इलाज भऽ सकैए? सभक मनमे ई सवाल नाचए लगलैन। बड़ीकालक बाद महेन्द्र अप्पन मुँह खोललैन-

“बाबू, सवाल तँ एहेन भारी अछि जे जवाबे ने फुरैए। मुदा एकटा उपाय मनमे आएल।”

“की?”

“अहाँ गाम जाएब तँ दू गोरेकेँ माने एकटा लड़का आ एकटा लड़कीकेँ जे कम्मो पढ़ल लिखल हुअए, ऐठाम पठा दिअ। ओइ दुनू गोरेकेँ एतए रखिकऽ छअ मास सिखा-पढ़ा पठा देब। जे तत्काल इलाज करब शुरू कऽ देतइ। संगे हमसभ, चारू गोरे सालमे एक-एक मास गाममे जा कऽ रहब आ जहाँ धरि भऽ सकत तहाँ धरि दुखित लोकक सेवा करैत रहब। तैबीच जँ कोनो जरूरी रोग उपैक जाएत तँ फोनसँ कहि सेहो बजा लेब। नहि तँ लहेरियासराय अछिए।”

महेन्द्रक विचार रामाकान्तकेँ जँचलैन। मुस्कियाइत बजला-

“बौआ, गामक लोक तँ गरीब अछि, ओ केना इलाज करा सकत?”

गरीबक नाओं सुनि धाँइ-दे रवीन्द्र उत्तर देलकैन-

“बाबू, हमसभ बहुत कमाइ छी। जेते इलाजमे खरच हेतै सेहो देबइ। तेतबे नहि, अखन अहाँ जाउ, पहिने दू गोरेकेँ पठा दिअ। ऐगला मासमे गाम आबि एकटा स्वास्थ्य केन्द्र बनाएब। जइमे सभक इलाज हेतइ।”

रवीन्द्रक विचारसँ सभक ठोरपर मुस्की एलैन। रामाकान्तक मनमे उठलैन, हमरे दू साए बीघा जमीन अछि मुदा छी कए गोरे? जँ इमानदारीसँ

देखल जाए तँ की हमहीं चोर नहि भेलौं? महाभारतोमे कहल गेल छै जे, जे जरूरतसँ बेसी सम्पैत रखने अछि ओ चोर छी। जे बात पितोजी बरबैर कहैत रहै छला। ओना, अनका जकाँ हम बेइमानी करिकऽ खेत नइ अरजने छी मुदा ढेरियाकऽ तँ रखनहि छी...।

गप-सप्प करैत रातिक साढ़े दस बाजि गेल। भानसो भेल। सभकियो गप-सप्प छोड़ि खाइले बैसला।

दोसर दिन भिनसरेसँ चारू गोरे, माने रामाकान्तक बेटा-पुतोहु, विदाइक जोगारमे लागि गेला। ऐठामक केतेको परिवारसँ दोस्ती चारू गोरेकेँ, जेकरा सभक काज उद्यममे ईहो सभ नौत पुरने छैथ। तँए सभकेँ जानकारी देब उचित बुझि चारू गोरे अप्पन-अप्पन अपेछितकेँ जानकारी दिअ लगलखिन। अपनो सभ फुट-फुट माता-पिताक विदाइमे जुटि गेला।

ऐ चारि दिनक बीच रामाकान्त टहलब-बुलब छोड़ि, दिन-राति आत्मनिष्ठ भऽ सोचमे डुमल रहए लगला। चाह पीबै बेर चाह पीब पान खा, भोजन बेर भोजन कऽ, भरि दिन पलँगपर पड़ल-पड़ल जिनगीक सम्बन्धमे सोचैत रहला। अखन तक एक्केटा दुनियाँ बुझै छेलिऐ जे आब दोसरो दुनियाँ देखि रहल छी। एक दुनियाँ बाहरी अछि, जेकरा ऊपरका आँखिसँ देखै छी आ दोसर दुनियाँ शरीरक भीतर अछि, जइ दुनियाकेँ अखन तक नै देखै छेलौं। बाहरी दुनियासँ भीतरी दुनियाँ फुलवारी जकाँ सुन्दर अछि। जेतए आशाक अनेको फूल फुलाकऽ लहलहा रहल अछि।

पाँच बजे साँझमे मद्रासक रेलवे स्टेशनसँ दरभंगाक गाड़ी खुजैए। आरक्षित टिकट रहने रामाकान्तक मन बेसी हलचलो नहियेँ छेलैन। गाड़ी पकड़ैक हलचल तँ ओइ यात्रीकेँ होइत अछि जे साधारण बोगीमे टटका टिकट कटा सफर करैए। मुदा आरक्षित बोगीमे तँ गनल सीट आ गनल टिकट होइए। बाइली यात्रीकेँ ओइ बोगीमे चढ़ैये ने देल जाइए। दुइये बजेसँ सभ सामान अटैची आ कार्टुनमे सैंत-सैंत तैयार केलैन। रास्ता लेल फुटसँ एकटा झोरामे खाइक सभ सामान सेहो दऽ देलखिन। दसलिटरा गैलेनमे पानि, थर्मसमे चाह, पनबट्टीमे पान सेहो दऽ देलखिन। आ तैसंग डॉक्टर सुजाता एक कार्टुन विदेशी शराब दैत अप्पन आँखिक इशारासँ ससुरकेँ कहि देने रहैन।

चारि बजे, परोठा-भुजिया खा तीनू गोरे नव वस्त्र पहिर तैयार भऽ गेला। स्टेशनो लगेमे, तँए विदा हेबामे हड़बड़ियो नहियेँ। मुदा सामान बेसी तँए गाड़ी खुजैसँ पहिनहि स्टेशन पहुँचब जरूरी बुझि पड़लैन। ओना, गाड़ी मद्रासेसँ बनिकऽ चलैत तँए सामानो रखैमे परेशानी नहियेँ रहैन। सबा चारि बजेमे सभकियो डेरासँ निकैल गाड़ी पकड़ैले विदा भेला। ❑

छठम पड़ाव

छुट्टीक दिन रहितो हीरानन्द गाम नइ गेला। ओना, लगमे गाम रहने शनियेँ-शनि जाइ छला आ स्कूल खुजैसँ पहिने सोमे-सोम चलि अबै छला। मुदा से एम्हर किछु दिनसँ, माने जहियासँ रामाकान्त मद्रास गेला तहियासँ, बदैल गेल छैन। रामाकान्त अपने नै रहने, परिवारक सभ भार देने गेल छैन।

गोसाँइक धाही निकैलते हीरानन्द नहाकऽ चाह पीब बौएलाल ऐठाम विदा भेला। मनमे उठि रहल छेलैन जे रामाकान्त बाबू कहने छला, मद्रास जाइ छी, धिया-पुताकेँ देखि-सुनि लगले घुमि आएब, मुदा आइ पनरहम दिन भऽ रहल अछि अखन तक किएक ने एला? ओना, मद्रास दूरो अछि आ परिवारोक सभ तँ ओतै छैन तँए बिलम्मो हएब सोभाविक अछिए।

रास्तामे मास्टर साहैबकेँ जे कोनो धिया-पुता देखैन तँ हाथ जोड़ि-जोड़ि प्रणाम करैन। हीरानन्द सेहो सभकेँ आसिरवाद दैत आगू बढ़ल जा रहल छला। बौएलालक घरसँ थोड़े पाछूए रहैथ कि बौएलाल देखलकैन। देखिते आगू बढ़ि, प्रणाम कऽ, संगे-संग अपना ऐठाम लऽ गेलैन।

हीरानन्दकेँ पाबि बौएलाल बहुत किछु सिखबो केलक आ सुधरबो कएल। बौएलाल अप्पन एकचारीबला बैसकीमे मास्टर साहैबकेँ बैसा पानि आनए आँगन गेल। आँगनसँ लोटामे पानि नेने आबि पएर धोइले कहलकैन। लोटामे पानि देखि हीरानन्दक मनमे मिथिलाक वेबहार नाचि उठलैन। सोचए लगला जे पूर्वज केते विचारवान छला जे एते चलौलैन..!

पएर धोइकऽ हीरानन्द चौकीपर बैसला। बौएलाल चाह बनबए आँगन गेल। माएकेँ चाह बनौल नै होइ छइ। तैबीच अनूप, माने बौएलालक पिता, बाड़ीए मे खुरपी छोड़ि, मटियाएले हाथे आबि मास्टर साहैबकेँ प्रणाम कऽ चौकीक निच्चाँमे, एकचारीक खुट्टा लगा बैसल। मटियाएल हाथ देखि मास्टर साहैब अनूपकेँ पुछलखिन-

“कोन काज करै छेलौं?”

मटियाएल हाथ रहितो अनूपकेँ कनिक्को संकोच नहि, निःसंकोच

भऽ उत्तर देलकैन-

"बाड़ीमे गेनहारी साग बाउग केने छी ओहीमे तेते मोथा जनैम गेल जे सागकेँ झाँपि देने अछि, ओकरे कमठौन करै छेलौं।"

सागक कमठौन सुनि मास्टर साहैब बजला-

"चलू, जाबे बौएलाल अबैए, ताबे कनी हमहूँ देखि ली।"

कहि हीरानन्द उठि विदा भेला। मास्टर साहैबकेँ ठाढ़ होइत देखि अनूपो ठाढ़ भऽ आगू-आगू विदा भेल। धूर दुइये मे साग बाउग केने। साग देखि हीरानन्द बजला-

"जिनगीमे आइये हम एहेन गेनहारी देखलौं! ई तँ अद्भुत अछि! किएक तँ एकरंगक पत्ताबला गेनहारी तँ अपनो उपजबै छी मुदा ई तँ फूल जकाँ लगैए! आधा पात लाल आ आधा हरियर अछि! केतए-सँ ई बीआ अनलौं?"

मास्टर साहैबक जिज्ञासा देखि खुशी होइत अनूप कहलकैन-

"हम सढ़ुआरए नौत पूरए गेल रही। ओतै देखलिऐ। देखिकऽ मन हलैस गेल। ओतैसँ अनलौं। करीब दस बर्खसँ सभ साल करै छी। खाइत-खाइत जखन डाँट जुआ जाइए, तहन छोड़ि दइ छिऐ। पछाइत ओहीमे तेते बीआ भऽ जाइए जे अपनो बाउग करै छी आ जे मंगैए तेकरो दइ छिऐ।"

हीरानन्द बजला-

"ऐ बेर हमरो थोड़े देब।"

अनूप खुशीसँ कहलकैन-

"बड़बढ़ियाँ।"

दुनू गोरे बाड़ीसँ घुमि पुनः एकचारीमे आबिकऽ बैसला। तैबीच बौएलालो चाह बनौने आएल। दुनू गोरेकेँ चाह दऽ कऽ बौएलाल आँगन गेल। आँगनमे अपनो चाह लेलक आ माइयोकेँ देलक। चाह पीब बौएलालक माए घोघ तनने दुआरपर आबि मास्टर साहैबकेँ गोड़ लगलकैन। सुखल शरीर, पाकल केश आ धँसल आँखि रधियाक। रधियाक देह देखि मास्टर साहैबक मन तरे-तर बाजि उठलैन- 'हाय, हाय-रे गरीबी! आगियोसँ तेज धधरा!! पैंतीस-चालिस बर्खक शरीरक एहेन दशा बना दइए!'

मुस्कियाइत एकटा आँखि उघारि रधिया बजली-

"आइ हमर भाग जगि गेल जे मास्टर-साहैब हमरा दूरापर एलैथ। बिना खेने-पीने नइ जाए देबैन। जे कन-सागक उपए से खा कऽ जइहैथ।"

रधियाक सिनेहपूर्ण आग्रहक एक-एक शब्द सुनि हीरानन्दक आँखि जेना सिमसए लगलैन। दुनू तरहत्थीसँ दुनू आँखि पोछैत बजला-

"ओना तँ हम लगले घुमैक विचारसँ आएल छेलौं मुदा अहाँ सभक सिनेह बिना खेने जाइए नै दिअ चाहैए। जरूर खाएब।"

घरमे सुपारी नै रहने बौएलाल सुपारी आनए दोकान गेल। तैबीच मास्टर साहैब अनूपकेँ पुछलखिन-

"अहाँक पुरखा केते दिन पहिने ऐ गाममे आबि बसला?"

हीरानन्दक प्रश्न सुनि अनूप छगुन्तामे पड़ि गेल। मने-मन सोचए लगल, एहेन बात तँ आइ घरि कियो ने पुछने छला! मास्टर साहैब किए पुछलैन? मुदा मास्टर-साहैबक उपकार अनूपक हृदयमे ऐ रूपेँ बसल अछि जे हिनका अप्पन आत्माक दोसर रूप बुझै छैन। हिनके पाबि बेटा दू आखर पढ़बो केलक आ मनुक्ख बनैक रास्ता सेहो सीखैए। हँसैत अनूप कहए लगलैन-

"मास्टर साहैब, हमरा बाउकेँ अपना घराड़ियो ने रहइ। अनके जमीनमे घरो बन्हने छल आ अनके हरो-फाड़ जोतइ। अनके खेतमे रोपैन-कमठौन सेहो करइ। हम धानोक शीश आ रब्बी-राइक मासमे खेसारियो-मौसरी लोढ़ी। अनके गाइयो पोसियाँ नेने रहइ। सालमे जेतेक पाबैन-तिहार होइ आ अनदिनो जे करजा-बरजा लिअए, ओ ओही गाइक दूधो बेचिकऽ आ लेरू जे होइ, ओहो बेचिकऽ करजा सदहाबै। एक दिन बाउक मन खराप रहइ। गिरहत आबिकऽ बेटी ओइठाम फोकचाहा भाड़ दऽ अबैले कहलकइ। बाउक मन बेसी खराप रहै तँए जाइसँ नास्कार केलक। तैपर ओ बेटाकेँ शोर पाड़ि दुनू बापूत हमरा बाउकेँ गरियेबो केलकै आ अँगनाक टाट-फरक उजाड़िकऽ कहलकै जे हमर घराड़ी छोड़ि दे। हमर बाउ केतेक गोरेकेँ कहबो केलकै मुदा सभ ओकरे दिस भऽ गेलइ। तखन हमर बाउ नचार भऽ कऽ माटिक तौला-कराही छोड़ि, थारी-लोटा, नुआँ-वस्तर, हाँसू-खुरपीक मोटरी बान्हि, हमरो आ माइयोकेँ संग कऽ पड़ाएल, माने हम तीनू गोरे ओइ गामसँ

भागि गेलौं। गामसँ निकैल, बाधमे एकटा आमक गाछ रस्तेपर रहै, ओइठीम जा कऽ बैसलौं। बाउकेँ बुकौर लगइ। दुनू आँखिसँ दहो-बहो लोर खसइ। माइयो कानए। थोड़े-खान ओइठीम बैसलौं। तखन फेर विदा भेलौं।"

बजैत-बजैत अनूपक दुनू आँखिमे नोर आबि गेल। अनूपक नोर देखि हीरानन्दोक आँखिमे नोर आबि गेलैन। रूमालसँ नोर पोछि पुनः पुछलखिन-

"तब की भेल?"

अनूपक हाथ मटियाएल रहै तँए गट्टासँ नोर पोछि पुनः बाजए लगल-

"ई हमर मात्रिक छी, मास्टर साहैब। ताबे हमर नाना जीविते रहैथ। हुनका एक्केटा बेटी छेलैन, हमर माइये टा। जखन तीनू गोरे ऐठाम एलौं तँ ननो आ नानियोँ अँगनेमे रहए। नानी आ माए दुनू बाँहि दुनू गरदैनमे जोड़ि कानए लगल। बाउओ कानए लगल। नाना हमरा कोरामे उठा लोर पोछैत अँगनासँ निकैल डेढ़ियापर बुलबए लगल। थोड़े-खान नानी कानि, मोटरीकेँ घरमे रखि हाँइ-हाँइ चुल्हि पजारलक। मुदा माए कनिते रहल।"

बिच्चेमे हीरानन्द पुछलखिन-

"नाना गुजर केना करै छला?"

हीरानन्दक प्रश्न सुनि अनूप गुदगुदाइत बाजल-

"अहाँसँ लाथ कोन मास्टर साहैब, महिनामे आठ-दस साँझ भानसो ने होइ। हम बच्चा रही तँए नानी बाटीमे बसिया भात रखि दिअए। सएह खाइ छेलौं।"

अनूपक बात सुनि हीरानन्दक हृदय जेना पघिल गेलैन, अनूपकेँ कहलखिन-

"जाउ, काजो देखियौ। बौएलाल तँ आबिए गेल।"

मास्टर साहैबक कहलासँ अनूप पुनः साग कमाइले चलि गेल। बौएलाल आ हीरानन्द रामाकान्तक चर्च करए लगला। बौएलाल बाजल-

"करीब पनरह दिनक धक लगि गेल हएत, अखन तक बाबा किए नै एला? बाजिकऽ गेल रहैथ जे आठ दिनक भीतरे चलि आएब। किछु भऽ ने तँ गेलैन?"

हीरानन्द- "अखन तक कोनो खबैरो नै पठौलैन जे बुझितिऐ।"

दुनू गोरे उठिकऽ बाड़ी दिस टहलैले विदा भेला। अनरनेबाक गाछकेँ हीरानन्द हिया-हिया कऽ देखए लगला। पहिल खेपक फड़, तँए नमहर-नमहर रहइ। शुरूक करीब दस टा अनरनेबा नमहर, बाँकी जेना-जेना फड़ ऊपर होइत गेल रहै तेना-तेना छोटो आ खिच्चो। पान-सात टा फड़ छिटकल। जइमे एकटामे लाली पकैड़ नेने रहइ। हीरानन्द अप्पन ओंगरीसँ देखबैत बौएलालकेँ कहलैन-

"बौएलाल, ओ फड़ तोड़ि लएह। खूब तँ पाकल नइ अछि मुदा खाइ-जोकर भऽ गेल आछि। हमसभ तँ दँतगर छी किने।"

गाछ बेसी नमहर नहि। हाथेसँ बौएलाल ओइ फड़केँ तोड़ि, डन्टीसँ बहैत दूधकेँ माटिपर रगैड़ देलक। दुनू गोरे घुमिकऽ एकचारीमे एला। हीरानन्द चौकीपर बैसला आ बौएलाल अनरनेबा रखि आँगन गेल। आँगनसँ कत्ता आ एकटा छिपली नेने आएल। कत्तासँ अनरनेबाकेँ सोहि टुकड़ी-टुकड़ी काटलक। छिपली भरि गेल। भरल छिपली बौएलाल हीरानन्दक आगूमे देलकैन। भरल छिपली देखि हीरानन्द बजला-

"एते हमरे बुते खाएल हएत। बड़ बेसी तँ पान-सात टा खुण्डी खाएब। बाँकी आँगन लऽ जाह।"

बौएलाल सएह केलक। अनरनेबा खा पानि पीब हीरानन्द बौएलालकेँ कहलखिन-

"चलह, थोड़े टहैल आबी?"

दुनू गोरे रस्ते-रस्ते टहलए लगला।

जाधैर दुनू गोरे टहैल-बुलि कऽ एला ताधैर रधिया अरबा चाउरक भात, माछक तीमन आ तरूआ बनौलक। भानस कऽ रधिया चिक्कैन माटिसँ ओसार नीपि, हाथ धोइ, कम्मल चौपेत कऽ बिछौलक। थारी, बाटी, लोटा आ गिलासकेँ छौरसँ माँजि धोलक। लोटा-गिलासमे पानि भरि बिछौल कम्मलक बगलमे रखि, मास्टर साहैबकेँ बजौने अबैले बौएलालकेँ कहलक। आँगन आबि हीरानन्द कम्मलपर बैस मने-मन सोचए लगला। भोजनसँ तँ पेट भरैए मुदा मन तँ सिनेहेसँ भरैए जे भरि रहल अछि। तैबीच बौएलाल घरसँ थारी निकालि आगूमे देलकैन। गम-गम करैत भात तैपर माछक नमहर-नमहर तरल कुटिया। जम्बीरी नेबोक खण्ड। बाटीमे तीमन।

सभकिछु परोसल देखि, मुस्कियाइत हीरानन्द बजला-

"अलबत्त ढंगसँ भोजनक बेवस्था केने छी। देखिये कऽ पेट भरि गेल!"

मास्टर साहैबक बात सुनि खुशीसँ रधियाकेँ नै रहल गेल, बाजल-

"मास्टर बाबू, अहाँ पैघ छी। देवता छी। हमर भाग जे हमरा सन गरीब लोकक ऐठाम भात खाइ छी।"

रधियाक बात सुनि हीरानन्द बुझि गेलखिन जे भातकेँ अशुद्ध बुझि बजली हेन। मुदा ओइ विचारकेँ झँपैत हीरानन्द बजला-

"हम बौएलाककेँ छोट भाए बुझै छिऐ आ परिवारकेँ अप्पन परिवार बुझै छी। तखन भात-रोटी खाइमे कोन संकोच?"

हीरानन्दक विचार सुनि रधियाक हृदय सौनक मेघ जकाँ उमैड़ गेल। मनमे हुअ लगलै जे अप्पन जिनगीक सभ बात मास्टर साहैबकेँ कहि सुना दिऐन। उत्साहित भऽ बाजए लगल-

"मास्टर बाबू, एहनो दुख कटने छी जे एक दिन पिसियौत भाए आएल रहए। घरमे एक्को तम्मा चाउर नहि छल! चिन्ता भऽ गेल जे भाएकेँ खाइले की देब। तीन-चारि अँगना चाउर पैंच आनए गेबो केलौं, मुदा सभक हालत खरापे रहइ। अपने ने रहै तँ हमरा की दइत। हारिकऽ मड़ुआ रोटी आ सीम-भाँटाक तीमन रान्हि कऽ खाइले देलिऐ आ अपनो सबतूर खेलौं। मुदा अखन तँ रामाकान्त कक्काक परसादे सभकिछु अछि।"

थारीमे बाटीसँ झोर ढारैत हीरानन्द बजला-

"पहिलुका आ अखुनकामे केते फरक बुझि पड़ैए?"

"मास्टर बाबू, अहाँसँ लाथ कोन! ओइ हिसाबे अखन राजा भऽ गेलौं। पहिने कल्लर छेलौं। हरिदम पेटेक चिन्ता धेने रहै छेलए।"

हीरानन्द अप्पन मुँहक भात आ माछ चिबबैत रहैथ कि तैबीच दाँतक गहमे एकटा काँट गड़ि गेलैन। भात घोंटि आँगुरसँ काँट निकालि थारीक बगलमे रखि बजला-

"पहिने जेते खटै छेलौं तइसँ अखन बेसी खटै छी आकि कम?"

"पहिने बेसी खटै छेलौं। बोइन करिकऽ आबी तखन अँगनाक काजमे

लगि जाइ। अँगनाक काज सम्हारि भानस करी। भानस करैत-करैत बेर झुकि जाइत रहए, तखन खाइत रही।"

ओसारपर बैसल अनूप रधियाकेँ चोहटैत कहलक- "मास्टर साहैबकेँ भोजन करए देबहुन आकि नहि।"

अनूपक बात सुनि हीरानन्द टोकलखिन-

"अनूप, अहाँ तमसाइ किए छिऐन। भोजनो करै छी आ गप्पो सुनै छी। जे बात काकी कहै छैथ ओ हमरा नीक लगैए।"

मास्टर साहैबक समर्थन पाबि रधियाक मनमे आरो उत्साह जगि गेल। होइ जे जेते बात पेटमे अछि सभटा मास्टर साहैबकेँ सुना दिऐन। बाजल- "मास्टर बाबू, सालमे आधासँ बेसी दिन सागे रान्हि-रान्हि तीमन खाइ छेलौं। माघ-फागुनमे जखन खेसारी-मौसरी उखाड़ै छेलौं आ बोइन जे हुअए तइ दिनमे खाली दस-पाँच दिन दालि खाइत रही, नहि तँ बाड़ी-झाड़ीमे जे तीमन-तरकारी हुअए, बस तेतबए। बेसी काल सागे। खेसारी मासमे महिना दिन दुनू साँझ चाहे खेसारी साग खाइ नहि तँ बथुआ।"

खेसारी सागक नाओं सुनि हीरानन्द बजला-

"खेसारी साग केना बनबै छी?"

मास्टर साहैबक प्रश्न सुनि अनूपोकेँ पैछला बात मोन पड़ल। खुशीसँ मुस्कियाइत बाजल- "मास्टर साहैब, राँड़िन बुते केतौ खेसारी साग रान्हल हुअए..!"

अनूपक बातकेँ धोपैत हीरानन्द बजला- "खेसारी सागमे कँचका मिरचाइ आ लसुनक फोरन दऽ हमरो कनियाँ बनबै छैथ। हमरा बड़ सुन्दर खाइमे लगैए।"

व्यंगक टोनमे अनूप बाजल-

"अहाँ सभक कनियाँक परतर राँड़िनकेँ हेतइ। हमहीं छी जे एहेन लोकक गुजर चलै छइ। नहि तँ..?"

अनूपक व्यंगक भाव बुझि हीरानन्द चुप्पे रहला। मुदा फनैक कऽ रधिया एक लाड़ैन चलबैत बाजल-

"नहि तँ सासुरमे बास नइ होइतए, सएह ने?"

अनूप- "मोन पाड़ू जे जइ दिन अहाँ एतए एलौं तइ दिन कोन-कोन लूरि रहए। जँ साउस नै सिखबैत तँ कोनो लूरियो होइत?"

पासा बदलैत रधिया बाजल-

"माए आ साउसमे अन्तरे कथी होइ छइ। जहिना अप्पन माए तहिना घरबलाक माए। सिखलौं तँ हमहीं!"

रधिया अनूप दिस तकैत आ अनूप रधिया दिस। मुदा दुनूक मनमे क्रोध नै सिनेह भरल छल। तँए वातावरण मधुर छल। ..हीरानन्द सागक सम्बन्धमे बाजए लगला- "अपना सभक पूर्वज बहुत गरीब छला। अखुनका जकाँ समैयो नइ छल। बेसी काल ओ सभ सागे खाइ छला।"

जेहने भोजन बनल, तेहने पवित्र बरतन छेलै आ तहूसँ नीक बैसैक जगहक संग ऐतिहासिक गप-सप्प। जेतेक व्यंजन हीरानन्दक आगूमे आएल छेलैन, रसे-रसे सभटा खा लेलैन। पानि नहि पीलैन, किएक तँ ने गाड़ा लगलैन आ ने बेसी करु। भरि इच्छा खेनाइ खा बाटीए मे हाथ धोइकऽ उठैत बजला-

"एते कसिकऽ आइ धरि भोजन नै केने छेलौं।"

आँगनसँ निकैल एकचारीमे आबि मास्टर साहैब सोझे पड़ि रहला। पड़ले-पड़ल अनूपो आ बौएलालोकेँ कहलखिन-

"अहूँ सभ भोजन करै जाउ। हमरा सुतैक मन होइए।"

हीरानन्द असबिस करैथ। लगले-लगले करौट फेरए पड़ैन। मने-मन सोचए लगला जे एतबे दिनमे अनूप केतेक उन्नैत कऽ गेल। उन्नतिक कारण भेलै सही ढंगसँ परिवारकेँ बढ़ाएब। जे परिवार जेतेक सही दिशामे चलत ओ ओतेक तेजीसँ आगू बढ़त। मुदा जिनगीक रास्ता बाँस जकाँ सोझ तँ अछि नहि, अछि तँ टेढ़-टूँढ़। जइमे लोक वौआ जाइए। जिनगीक रास्तामे डेग-डेगपर तिनबट्टी-चौबट्टी अछि, जइमे लोक भटैक जाइए। तहूमे जेकरा रास्ताक आदि-अन्तक भान नइ छै ओ तँ आरो ओझरा जाइए। जिनगीक रास्तामे तेहेन-तेहेन ओझरीसभ अछि जइमे ओझराकऽ कियो बताह भऽ जाइए तँ कियो अप्पन घर-दुआरि छोड़ि वौआए लगैए। क्षणिक सुखक खातिर केहेन-केहेन लोककेँ स्थायी सुखक रास्ता छुटि जाइ छैन। क्षुद्र सुख पैघ सुखक रास्ताकेँ धकेल एहेन पहाड़ जकाँ ठाढ़ भऽ गेल अछि, जेकरा

पार करब आसान नहि। जिनगीक रास्ता एक नहि, अनेको अछि मुदा पहुँचैक स्थान एक अछि। जेतेक मनुक्ख तेतेक रास्ता अछि। एक मनुक्खक जिनगी दोसरसँ भिन्न होइए। अनभुआरो आ बुझनिहारो, अज्ञानियोँ आ ज्ञानियोँ ऐ चीजकेँ लगले नहि बुझि पबैए, माने जिनगीक शुरूमे ई नहि बुझि पबैए जे कोन रास्ता पकड़लासँ सही जगहपर पहुँचब आ नइ पकड़ने केतए चलि जाएब। मनुक्खक उद्धारक बात तँ एक-पर-एक लोक कहलैन अछि आ एक-पर-एक सम्प्रदाय सेहो खिस्सा-पिहानी बना कहैए मुदा ओइ रास्तामे घुच्ची केतए-केतए अछि जैठाम जा लोक फँसि जाइत अछि, खसि पड़ैत अछि, तइ बुझबैमे..। मुदा ईहो तँ सत्य अछि जे निष्कलंक जिनगी बना ढेरो लोक ओइ स्थानपर पहुँच चुकल छैथ आ ढेरो जा रहल छैथ जे जरूर पहुँचता। भलेँ हुनका भरि पेट अन्न आकि भरि देह वस्त्र नइ भेटैत होइन। सुखल गाछ रूपी समाजकेँ जाधैर गंगाजल सन पवित्र पानिसँ नहि पटौल जाएत, ताधैर ओइमे कलश केना कलशत आ फूल केना फुलाएत। जँ समय पाबि कलशबो करत तँ किछुए दिनमे मौला जाएत। दुखो थोड़ दिनक नइ अछि, जड़ियाएल अछि। अनेको महान बेकती ऐ दिशाकेँ देखबैक कोशिशमे अदम्य साहस आ शक्ति लगौलैन मुदा जड़िसँ दुख कहाँ मेटाएल? सभकियो मातृभूमिक सन्तान छी, सभक दायित्व बनैए जे माइक सेवा करी। छठियारे राति समाजक माए-बहिन अप्पन कोरामे लऽ छाती लगौलैन मुदा ओकरा बिसैर केना जाइ छी? की सभ बीराने छैथ? अप्पन कियो नहि?"

बेर खसैत हीरानन्द चलैक विचार करए लगला। बौएलाल चाह पीबैक आग्रह केलकैन। मुदा भरियाएल पेट दुआरे चाहकेँ इनकार करैत हीरानन्द बजला- "चाह छोड़ि दहक। खाइ बेरमे पानि नइ पीने छेलौं, खाली एक लोटा पानि पिआबह।"

आँगनसँ लोटामे पानि आनि बौएलाल देलकैन। लोटो भरि पानि पीब हीरानन्द बजला- "बुझि पड़ैए जे अखने खा कऽ उठलौं अछि। चाह नै पीबह, सिरिफ एक जूम तमाकुल खुआ दएह।"

अनूप तमाकुल चुनबए लगल। तैबीच हीरानन्द बौएलालकेँ कहलखिन- "तूँ तँ आब धुरझार किताब पढ़ए लगलह। आब तोहूँ पड़ोसीक बच्चा सभकेँ, जखन समय खाली भेटह, पढ़ाबह। ऐसँ ई हेतह जे कखनो बेकारी सेहो नइ बुझि पड़तह आ थोड़-थाड़ बच्चो सभ पढ़ै दिस झूकत।"

पढ़बैक नाओं सुनि अनूप बाजल- "मास्टर साहैब, केकरा बच्चाकेँ बौएलाल पढ़ौत!"

ओंगरीसँ देखबैत अनूप, आगू बाजल-

"देखै छिऐ, ओ तीन घर कुरमी छी। ओकरासँ खनदानी दुश्मनी अछि। ने खेनाइ-पीनाइ अछि आ ने हकार-तिहार।"

हीरानन्द अनूपक कहल बातपर सोचिते-विचारिते छला कि तइ बिच्चेमे अनूप फेर अप्पन आँगुरसँ इशारा करैत कहलकैन-

"तहिना ओ घर देखै छिऐ, मलाहक छी। भरि दिन जाल नेने चर-चाँचरसँ लऽ कऽ पोखैर-झाँखैरमे मछबारि करैए। माछ बेचिकऽ गुजरो करैए आ ताड़ी-दारू पीब कऽ औत आ झगड़ा-झाटी शुरू कऽ देत। तहिना ओ कुजरटोली छी। अछि तँ सभटा गरीबे, मुदा बेवसायी अछि। स्त्रीगण सभ तरकारी बेचैए आ पुरुख सभ पुरना लोहा-लक्करक कारोबार करैए। जातिक नाओंपर सदिखन अराड़िये करैत रहैए। तहिना हम दस घर धानुक छी। हमहींटा गरीब रही, बोइन करै छेलौं। आब तँ अपनो रामाकान्त बाबूक देल दू बीघा खेत भऽ गेल तँए खेती करए लगलौं, नहि तँ सभटा खबासी करैए। जुआन-जहान बेटीसभकेँ माथपर चँगेरा दऽ आन-आन गाम पठबैए। तँए ओकरा सभक एकटा पाटी छै आ हम असगरे छी। ने खेनाइ-पीनाइ अछि आ ने कोनो लेन-देन। आब अहीं कहू जे केकरा बच्चाकेँ बौएलाल पढ़ौत?"

अनूपक बात सुनि हीरानन्द गुम्म रहि गेला। मने-मन सोचए लगला जे समाजक विचित्र स्थिति अछि। एहेन समाजमे घूसब महाग-मोसकिल अछि।

कनीकाल गुम्म रहि हीरानन्द बजला-

"कहलौं तँ ठीके अनूप, मुदा ई सभ बीमारी पहिलुका समाजमे बेसी छेलइ। ओना, अखनो थोड़-थाड़ अछिए मुदा आब बदैल रहल अछि। आब लोक गाम छोड़ि शहर-बाजार जा-जा कल-कारखानामे काज करए लगल अछि। संगे, गाममे चाह-पानक दोकान खोलि-खोलि जिनगीकेँ बदैल रहल अछि। खेती-बाड़ी तँ मरले अछि तँए ऐमे ने काज छै आ ने लोक करए चाहैए। करबो केना करत। गोटे साल रौदी तँ गोटे साल बाढ़ि आबि सभटा

नष्ट कऽ दइ छइ। जहिना गरीब लोक मर-मर करैए तहिना खेतोबला सभ। खेतोबला सभकेँ देखिते छिऐ जे बेटीक बिआह, बीमारी आ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ, बिना खेत बेचने नइ सम्हरै छइ। ओना, सभक जड़िमे मुरुखपना अछि जे बिना पढ़ने-लिखने नै मेटाएत। धिया-पुताकेँ पढ़बैक इच्छा सभकेँ छै मुदा ओ मने भरि छइ। बेवहारमे एको पाइ नहि। हँ, ईहो बात अछि जे जेकरा पेटमे अन्न नहि रहत, देहपर वस्त्र नइ रहत, ओ केना पढ़त?"

हीरानन्द आ अनूपक सभ गप बाड़ीमे टाटक पुरना कड़ची उजारैत सुमित्रा सेहो सुनि रहल छल। बारह-तेरह बर्खक सुमित्रा अछि। अनूपक घरक बगलेमे ओकरो घर छइ।

तमाकुल खा हीरानन्द विदा भेला। हीरानन्दकेँ अरियातने पाछू-पाछू बौएलालो बढ़ि रहल छल। थोड़ेक दूर आगू बढ़लापर हीरानन्दकेँ छोड़ि बौएलाल घुमि गेल।

जाबे बौएलाल घुमिकऽ घरपर आएल ताबे सुमित्रो जरनाक कड़ची अपना आँगनमे रखि बौएलाल लग आएल। ओना, परिवारक झगड़ासँ धिया-पुताकेँ कोन मतलब। धिया-पुताक दुनियाँ अलग होइए। सुमित्रा बौएलालकेँ कहलक-

"हमरा पढ़ा दे।"

बौएलाल किछु कहैसँ पहिने मने-मन सोचए लगल जे हमर बाबू आ सुमित्राक बाबूक बीच केते दिनसँ झगड़ा अछि, दुनूक बीच केता दिन गारि-गरौऐल होइत देखै छी, तखन केना पढ़ा देबइ? मुदा हीरानन्दक विचार मने रहै तँए बौएलाल गुनधुनमे पड़ि गेला।

कनीकाल गुनधुन करैत बौएलाल सुमित्राकेँ कहलक-

"पहिने माएसँ पुछि आ।"

सुमित्रा दौग कऽ आँगन जा माएकेँ कहलक-

"माए, हम पढ़ब?"

माए पुछलकै-

"केतए पढ़मेँ?"

"बौएलाल लग।"

बौएलालक नाओं सुनि माए मने-मन विचारए लगली जे हमरासँ तँ कम्मो-सम्म मुदा हुनकासँ तँ बौएलालक पिताकेँ झगड़ा छैन..!

कनीकाल गुनधुन कऽ माए बाजल-

“जँ बौएलाल पढ़ा देतौ तँ पढ़।”

खनदानी घरक बेटी सुमित्राक माए। आन-आन घरक बेटियो आ पुतोहुओ चँगेरा उघैए मुदा सुमित्राक माए ऐ सभ काजसँ सभ दिन हटल रहल। ओना, अपने राम प्रसाद भाड़ उघैए, मुदा स्त्री नहि।

जहिया कहियो अनूप आ राम प्रसादक बीच भाड़ उघैक सवालपर झगड़ा होइत तँ सुमित्रा माइक विचार अनूप दिस रहैत। मुदा मर्दक झगड़ामे जनानी केना विरोध करत, तँए चुपचाप आँगनमे बैस मने-मन अपने पतिकेँ गरियबैत जे कोन कुल-खनदानमे चलि एलौं..! घुमिकऽ सुमित्रा आबि बौएलालकेँ कहलकै-

“माइयो कहलक।”

“ठीक छइ। मुदा पढ़मेँ कखैन कऽ, भरि दिन हमहूँ काजे उदममे लगल रहै छी आ साँझूपहर-के अपने पढ़ैले जाइ छी।”

दुनू गोरे गर लगबैत तँइ केलक जे काजक बेरसँ पहिनहि, भोरमे पढ़ब। ❑

सातम पड़ाव

तीन बजे भोरमे हीरानन्दक नीन टुटलैन। कोठरीसँ बाहर निकैल झल-अन्हार देखि पुनः ओछाइनपर आबि पड़ि रहला। जहिना सुतैबेर तहिना अखनो नीन टुटिते अनूपक बात हिनका मनकेँ झकझोरए लगलैन, समाजमे ऐ रूपेँ कटुता, विषमता पसैर गेल अछि जे घर-घर, जाति-जाति आ टोल-टोलमे भैंसा-भैंसीक कनाइर पकैड़ नेने अछि। एहेन स्थितिमे केना समाज आगू बढ़त? समाजकेँ आगू बढ़ैले एक-दोसरक बीच आत्मीय प्रेम हएब आवश्यक अछि, मुदा से केना हएत..?

प्रश्नकेँ जेते सोझराबए चाहै छला तेतेक ओझरा जाइ छेलैन। विचित्र स्थिति हीरानन्दक आगूमे बनि गेलैन। अनेको प्रश्न मनमे उठैत रहैन आ तर्क-वितर्कक बीच अन्त होइत-होइत ओझरा जाइत रहैन। जेना विवेक काजे ने करैन। तैबीच पूबारि भागमे चिड़ैक चहचहाएब सुनलैन। चिड़ैक चहचहेनाइ सुनि कोठरीसँ निकैल पूब दिस तकलैन तँ मेघ ललिआएल बुझि पड़लैन। घड़ीपर नजैर देलैन तँ पाँच बजैत देखलखिन। कोठरी आबि लोटा लऽ मैदान दिस विदा भेला। मुदा मनकेँ अनेको प्रश्नसभ तेना गछारिकऽ पकड़ने रहैन जे चलैक सुधिए ने रहलैन। जाइत-जाइत बहुत दूर चलि गेला। खुला मैदान देखि, लोटा रखि टहलबो करैथ आ प्रश्नो सोझरबैक कोशिश करैथ। मुदा तैयो निष्कर्षपर नै पहुँच सकला। पुनः घुमिकऽ घरपर आबि, दतमैन कऽ मुँह हाथ धोइ चाह बनबए लगला। ओना, चाहक सभ सामान चुल्हियेक ऊपरका चक्कापर रखल रहै छैन, मात्र केतली पखारब, गिलास धुअब आ ठहुरी-जारैन डेढ़ियापर सँ आनब, काज रहैन छैन। सभकिछु सेरिया हीरानन्द चाह बनबए बैसला मुदा मन वौआइते रहलैन। असगरे चाह पीबनिहार, मुदा भरि केतली पानि दऽ चुल्हिपर चढ़ा देलखिन। जखन चाह खौलए लगल तखन मनमे एलैन जे अनेरे एते चाह किए बनबै छी? फेर केतली चुल्हिपर सँ उताइर दू गिलास दूध मिलौल पानि कातमे राखल गिलासमे ढारि, बाँकी दूध मिलौल पानि केतलीमे दऽ चुल्हिपर चढ़ौलैन।

मन वौआइते छेलैन। आँच लगबैत गेला मुदा चाह पत्ती केतलीमे देबे ने केलखिन। आगिक तावपर जखन सभटा पानि जरि गेल, तखन मोन पड़लैन- जा! चाह पत्ती केतलीमे देबे ने केलिऐ..! हाँइ-हाँइ कऽ डिब्बासँ तरहत्थीपर चाह पत्ती लऽ केतलीक झँप्पा उठौलैन। नजैर केतलीक भीतर गेलैन तँ पानियेँ नहि! सभटा पानि जरि गेल छल! तरहत्थी परक चाह पत्ती डिब्बामे रखि पुनः केतलीमे पानि देलखिन। चाह बनल। भिनसुरुका समय, तँए दू गिलास चाह रसे-रसे पीब लेलैन।

एक तँ ओहिना हीरानन्दक मन समाजक समस्यामे ओझराएल रहैन तैपर सँ चाह आरो ओझरी लगा देलकैन। खाएर.., चाह पीब दरबज्जापर बैस हीरानन्द असथिरसँ विचारए चाहलैन। मुदा चाहक गर्मी पाबि मन आरो बेसी वौआए लगलैन। जहिना केकरो कोनो वस्तु हेरा जाइ छै आ ओ खोजए लगैए, तहिना हीरानन्द समाजक ओइ समस्याक समाधान खोजए लगला जे समस्या समाजकेँ टुकड़ी-टुकड़ी कऽ देने अछि। मुदा लगमे दोसर कियो ने छेलैन जिनकासँ तर्क-वितर्क करितैथ। असगरे हीरानन्द ओझराएल रहला। अपने मनमे सवालो उठैन आ अपने जवाबो खोजैथ। अध्ययनो बहुत अधिक नहियेँ छैन। सिरिफ मैट्रिक पास छैथ। मुदा तैयो समस्याक समाधान तकिते रहला, छोड़लैन नहि। जहिना पथिककेँ बिनु देखलो पथ हेराइत-भोथियाइत भेटिए जाइए, तहिना हीरानन्दोकेँ भेटलैन। अनासुरती हुनकर नजैर मिथिलाक चिन्तनधारा आ मिथिलाक समाजक बुनाबटिक ढाँचापर पड़लैन। चिन्तनो धारा आ सामाजिक ढाँचो, दुनूपर नजैर पड़िते मनमे एकटा नव ज्योति, बिजलोकाक इजोत जकाँ, चमकलैन। बिछानपर सँ उठि ओसारेपर आबि टहलए लगला। एक-दू खेप एम्हर-सँ-ओम्हर टहैलते अनासुरती मुहसँ निकललैन-

"वाह रे मिथिलाक चिन्तक! दुनियाँक गुरु! जे ज्ञान हजारो बरख पहिने मिथिलाक धरतीपर आबि गेल छल, वएह ज्ञान उन्नैसम शताब्दीमे मार्क्स कठिन संघर्ष करिकऽ अनलैन, जइसँ दुनियाँक चिन्तनधारा बदलल। मुदा मिथिलाक दुर्भाग्य भेलै जे समाजक निआमक धूरतइ केलक। जे चिन्तक मनुक्ख केँ सभ मनुक्ख, मनुक्ख छी एक रूपमे देखलैन, ओइ रूपकेँ एतुक्का निआमक, माने शासनकर्ता, टुकड़ी-टुकड़ी कऽ काटि देलैन! आइ जरूरत अछि ओइ सभ टुकड़ीकेँ जोड़ि-जोड़ि एकरूप बनबैक। जे

नान्हिटा काज नइ अछि। तेतबे नहि, अखनो टुकड़ी बनौनिहारक कमी नइ अछि। जखन कि पूर्वसँ भेल टुकड़ीकेँ स्वयं ओ चेतना नइ छै जे टुकड़ी भेल कातमे पड़ल छी आ कौआ-कुकुर खाइए..!"

विचारक ऐ पड़ावपर अबिते हीरानन्दक मन असथिर भेलैन। असथिर होइते मनमे नव स्फूर्ति, नव चेतना आ नव उत्साह जगलैन। नव ढंगसँ सभ वस्तुकेँ देखए लगला। तैबीच शशि शेखर सेहो टहलैत-बुलैत लगमे एलैन।

हीरानन्दपर नजैर पड़िते शशि शेखरकेँ बुझि पड़लैन जेना अखने नहाकऽ पोखैरसँ ऊपर भेलौं हेन। हीरानन्दक मन विचारमे डुमले रहलैन। मने-मन सोचैत रहैथ जे पटुआक सोन, सन्नैक सोन वा रूइक रेश महीन तँ होइत अछि मुदा कारीगर ओइ रेशकेँ टेरुआ वा टौकरीक सहारासँ समेट कऽ सूत वा सुतरी बना कपड़ा वा बोरा आकि मोटगर रस्सा जहिना बनबैए, तहिना समाजोक टुटल मनुक्खकेँ जोड़ि समाज बनबए पड़त। तखने नव समाजक निर्माण होएत। जे अद्दी-गुद्दी काज नहि, कठिन काज छी। कठिन काज करैले कठिन मेहनैतिक जरूरत सेहो अछि। ओना, सिरिफ कठिन मेहनैतिये केलासँ सभ कठिन काज सफल नइ भऽ सकैए। तइले कठिन मेहनैतिक संग सही समझ आ सही रास्ताक बोध सेहो जरूरी अछि। तँए कठिन मेहनत, गम्भीर चिन्तन आ आगू बढ़ैले काज करैक अदम्य साहस सेहो अनिवार्य अछि। तैसंग मजगूत संकल्प होएब सेहो जरूरी अछि।

विचारक संग-संग हीरानन्दक मनमे कठिन कार्यक संकल्प अनायास अप्पन जगह बनबए लगल। भिनसुरुका समय, तँए लाल सुरुजमे ठण्ढपन सेहो रहबे करए। एक टकसँ सुरुज दिस तकैत हीरानन्द अप्पन विचारकेँ संकल्पक लगमे लऽ जा दुनूकेँ हाथ पकड़ा दोस्ती करौलैन। दुनूक बीच दोस्ती होइते मनक नव उत्साह शरीरमे तेजी आनए लगलैन।

दरबज्जाक आगुए देने उत्तरे-दच्छिने रास्ता अछि। हीरानन्द शशि शेखरकेँ कहलखिन-

"चलू, कनी बुलियो-टहैल लेब आ एकटा गप्पो करब अछि।"

दुनू गोरे दरबज्जापर सँ उठि आगू बढ़ला कि उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ तीनटा ढेरबा बच्चाकेँ जाइत देखलैन। तीनूक देह कारी खटखट। केश उड़ियाइत। डोरीबला फाटल-कारी झामर पैन्ट तीनू पहिरने। देहमे केकरो

कोनो दोसर वस्त्र नहि, मात्र पैन्ट टा पहिरने। तीनूक हाथमे पुरना साड़ीक टुकड़ाकेँ चारू कोण बान्हल झोरा। तीनू बच्चा अपनामे गप-सप्प करैत उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ खुशीसँ आगू बढ़ल जाइत। तीनूक गप-सप्प सुनैले हीरानन्द कान पथलैन।

मुस्कियाइत बेंगबा बजैत रहए- "रौतुका बसिया रोटी आ डोका तीमन तेते ने खेलियौ जे चललो ने होइए। पेट ढब-ढब करैए।"

दहिना हाथ बढ़बैत फेर बाजल-

"हे सुंहीं, हमर हाथ केहेन गमकैए! जेना बुझि पड़तौ जे कटुक-मसल्ला लागल अछि!"

हाथ समेट कऽ बेंगबा बाजल- "तूँ की खेलँह गइ, रोगही?"

सिरसिराइत रोगही बाजल- "हमरा माए कहलक जे जो डोका बीछि कऽ ला गऽ। ताबे हमहूँ मड़ूआ उला-पीसि कऽ रोटी पकेने रहबौ। डोका चटनी आ रोटी खइहेँ।"

रोगहीक बात सुनि बेंगबा कबुतरीकेँ पुछलक- "तूँ गइ, कबुतरी?"

"हमर माए काल्हि जे डोका बेचैले गेल रहै तँ ओमहरेसँ मुरही किनने आएल। सएह खेलौं।"

कबुतरीक बात सुनि बेंगबा पनचैती केलक जे तोहर जतरा सभसँ नीक छौ। आइ तोरा सभसँ बेसी डोका हेतौ। सभसँ बेसी तोरा, तइसँ कम हमरा आ सभसँ कम रोगहीकेँ हेतइ।"

बेंगबाक पनचैतीक विरोध करैत रोगही बाजल- "तूँ बड़ पण्डित बनै छँह। तोरे कहने हमरा कम हएत आ तोरा सभकेँ बेसी। हमरा जकाँ तोरा दुनू गोरेकेँ डोका बीछैक लूरि छौ? घौदियाएल डोका केतए रहै छै से बुझै छीही?"

मुँह सकुचाबैत बेंगबा पुछलक- "केतए रहै छै से तोहीं कह?"

"किए कहबौ। तूँ जे खेलेँ से हमरा बाँटि देलेँ?"

बेंगबा- "बाँटि दैतियौ से हम अगरजानी जननिहार भगवान छी। तूँ कहलेँ हेन अखनी आ बाँटि दैतियौ अँगनेमे?"

बेंगबाक बात सुनि रोगही निरूत्तर भऽ गेल। हीरानन्द आ शशि शेखर

तीनूक बात चुपचाप ठाढ़ भऽ सुनि रहल छला। ताधैर तीनू गोरे हिनका सभक लगमे पहुँच गेल। हाथक इशारासँ तीनू गोरेकेँ हीरानन्द शोर पाड़ि पुछलखिन-

"बौआ, तूँ सभ केतए जाइ छह?"

हीरानन्दक प्रश्न सुनि बेंगबा धाँइ-दे बाजल-

"डोका बीछैले!"

"डोका बीछि कऽ की करै छहक?"

"अपनो सबतूर खाइ छी आ माए बेचबो करैए। बाउ कहने अछि जे डोका बेचिकऽ पाइ हेतौ तइसँ अँगा-पैन्ट कीनि देबौ। घुरना बिआहमे पिहिन कऽ बरियाती जइहेँ।"

बेंगबाक बात सुनि हीरानन्द रोगहीकेँ पुछलखिन-

"बच्चा तूँ?"

रोगही बाजल-

"हमहूँ डोके बीछैले जाइ छी। माए कहलक जे डोकासँ जे पाइ हेतौ, तइसँ शिवरातिक मेलामे महकौआ तेल, महकौआ साबुन, केश बन्हैले फीता आ किलीप कीनि देत।"

मुस्कियाइत हीरानन्द बातक समर्थनमे मुड़ियो डोलबैत रहैथ आ मने-मन विचारबो करैथ जे केतेक आशासँ गरीबोक बच्चा जीबैए। शशि शेखर दिस ताकि अप्पन आँखिक इशारासँ हीरानन्द कहलखिन-

"शशि, एकरा सभक बगए देखियौ आ आशा देखियौ!"

तेसर बच्चियाकेँ पुछलखिन-

"बौआ, तूँ?"

हीरानन्दक आँखिमे आँखि गड़ा कबुतरी कहलकैन-

"हमरा माए कहने अछि जे डोका-पाइसँ सल्बार-फराक कीनि देत।"

काजक समय दुइर होइत देखि हीरानन्द तीनूकेँ कहलखिन-

"जाइ जाह।"

हीरानन्द आ शशि शेखर घुमिकऽ दरबज्जापर एला। ओ तीनू बच्चा

गप-सप्प करैत आगू बढ़ि गेल। थोड़ेक आगू बढ़लापर कबुतरी बेंगबाकेँ पुछलक- "बेंगबा, तूँ बिआह कहिया करमेँ?"

बिआह सुनि बेंगबाकेँ मनमे खुशी भेलइ। हँसैत बाजल-

"अखनी बिआह नै करबै। मामा गाम गेल रहिऐ तँ भैया कहलक जे कनी और बढ़मेँ तँ तोरा भिबन्डी नेने जेबौ। ओतै नोकरी करबै। जखन बहुत रुपैआ हेतै तब ईंटाक घरो बनेबै आ बिआहो करबै।"

बिच्चेमे रोगही कहलकै- "तोरा सनक ढहलेल बुते बौह सम्हारल हेतौ?"

बौहुक नाओं सुनि बेंगबाक हृदय खुशीसँ गदगद भऽ गेल। हँसैत बाजल- "आँइ गे रोगही, तूँ हमरा पुरुख नइ बुझैछेँ। हम तँ ओहन पुरुख छी जे एगोकेँ के कहए, तीन गो बौहुकेँ सम्हारि लेब!"

कबुतरी-

"खाइले की देबही बौहकेँ?"

बेंगबा-

"भिबन्डीमे जब नोकरी करबै तँ बुझै छीही जे केते कमेबै? दू हजार रुपैआ एक्के महिनामे हेतइ।"

हँसैत रोगही बिच्चेमे टिपलक-

"दू हजार रुपैआ गनलो हेतौ?"

"किए, बीस-बीस करिकऽ गनबै। रुपैआ हेतै तँ फुलपैन्ट सिएबै, खूब चिक्कन अँगा किनबै, घड़ी किनबै, रेडी किनबै, मोबाइल किनबै, डोरीबला जुत्ता किनबै..; तब देखयहैन जे बेंगबा केहेन लगै छइ।"

"तोरा नोकरी के रखतौ?"

"गामबला भैया नोकरी रखा देत। कहलक जे जही मालिक ऐठीम हम रहै छिऐ तही मालिक ऐठीम हमरो रखा देतइ। बड़ धनीक मालिक छइ। मारिते नोकर छइ। हम जे मामा गाम गेल रहिऐ तँ भैयो गाम आएल रहए। ओ कहै जे हम मालिकक कोठीमे रहै छिऐ। दरमाहा छोड़िकऽ बाइलियो खूब कमाइ छइ। मालिककेँ एकटा बेटी छइ। उ बड़का स्कूल-कौलेजमे पढ़ै छइ। अपनेसँ हवागाड़ी चलबै छइ। सभदिन हमर भैया ओकरा स्कूल संगे

जाइ छइ। उ पढ़ै छै आ हमर भैया गाड़ी ओगरै छइ। जखनी छुट्टी भऽ जाइ छै तखनी दुनू गोरे संगे अबैए। उ मलिकाइन हमरा भैयाकेँ मानबो खूम करै छइ। संगे-संग सिलेमा देखैले जाइ छइ। बजार घुमैले जाइ छइ। बड़का दोकानमे दुनू गोरे खूम लड्डू खाइए। अना तँ बड़का मालिक सभ नोकरकेँ दीयाबत्तीमे चिकनका कपड़ा दइ छै, हमरो भैयाकेँ दइ छइ। छोटकी मलिकाइन अपने दिसनसँ निकहा-निकहा फुलपैन्ट, निकहा-निकहा अँगा कीनि-कीनि दइ छइ। रुपैओ खूम दइ छइ...।"

तीनू गोरे बाध पहुँच गेल। बाध पहुँचते तीनू तीन दिस भऽ गेल। तीन दिस भऽ तीनू गोरे डोका बीछए लगल। ऊपरे सभमे डोका चरौर करैले निकलल रहए। डोका बीछि तीनू बच्चा घुमि गेल।

दरबज्जापर आबि हीरानन्द शशि शेखरकेँ पुछलखिन- "शशि, की सभ ओइ बच्चा सभमे देखलिऐ?"

मुँह बिजकबैत शशि बजला-

"भाय, ओइ बच्चा सभकेँ देखि हम क्षुब्ध छेलौं। ओकरा सभक बगए देखै छलिऐ आ मनक खुशी देखै छलिऐ! जेना दुनियाँ-दारीसँ कोनो मतलब नहि, एकदम निर्विकार। अपने-आपमे मगन छल।"

हीरानन्द- "कहलौं तँ ठीके मुदा एकटा बात तर्क केलिऐ। अपना सभक समाज तेतेक नमहर अछि जे ओइमे भिखमंगासँ राजा धरि बसैए। एकदिस बड़का-बड़का कोठा अछि, तँ दोसर दिस खोपड़ी सेहो अछि। एकदिस औझुका विकसित मनुक्ख अछि, तँ दोसर दिस आदिम जुगक मनुक्ख सेहो अछि। एते पैघ इतिहास समाज अपना पेटमे रखने अछि, मुदा ने ओइ इतिहासकेँ कियो पढ़निहार छैथ आ ने बुझनिहार।"

"ठीके कहलौं भाय!"

"आइ धरि, हमसभ समाजक जइ रूपकेँ देखै छी ओ ऊपरे-झापरे देखै छी। मुदा देखैक जरूरत अछि ओकर भीतरी ढाँचाकेँ। जहिना समुद्रक ऊपरका पानि आ लहैर तँ सभ देखैए मुदा पानिक भीतर की सभ अछि से देखनिहार कए गोरे अछि?"

सभदिन भोरमे बौएलाल अपनो पढ़ैत आ सुमित्रोकेँ पढ़ा दइत। जाधैर टोल-पड़ोसक लोक सुतिकऽ उठैत-उठैत ताधैर बौएलाल आ सुमित्रा

एक-डेढ़ घन्टा पढ़ि लिअए। एक तँ चफलगर दोसर, पढ़ैक जिज्ञासा सुमित्रामे तँए एक्के दिनमे अ-आ-सँ-य-र-ल-व तक सीखि लेलक। कब्बीरकाने सीखि सुमित्रा बाल-पोथी पढ़ब आ खाँत सिखब शुरू केलक।

सुमित्राकेँ पढ़ैत देखि माए-बाबूकेँ खूब खुशी होइत रहैन। ओना, माइयो आ बाबूओक मनमे शुरूहेसँ रहै जे बच्चा सभकेँ पढ़ाएब, मुदा समैयक फेड़ आ परिवारक विपन्नताक चलैत मनक सभ मनोरथ मनेमे गलि कऽ विलीन भऽ गेल रहइ। मुदा जहियासँ सुमित्रा पढ़ए लागल अछि तहियासँ ओ मनोरथ अंकुरित हुअ लगलइ। मनुक्खक जिनगीक गति मनुक्खक विचारो आ बेवहारोकेँ बदलैए। अनूपक प्रति जे कटुता आ दुर्विचार राम प्रसादक मनकेँ गहियाकऽ धेने छेलै ओ नहुँए-नहुँए पघिलए लगलइ। सुमित्राक माए अनूपक आँगन जाइ-अबै छेली। तीमन-तरकारीक लेन-देन पतिसँ चोरा कऽ सेहो करिते छेली। मुदा तैयो राम प्रसादक मनमे पैछला दुश्मनी नीक-नहाँति मेटाएल नइ छेलइ। जहिना बरसातमे सुखाएल धारमे पानि अबिते जीवित धारक रूप-रेखा पकैड़ लैत अछि तहिना विद्याक प्रवेशसँ रामप्रसादोक परिवारक रूप-रेखा बदलए लगल। भाए-भैयारीमे भैंसा-भैंसीक दुश्मनीक जगह प्रेमक आगमन हुअ लगल।

मिरचाइ, तरकारी आ चुन कीनैले अनूप हाट गेल रहए। कोसे भरिपर कछुआ हाट अछि। तैबीच राम प्रसाद केता बेर अनूपक डेढ़ियापर आबि-आबि अनूपक खोज केलक। राम प्रसादक मनमे अधला विचारकेँ धिक्कारि नीक-विचार अप्पन जगह बना लेलक। दोसर साँझमे अनूप हाटसँ घुमिकऽ रस्तेमे अबै छल कि तैबीच राम प्रसाद पुन: ढेरियापर आएल। अनूपपर नजैर पड़िते राम प्रसाद कठ हँसी हँसैत बाजल-

"बहुत दिन जीबह भैया। बेरुए पहरसँ केतए हेरा गेल छेलह?"

राम प्रसादक बदलल चेहरा आ बदलल विचार देखि-सुनि अनूप मने-मन तारतम करए लगल जे आइ सुरुज केम्हर उगला। जिनगी भरिक दुश्मनी एका-एक एना बदैल केना गेल?

पैछला गप अनूपकेँ मोन पड़लै। अखन तक रमपरसदबाक संग हमरा दुश्मनी ओकर अधले काजक दुआरे ने छल। मुदा ताराकान्तकेँ धन्यवाद दिऐ जे वेचारा मारियो खा कऽ आ जहलो जा कऽ गाममे खबासी प्रथा

मेटौलैन। जाबे रमपरसदबा अधला काज करै छल ताबे जँ दुश्मनी छल तँ ओहो नीके रहए। किएक तँ हमहूँ अपना डारिपर छेलौं...। मुदा आब जँ ओ ओइ काजकेँ छोड़ि देलक तँ हमरो मिलान करैमे हरज कथी। कालोक गति तँ प्रबल होइए किने। समैयो बदैल रहल अछि। एक तँ पहिलुका जकाँ आब लोक भाड़ो-दौर नइ दइए आ दोसर, पहिने लोक कान्हपर भाड़ उघै छल आब गाड़ी-सवारीमे लऽ जाए लगल अछि। तेतबे नहि, आब सभक समांग परदेश सेहो खटए लगल अछि। गामक मालिको-मलिकानाक पहिलुका रूतबा कमले जा रहल अछि।

राम प्रसादक बातक जवाबमे अनूप बाजल- "हाट जेनाइ जरूरी छेलए। घरमे ने मिरचाइ छल आ ने चुन। जे चुनवाली चुन बेचए अबै छल ओकर साउस मरि गेलइ। ऐ साल एक्को दिन कटहरक आँठी देल खेरही दालि सेहो नै खेने छेलौं तँए मन लगल छेलए।"

कहि अनूप सोझे आँगन जा ओसारपर आँठी आ मेरचाइक मोटरी रखि, कोहीमे चुन रखलक।

तैबीच राम प्रसाद अनूपक एकचारीमे बैस तमाकुल चुनबए लगल। चुनक कोही खोल्हियापर रखि अनूप बाहर आबि राम प्रसादकेँ कहलक-

"ताबे तमाकुल लगाबह, कनी हाथ-पएर धोइ लइ छी। एक तँ कच्ची रास्ता, तहूमे तेते टेक्टर सभ चलैए जे भरि ठेहुन गरदा रास्तापर भऽ गेल अछि। जहिना लोकक पएर थाल-पानिमे धँसैए तहिना गरदोमे धँसै छइ।"

बजैत-बजैत अनूप इनारपर पहुँच गेल। हाथ-पएर धोइकऽ राम प्रसाद लग आबि बैसल। अनूपकेँ तमाकुल दैत राम प्रसाद बाजल-

"भैया, दुपहरेसँ मनमे आएल जे तोरो बरदक भजैती आन टोलमे छह आ हमरो अछि। दुनू गोरे ओकरा छोड़ा कऽ अपनेमे लगा लएह। जइसँ दुनू गोरेकेँ सुविधा हेतह।"

थूक फेंक अनूप बाजल- "ई बात तँ केते दिनसँ बौएलाल कहै छेलए जे जेते काल बरद अनैमे लगै छह ओते कालमे एकटा काज भऽ जेतह।"

मुड़ी डोलबैत राम प्रसाद बाजल- "काल्हि जा कऽ तोहूँ अप्पन भजैतकेँ कहि दहक आ हमहूँ कहि देबइ। परसूसँ दुनू गोरे एक्केठीन खेत जोतब।"

आँगन बहारब छोड़ि रधियो आबिकऽ टाटक कातमे ठाढ़ भऽ गेल छेली। किएक तँ बहुतो दिनक बाद दुनू गोरेकेँ मुँहा-मुँही गप करैत देखलक। बरदक भजैतीक गप कऽ अनूप राम प्रसादकेँ कहलक-

"अबेर भऽ गेल। अखन तोहूँ जाह, हमहूँ पर-पैखाना दिस जाएब।"

जहिना सड़ल-सँ-सड़ल पानिमे कमल फुलेलासँ भगवानक माथपर चढ़ैक अधिकारी भऽ जाइए तहिना बौएलालक सेवा, सभक लेल हुअ लगल। जइसँ गाम भरिमे बौएलाल चर्चाक पात्र बनि गेल। हीरानन्दक असरा पाबि बौएलाल रामायण, महाभारत, कहानी, कविता पढ़ब सेहो सीखि लेलक। जइ गाममे लोक भरि-भरि दिन ताश खेलैत, जुआ खेलैत तइ गाममे बौएलालक दिनचर्या सभसँ अलग बीतए लगल, जइसँ बौएलालक जिनगीक रस्ता बदैल गेल। अधिक काल हीरानन्द बौएलालकेँ कहथिन-

"बौएलाल, गरीबक सभसँ पैघ दोस्त मेहनत छी। जे कियो मेहनतकेँ दोस्त बना चलत, वएह गरीबी रूपी दुष्टकेँ पछाइर सकत। तँए सदिखन समयकेँ पकैड़ सही रास्तासँ मेहनत केनिहार जे अछि, वएह ऐ धरती आ दुनियाँक सुख भोगि सकैए।" ❑

आठम पड़ाव

रौतुके गाड़ीसँ रामाकान्त तीनू गोरे अपना टीशनमे उतरला। अन्हार राति। भकोभन स्टेशन। खाली दुइये गोरे, स्टेशन मास्टर आ पैटमैन, स्टेशनक घरमे केबाड़ बन्न केने जागल छला। कोठरीमे लेम्प जरैत रहइ। ने एक्कोरती इजोत प्लेटफार्मपर आ ने मोसाफिरखानामे। अन्हारेमे रामाकान्त तीनू गोरे अप्पन सभ सामान मोसाफिरखानामे रखि, जाजीम बिछा बैसलैथ। गाड़ीक झमारक संग दू रातिक जगरनासँ तीनू गोरेक देह भँसियाइत रहैन। प्लेटफार्मक बगलमे ने एक्कोटा चाहक दोकान खुगल, ने एक्कोटा दोकनदार जागल आ ने कोनो दोकानमे इजोत होइ छेलइ। संयोग एहेन भेल जे हिनका तीनू गोरेक अलावे गाड़ीसँ एक्कोटा दोसर पसिंजर नहि उतरल। मोसाफिरखानामे मात्र यएह तीनू गोरे छेलैथ। नीन तोड़ै दुआरे रामाकान्त चाह पीबए चाहैथ मुदा कोनो जोगार नै देखि कखनो सामान लग बैसैथ तँ कखनो उठिकऽ टहलए लगैथ।

श्यामा सुति रहली आ जुगेसर सेहो सुति रहल। मुदा रामाकान्तक मनमे होनि जे जँ कहीं सुति रहब आ सभ सामान चोरि भऽ जाए, तखन तँ भारी जुलुम हएत। ओना, नीन तोड़ैक एकटा नीक उपाय ढाकीक-ढाकी मच्छर रहबे करैन। तँए जुगेसरो आ श्यामो अप्पन-अप्पन चद्दैर ओढ़ि मुँह झाँपि कऽ सूतल रहैथ।

प्लेटफार्मपर पनरह-बीसटा अनेरुआ कुकुर एम्हर-सँ-ओम्हर करैत रहए। प्लेटफार्मक पछबारि भागमे माल-जालक हड्डीक ढेरी छल जइसँ मुलिकक गन्ध अबैत रहइ। सकरीक एकटा बेपारी हड्डीक कारोबार करैए। गाम-घरमे जे माल-जाल मरैत अछि ओकर हड्डी गामे-घरक छोटका बेपारी, भाड़पर उघि-उघि अनैए आ ऐठाम एकरा हाथे बेचि गुजर करैए। जखन बेसी हड्डी जमा भऽ जाइ छै, तखन ओ मालगाड़ीक डिब्बामे लादि बाहर पठबैए। जाधैर हड्डी प्लेटफार्मक बगलमे रहैए ताधैर अनेरुआ कुत्ता सभ ओइ हड्डीकेँ चिबबै-पाछू तबाह रहैए। दिन रहौ कि राति, टीशनक कातक

जेतेक कुकुर अछि, सभटा ओही इर्द-गिर्द मर्ड़ाइत रहैए। ओना, आनो-आनो गामक गोटे-गोटे कुकुर अप्पन गाम छोड़ि एतए चलि आएल अछि। एकटा पिल्ला एकटा पिल्लीक संग प्लेटफार्मक पुबारि भागसँ अबिते छल कि एकटा दोसर कुत्ताक नजैर ओकरापर पड़लै। बिना बोली देनहि ओ कुकुर दौग कऽ ओइ पिल्ला-पिल्ली लग पहुँच गेल। आगू-आगू पिल्ली आ पाछू-पाछू पिल्ला नाङैर डोलबैत जाइत रहए। ओ (दोसर कुकुर) पहिने पिल्लीक मुँह सूँघलक। सुँघिते पिल्ली मुँह चियारिकऽ ओइ कुत्तापर टुटल। पिल्लीकेँ टुटिते पैछला पिल्ला जोरसँ भुकलक। ओ आवाज (भुकब) सुनिते, जेतेक अनेरुआ कुकुर प्लेटफार्मपर रहए, सभ भुकैत दौग कऽ ओइ पिल्लीकेँ घेर लेलक। सभ सभपर भूकए लगल। मुदा पिल्ली डेराएल नहि। रानी बनि हस्तिनीक चालिमे पच्छिम-मुहेँ आबए लगल। अबैत-अबैत टिकट घरक सोझमे आबि प्लेटफार्मपर बैस रहल। पिल्लीकेँ बैसते सभटा पिल्ला पटका-पटकी करए लगल।

प्लेटफार्मक पछबारि भाग, कदमक गाछक निच्चाँमे मघैया डोम सभ डेरा खसौने रहए। तखने एकटा छौड़ा एकटा छौड़ीक संग, डेरासँ थोड़े पच्छिम जा लट्टा-पट्टी करैत रहए।

कुत्ताक आवाज सुनि एक गोरेकेँ नीन टुटलै। नीन टुटिते आँखि तकलक कि पछबारि भाग दुनू गोरेकेँ लट्टा-पट्टी करैत देखलक। ओ केकरो उठौलक नहि। असगरे उठिकऽ ओइ दुनू लग पहुँचल। ओहो दुनू देखलकइ। छौड़ा ससैर कऽ झाड़ा फीड़ैक लाथे कातमे बैस गेल। मुदा छौड़ी चालाक। फरिक्केसँ ओइ आदमीकेँ कहलकै-

“काका?”

‘काका’ सुनि ओ आदमी किछु बाजल नहि, मुदा घुरबो नहि कएल। आगुए-मुहेँ ससरैत रहल। छौड़ियो ओकरे दिस ससरल। लगमे पहुँचते छौड़ी कन्हापर दहिना हाथ दैत फुसफुसा कऽ बाजल-

“काका.!”

कान्हपर हाथ पड़िते कक्काक मन बदलए लगलैन। जहिना शिकारीकेँ दोसराक शिकार हाथ लगलापर खुशी होइत अछि तहिना कक्कोकेँ भेलैन। ओहो अप्पन दहिना हाथ छौड़ीक देहपर देलखिन। देहपर

हाथ पड़िते छौड़ी जोरसँ हल्ला केलक। कातमे बैसल छौड़ा सेहो सभकिछु देखिते छल। उठिकऽ ओहो हल्ला करए लगल। हल्ला सुनि सभ मघैया उठि-उठि दौगल।

हल्ला सुनि स्टेशन मास्टर पैटमैनकेँ कहलैन-

"रघू! प्लेटफार्मपर बड़ हल्ला होइए, जा कऽ देखहक तँ जे की बात छिऐ.!"

पैटमैन जवाब देलकैन-

"टीशन छिऐ। सभ रंगक लोक ऐठाम अबै-जाइए। जँ हम ओम्हर देखैले जाइ आ एम्हर घरमे चोर चलि आबए, तखन असगरे अहाँ बुते सम्हारल हएत। भने केबाड़ बन्न छइ। दुनू गोरे जागल टा रहू, नइ तँ सरकारी सामान चोरि भेने दुनू गोरेक नोकरी जाएत। कोनो कि सुरक्षा गार्ड अछि जे चोरिक दोख ओकरा लगतै।"

पैटमैनक बात स्टेशन मास्टरकेँ नीक बुझि पड़लैन, बजला-

"ठीके कहलह।"

दुनू गोरे गप-सप्प करए लगला। लेम्प जरिते रहइ। केबाड़क दोग देने पैटमैन प्लेटफार्म दिस तकलक तँ देखलक जे कुत्ता सभ पटका-पटकी करैए। अन्हार दुआरे मघैया सभपर नजैर नहि पड़इ।

एकदिस कुत्ता सभक झौहैर आ पटका-पटकी, तँ दोसर दिस मघैया सभक गारि-गरौऐल प्लेटफार्मकेँ गदमिशान केने। रामाकान्त सोचैथ जे भने भऽ रहल अछि। लोकक हल्लासँ हमर सामान तँ सुरक्षित अछि। जुगेसरकेँ उठबैत कहलखिन-

"जुगे, कनी आगू बढ़ि कऽ देखहक तँ कथीक हल्ला होइ छइ?"

जुगेसर उठिकऽ बाजल-

"काका, कोन फेड़ामे पड़ै छी! बस-स्टेण्ड आ रेलवे स्टेशनमे अहिना हरिदम झूठो-फूसि-ले हल्ला होइते रहै छइ। अप्पन जान बचाउ। अनेरे केतए जाएब।"

भोर होइते टमटमबला सभ आबए लगल। थोड़े हटिकऽ उत्तरबारि भाग, ठकुरबाड़ीमे घड़ी-घण्ट बाजब शुरू भेल। घड़ी-घण्टक आवाज सुनि

रामाकान्त नमहर साँस छोड़लैन। जुगेसरकेँ कहलखिन-

"ओंघीसँ मन भकुआएल अछि। चाहो दोकानपर लोकसभकेँ गल-गुल करैत सुनै छिऐ। कनी चाह पीने अबै छी। ताबे तूँ सामान सभ देखैत रहह।"

रामाकान्त उठिकऽ कलपर जा कुरुर केलैन। पानि पीलैन। पानि पीब चाहक दोकानपर पहुँच चाह पीलैन। चाह पीब पान खा घुमिकऽ आबि जुगेसरकेँ कहलखिन-

"आब तोंहू जाह। चाह पीब दूटा टमटम सेहो केने अबिहह।"

जुगेसर उठिकऽ कलपर जा पहिने कुरुर केलक। कुरुर केलाक बाद सोचलक जे अखन भिनसुरुका पहर छी। तोहूमे तीनियेँ-चारि टा टमटमबला आएल अछि। जँ कहीं चाह पीबैले चलि जाइ आ एम्हर टमटमबला दोसर गोरेकेँ गछि लइ, तखन तँ पहपैट भऽ जाएत। तइसँ नीक जे पहिने टमटमेबलाकेँ कहि दिऐ।

टमटमबला लग पहुँच जुगेसर बाजल-

"भाय, टमटम खाली छह?"

"हँ।"

"चलबह?"

"हँ, चलब।"

पहिल टमटमबलाक घरवाली दुखित अछि। दस बजेमे डॉक्टर ऐठाम जेबाक छइ। एक्कोटा पाइ नइ रहने भोरे स्टेशन पहुँच गेल जे एक्को-दूटा भाड़ा कमा लेब तँ औझुका जोगार भऽ जाएत। किएक तँ कम-सँ-कम पचास रुपैआ दबाइ-दारू, तेकर बाद घरक बुतात, घोड़ाक खरचा आ दस रुपैआ बैंकबलाकेँ सेहो देबाक अछि।

टमटमबला मने-मन सोचए लगल, भिनसुरुका बोहैन छी तँए एकरा छोड़ब नहि। साला टमटमबला सभ जे अछि ओ उपरौंज करैत रहैए। कहैले अपनामे युनियन बनौने अछि मुदा बान्ह कोनो छैहे नहि। लगले बैसार करिकऽ विचारि लेत आ जहाँ दस रुपैआ जेबीमे एलै आकि ताड़ी पीब मनमाना करए लगैए। अपनामे सभ विचारने अछि जे बर-बीमारी सन

बेगरतामे सभ-सभकेँ सहयोग करब, चन्दा देबइ। मुदा हमरे कएटा पैसा चन्दा देलक? पनरह दिनसँ घरवाली दुखित अछि, जइ पाछू रेजानिस-रेजानिस भऽ गेल छी। ने एक्को मुट्ठी घोड़ाकेँ बदाम दइ छिऐ आ ने अपने भरि पेट खाइ छी। धियो-पुतासभ से अन्न बेतरे टौआइए। तखन तँ धन्यवाद ओही बच्चा सभकेँ दिऐ जे भूखलो-दूखल माइक सेवा-टहल करैए। अपनो कोनो धरानी घोड़ाक संग-संग टमटम घिचै छी। जँ से नहि करब आ सोल्होअना घोड़े भरोसे रहब तँ ओहो मरि जाएत! यएह तँ हमर लक्ष्मी छी। एकरे परसादे दू पाइ देखै छी। घोड़ाकेँ केना छोड़ि देब। तहिना घरोवाली कमजोर अछि। जिनगी भरि तँ ओकरे संग सुखो केलौं, छोट-छोट बच्चोकेँ तँ वएह थतमारिकऽ रखलक। हम तँ भरि दिन बोनाएले रहै छी। घर तँ ओही वेचारीक परसादे चलैए..!

टमटमबला सोचिते छल, तैबीच जुगेसर पुछलकै- "केते भाड़ा लेबहक?"

भाड़ाक नाओं सुनि टमटमबला सोचलक जे एक तँ भिनसुरुका बोहैन छी आ दोसर, डॉक्टरो ऐठीम जाइक अछि। जँ भाड़ा कहबै आ ओते नै दिअए तखन तँ बक-झक हएत। जँ कहीं दोसर टमटम पकैड़ लिअए तखन तँ ओहिना मुँह तकैत रहि जाएब। तइसँ नीक जे पहिने समानो आ पसिंजरो चढ़ा ली...। एते बात मनमे अबिते बाजल-

"जे उचित भाड़ा हएत सएह ने लेब। हम तोरा एक हजार कहि देबह तँ की तूँ दाइये देबह?"

टमटमबलाक बात सुनि जुगेसर बाजल-

"अच्छा ठीक छइ। पहिने चाह पीब लएह।"

दुनू टमटमोबला आ जुगेसरो, चाहक दोकानपर जा चाह पीलक। चाह पीब तीनू गोरे तमाकुल खेलक। चाहबलाकेँ जुगेसरे पाइ देलकइ। तीनू गोरे रामाकान्त लग आबि सामान सभ उठा-उठा टमटमपर लादलक। एकटा टमटमपर श्यामा, जुगेसर चढ़ल आ दोसरपर सामानक संग असगरे रामाकान्त बैसला। किछु दूर आगू बढ़लापर टमटमबलाकेँ पुछलखिन-

"घोड़ा एते लटल छह। खाइले नै दइ छहक?"

रामाकान्तक बात सुनि टमटमबला बेवशी-आँखिए रामाकान्त दिस

ताकि उत्तर दिअ चाहैत मुदा कानैत हृदय मुहसँ बकारे नै निकलए दइ। टमटमबलाक आँखि-पर-आँखि दऽ रामाकान्त पढ़ए लगला। तैबीच टमटमबलाक आँखिमे नोर ढबढबा गेलइ। कान्ह परक तौनीसँ आँखि पोछि टमटमबला बाजल- "सरकार, यएह टमटम आ घोड़ा हमर जिनगी छी। अहीपर परिवार चलैए। जइ दिनसँ भनसिया दुखित पड़ल तइ दिनसँ जे कमाइ छी से दवाइये-दारूमे खरचा भऽ जाइए। अपनो बाल-बच्चाकेँ आ घोड़ोकेँ खेनाइक तकलीफ भऽ गेल अछि। की करबै! कहुना परान बँचेने छिऐ। परान रहतै तँ मौसु हेबे करतै।"

टमटमबलाक बेवशी आ धैर्य देखि रामाकान्तक हृदय पघिल कऽ इनहोर पानि जकाँ पातर भऽ गेलैन। बिना किछु बजने मने-मन सोचए लगला जे एक तरहक मजबूर ओ अछि जे किछु करबे नै करैए आ दोसर तरहक ओ अछि जे दिन-राति खटैए मुदा ओकरा प्रकृतिसँ लऽ कऽ मनुक्ख धरि ऐ रूपेँ संकट पैदा केने अछि जइसँ ओ सकपंज अछि। ई टमटमबला दोसर श्रेणीक मजबूर अछि, तँए एहेन लोकक मदैत करब धर्मक श्रेणीमे अबैए। जरूर एहेन लोकक मदैत करक चाहिऐ। ओना, मेहनतकस आदमीक मन एते सक्कत होइ छै जे दोसरसँ हथउठाइ नै लिअ चाहैए। तँए जँ हम किछु मदैत करए चाहिऐ आ ओ लइसँ नास्कार जाए तखन तँ मनमे कचोट हएत!

असमंजसमे रामाकान्त पड़ि गेला। कोन रूपेँ एकरा मदैत कएल जाए? सोचैत-सोचैत सोचलैन जे हम अपने नै किछु कहि एकरेसँ पुछिऐ जे अखन तूँ जइ संकटमे पड़ल छह ओइमे केते सहयोग भऽ गेलासँ तोरा पार लगि जेतह। रामाकान्त पुछलखिन-

"अखन तोरा केते मदैत भऽ गेलासँ पार लगि जेतह?"

रामाकान्तक बात सुनि टमटमबलाक मनमे संतोषक छोट-छीन रेगहा घिचा गेल। मने-मन सभ हिसाब बैसबैत बाजल-

"सरकार, अगर अखन पाँच दिनक परिवारोक आ घोड़ोक बुतात आ एक साए रुपैआ भऽ जाए तँ हम अप्पन जिनगीकेँ पटरीपर आनि लेब। जखने जिनगी पटरीपर आबि जाएत तखने ओ अप्पन सरपट चालि पकैड़ लेत। स्त्रीक इलाज, परिवार आ कारोबार तीनू काज एहेन अछि जे एक्कोटा

छोड़ैबला नइए।"

टमटमबलाक बोलीमे मदैतिक आश रामाकान्तकेँ बुझि पड़लैन। टमटमबलाकेँ आशान्वित देखि मनमे खुशी एलैन। खुशी अबिते फुरलैन जे अगर पाँच दिनक बदला दस दिनक बुतात आ साए रुपैआक बदला दू साए रुपैआ जँ मदैत कऽ दिऐ तँ विरोध नै करत। संगे, जखने समस्यासँ निकलैक आशा जगि जेतै तँ काजो करैक साहस बढ़ि जेतइ। मुदा असगरे तँ नइ अछि, दूटा टमटमबला अछि। की दुनू गोरेकेँ मदैत करब आकि एकरे टा? ई प्रश्न रामाकान्तक मनमे ठाढ़ भऽ गेलैन। सोचए लगला, मुसीबत तँ ऐ वेचारेकेँ अछि। दोसर टमटमबाला सँ तँ गप नै भेल जे बुझितिऐ। मुदा एकर तँ बुझलिऐ। तँए एकरा मदैत करबै। दोसर टमटमबलासँ पुछि लेबै जे तोहर भाड़ा केते भेलह। जेते कहत तेते दऽ देबइ। मुदा सोझमे एकठाम कम-बेसी देनाइयो तँ उचित नहि, तँए पहिने ओकरा भाड़ा दऽ विदा कऽ देबै। पछाइत एकरा विदा करब। गरीबक हृदयकेँ जुड़ाएब बड़ पैघ काज छी। सोचैत-विचारैत रामाकान्त घरपर पहुँचला।

घरमे ताला लगा हीरानन्द पैखाना गेल रहैथ। दुनू टमटम पहुँच दलानक आगूमे ठाढ़ भेल। टमटमपर सँ सभकियो उतरला। टमटमोबला आ जुगेसरो, टमटमपरसँ सभ सामानकेँ उताइर दरबज्जाक ओसारपर रखलक। ताबे हीरानन्दो बाध दिससँ आबि पोखरिक पुबरिया महार लग पहुँचला। महार लग अबिते दरबज्जापर टमटम लागल देखलैन। टमटम देखि बुझि पड़लैन जे रामाकान्त बाबू आबि गेला।

हीरानन्द हाँइ-हाँइ कऽ दतमैन-कुरुर कऽ लफरल दरबज्जापर आबि घरक ताला खोलि देलखिन। हाथे-पाथे तीनू गोरे सभ सामानकेँ कोठरीमे रखलैन। दोसर टमटमबलाकेँ भाड़ा पुछि रामाकान्त दऽ देलखिन आ पहिल टमटमबलाकेँ आँखिक इशारासँ थम्हैले कहलखिन। दोसर टमटमबला चलि गेल। पहिल टमटमबलाकेँ दू साए रुपैआ आ दस दिनक बुतात–दू पसेरी बदाम आ तीन पसेरी चाउर–दऽ कऽ विदा केलैन। टमटमपर चढ़ि मने-मन गदगद होइत टमटमबला गीत गुनगुनाइत विदा भेल- 'सबहक सुधि अहाँ लइ छी यौ बाबा, हमरा किए बिसरल छी यौ...।"

पसेनासँ गन्ध करैत कुरता-गंजी निकालि रामाकान्त चौकीपर

रखलैन। भकुआएल मन रहैन। मुदा नीकेना घर पहुँचलासँ मनमे बेहद खुशी होइत रहैन। हीरानन्दक किछु पुछैसँ पहिनहि रामाकान्त बजला-

"गाम-घरक हाल-चाल बढ़ियाँ अछि किने?"

हीरानन्द 'हँ' कहैत पुछलखिन-

"यात्रा बढ़ियाँ रहल किने?"

"ऐंह, यात्राक सम्बन्धमे की कहू! अखन तँ मनो भकुआएल अछि आ तीन दिनसँ नहेबो नइ केलौं हेन तँए पहिने नहाइले जाए दिअ, निचेनसँ यात्राक सम्बन्धमे कहब।"

जुगेसरकेँ जे विदाइ मद्रासमे भेटल छेलै ओ चारि टा कार्टुनमे छल। ओ चारू कार्टुन जुगेसर फुटा कऽ ओसारेपर रखलक। जुगेसरक घरवाली आ धिया-पुता सेहो पहुँचल। चारू कार्टुन जुगेसर अप्पन घरवालीकेँ देखबैत बाजल-

"ई अप्पन छी, अँगना नेने चलू।"

'अप्पन' सुनि घरोवाली आ धियो-पुतो चपचपा उठल। चारू कार्टुन लऽ आँगन विदा भेल।

रामाकान्तक अबैक समाचार गाममे बिहाड़ि जकाँ पसरल। धिया-पुतासँ लऽ कऽ चेतन धरि देखैले आबए लगला। दरबज्जापर लोकक भीड़ बढ़ए लगल। रामाकान्त नहाएब छोड़ि जुगेसरकेँ कहलखिन-

"जुगे, सनेसबला कार्टुन एतै नेने आबह।"

डॉक्टर महेन्द्र सनेसमे टुकड़ी बनौल दू कार्टुन नारियल देने रहैन। जुगेसर कोठरी जा एकटा कार्टुन उठौने आएल। जहियासँ रामाकान्त ब्रह्मचारीजीक आश्रम गेला तहियासँ हिनकर विचारे बदैल गेलैन। अप्पन सुख-दुखकेँ ओतेक महत्व नै दिअ लगला जेते दोसराक।

दरबज्जापर लोक थहा-थही करए लगल। जेना लोकक हृदय रामाकान्तक हृदयमे मिझर हुअ लगलैन आ रामाकान्तक हृदय लोकमे, तहिना वातावरण बनि गेल। रामाकान्त नहाएब, दतमैन करब आ आँखिपर लटकल ओंघी, सभटाकेँ बिसैर जुगेसरकेँ कहलैन-

"चेतनकेँ दू-दूटा टुकड़ी आ बाल-बोधकेँ एक-एक टा टुकड़ी बाँटि

दहक। दरबज्जापर आएल एक्को गोरे ई नै कहए जे हमरा नै भेल।"

कार्टुन खोलि जुगेसर नारियलक टुकड़ी बिलहए लगल। हाथमे पड़िते, की चेतन की धिया-पुता, नारियल खाए लगल। एक कार्टुन सठि गेल, मुदा देखिनहार, जिज्ञासा केनिहार नै ओरेला। दोसरो कार्टुन जुगेसर खोललक। दोसर कार्टुन सठैत-सठैत लोको पतरा गेल।

लोकक भीड़ हटल देखि रामाकान्त नमहर साँस छोड़ैत जुगेसरकेँ कहलखिन-

"आब तोहूँ जा, नहा-सोनाकऽ खा-पीअ गऽ। हमहूँ नहाइले जाइ छी।"

आँगन आबि जुगेसर अप्पन चारू कार्टुन खोललक। मद्रासमे कार्टुनक भितरका सामान नै देखने छल तँए देखैक उत्सुकता रहइ। एक-एक टा कार्टुन चारू गोरे–डॉ. महेन्द्र, डॉ. रवीन्द्र, डॉ. जमुना आ डॉ. सुजाता–देने रहथिन।

डॉ. महेन्द्रक देल पहिल कार्टुनमे, एक जोड़ धोती, एकटा कुरता-कपड़ाक पीस, एकटा आङीक पीस, एकटा चद्दैर, एकटा गमछा आ एक जोड़ जुत्ता जुगेसर-ले आ एक जोड़ साड़ी, जोड़ भरि साया-ब्लौजक कपड़ा, एक जोड़ चप्पल घरवाली-ले। दुनू बच्चा ले पैन्ट-शर्टक संग तीन साए रुपैआ रहइ। अहिना तीनू कार्टुनमे सभकियो, सभकिछु देने रहथिन।

चारू कार्टुनक सामान देखि जुगेसरक परिवारमे जेना खुशीक बिहाड़ि उठि गेल। दुनू बच्चा अप्पन कपड़ा देखि खुशीसँ एक-एक टा पहिर आँगनमे नाचए लगल। कपड़ाक एहेन सुख जिनगीमे पहिल दिन भेटल छेलइ। दुनू परानी जुगेसरकेँ सेहो खुशीसँ मन गदगद भऽ गेल। जुगेसर हिसाब जोड़ए लगल- जँ ओरियाकऽ पहिरब तँ दुनू गोरेकेँ जिनगी भरि पार लगि जाएत। एहेन चिक्कन कपड़ा आइ धरि नसीब नै भेल छेलए...।

एक आँखि जुगेसर सामानपर देने आ दोसर आँखि घरवालीक आँखिपर देलक। दुनू गोरेक आँखिमे जेना जिनगीक वसन्त आबए लगल। अप्पन बिआह मोन पड़लै। जुगेसरकेँ होइ जे घरवालीकेँ दुनू बाँहिसँ पजियाकऽ छातीमे लगा ली आ घरवालीकेँ होइ जे घरबलाक कोरामे बैस एकाकार भऽ जाइ। मुदा तीन दिनक गाड़ीक झमारसँ जुगेसरक देहो

भँसियाइत आ ओंघी सेहो आँखिक पिपनीकेँ झलफलबैत रहइ। जुगेसर घरवालीकेँ कहलक-

"पहिरैले एक-एक जोड़ कपड़ो आ जुत्तो बाहर रखू आ बाँकीकेँ खूब सेरियाकऽ रखि लिअ।"

बेर टगि गेल। जुगेसर नवका धोती आ गंजी पहिर कान्हपर गमछा नेने रामाकान्त ऐठाम पहुँचल। दरबज्जापर रामाकान्त सुतले छला। आँगन जा श्यामाकेँ देखए चाहलक जे काकीओ सुतले ने तँ छैथ। मुदा ओ सुति उठिकऽ मुँह-हाथ धोइ छेली। जुगेसरकेँ देखि, श्यामा एक टकसँ निहारिकऽ मुस्कियाइत पुछलखिन- "आइ तँ अहाँ दुरगमनियाँ वर जकाँ लगै छी जुगेसर?"

हँसैत जुगेसर बाजल- "काकी, महिन्दर भाइक देलहा छी।"

महेन्द्रक नाओं सुनि श्यामा बजली- "भगवान भोग दैथ! और की सभ बच्चा देलैन?"

जुगेसर बाजल- "अहाँसँ लाथ कोन काकी, तेतेक कपड़ा-लत्ता आ जुत्ता-चप्पल चारू गोरे देलैन जे जिनगी भरि केतबो धाँगि कऽ पहिरब तैयो ने सठत।"

बेटा-पुतोहुक बड़ाइ सुनि श्यामाक हृदय उमैड़ गेलैन, अह्लादित भऽ बजली-

"पाइयो-कौड़ी देलैन आकि कपड़े-लत्ता टा?"

"रुपैआ तँ गनलिऐ नहि, मुदा बुझि पड़ल जे दस-पनरह टा नमरी अछि।"

"वाह! मालिक देखलैन की नहि?"

"ओ तँ सुतले छैथ। हुनके देखबैले पहिर कऽ एलौं हेन।"

"हम ताबे चाह बनबै छी। दरबज्जापर जा कऽ उठा दियौन।"

"बड़बढ़ियाँ।"

'बड़बढ़ियाँ' कहि जुगेसर दरबज्जापर आबि रामाकान्तकेँ उठबए लगल। आँखि खुलिते रामाकान्त देबालक घड़ीपर नजैर देलैन। चारि बजैत। पड़ले-पड़ल सुतैक हिसाब जोड़लैन। हिसाब जोड़ि घुनघुना कऽ बजला-

“एहेन नीन तँ जुआनियोँमे ने आएल छल!”

ओछाइनपर सँ उठि जुगेसरकेँ कहलखिन- “कनी चाह बनौने आबह। अखनो बुझि पड़ैए जे नीन आँखिए-पर लटकल अछि। ताबे हमहूँ कुरुर कऽ लइ छी।”

बिछानपर सँ उठि रामाकान्त पहिने लघी करए गेला। लघी करैत काल बुझि पड़ैन जे चाहोसँ तप्पत लघी भऽ रहल अछि। तेतबे नहि, जेते लघी चारि बेरमे करै छी, तोहूसँ बेसी अखन भऽ रहल अछि...।

लघी कऽ कलपर आबि रामाकान्त आँखि-कान पोछि, कुरुर कऽ दमसा कऽ भरि पेट पानि पीलैन। पानि पीविते बुझि पड़लैन जे आधा नीन पड़ा गेल।

जुगेसर चाह अनलक। रामाकान्त चाह पीबए लगला। तैबीच हीरानन्दो स्कूलसँ आबि गेला। शशि शेखर सेहो एला। हीरानन्द जुगेसरकेँ पुछलखिन- “जात्रा बढ़ियाँ रहल किने?”

हँसैत जुगेसर बाजल- “जाइ काल गाड़ीमे बड़ भीड़ भेल। जाबे गाड़ीमे रही ताबे ने एक्को बेर झाड़ा भेल आ ने सुतलौं। किएक तँ रिजफ सीट रहबे ने करए। जइ डिब्बामे बैसल रही ओइमे लोकक करमान लगल छल। तैपर सँ जइ टीशनपर गाड़ी रूकै सभ टीशनमे एगो-दूगो लोक उतरै आ दस-बीस टा चढ़ि जाइ। मुदा भगवानक दयासँ कहुना-कहुना पहुँच गेलौं। जखन मद्रास टीशनपर उतरलौं तँ दोसरे रंगक लोक देखिऐ। अपनासभ दिस जेना सभ रंगक लोक मिलल-जुलल अछि, से ओनए नहि अछि। बेसी लोक कारीए रहइ। गोटे-गोटे लोक उज्जर बुझि पड़इ। जखन डेरापर पहुँचलौं तँ मकान देखि बिसबासे ने हुअए जे अप्पन छिऐन। बड़का भारी मकान, कोठरीक कमी नहि।”

“भरि मन देखलौं किने?”

“ऐंह, की कहू मास्टर साहैब, महिन्दर भाय अपने मोटरसँ भरि-भरि दिन बुलबैत छला। मोटरो तेहेन जे जहाँ बैसी आ खुगै आकि ओंघी लगि जाए। केतए की देखलौं से मनो ने अछि।”

मद्राससँ रामाकान्तक एनाइक समाचार सुनि महेन्द्रक स्कूलक संगी सुबुध सेहो एला। सुबुध हाइ स्कूलमे शिक्षक छैथ। महेन्द्र आ सुबुध हाइ

स्कूल धरि, संगे-संग पढ़ने। महेन्द्र साइंसक विद्यार्थी आ सुबुध आर्टक। बी.ए. पास केलापर सुबुध शिक्षक भेला आ महेन्द्र डॉक्टरी पढ़ि डॉक्टर बनला। महेन्द्रक कुशल-क्षेम बुझलाक बाद सुबुध रामाकान्तकेँ पुछलखिन-

"अपना ऐठामक लोक आ मद्रासक लोकमे की अन्तर देखलिऐ?"

दुनू ठामक लोकक तुलना करैत रामाकान्त बजला- "ओत्तुका आ अपना ऐठामक लोकमे अकास-पतालक अन्तर अछि। ओइठामक लोक अपना ऐठामक लोकसँ अधिक मेहनती आ इमानदार अछि।"

बिच्चेमे शशि शेखर प्रश्न केलकैन- "की मेहनती?"

"मनुक्खक तुलना करैसँ पहिने अप्पन इलाका आ मद्रासक माटि-पानिक तुलना सुनि लिअ। जेहेन सुन्नर माटि अपना सभक अछि, देखिते छिऐ जे केते मुलाइम आ उपजाउ अछि, पानियोँ केते बढ़ियाँ अछि। एहेन मद्रासमे नइ छइ। ओतए अपनासभ सँ बेसी गरमियो पड़ै छइ। ..जहाँ धरि लोकक सवाल अछि। अपना ऐठामक लोक अधिक आलसी अछि, समयकेँ कोनो महत्व नै दइए वा ई कहियौ जे ऐठामक लोक समैयक महत्व बुझबे ने करैए। कियो बुझबो करैए तँ ओ परजीवी बनि जिनगी बितबए चाहैए। हँ! किछु गोरे एहेन जरूर छैथ जे मर्यादित मनुक्ख बनि जिनगी जीब रहल छैथ। जे पूजनीय छैथ, मुदा सामाजिक बेवस्था सदिखन हुनको झकझोरिते रहै छैन। ओइठामक लोक समैयक संग चलैए, जइसँ कमजोर इलाका रहितो नीक-नहाँति जिनगी बितबैए। ओइठामक लोक भीखकेँ अधला बुझि भीख नइ मांगैए मुदा अपना ऐठाम लोक उपार्जनक स्रोत बुझैए।"

बिच्चेमे सुबुध पुछलकैन- "पढ़ाइ-लिखाइ केहेन छइ?"

"स्कूल, कौलेज, युनिवर्सिटी सभ देखलौं। ओतए लड़का-लड़कीक स्कूल शुरूहेसँ अलग-अलग अछि। मुदा तैयो दुनूकेँ संगे-संग पढ़ैत सेहो देखलौं। अपना ऐठामसँ बेसी लड़की ओइठाम पढ़ैए। अपना ऐठाम लड़के पछुआएल अछि तँ लड़कीक कोन हिसाब। गाड़ी, ट्रेन, बसमे सेहो अलग-अलग बेवस्था छइ। जखन कि अपना ऐठाम सभ संगे-संग चलैए।"

सुबुध- "खाइ-पीबैक केहेन बेवस्था छइ?"

"गरीब लोकक खान-पान दब होइते छइ। मुदा एक हिसाबसँ देखल जाए तँ अपना सभक नीक अछि। कपड़ो-लत्ता पहिरब अपना ऐठाम नीक

अछि।"

बिच्चेमे आँखिक इशारासँ रामाकान्त जुगेसरकेँ एक बोतल ब्राण्डी अनैले कहि देलखिन। जुगेसर उठिकऽ भीतर गेल आ एकटा बोतल नेने आएल। दरबज्जापर आबि चाहेक गिलासकेँ धोइ, सभमे भरि-भरि कऽ सभक आगूमे देलकैन। आगूमे पड़िते रामाकान्त गट दऽ पीब गेला। मुदा हीरानन्दो, शशि शेखरो आ सुबुधोकेँ पीबैत डर होइ छेलैन। कहियो पीने नै छला।

दोहरी गिलास पीबैत रामाकान्त सभकेँ कहलखिन- "पीबै जाइ जाउ, फलक रस छिऐ। कोनो अपकार नै करत।"

मुदा तैयो सभ-सबहक मुँह तकैत रहला। दोहरा कऽ फेर रामाकान्त सभकेँ कहलखिन। मने-मन सुबुध सोचलैन जे कोनो जहर-माहूर थोड़े छिऐ जे मरि जाएब। अगर मरबो करब तँ पहिने कक्के ने मरता। बुझल जेतइ। आगूमे राखल गिलास उठा आस्तेसँ दू घोट पीब, गिलास रखि हीरानन्दकेँ कहलखिन- "पीबू, पीबू मास्टर साहैब। सुआद तँ कोनो अधला नहियेँ बुझि पड़ैए।"

सुबुधक बात सुनि हीरानन्दो आ शशि शेखरो गिलास उठाकऽ पीब गेला। ताबे तेसरो गिलास रामाकान्त चढ़ा लेलैन। तेसर गिलास पीविते आँखिमे लाली आबए लगलैन, मन हल्लुक हुअ लगलैन आ बजैक ताउ सेहो चढ़ए लगलैन।

जहिना आगिपर चढ़ल पानिक बर्तनमे ताउ लगलापर निच्चाँक पानि गर्म भऽ ऊपर उठैत रहैए तहिना रामाकान्तकेँ हुअ लगलैन। धीरे-धीरे रंग चढ़ैत-चढ़ैत नीक जकाँ चढ़ि गेलैन। हीरानन्द, सुबुध आ शशि शेखरक आँखि सेहो तेज हुअ लगलैन। तेज होइत नजैरसँ सुबुध पुछलखिन-

"काका, महेन्द्र भाय मस्तीमे रहै छैथ किने?"

बजैक वेग रामाकान्तकेँ रहबे करैन तैपर सँ महेन्द्रक मस्ती सुनि आरो बढ़ि गेलैन। बाजए लगला-

"मेहनत आ कमाइ देखि क्षुब्ध भऽ गेलौं। अप्पन बड़का मकान, चारि टा गाड़ी, बाजारमे अइल-फइल बास। तैपर सँ बैंकोमे ढेरी रुपैआ जमा केने अछि। ऐठामक सम्पैतिक ओकरा कोनो जरूरत नइ छइ! किएक रहतै?

जेकरा अपने कमाइ अम्बोह छै...।"

बिच्चेमे सुबुध टोकलखिन- "तखन ऐठामक खेत-पथार गरीब-गुरबाकेँ दऽ दियौ?"

बिना किछु आगू-पाछू सोचने रामाकान्त बजला- "बड़ सुन्नर बात अहाँ कहलौं। अनेरे हम एते खेत-पथार रखने छी। यएह खेत जे गरीबक हाथमे जेतै तँ उपजबो बेसी करत आ सभक जिनगियो सुधैर जाएत।"

जहिना धधकल आगिमे हवा सहायक होइत अछि तहिना रामाकान्तोकेँ भेलैन। एक तँ ब्राण्डीक निशाँ दोसर, परिवारमे चारि-चारि टा डॉक्टरक कमाइ, तैपर सँ अपार सम्पैत देखि मन उधियाइते रहैन। समाजक सिनेह सेहो बढ़िए गेल छेलैन। तेतबे नहि, अद्वैत दर्शन हृदयकेँ पैघ सेहो बना देनहि रहैन। ..हँसैत रामाकान्त सभक बीच, बजला-

"अखन तक हम गुल्लैरिक किड़ा बनल छेलौं मुदा आब दुनियाकेँ देखलिऐ। दू साए बीघा जमीन अछि। अनेरे किए हम एते रखने छी। एकटा जमीन्दारक खेतसँ सैकड़ो गरीब परिवार हँसी-खुशीसँ गुजर कऽ सकैए। जखन कि ओतेक सम्पैतिक सुख एकटा परिवार करए, ई केते भारी अनुचित अछि! सभ मनुक्ख, मनुक्ख छी। सभकेँ सुख-दुखक अनुभव होइ छइ। कियो अन्न बेतरे काहि कटैए आ केकरो अन्न सड़ै छइ। ई तँ घोर अन्याय ने भेल.!"

कहि जुगेसरकेँ कहलखिन-

"जुगे, इलायची देल पान लगाबह?"

जुगेसर पान लगबए गेल। तैबीच बौएलाल सेहो आएल। रामाकान्तकेँ गोड़ लागि कातमे बैसल। बौएलालकेँ बैसते रामाकान्त हीरानन्दकेँ कहलखिन-

"मास्टर साहैब, महेन्द्र कहने छल जे एकटा लड़का आ एकटा लड़की, दू गोरेकेँ मद्रास पठा दिअ। ओइ दुनू गोरेकेँ अपना संग रखि छोट-छोट बीमारीक इलाज केनाइ सिखा देबइ। गाममे इलाजक बड़ असुविधा अछि। तेतबे नहि, गरीबीक चलैत लोक रोग-वियाधिसँ मरि जाइए मुदा डाक्टरक अभावमे इलाज नइ करा पबैए। तँए एकटा छोट-छीन अस्पताल सेहो बना देब, जइमे लोकक मुफ्त इलाज हेतइ। तइले जेते दवाइ-दारूमे

खरच हएत से हम देब। हमसभ चारि गोरे छी। बेरा-बेरी चारू गोरे सालमे एक-एक मास गाममे रहब आ लोकक इलाज करब। तैबीच छोट-छोट बीमारी-ले सेहो दू आदमीकेँ तैयार कऽ देबाक अछि। जँ कहीं बीचमे नमहर बीमारी केकरो हेतै, तेकरो इलाजक खरच देबइ...। तँए दू आदमीकेँ मद्रास पठा दियौ, मासुल हम देबइ!"

रामाकान्तक बात सुनि सभकियो बौएलाल आ सुमित्राकेँ मद्रास पठबैक विचार केलैन। बौएलालकेँ हीरानन्द कहलखिन-

"बौएलाल, सभक विचार तँ तूँ सुनियेँ लेलह। काल्हि तूँ आ सुमित्रा दुनू गोरे मद्रास जाइले विदा हुअ।" ❑

नअम पड़ाव

कछ-मछ करैत हीरानन्द भरि राति जगले रहि गेला। कखनो मनमे होनि जे रामाकान्तक देल जमीन समाजक बीच केना बाँटल जाए? लगले फेर हुनक उदार विचार, माने रामाकान्तक तियाग-भाव सेहो हिनका माथमे नाचए लगैन। कखनो-कखनो शंका सेहो होनि जे निशाँक झोंकमे बजला मुदा निशाँ टुटलापर जँ कहीं नठि जाथि? बात बदलब धनीक लोकक जन्मजात आदत छी। मुदा हम तँ शिक्षक छी, शिक्षकक प्रति आदर आ निष्ठा सभदिनसँ समाजमे रहलै आ रहत। ऐ विचारक बीच जेते गोरे छेलौं ओइमे हम आ सुबुध शिक्षक छी। आन कियो तँ कम्मो-सम्म, मुदा हम दुनू गोरे तँ बेसी घिनाएब! कोन मुँह लऽ समाजक बीच रहब..?

विचित्र स्थितिमे हीरानन्द पड़ल रहैथ। फेर अपनेपर शंका भेलैन जे हमहूँ शराबेक निशाँमे ने तँ वौआइ छी? ई बात मनमे अबिते हीरानन्द उठिकऽ बाहर निकैल चारूभर ताकए लगला। अन्हार गुप-गुप, सन-सन करैत राति, हाथ-हाथ नइ सुझैत। मुदा अकास साफ। सिंगहारक फूल जकाँ तरेगन चकमक करैत। हवा तँ नहि बहैत रहै मुदा राति ठण्ढाएल रहए। पुनः बाहरसँ कोठरी आबि हीरानन्द अप्पन बिछानपर पड़ि रहला। मुदा नीनक केतौ पता नहि। जमीनक प्रसंग हुनका मनसँ कखनो हटबे ने करैत रहैन। पुनः लघुशंका जगलैन तँए उठिकऽ कोठरीसँ निकैल कऽ बाहर एला। भरि-पोख पेशाब भेलैन। पेशाब होइते मन हल्लुक भेलैन। मन हल्लुक होइते ओछाइनपर आबि फेर पड़ि रहला। ओछाइनपर पड़िते नीन आबि गेलैन।

सुबुध सेहो भरि राति जगले बितौलैन। मुदा हीरानन्द जकाँ ओ ओझरीमे ओझराएल नै छला। समाजशास्त्रक शिक्षक होइक नाते स्पष्ट सोच आ समाज चलैक स्पष्ट दिशा छेलैन। तँए, सुबुधक मनमे दृढ़ संकल्प आ सक्कत विचार भरल रहैन। ओना, हुनका मनमे बेर-बेर ईहो उठैत रहैन जे जहिना आर्थिक दृष्टिसँ टुटल समाजकेँ सहयोग भेटने मजगूत बल प्राप्त

हएत तहिना तँ ओइ बलकेँ चलबैक मजगूत रास्तो भेटक चाही? जे रामाकान्त काका बुते नै हेतैन। इमानदारी आ उदार सोभावक चलैत ओ अप्पन सम्पैतिक तियाग करता। मुदा ओ सम्पैत आगू-मुहेँ बढ़त केना..? जहिना मनुक्खक परिवार दोबर, तेबर आकि चारिबर रफ्तारसँ आगू-मुहेँ बढ़ैए तहिना तँ सम्पैतियोक गति हेबा चाहिऐ। मुदा सम्पैतमे ओ गति तखने औत जखन ओइमे श्रमक इंजिन लगौल जाएत। ओना, श्रमक इंजिन लगौनिहार श्रमिक सेहो पर्याप्त अछि मुदा ओकरा श्रमकेँ कोन रूपमे बढ़ौल जाए? ऐ लेल एकटा रास्ता ई अछि जे सोझा-सोझी ओकरा नव कार्यक ढाँचामे ढालल जाए, नव काज देल जाए। मुदा से सम्भव नइ अछि। किएक तँ ओइले नव औजार आ नव तरीका सेहो चाही जे बिना नव ज्ञाने सम्भव नइ अछि। आ दोसर बात ईहो जे, जे लूरि आ औजार अछि, ओकरे धारदार बना आगू बढ़ौल जाए। जे सम्भवो अछि आ उपयुक्तो होएत। मुदा अहु-ले तँ पथ-प्रदर्शक चाही। जेकर अभाव अछि। हमहूँ तँ नोकरीए करै छी। सात दिनमे एक दिन रबि-के गाममे रहै छी, बाँकी छह दिन गामसँ बाहरे रहै छी। तइसँ काज केना चलि सकैए? किएक तँ समाजो नमहर अछि आ समस्यो ढेर अछि, तैसंग हर समस्याक समाधानक रास्तो फराक-फराक अछिए। जेना बुद्धदेव कहने छैथ जे दुश्मनकेँ सूइयाक नोको बरबैर जँ सुराक भेट जाएत तँ ओ ओही-देने हाथी सन विशाल जानवरकेँ प्रवेश करबैक जिद्द पकड़त। समाजक समस्यो तँ ओहने अछि..!

अनासुरती सुबुधक मनमे उपकलैन जे जहिना रामाकान्त काका अप्पन सभ सम्पैत समाजकेँ दइले तैयार छैथ, तहिना हमहूँ नोकरी छोड़ि अप्पन ज्ञान समाजकेँ देब। सभकिछु बुझितो सड़ल-गलल रास्ता अप्पन आरामक दुआरे धेने चलि रहल छी। सात बीघा जमीन अछि, एकटा पोखैर अछि, दस कट्ठा गाछी-कलम आ खढ़होरि सेहो अछि। जइसँ पिताजी नीक-नहाँति गुजरो केलैन आ हमरो पढ़ौलैन। मुदा हम तँ नोकरियो करै छी, खेतो-पथार ओहिना अछि मुदा आगू-मुहेँ केतेक बढ़लौं? हँ, एते जरूर भेल अछि जे घरोवालीकेँ आ बेदरो-बुदरीकेँ धनिकक मन्दिरक मुरती जकाँ नीक-नीक परसाद, नीक-नीक सजाबटसँ सजाकऽ काहिल बनौने छी! की हम ई नै देखै छी जे झक-झक करैत छातीक हाड़बला मनुक्ख भरि-भरि दिन रिक्सा घिचैए, साठि बर्खक महिला चिमनीमे पजेबा उघैए, मरैबला पुरुख बरदक

संग हर ठेलैए, अन्नक बोझ उघैए..! की ओकर देह लोहाक बनल छै आ हमरा सभक देह कोढ़िलाक बनल अछि? ई सभ सभटा धन आ बुइधिक करामात छी। आइ धरिक समाज आ समाजक निआमक लोकैन एकरे पोसक रहला। जेकरा सुधारब अनिवार्य अछि, नहि तँ मनुक्ख आ जानवरमे की अन्तर रहतै? जइ समाजमे मनुक्ख जानवरक जिनगी जीबए ओइ समाजक प्रबुद्ध लोककेँ चुरुक भरि पानिमे डुमिकऽ नै मरि जेबाक चाहिऐन..?

एते बात मनमे अबिते सुबुध तँइ केलैन जे, जे सभसँ पहिने काल्हि स्कूलमे तियाग-पत्र देब। आइ धरि जे जिनगी जीलौं, जीलौं। मुदा काल्हिसँ नव जिनगीक सूत्रपात करब। ..अही संकल्प-विकल्पक बीच सुबुधक मन घुरियाइत रहलैन।

भोर होइते सुबुध ओछाइनपर सँ उठि मैदान दिस विदा भेला। हाथमे लोटा रहैन मुदा मन ओही विचारमे डुमल छेलैन। थोड़ेक दूर गेलापर गाममे गल्ल-गुल होइत सुनलैन। रस्तेपर ठाढ़ भऽ अकानए लगला जे कथीक गल्ल-गुल भऽ रहल अछि। सोझमे कियो नजैर नहि पड़ैन जे पुछियो लइतैथ। मने-मन अनुमान करए लगला जे भरिसक रातिमे केतौ कोनो घटना भेल अछि। या तँ केकरो साँप-ताँप काटि लेलकै वा केतौ चोरि भऽ गेल। मुदा से सभ नहि छेलइ। साँझमे जे विचार रामाकान्त व्यक्त केलैन ओ राता-राती बिहाड़ि जकाँ सगरे गाममे पसैर गेल। सुबुध रस्तेसँ घुमि कड़चीक दतमैन तोड़ि दाँत मजैत घरपर एला। घरपर अबिते देखलैन जे सुकना बैसल अछि। मुदा सुकनाक नजैर सुबुधपर नै पड़ल, किएक तँ ओ अँगनाक दुआरि दिस तकैत रहए। सुबुध सुकनाकेँ पुछलखिन- “भोरे-भोर केम्हर, सुकन?”

सुबुधक बात सुनि अकचकाइत सुकन चौकीपर सँ उठि, दुनू हाथ जोड़ि बाजल- “मालिक, अहाँ तँ जनिते छी जे कोनो काज-उदममे हम सबतूर मिलि सम्हारि दइ छी। गरीबोपर नजैर रखबै।”

सुबुधकेँ सुकनक बातक कोनो अर्थे ने लगलैन। पुछलखिन-

“सुकन भाय, तोहर बात हम नइ बुझलियह, की कहै छह?”

“लोकसभ कहलक हेन जे रामाकान्त काका अप्पन सभ खेत गरीब-गुरबाकेँ देथिन जे अहीं बँटबै...।”

सुकनक बात सुनि सुबुध मने-मन सोचए लगला जे जमीन-जयदादक सवाल अछि। धड़फड़ा कऽ केना किछु बाजब। जँ आम लोकक बीच विचार कएल जाएत तँ हो-हल्ला हेतइ। हो-हल्ला भेने काजो बिगैड़ सकैए। तँए असथिरसँ विचार करैक जरूरत अछि। मुदा अखन जँ सुकनकेँ ई बात कहबै तँ दुख हेतइ। तँए आशाक बात कहक चाही। बजला-

"सुकन भाय, जखन गरीबक बीच खेतक बँटबारा हएत, तोहूँ गरीबे छह, तखन तोरा किएक ने हेतह। अखन जाह।"

सुकन विदा भेल। कलक आगूमे ठाढ़ भेल सुबुधक मनमे उठलैन, अजीव स्थिति भऽ गेल। एकदिस गरीबक सवाल अछि। जँ कनियोँ चूक हएत तँ जिनगी भरि बदनामीक मोटरी माथपर चढ़ि जाएत। तँए इमानदारीक जरूरत अछि। मुदा इमानदारी दिस तकै छी तँ अपनोमे बेइमानी घूसल अछि। परिवारोमे तहिना देखै छी आ समाजमे तँ अछिए। गरीबोमे देखै छी जे, जे मेहनती अछि ओ बहुत किछु कमाकऽ बनाइयो नेने अछि। जेना रहैक घर, पानि पीबैक कल आ जीबैले बटाइ खेतीक संग पोसियाँ मालो-जाल खुट्टापर रखने अछि। जखन कि जे आलसी अछि ओकरा सभ कथुक अभावे छइ। तेतबे नहि, जँ हम इमानदारियोसँ विचार राखए चाहब तैयो उलझन हएत। हमहींटा तँ नइ छी, आरो लोक रहता। सभक नेत सभक प्रति एक्के रंग रहतैन, सेहो बात नइ अछि। जँ कियो मुँह देखि मुंगबा बाँटए चाहता आ हम हुनका मनाही करबैन तँ ओ हमरे बात मानि लेता सेहो सम्भव नहियेँ अछि। जँ रामाकान्त काका केकरो बेसी दिअ चाहथिन तँ की कहबैन, सम्पैत तँ हुनके छिऐन...।

विचारक जंगलमे सुबुध वौआए लगला। दतमैनिक घुस्सा कखनो चलैन आ कखनो रूकि जाइन। एक तँ भरि रातिक जगरना, तैपर सँ अमरलत्ती जकाँ ओझरीकेँ सोझराएब सुबुधकेँ असान नइ बुझि पड़ैन, किएक तँ कनियोँ किम्हरो जोर पड़त तँ टन-दे टुटि जाएत। तँए सुबुधक मन विचित्र स्थितिमे पड़ल रहैन। समाजक मूल रोगकेँ जड़िसँ नहि पकड़ल जाएत तँ सभ गूड़ गोबर भऽ जाएत। तैबीच मुनमा डाबामे दूध नेने सुबुधक आँगन जा डाबा रखि, लगमे आबि दुनू हाथ जोड़ि कहलकैन- "भाय, अबलोपर दया करबै।"

एक तँ सुबुधक मन अपने घोर-घोर भेल रहैन, तैपर सँ लोकक पैरबी आरो घोर कऽ देलकैन। मन मसोसिकऽ बजला-

“अखन जाह। जखन जमीनक बँटबारा हुअ लगतै तँ तोरो बजा लेबह।”

दतमैन करि मुँह-हाथ धोइकऽ सुबुध आँगन जा पत्नीकेँ पुछलखिन-

“डाबामे मुनमा कथी नेने आएल छल?”

“दूध।”

“दाम देलिऐ।”

“नहि।”

“किएक?”

“हमरा भेल जे अहीं पठेलौं।”

पत्नीक जवाब सुनि सुबुधक मनमे आगि लगि गेलैन। खिसियाइत बजला-

“झब-दे चाह बनाउ। स्कूल जाएब।”

पत्नी अकचकाइत बजली-

“अखने किए स्कूल जाएब? आन दिन खा कऽ जाइ छेलौं आ आइ भोरे जाएब?”

“रौतुका खेलहा ओहिना कण्ठ लग अछि, अखन तँए नै खाएब।”

कहि सुबुध लुंगी बदैल धोती पहिरए लगला आकि पत्नी चाह नेने एलखिन। कुरता पहिर चाह पीब विदा भेला। ❑

दसम पड़ाव

जिनगी भरिमे रामाकान्तकेँ एहेन नीन कहियो नइ भेल छेलैन जेहेन आइ रातिमे भेलैन। समैयक अन्दाजसँ जुगेसर आबि खिड़की देने हुलकी देलक तँ देखलक जे रामाकान्त काका ठर्र पाड़ि रहला अछि।

एतेक बेर तक रामाकान्तकेँ सूतल देखि जुगेसर जोरसँ केबाड़ ढकढकौलक। केबाड़क आवाज सुनि रामाकान्त आँखि मिड़ैत उठला। जुगेसर रामाकान्तकेँ उठा चाह आनए आँगन गेल। रामाकान्तो उठिकऽ कलपर जा कुरुर केलैन। ताबे जुगेसरो चाह नेने दरबज्जापर आएल।

रामाकान्त चाह पीविते रहैथ, तखने मनमे एलैन जे बाबा चाणक्य ठीके कहने छथिन जे 'धन केकरा-ले रक्खी'। हमरो तँ पितेजीक अरजल छी। जाधैर ओ जीबै छला ताधैर हमरा कोनो मतलब नइ छल। मुदा हुनका मुइने सभटा तँ हमरे भेल। दुनू बेटा तेते कमाइए जे ऐ धनक ओकरा जरूरते ने छइ। हम केते दिन जीबे करब। तहन तँ सभ धन ओहिना नष्ट भऽ जाएत। कौआ-कुकुर लूझि-लूझि खाएत। तइसँ नीक जे समाजक गरीब-गुरबाकेँ दऽ दिऐ। जहिना तिब्बतक 8म-9म शताब्दीक राजकुमार चेन्पो अप्पन सभ सम्पैत लोकक बीच बाँटि देलखिन तहिना हमहूँ बाँटि देब। ऐसँ समाजमे भाए-भैयारीक सम्बन्ध सेहो मजगूत बनत। आइ जँ व्यास बाबा जीबैत रहितैथ तँ ओ जरूर बिना कहनौं आबिकऽ आसिरवाद दइतैथ। अगर स्वर्ग जाइक रास्ता तियागो होइए तँ हमहूँ किएक ने जाएब। धन्यवाद सुबुध आ हीरानन्द मास्टर साहैबकेँ दिऐन जे हमर अज्ञानताक केबाड़ खोललैन। बेटा-पुतोहु सभ जखन सुनत तँ मने-मन खूब प्रसन्न हएत। हमर कएल धर्म की ओकरा नइ हेतइ?

चाह पीब, पान खा कऽ रामाकान्त हाथमे लोटा लेलैन आ गाछी दिस विदा भेला। कृष्णभोग आमक गाछ तर लोटा रखि, टहैल-टहैल गाछ सभकेँ निहारि-निहारि देखए लगला।

गाछक जे रूप आइ हिनका देखाए पड़ि रहल छैन, से रूप आइसँ

पहिने कहियो ने देखने छला। बुझि पड़ैन जे गाछक पत्ता-पत्ता हँसि रहल अछि, धरतीक शक्ति पाबि ऐश्वर्यवान बनल अछि आ दोसराक सेवा-ले उत्साहित अछि...।

एक टकसँ गाछक रूप देखि रामाकान्तक हृदय गदगद भऽ गेलैन। लोटा उठा पैखाना दिस बढ़ला। तैबीच जय-जयकारक आवाज सुनलैन। आवाज दूरमे रहै तँए स्पष्ट तँ नहि मुदा सुनै जरूर छला। रसे-रसे आवाज लग अबैत गेल। पैखानासँ उठि आवाजकेँ अकानए लगला। जय-जयकारक संग रामाकान्तकेँ अपनो नाओं सुनाइ छेलैन। अप्पन नाओं सुनि आरो चौकन्ना भऽ, कानक पाछूमे हाथक तरहत्थी रखि अकानए लगला। लोकक समूह जेतेक लग अबैत जाइ तेतेक आवाज स्पष्ट भेल जा रहल छल। हाँइ-हाँइ कऽ लोटा नेने पोखरिक घाटपर आबि कुरुर कऽ घर दिस विदा भेला। अप्पन नाओंक संग जय-जयकार सुनि रामाकान्तक मनमे उठलैन जे की बात छिऐ? किएक लोक जय-जयकार कऽ रहल अछि?

रामाकान्तक छातीक धुकधुकी तेज हुअ लगलैन, मनमे गुदगुदी लागए लगलैन। उत्साहसँ छाती जेना फुलल जा रहल छेलैन।

जाबे लोकक जुलुस घर लग पहुँचल, तइसँ पहिनहि दरबज्जापर आबि रामाकान्त देखए लगला। हीरानन्द आ शशि शेखर सेहो दलानक आगूमे ठाढ़ भऽ सभकिछु देखि-सुनि रहल छला। की बुढ़, की जुआन, की बच्चा, सभ एक्के सुरमे। सभ मस्त! सभ उत्साहित! सभ नचैत! सभक मुहसँ हँसी छिटकैत..!

दरबज्जाक आगूमे जुलुस आबिकऽ रूकल। जुलुसक आगूमे पाँच गोरे घोड़ाबला नाच करैत, पाँचो घोड़े जकाँ दौगैत! कखनो हीं-हीं करैत तँ कखनो पाछूसँ चौतालो फेकैत! तइ पाछू डफरा-बौसलीक धून वसन्तक बहार छिड़ियबैत, जइ लागल अनेक लोक नचबो करैत आ जय-जयकारो करैत..।

रामाकान्त सेहो अप्पन उत्साहकेँ रोकि नै सकला। दलानक ओसारसँ उतैर सोझे जुलुसमे सन्हियाकऽ नाचए लगला।

के छोट, के पैघ, के बुढ़, के जुआन, एकसंग सभकियो बाढ़िक पानि जकाँ उधियाइत..! घर-घरसँ स्त्रीगण सभ सेहो आबि चारूकात पसैर गेली।

आँगनसँ श्यामा आबि दरबज्जाक आगूमे ठाढ़ भऽ नाचो देखैथ आ रामाकान्तोपर आँखि गड़ौने छेली। रामाकान्तकेँ नचैत देखि श्यामा मने-मन सोचए लगली जे एना किए भऽ रहल अछि? लोकसभकेँ कोनो चीजक खुशी हेतै तँए नचैए, मुदा हिनका की भेटलैन जे एना बुढ़ाड़ीमे कुदै छैथ?

छोट बुधि श्यामाक, तँए बुझबे ने करैथ जे धार जखन समुद्रमे मिलए लगैए तखन एक पानि दोसर पानिक संग मिलि अहिना नचैत अछि, तहूमे तँ एकदिस नदीक गतिशील पानि तँ दोसर दिस समुद्रक असथिर पानि, जइमे सिरिफ लहैर उठैए। तँए, ई तँ सोभाविक अछिए।

अखन तकक जुलुस आ नाच गामक उत्तरबारि टोलसँ आएल अछि। मुदा आब दछिनबारि टोलसँ सेहो दोसर जुलुस, मोर-मोरनीक नाचक संग पहुँचल। दुनू नाचक बीच सौंसे गामक लोक हृदय खोलिकऽ नाचए लगला..।

कातमे ठाढ़ भेल हीरानन्द, शशि शेखरकेँ कहलखिन-

"अखन जे आनन्द अछि ओ समाजमे सभदिन केना बनल रहत?"

हीरानन्दक प्रश्नक उत्तरमे शशि शेखरकेँ किछु नै फुरलैन। मुदा प्रश्नक पाछू मन जरूर दौगलैन। ..गम्भीर प्रश्न अछि, तँए धाँइ-दे जवाब देब उचित नइ बुझि शशि शेखर चुप्पे रहला। मुदा एते बात हुनका मनमे जरूर उठलैन जे जँ सुकर्मक रास्तासँ मनुक्ख उत्साहित भऽ चलैत रहत तँ जरूर एहने आनन्द जिनगी भरि बनल रहतै। जुलुसक बीच रामाकान्त नचैत-नचैत घामे-पसीने तर-बत्तर भऽ गेला। मुदा तैयो मन नचैले उधैकिते रहैन। एकटा छौड़ा जे अखरहो देखने, ओ नचैत-नचैत लगमे आबि रामाकान्तकेँ दुनू हाथे पँजियाकऽ उठा कन्हापर लऽ नाचए लगल। रामाकान्तकेँ उठेने नचैत देखि सभकियो दुनू हाथे थोपड़ी बजबैत जय-जयकार करए लगला। कातमे ठाढ़ भेल हीरानन्दकेँ भेलैन जे कहीं रामाकान्त बाबू खसि-तसि नै पड़ैथ, तँए लफैर कऽ बीचमे जा हुनका पकैड़ कऽ निच्चाँ केलकैन।

निच्चाँ उतैरिते रामाकान्त दुनू हाथे थोपड़ी बजबैत पुन: नाचए लगला। दुनू हाथ उठाकऽ हीरानन्द सभकेँ शान्त होइले कहलखिन। हाथक इशारा देखि सभ शान्त भऽ गेल। धोतीक खूटसँ रामाकान्त पसेना पोछि कहए लगलखिन-

"अहाँ सभक बीच कहै छी जे खेत-पथार आइ धरि हम्मर छल,

अखनसँ ओ अहाँ सभक भऽ गेल।"

रामाकान्तक बात सुनि सभक मुहसँ धानक लाबा जकाँ हँसी भरभरा उठलैन। जे समाज आर्थिक विपन्नताक चलैत अखन तक मौलाएल छल तइमे खुशीक नव फुल फुलाए लगल अछि। सभकियो हँसी-चौल करैत अप्पन-अप्पन घर दिस विदा भेला।

घरसँ निकैल सुबुध सोझे अप्पन डेरापर गेला, डेरा पहुँच तियाग-पत्र लिखलैन। मेसबलाकेँ सभ हिसाब फरिछबैत स्कूल आबि प्रधानाध्यापककेँ तियाग-पत्र दैत कहलखिन-

"श्रीमान्, हम आइसँ सेवामे सहयोग नइ कऽ सकब!"

कहि सुबुध ओतएसँ विदा हुअ लगला। ऑफिससँ निकलैत देखि कुरसीसँ उठि प्रधानाध्यापक कहलखिन-

"सुबुधबाबू! कनी सुनि लिअ।"

हेडमास्टरक आग्रह सुनि सुबुध रूकिकऽ मुस्कियाइत बजला-

"की कहलौं, मास्सैब?"

हेडमास्टरक छातीक धड़कन जेना तेज भेल जाइ छेलैन तँए बोलीक गति सेहो तेज हुअ लगलैन। बजला-

"सुबुध बाबू, अहाँ जल्दीबाजीमे निर्णय कऽ लेलौं। अखनो कहब, आवेदन वापस लऽ लिअ।"

निशंक आ गम्भीर स्वरमे सुबुध बजला-

"श्रीमान्, आइ धरि अहाँ सभक संग रहलौं मुदा आब हम वैरागीक संग जा रहल छी, तँए एक्को क्षण एतए अँटकैक इच्छा नइ अछि। एक्को पाइ हमरा दुख नइ भऽ रहल अछि। बेकतीगत जिनगी बना हम अखन तक जीलौं मुदा आब सामाजिक जिनगी जीबैले जा रहल छी। ऐ लेल अपनेसँ आग्रह जे आसिरवाद दी।"

एकदिस सुबुधक मुखमण्डल, नव ज्योतिसँ प्रखर होइत रहैन तँ दोसर दिस हेडमास्टरक मुखमण्डल मलिन भेल जा रहल छेलैन...।

सुबुधक तियाग-पत्रक समाचार शिक्षकक बीच सेहो पहुँचल। सभ शिक्षक अपना कोठरीसँ उठि-उठि हेडमास्टरक चेम्बरमे एला। दुनू हाथ

जोड़ि सुबुध सभकेँ कहलखिन-

"भाय लोकैन, आइ धरिक जिनगी संगे-संग बितेलौं, तैबीच जँ किछु हमरासँ अधला भेल हुअए, ओ बिसैर जाएब। हम आइ धरि किताबी ज्ञानक बीच ओझराएल छेलौं मुदा आब ओइ ज्ञानकेँ बेवहारिक धरतीपर उतारैले जा रहल छी।"

जहिना सूर्योदयसँ पूर्व थलकमल उज्जर रहैत मुदा सुरुजक रोशनी पाबि धीरे-धीरे लाल होइत-होइत बदैल जाइत अछि, तहिना समाजक प्रखर रोशनी पाबि सुबुधक हृदय सेहो बदैल गेलैन। तेज गतिए स्कूलक ओसारसँ निच्चाँ उतैर सुबुध ओइठामसँ आगू बढ़ि गेला।

सुबुधक तेज चालि देखि विवेक बाबू सेहो नमहर-नमहर डेग बढ़बैत हिनका लगमे आबि कहलखिन-

"सुबुध भाय! अहाँ जे किछु केलौं, अप्पन विचारक अनुकूल केलौं अछि। तँए ओइ सम्बन्धमे हमरा किछु नै कहक अछि। किएक तँ अपने जहिया स्कूलमे नोकरी शुरू केलौं आ जेते बुझै छेलिऐ, ओइसँ बेसी आइ जरूर बुझै छी, तँए ओइ दिन, ओइ दिनक विचारक अनुरूप केलौं आ आइ औझुका विचारक अनुकूल कऽ रहल छी। मुदा हमर अहाँक सम्बन्ध सिरिफ शिक्षकेक नइ अछि बल्कि विद्यार्थीक सेहो अछि।"

सुबुध आ विवेक हाइये स्कूलसँ संगी। हाइ स्कूलसँ कौलेज धरि दुनू गोरे संगे-संग पढ़ने। मुदा विवेकसँ सुबुध तीन दिनक जेठ छैथ। जे बात सुबुधोकेँ आ विवेकोकेँ बुझल छैन। स्कूलोमे आ कौलेजोमे सुबुध विवेकसँ नीक विद्यार्थी रहला। विवेकसँ अधिक नम्बरो परीक्षामे सुबुधकेँ अबैत रहैन। ओना, दुनू गोरे एक्के डिवीजनसँ पास करैथ मुदा अंकमे किछु तरपट रहिते छेलैन। विवेक सुबुधकेँ सीनियर बुझै छैथ। जेकर उदाहरण अछि जे जइ दिन दुनू गोरेक बहाली स्कूलमे भेलैन, ओइ दिन सभ कागजात विवेकक अगुआएल रहितो स्वेच्छासँ विवेक सुबुधकेँ तीन नम्बर शिक्षक आ अपनाकेँ चारि नम्बर शिक्षक लेल हेडमास्टरकेँ कहने रहथिन। जेकरा चलैत सुबुधक बहालीक चिट्ठीक समय बदैल हेडमास्टर रजिष्टर मेनटेन केने छला। विवेकक प्रति सुबुधक हृदयमे वएह सिनेह छैन।

सुबुधक संगे विवेक अपना डेरामे एला। डेरामे अबिते विवेकक पत्नी

चाह बना, दुनू गोरेक आगूमे दऽ बैठकखानासँ निकैल खिड़की लग जा ठाढ़ भऽ गेली। एक जिनगीक टुटैत सम्बन्धसँ कँपैत हृदय विवेकबाबूक रहैन तँए थरथराइत स्वरमे पुछलखिन- "एक्को दिन पहिने तँ ई बात नै बाजल छेलौं। अनासुरती एहेन निर्णय केना कऽ लेलिऐ?"

मुस्कियाइत सुबुध उत्तर देलखिन-

"पहिनेसँ निआर नै छल। ऐ बेर जे गाम गेल छेलौं तखन ई विचार मनमे आएल। जहिना देव-असुर मिलि समुद्र मथन केने छला तहिना समाजक मथन करैक परिस्थिति बनि गेल अछि। जइले हमरो जरूरत समाजकेँ अछिए। समाजक पढ़ल-लिखल लोक तँ हमहूँ छी। तँए, हम अप्पन दायित्व पूरा करैले नोकरी छोड़लौं अछि..।"

विवेकबाबू किछु ने बजलैथ। हुनका चुप देखि सुबुध पुन: बाजए लगला- "महान जिनगी पबैले सेवा जरूरी होइत अछि। जँ नोकरीकेँ सेवा कहल जाए तँ खेतमे काज करैबला बोनिहारकेँ की कहबै? किएक तँ बोइन-मजूरी लेल ओहो काज करैत अछि आ नोकरियो केनिहार। ओना, पेटक लेल तँ कमाएबो जरूरी अछिए। जँ नइ कमाएब तँ खाएब की आ दोसरकेँ की खुएबै? भूखलकेँ भोजन चाहबे करी। चाहे ओ अन्नक भूखल हुअए वा ज्ञानक। तँए, चाहे नोकरी होइ वा उपार्जनक लेल आन कोनो काज, तेकरा इमानदारीसँ निमाहैत ओइसँ आगू बढ़ि जे कएल जाइत, से चाहे ज्ञानक क्षेत्र होइ वा जीवनक लेल भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा, चिकित्साक पूर्ति करब सेवा छी। ज्ञानक सेवा ताधैर अप्पन महत्वक स्थान नहि पबैत जाधैर ओ जीवनसँ जुड़ि कर्मक रूप नै लैत अछि। सिरिफ वैचारिके धरातलसँ होइतै तँ मिथिलामे महान-महान विचारक, मनुक्खक उद्धारक लेल रास्ता बतौलैन। मुदा अखनो समाजमे ओहन मनुक्ख अछिए जे हजारो बरख पूर्वमे छल। हँ! किछु आगुओ बढ़ल, ईहो सत्य अछि। मुदा जे कियो बौद्धिक, आर्थिक क्षेत्रमे आगू बढ़ला ओ पछुआएलक डेन पकैड़ आगू-मुहेँ घिंचलैन वा पाछू-मुहेँ धकेललैन? ई प्रश्न सभक सोझेमे अछि। जँ बाँहि पकैड़ आगू-मुहेँ घिंचए चाहितैथ तखन एतेक जाति, सम्पद्राय, कर्मकाण्ड इत्यादि पैदा करैक की प्रयोजन? राजसत्ता आ समाजसत्ता सेहो पछुआएल लोककेँ आरो पाछूए-मुहेँ धकेललक! खाएर..। आब जाए दिअ। आब हम एक्को क्षण ऐठाम नै रूकब। हमर बाट रामाकान्त काका तकैत हेता।"

सुबुधकेँ दुनू बाँहि पकैड़ बैसबैत विवेकबाबू अप्पन पत्नीकेँ कहलैन- “झब-दे थारी साँठू, सुबुध भाय जाइले धड़फड़ाइ छैथ।”

भोजन कऽ सुबुध विवेकबाबूक डेरासँ विदा भऽ गेला। दुनू हाथ जोड़ि विवेकबाबू कहलकैन- “हमरोपर धियान रखब।”

गामक सीमामे प्रवेश करिते सुबुध अप्पन घरक सुधि बिसैर गेला। हुनका सौंसे गाम परिवारे जकाँ बुझि पड़ए लगलैन। एक टकसँ खेत-पथार, पोखैर-झाँखैर, गाछी-कलम इत्यादिकेँ देखैत मने-मन सोचि रहल छला जे जँ ऐ सम्पैतकेँ ढंगसँ आगू बढ़ौल जाए, विकसित ढंग पकैड़ काज कएल जाए तँ निसचित गामक लोकमे खुशहाली ऐबे करत। अखन तक जहिना खेत मरनासन्न अछि तहिना पोखैर-झाँखैर सेहो मरल अछि। सभसँ पैघ बात तँ ई अछि जे मनुक्खो दबैत-दबैत एतेक दबि गेल अछि जे मनुक्खक नहि रहि, मनुक्खक मात्र ढाँचा रहि गेल अछि। तँए सभमे नव चेतना, नव ढंग आ नव तकनीकक नव औजारक उपयोग आवश्यक अछि। तखने शिशिरक सिकुड़ल रूप वसन्तक विकसित रूपमे बदैल सकैए...।

सोचैत-विचारैत सुबुध राजिन्दरक घर लग पहुँच गेला। राजिन्दरक घर देखि रास्ता छोड़ि रूकि गेला।

राजिन्दरकेँ तीनटा घर। अँगनाक एकभागमे टाट लगौने। दछिनबरिया घरमे मालो बन्हैत आ अपनो बैसार बनौने। बैसारमे दूटा चौकी देने। एकटापर अपने सुतैत आ दोसर पाहुन-परक-ले रखने।

सुबुधकेँ देखिते राजिन्दर अप्पन दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम करैत, आदरक संग हिनका अप्पन चौकीपर बैसौलकैन आ दरबज्जेपर सँ घरवालीकेँ शोर पाड़ैत बजला- “मास्टर साहैब एला हेन, झब-दे एक लोटा पानि नेने आउ?”

पतिक बात सुनि गुलबिया लोटामे पानि नेने आबि ओलती लग ठाढ़ भेली। मुँह झँपने, स्त्रीकेँ ठाढ़ देखि राजिन्दर कहलखिन- “हिनका नै चिन्है छिऐन, सुबुध भाय छैथ! मुँह किए झँपने छी?”

राजिन्दरक बात सुनि सुबुध मुस्कियाइत बजला-

“गाममे रहितो हम अनगौंआँ भऽ गेल छी! जहियासँ नोकरी शुरू केलौं, गाम छुटि गेल! सप्ताहमे एक दिन अबै छी जइसँ गामेमे घुमियो-फीरि

नहि पबै छी, तँए नै चिन्है छैथ। मुदा आब गाममे रहै दुआरे नोकरी छोड़ि देलौं। आब चिन्हती।"

सुबुधक बात सुनि राजिन्दर स्त्रीकेँ कहलखिन-

"सुबुध भाय पैघ लोक छैथ। जखन दुआरपर पएर रखलैन तखन बिना किछु खुऔने-पीऔने केना जाए देबैन। जाउ, बाड़ीसँ ओरहाबला चारि टा मकइ बाइल तोड़ि ओराहि कऽ नेने आउ।"

पतिक बात सुनि गुलबिया मुस्कियाइत विदा भेली।

राजिन्दर सुबुधकेँ पुछलकैन-

"भाय नोकरी किए छोड़ि देलिऐ?"

राजिन्दरक प्रश्नक सही उत्तर देब सुबुध उचित नइ बुझि बजला-

"नइ मन लागल। अपनो खेत-पथार अछिए आब खेतीए करब।"

चारू ओराहल बाइल आ नून-मेरचाइ थारीमे नेने गुलबिया आबि सुबुधक आगूमे रखि अपने निच्चाँमे बैस गेली। मकइक ओरहा देखि सुबुध तिरपित भऽ एकटा बाइल हाथमे लऽ गौरसँ दाना देखए लगला। सुभर बाइल। एक्कोटा दाना भौर नहि। बालिकेँ देखि सुबुध बजला-

"बड़ सुन्नर मकइ अछि! अपना ऐठामक गिरहत तँ उपजैबते ने अछि, जँ उपजौल जाए तँ खूब हेतइ। बेगूसराय, सहरसा आ मुजफ्फरपुर इलाकामे देखै छिऐ जे मकइक उपजासँ गिरहस्त धनिक भऽ गेल अछि। सालो भरि मकइक खेती होइ छइ। जहिना खेती तहिना उपजा। पाँच मन, छअ मन कट्ठा मकइ उपजैए। खाइयोमे नीक। रोटी, सतुआ, भुजा, ओरहा सभकिछु मकइक बनैए। बदाम आ मकइक सतुआ तँ बुझू जे बिनु दाँतोबला-ले अमृते छी।"

वामा हाथमे बाइल लेने दहिना हाथक आँगुरसँ दाना छोड़ा मुँहमे लैत सुबुध पुछलखिन-

"राजिन्दर भैया, अहाँकेँ बाल-बच्चा कएटा अछि?"

सुबुधक प्रश्न सुनि राजिन्दर चुप्पे रहला, मुदा गुलबिया बजली-

"तीन भाए-बहिन अछि। जेठकी सासुर बसैए। बड़बढ़ियाँ गुजर चलै छइ। दोसरोक बिआह केलौं। मुदा जमाए वौर गेल। दिल्लीमे नोकरी करैत

रहै, ओतैसँ वौरल, ने एक्कोटा चिट्ठी-पुरजी पठबै आ ने रुपैआ-पैसा। छअ मास बेटीकेँ सासुरमे रहए देलिऐ, तेकर बाद अपने ऐठाम लऽ अनलिऐ। दिल्लीसँ जे कोइ अबै आ पुछिऐ तँ कोइ कहए दोसर बिआह कऽ लेलक, तँ कोइ कहए अरब चलि गेल। कोइ कहए मलेटरीमे भरती भऽ गेल, तँ कोइ कहए उग्रवादी भऽ गेल। कोनो भाँजे ने लागल। आखिरीमे चारि बरिस अपना ऐठीम बेटीकेँ रखलौं। मुदा गामोमे तेहेन लुच्चा-लम्पट सभ अछि जे अनका इज्जतकेँ कोनो इज्जत बुझैए।"

हाथक इशारा सँ देखबैत- "उ घर देखै छिऐ, ओइ अँगनाक एकटा छौड़ा कहियो माछ कीनिकऽ नेने आबए तँ कहियो फोटो घिंचबैले संगे लऽ लऽ जाइ। हम दुनू परानी बाध-बोनमे भरि-भरि दिन रहै छेलौं। गाम परक खेल-बेल बुझबे ने करिऐ। जखन गामक लोक कुट्टी-चौल करए लगल तखन बुझलिऐ। जेठकी बेटी आएल रहए। ओकरा कहलिऐ। ओ अपने संगे नेने गेलइ। दोसर बिआह ऐ दुआरे नै करिऐ जे जँ कहीं जमाए जीविते हुअए। पछाइत जेठके जमाए-सँ बिआह कऽ लेलक। दुनू बहिन एक्के घरमे रहैए। दुनूकेँ सखा-पात सेहो छइ। छोट बेटा अछि। ओकरो बिआह-दुरागमन कऽ देलिऐ।"

मुस्कियाइत सुबुध पुछलखिन-

"दान-दहेजमे की सभ देलक?"

दान-दहेजक नाओं सुनि गुलबिया हँसैत बजली-

"समैध अपने एला। संगमे लड़कीक माम सेहो रहथिन। दुआरपर अबिते भोला बापक पुछाइर केलैन। हम नुआँक फाँड़ बान्हि चिपरी पाथैत रही। माथ परक साड़ी ससैर कऽ गरदैनपर रहए आ दुनू हाथो गोबराएले छेलए। केना गोबराएल हाथे साड़ी सम्हारितौं। तँए ओहिना चिपड़ी पथिते रहि गेलौं। कोनो की चिन्हैत रहिऐ। ओहो तँ हमरा नहियेँ चिन्हैत रहैथ। अनठिया ओहो आ अनठिया हमहूँ रही। ओहो मनुक्खे छैथ आ हमहूँ मनुक्खे छी, तखन बीचमे कथीक लाज?"

गुलबियाक बात सुनि दाँत पिसैत राजिन्दर बिच्चेमे बजला-

"आबो एक उमेरक भेलौं तैयो समरथाइक ताउ अहाँकेँ कम्म नै भेल? जे मनमे अबैए बकने जाइ छी..!"

राजिन्दरक बातकेँ दबैत गुलबिया बजली- “कोनो की झूठ बात बजै छी जे लाज हएत। मास्टर बौआ की कोनो अनगौंआँ छैथ जे रस्ते-रस्ते ढोल पीटता?”

बीच-बचाव करैत सुबुध बजला- “तेकर बाद की भेल?”

“ताबे ईहो एला। दुनू गोरेकेँ चौकीपर बैसा गप-सप्प करए लगला। हमरो गोबर सठि गेल। आँगन चलि एलौं। हाथ-पएर धोइकऽ पछबरिया टाट लग ठाढ़ भऽ गप-सप्प सुनए लगलौं। लड़कीक माम तँ उचक्का जकाँ बुझि पड़ैथ मुदा बाप बड़ असथिर। वेचारा बड़ सुन्नर गप बजलैथ। ओ हिनका कहलखिन जे देखू अहाँक बेटा छी आ हम्मर बेटी। दुनियाँमे जेते लोक अछि ओ अपने बेटा-बेटी-ले सभकिछु करैए। जहिना अहाँ छी तहिना तँ हमहूँ छी। जहिना अप्पन नून-रोटीमे अहूँ गुजर करै छी तहिना हमहूँ करै छी। कौआसँ खइर लूटाएब मुरुखपना हएत। हमरे एकटा पितियौत सार अप्पन बेटाक बिआह केलक। एक लाख रुपैआ नगद नेने रहइ। तेते ताम-झामसँ काज केलक जे अपनो जे बैंकमे साठि हजार रुपैआ रहै सेहो सठि गेलइ। हम ओहन काज नइ करब। बेटी-जमाएकेँ एकटा चापाकल गड़ा देबइ, दू कोठरीक मकान बना देबइ आ एक जोड़ा गाए ली वा महींस, से देब। तैसंग दुनू गोरेकेँ लत्ता-कपड़ा, बरतन-बासन, लकड़ीक सभ आवश्यक सामानक संग बिआहक खरच करब। अहाँकेँ खरच नइ कराएब। किएक तँ अहाँक जे खरच हएत ओ तँ ओही दुनूक हेतइ। हमरा पसिन भऽ गेल। मन कछ-मछ करए लगल जे कुटुमैती सूहकारि ली। मुदा पुरुखक बीच गप चलैत रहइ। मनमे ईहो हुअए जे जँ कहीं कोनो बाते दुनू गोरेमे रक्का-टोकी भऽ जेतैन तखन तँ कुटुमैतियो नइ हएत आ बदनामी सेहो हएत। हमर मन कछ-मछ करए लगल। एकबेर खोंखी केलौं जे ओ अपने अबैथ मुदा से नहि भेल। तखन दुनू हाथे थोपड़ी बजेलौं। तैयो सएह। आब की करितौं। काज पसिनगर अछि मुदा जँ कहीं कोनो बाधा उपस्थित भऽ गेल तखन तँ सभ नाश भऽ जाएत। पछाइत मुँह उघारनहि हम दुआरपर गेलौं। आगूमे ठाढ़ भऽ हिनका कहलयैन-

“भैया! बड़ सुन्नर बात समैध कहै छथुन, भोलाक बिआह कऽ लएह।”

कहि चोट्टे घुमिकऽ आँगन आबि शरबत बनेलौं। अपनेसँ जा कऽ तीनू

गोरेकेँ देलिऐन। कुटुमैती पक्का भऽ गेल। ऐगले लगनमे बिआहो भेल।"

तैबीच चारू बाइलो सुबुध खा लेलैन आ गपो-सप्प सम्पन्न भेल। पानि पीब सुबुध अप्पन घर दिसक रास्ता पकड़लैन। थोड़ेक दूर आगू बढ़लापर हिनका मनमे उठलैन जे घरपर जाइ आकि रामाकान्त काका ऐठाम?

दुबट्टी लग ठाढ़ भऽ सुबुध गुनधुन करए लगला। एक मन कहैन जे भरि दिनक थाकल छी, आराम करब जरूरी अछि। तँए घरेपर जाएब नीक, मुदा दोसर मन कहलकैन जे ऐ जुआनीमे जँ आराम करब तखन तँ जिनगीए छुटत।

गुनधुनमे पड़ल सुबुधक मनमे एलैन जे नोकरी छोड़ैक समाचार घर पहुँचेनाइ जरूरी अछि। ततमत करैत रामाकान्त घर दिसक रास्ता छोड़ि मलहटोलीबला एकपेड़िया पकैड़ सुबुध अपना घर दिस बढ़ला। घर लग अबिते सभकिछु बदलल-बदलल बुझि पड़लैन। जेना सभकिछु खुशीसँ मस्त हुअए। दरबज्जाक चुहचुही सेहो नीक बुझि पड़लैन। दुआरपर आबि कुरता खोलि चौकीपर रखि पत्नीकेँ शोर पाड़ि कहलखिन-

"कनी एक लोटा पानि नेने आउ, बड़ पियास लगल अछि।"

पतिक आवाज सुनि किशोरी लोटामे पानि नेने एली। हाथसँ लोटा लऽ लोटो भरि पानि पीब सुबुध बजला-

"आइसँ नोकरी छोड़ि देलौं, विद्यालयमे तियाग-पत्र दऽ देलौं।"

पतिक बात सुनि किशोरी चौंक गेली। मुदा पति-पत्नीक बीच मजाको चलिते अछि। किशोरीकेँ सोलहन्नी विश्वास नहि भेलैन। मुस्कियाइत बजली-

"नीक केलौं। आठ दिनपर जे भेँट होइ छेलौं से दिन-राति भेँट होइत रहब। हमरो नीके।"

किशोरीक बात सुनि सुबुधक मनमे भेलैन जे भरिसक मजाक बुझलैन अछि, तँए दोहराकऽ बजला-

"अहाँ मजाक बुझै छी। सत्य बात कहलौं।"

जेबीसँ तियाग-पत्रक नकल निकालि कऽ देखबैत बजला-

"हे देखियौ कागज!"

तैबीच मंगल सेहो आएल। मंगलकेँ देखि किशोरी ससैर गेली। मुस्कियाइत सुबुध मंगलकेँ कहलखिन- "काका, नौकरी छोड़ि देलौं। आब गाममे रहि खेतियो-पथारी करब आ जहाँ धरि भऽ सकत समाजक सेवा सेहो करब।"

सुबुधक बात सुनि मंगल कहलकैन- "बौआ, हम तँ उमेरे मे ने अहाँसँ जेठ छी मुदा अहाँ पढ़लो-लिखल छी मास्टरियो करै छी तँए नीके जानिकऽ ने नोकरी छोड़ने हएब।"

मंगलक बात सुनि सुबुधक मनमे सवुर भेलैन। मुस्कियाइत बजला-

"काका जाधैर पढ़ल-लिखल लोक समाजमे रहि समाजक क्रिया-कलापकेँ आगू-मुहेँ नै धकलत ताधैर समाज आगू केना बढ़त।"

सुबुध आ मंगल गप-सप्प करिते छला कि किशोरी आँगनमे अड़ाहैट मारि कानए लगली। सुबुध बुझि गेला तँए असथिरसँ बैसले रहला। मुदा अकलबेराक कानब सुनि टोलक जनिजाति दौग-दौग कऽ आबए लगली। सौंसे आँगन जनिजातिसँ भरि गेल। नवानीवाली किशोरीकेँ पुछलखिन- "कनियाँ, की भेल जे एना अकलबेरामे कानै छी?"

मुदा किछु उत्तर नै दऽ किशोरी आरो जोर-जोरसँ कानैत रहली। टोलक जेते बहिना, फुल, पान, गुलाब, कदम, चान, किशोरीक छेलैन सभकियो एक्केटा प्रश्न पुछैत रहलैन- "की भेल?"

मुदा जेते संगी-साथी, सखी-बहिनपा सभ किशोरीसँ पुछैत रहैन तेते किशोरी जोर-जोरसँ कानैत रहली। केकरो कोनो अर्थे नै लगैत। ओना, अनुमानक बाजार अपना गतिये तेज भेल जा रहल छल। कियो किछु बुझैत तँ कियो किछु।

दरबज्जापर बैसल-बैसल सुबुध मने-मन खुशी होइत रहैथ। मनमे होनि जे मरद हुअए आकि स्त्रीगण, जाधैर पुरान चालि छोड़ि नव चालि नै पकड़त ताधैर नव समाज केना बनि सकत? ई प्रश्न तँ सिरिफ समाजे लेल नहि परिवारो लेल अछि, आ परिवारे किए, मनुक्खो लेल अछिए। तँए सुबुध किछु बजबे ने करैथ।

अकलबेराक समय रहबे करए। बाध दिससँ गाए, महींस, बकरी चरि-चरि अबैत छल। तहिना, घसबहिनीसभ घासक पथिया नेने आ गोबर

बीछनिहारि सभ गोबरक छितनी माथपर उठौने घर घुमि रहल छेली।

बुधनी आ सोमनी, घासक छिट्टा माथपर नेने जखन सुबुधक घर सिके एली कि सुबुधक अँगनामे कानब सुनलैन। दुनू गोरे अकाइन कऽ बुझलैन जे सुबुधक पत्नी कानै छथिन। सोमनी बुधनीकेँ कहलक-

"बहिन, छिट्टा रखिकऽ चल देखैले।"

तैपर बुधनी बजली-

"गै बहिन, ऐ चमचिकनी सभक भभटपन सुनिकऽ की करबीही। भरि दिन चाह-पान घोंटैत रहैए, बुझैए जे एहने दुनियाँ अछि। मरदकेँ किछु हुअए, मौगी सभ रानी छी। जाबे एतए बरदेमे ताबे गामेपर चलि जेमे। घास-भूसा झाड़ब, जरना-काठी ओरियाएब। थैर खर्ड़ब, बासन-कुसन धुअब आकि ऐ भभटपनवालीक भभटपन सुनब। चल।"

सोमनी मुड़ी डोलबैत बाजल-

"बेस कहलेँ बहिन, जेकरा जेते सुख होइ छै ओ ओते कनैए। अपने सभ नीक छी जे कमाइ छी खाइ छी आ चैनसँ रहै छी। ऐ ललमुहीं सभक किरदानी सुनबीही तँ हेतौ जे मुहेँपर थुकि दिऐ।" ❑

एगारहम पड़ाव

भरि दिन सुबुधक मनमे यएह खुटखुटी धेने रहलैन जे जइ गामक लोकमे एतेक उत्साह बढ़ल अछि ओइ गाममे जँ बिहाड़िक पूर्व जहिना हवा खसि पड़ैत अछि तहिना अनदेसो तँ बढ़ि सकैए। समाज छिऐ, के की बाजत, नै बाजत तेकर कोन ठेकान। बिल्लम भेने केकरो मनमे असंतोष भऽ सकै छइ। एनामे ओकर मन कहबे करत जे गामक विचारक सभ पाइ-कौड़ीक भाँजमे पड़ि कहीं टौहकी ने तँ लगबए चाहैए। लोकक धाराकेँ रोकलासँ खतरो उपस्थित भऽ सकैए। जहिना अधिक रफ्तारसँ चलैत गाड़ीमे एका-एक ब्रेक लगौलासँ दुर्घटनो भऽ सकैए, तहिना काजमे ढील-ढाल भेलापर भऽ सकैए। ओना, भरि दिन तँ अपने चक्करमे फँसल रहलौं, से के बुझत? गामक लोक तँ गामक काजे भेलासँ बुझता...।

अचताइत-पचताइत सुबुध रामाकान्तसँ भेँट करए विदा भेला। मुन्हारि साँझ भऽ गेल छल। थोड़ेक दूर आगू बढ़लापर रास्ताक पछबारि भाग, सुरैतिया घरक आगूमे पान-सात गोरेकेँ बैसल गप-सप्प करैत सुनलैन।

“खेतक बँटबाराक ढोल तँ रामाकान्त काका पीटि देलखिन, मुदा बँटै कहाँ छथिन! धनक लोभ केकरा नइ छै। ओ थोड़े खेत बँटथिन! ई सभटा धनिक लोकक चालबाजी छी।”

दोसर बेकती बाजल-

“लोक थोड़े नीक-अधलाक विचार करैए जे सुनलक ओ कौआ जकाँ कौंउ-कौंउ करैत सगरे गाम बिलैह दइए। मुदा तइसँ की, अगर जँ ओ खेत नहियेँ बँटथिन तँ की लोक मरि जाएत!”

तैपर तेसर बेकती बाजल-

“जे अपने ठकि-फुसिया कऽ एते धन जमा केलक ओ सुहरदे मुहेँ लोककेँ जमीन दऽ देतइ! तखन तँ गरीबक कपारेमे जे दुख लिखल छै ओ तँ ओकरा भोगए पड़बे करत। केहेन निरलज्ज जकाँ रामाकान्त नाचि-नाचि लोककेँ कहलकै..!”

रास्तापर ठाढ़ भऽ सुबुध सुनैत रहला। सुनलाक बाद हिनका मनमे जेना आगि लगि गेलैन। मनमे उठलैन, भरि दिन तँ हमहूँ अनतए छेलौं, गाममे किछु भऽ ने तँ गेल..! बिना किछु बजने सुबुध आगू बढ़ि गेला। रामाकान्त ऐठाम पहुँचला।

सुबुधकेँ देखिते हीरानन्द बजला-

"लिअ, जिनकर चरचा करै छेलौं ओ आबिए गेला!"

रामाकान्त सुबुधकेँ कहलखिन-

"केता बेर तोरासँ गप करैक मन भेल, मुदा तूँ तँ भरि दिन निपत्ते रहलह। केतौ गेल छेलह की?"

रामाकान्तक बात सुनि सुबुध बजला-

"भरि दिन एते व्यस्त रहलौं जे अखन फुरसत भेल। आइ भरि दिन, घरसँ बाहर धरि परेशान-परेशान रहलौं।"

अकचकाइत रामाकान्त पुछलखिन-

"की परेशान?"

"काल्हि रातिमे जखन ओछाइनपर गेलौं तँ अहाँक कहलाहा बात मोन पड़ल। मोन पड़िते पेटमे घुरियाए लगल। बड़ीकाल धरि सोचैत-विचारैत रहलौं। नीनो ने हुअए। अन्तमे यएह मनमे आएल जे जहिना अहाँ अप्पन सभ सम्पैत समाजकेँ देलिऐन तहिना हमहूँ नोकरी छोड़ि देहसँ समाजक सेवा करब। किएक तँ जहिना गाड़ी इंजिनक बलेँ चलैए तहिना तँ समाजोमे इंजिनक जरूरत अछि। तैबीच एकटा इतिहासक घटना मोन पड़ल।"

'इतिहासक घटना' सुनिते उत्सुकतासँ हीरानन्द पुछि देलखिन-

"कोन घटना मोन पड़ल?"

सुबुध-

"तिब्बतमे एकटा राजकुमार चेन्पो नामक भेला। ओ अपना राज्यमे धनीक-गरीबक बीच खाधि देखलैन। ओइ खाधिकेँ पाटैले अप्पन सभ सम्पैत प्रजाक बीच बाँटि देलखिन। मुदा किछुए दिनक उपरान्त फेर ओहिना-क-ओहिना भऽ गेल। माने धनिक, धनिक बनि गेल आ गरीब, गरीब! राजकुमार क्षुब्ध भऽ गेला जे एना किए भेल?"

खिस्सा सुनि बिच्चेमे शशि शेखर पुछि देलकैन- "एना किएक भेलइ?"

"हम समाजशास्त्रक विद्यार्थी छी तँए ऐ बातकेँ जनै छी। जाधैर बेवस्था नहि बदलत ताधैर मनुक्खक जिनगी नइ सुधरत। तँए हम अप्पन दायित्व बुझि नोकरी छोड़लौं हेन। गामक एक-एक बेकतीक छिऐ। माने गरीबसँ लऽ कऽ अमीर धरि आ बच्चासँ लऽ कऽ बुढ़ धरिक, गाम सभक छिऐ। तँए हम तिब्बत जकाँ हूसल काज नइ करब।"

पहिलुके प्रशंसा सुनि रामाकान्तक मन उड़ि गेलैन, राजकुमारक पूरा खिस्सा सुनबो ने केलाह। मुदा हीरानन्दोक आ शशि शेखरोक धियान ओइ खिस्सामे घुमए लगलैन। तैबीच जुगेसर चाह अनलक। सभकियो चाह पीबए लगला। चाह पीब रामाकान्त बजला- "देखू, हम अप्पन सभ खेत समाजकेँ दऽ देलिऐ। आब हमरा कोनो मतलब ओइ खेतसँ नइ अछि। मुदा एकटा बात जरूर कहब जे समाजमे कोनो तरहक गड़बड़ी नै हुअए। सभकेँ खेत होइ।"

रामाकान्तक बात सुनि शशि शेखर अप्पन विचार रखलैन- "गाममे गरीब-लोकक परिवार जेते अछि ओकरा जोड़ि लिअ आ खेतकेँ जोड़ि एकरंग बाँटि दियौ।"

शशिक विचार सुनि हीरानन्द नाक मारैत बजला- "उँ-हूँउ।"

मुँहपर हाथ नेने सुबुध मने-मन सोचैत रहैथ, कियो एहनो अछि जेकरा घराड़ियो ने छै आ कियो एहनो अछि जेकरा घराड़ीक संग दू कट्ठा धनखेतियो छइ। तहिना केकरो पाँचो कट्ठा छइ। जँ जमा सम्पैतमे एक्के रंग देल जाए तँ सभकेँ एकरंग केना हेतइ?

एम्हर हीरानन्द सोचैत रहैथ जे गरीबो तँ सभ एकरंग नइ अछि। कियो मेहनती अछि तँ कियो नमरी कोइढ़ अछि। कियो निशाँखोर अछि तँ कियो सात्विक। गरीबोक स्थिति तँ विचित्र अछि। जखन कि मूल प्रश्न अछि समाजकेँ ऊपर उठबैक..।

सभकेँ गुम्म देखि रामाकान्त मुँहमे पान लऽ जरदा फँकैत बजला-

"एना सभ गुम्म किए छी? हम समाजक दाउ-पेंच तँ नइ बुझै छिऐ मुदा अहाँसभ तँ पढ़ल-लिखल होशगर लोक छी। तखन कियो किछु बजै

किए ने छी?"

हीरानन्द अप्पन बुइधिक कमजोरी व्यक्त करैत सुबुधकेँ कहलखिन-

"भाय, जे सोचै छी ओ ओझरा जाइए तँए अहीं सोझरबैत किछु कहियौ।"

गम्भीर भऽ सुबुध कहए लगलखिन-

"अप्पन समाज बहुत पछुआएल अछि। पछुआएल समाजमे घनेरो समस्या, समाढ़ जकाँ पकड़ने रहैए। जे बिना समाधान केने आगू नै ससरए देत। मुदा समाधानो तँ कागजपर नक्शा बनौने नइ हएत। समस्या लोकक जिनगीकेँ चुरीन जकाँ पकड़ने अछि। जहिना चुरीन लोकेक देहमे घोंसिया अप्पन करामात करैए तहिना समस्यो अछि। तँए अखन मात्र दूटा सवालकेँ पकड़ू। पहिल, सभकेँ एकरंग खेत होइ आ दोसर, खेतक संग-संग आरो जे पूजी अछि ओकरो उपयोग ढंगसँ हुअए।"

सुबुध बजिते रहैथ कि बिच्चेमे जुगेसर टपैक गेल-

"मास्सैब, कनी बिकछा कऽ कहियौ। एना जे पौतीमे राखल जिनिस जकाँ झाँपि कऽ कहबै तखन हमसभ केना बुझब?"

जुगेसरक बातसँ सुबुधकेँ तकलीफ नहि भेलैन बल्कि मुस्कियाइत बजला-

"ठीके अहाँ नइ बुझने हएब जुगे। नीक जकाँ बिकछा कऽ कहै छी। देखियौ, सिरिफ खेते रहने उपजा नइ भऽ जाइ छइ। ओकरा उपजाबए पड़ै छइ। जइले सभसँ पहिने खेतकेँ तामि-कोरिकऽ तैयार करए पड़ैए। पछाइत, पानिसँ पटा कऽ बीआ पाड़ए पड़ैए। आ बीआ जखन रोपाउ होइ छै तखन उखाड़िकऽ रोपल जाइ छै, कमठौन कएल जाइ छै इत्यादि। से सभ केलाक बाद ने उपजा होइ छइ। खेतक संग-संग मेहनतो ने पूजी भेल। मेहनत करैले ओजारोक जरूरत होइए। ओजारोक नमहर इतिहास रहल अछि। शुरूमे लोक साधारण औजारसँ काज करै छल। जेना-जेना औजारो उन्नति करैत गेल तेना-तेना लोकक हालतो सुधरैत गेल। अखन अप्पन गाम बहुत पछुआएल अछि, तँए नव औजारसँ काज करब सम्भव नहि अछि। नव औजार-ले अधिक पैसोक खगता अछि, जे नइ अछि। अखन साधारणे औजारसँ काज चलबए पड़त। जेना-जेना हालत सुधरैत जाएत तेना-तेना

औजारो सुधरैत जाएत।"

जुगेसरकेँ भुक-दे भक खुजल, तहिना बाजल-

"हँ, आब बुझलौं! सुआइत लोक कहै छै जे पढ़ि-लिख कऽ जँ हरो जोतब तँ सिरौर सोझ हएत..!"

हीरानन्द बजला- "बड़ सुन्दर बात कहलिऐ, सुबुध भाय। आब खेतक बँटबाराक सम्बन्धमे कहियौ।"

कनडेरिए आँखिए हीरानन्दक चेहरा दिस ताकि सुबुध बजला-

"हीरा बाबू, गाममे जेते एक बीघा खेतसँ निच्चाँबला गरीब लोक छैथ, हुनका सभकेँ एक-एक बीघा खेत भऽ जेतैन। सिरिफ रामाकान्ते काकाबला जमीन नहि, हुनकर अपनो जमीन ओइमे जोड़ा जेतैन। जेना देखियौ, किनको घराड़ियो नै छैन, हुनका बीघा भरि खेत दिअ पड़त। मुदा जिनका पाँच कट्ठा छैन हुनका पनरहे कट्ठा दिअ पड़त। तेतबे नहि, जिनका ओहूसँ बेसी छैन, हुनका आरो कम दिअ पड़त।"

सुबुधक बात सुनि रामाकान्त ठहाका मारि बजला- "बड़ सुन्नर, बड़ सुन्नर। बड़ सुन्नर विचार सुबुधक छैन। आब रातियो बेसी भऽ गेल। खाइयो-पीबैक बेर उनैह जाएत। रोटी गरमे-गरम खाइमे नीक होइ छै, तँए आब गप-सप्प छोड़ू। काल्हि भोरे ढोलहो दिआ सभकेँ बजा लेबैन आ सभक बीचमे अप्पन निर्णय सुना खेत बँटैक भार सेहो हुनके सभपर छोड़ि देबैन। नहि तँ अनेरे हो-हल्ला करता।"

भोरे ढोलहो पड़ल। एक तँ ओहिना सभक कान ठाढ़ रहबे करैन, तैपर ढोलहो सुनि घरा-घरी सभ पहुँचला। जहिना केस लड़निहार फैसला सुनैले उत्सुक रहैए तहिना बैसारमे सभकियो उत्सुक छला। अस्सी बर्खक सोनेलाल बाबा सेहो आएल छैथ। ओना, सोनेलाल बाबाकेँ अपने अढ़ाइ बीघा खेत छैन मुदा गाममे नव उत्सवक उत्साहसँ आएल छैथ। बैसले-बैसल ओ मुड़ी उठाकऽ देखि बजला- "कोनो टोलक कियो छुटलो छैथ? सभ अप्पन-अप्पन टोलक लोककेँ गनि लिअ।"

सोनेलाल बाबाक गप सुनि सभ अप्पन-अप्पन टोलक लोककेँ घरा-घरी मिलबए लगला। सिरिफ बौका आ गोसैमा बैसारमे नै आएल छला। दुनू टोलक दू आदमीकेँ पठा ओहू दुनू गोरेकेँ बजौल गेल। दुनू आदमीकेँ देखिते

सोनेलाल बाबा पुछि देलखिन- "तोरा दुनू गोरेकेँ ढोल्होक आवाज कानमे नै पहुँचल छेलौ?"

बौका बाजल- "ढोलहो तँ बुझलिऐ। मुदा नोकरी करै छी ने, ने माए-बाबू अछि आ ने बौह, तखन खेत लऽ कऽ की करब। बिआहो होइते ने अछि। लोक ढहलेल बुझैए, तखन अनेरे हम किए अबितौं?"

बौकाक बात सुनि सोनेलाल बाबा मुड़ी डोला स्वीकार केलैन। आब दोसर, गोसैमा बाजल- "हम दुनू परानी तँ बुढ़े भेलौं, बेटा अइछे नहि। लऽ दऽ कऽ एकटा ढेरबा बेटी अछि। ओकरो बिआह ऐ बेर कइये देबइ। बिआह हेतै, अप्पन घर जाएत। भोगनिहार के रहत जे अनेरे हम खेत लेब?"

गोसैमोक विचार सुनि सोनेलाल बाबा मुड़ी डोला स्वीकार केलैन। दुनू गोरेक बात सुनि सोनेलाल बाबाक मनमे एलैन जे समाजमे दूटा परिवार कमि जाएत। दुनू परिवारकेँ बँचौल तँ नै जा सकैए मुदा जँ दुनूकेँ जोड़िकऽ एकटा परिवार बनाबी, ई तँ सम्भव अछिए। बजला- "बौका तँ सिरिफ नामक अछि। केहेन बढ़ियाँ बजैए। गोसैमाक बेटी आन गाम चलि जेतइ। जइसँ बाप-माए–दुनू गोरे–केँ बुढ़ाड़ीमे दुख हेतइ। तँए बौकाक बिआह गोसैमाक बेटीसँ करा देने एक परिवार भऽ जाएत।"

सोनेलाल बाबाक विचार सुनि आधासँ बेसी लोक समर्थन कऽ देलक। मुदा किछु गोरे विरोध करैत बजला- "एक गाममे लड़का-लड़कीक बिआहक चलैन तँ नइ अछि। जँ हएत तँ अनुचित हएत!"

धड़फड़ा कऽ उठैत लखना जोरसँ बाजल- "कोन गाम आ कोन समाज एहेन अछि जइमे छौड़ा-छौड़ी छअ-पाँच नै करैए। चोरा कऽ छअ-पाँच केलासँ बड़बढ़ियाँ मुदा देखाकऽ करत से बड़ अधला हेतइ?"

लखनाक विचारक समर्थन, सभकियो केलैन। दुनूक बिआहक बात पक्का भऽ गेल।

सुबुधक मनमे फेर एकटा प्रश्न उठि गेलैन जे बौका आ गोसैमाकेँ एक परिवार मानि जमीन देल जाए वा दू परिवार मानि? तर्क-वितर्क करैत, एक परिवार मानि हिस्सा दैक सहमति बनल।

फेर प्रश्न उठल जे जमीनक नाप-जोख के करत? रामाकान्त कहि देलखिन जे अपनेमे अहाँसभ बाँटि लिअ।"

सुबुधोक मनमे भेलैन जे रामाकान्त काका ठीके कहलैन। काजकेँ बाँटि कऽ नै करब तँ गलती हएत। सभ काज जँ अपने करए चाहब तँ एते गोरे जे समाजमे छैथ ओ सभ की करता। जँ कहीं कोनो गलतियो हएत तँ जल्दीए सुधैर जाएत। बजला-

"खेत नपैक लूरि केते गोरेकेँ छह। किएक तँ जँ अमीन लऽ कऽ बँटबारा करब तँ बहुत खरच हएत। जे खरच बाँटैमे करब ओइ पैसासँ दोसरे काज किए नै कऽ लेब। पैसाक काज तँ बहुत अछि, तँए अन्ट सन्ट खरच नै कऽ सुपत-सुपत खरच करब नीक हएत। देखिते छिऐ जे जहिना देशक संविधान ओकीलकेँ सालो भरि हरियरी देने रहैए, तहिना तँ सर्वेओ अमीनकेँ दइते अछि। कौआसँ खइर लूटाएब नीक नहि। जहिना अहाँसभकेँ मंगनीमे खेत भेट रहल अछि तहिना सही-सलामत हाथमे चलि जाए। जँ अमीन सभक भाँजमे पड़ब तँ ओहिना हएत जहिना लोक कहै छै 'जेतेमे बौह नै तेतेमे लहठी..!"

सुबुधक बात सुनि, जोशमे बिलटा उठिकऽ ठाढ़ भऽ बाजल-

"माघसँ लऽ कऽ जेठ धरि हमसभ खेततमिया करै छी। से कोनो एक्के साल नहि, सभ साल। सेहो कोनो आइयेसँ नहि, जहियासँ ज्ञान-प्राण भेल तहियेसँ। कोन अमीन आ कमिश्नर नपैले अबैए। अप्पन गामक कोन बात जे चरिकोसीमे तमनी करै छी। तेतबे नहि, नेपालो जा-जा तमै छी। तेतबे नहि, साले-साल नपैत-नपैत तँ सौंसे गामक खेत जनै छी जे कोन कोला केतेक अछि। नपैक जरूरते नहि अछि। मुँहजुआनीए कहि देब जे कोन कोला केते अछि। खाली एक गोरे कागजपर लिखि लिअ जे केकरा केते खेत देबइ। हमरा कहैत जाएब, हम कोला फुटबैत जाएब। एकटा पण्डीजी, बड़बढ़ियाँ नाओं रहैन, अखन मोन नइ अछि, ओ तीनियेँ डेगमे दुनियाकेँ नापि नेने रहैथ। तहिना हमहूँ तीन डेगक लग्गी बना, एक गामक कोन बात जे परोपट्टाक जमीन नापि देब।"

बिलटाक बात सुनि रामाकान्त बजला-

"बड़बढ़ियाँ, बड़बढ़ियाँ।"

सभकियो उठि-उठि विदा भेला।

बेर झुकिते सौंसे गामक स्त्रीगण, ढेरबा बच्चिया, छोटका-छोटका

ढेन-बकेन, सभकियो चिकनी माटिक खोभार दिस विदा भेल। सभक हाथमे खुरपी-पथिया!

सभकेँ हाथमे खुरपी पथिया नेने जाइत देखि श्रीचन मने-मन सोचए लगल जे एना किए लोक कऽ रहल अछि? दसमियो तँ अखन नै एलै हेन! कोनो पावैनो-तिहार नहियेँ छिऐ! तखन स्त्रीगणमे एना उजैहिया किए उठि गेल? कोन बुढ़िया-जादू तरे-तर गाममे पसैर गेल जे मरद बुझबे ने केलक आ मौगी सभ बुझि गेल? अनकर कोन बात जे अपनो घरवाली रमकल जाइए..!

जेते श्रीचन सोचैत ओते ओझरीए लगल जाइत। ततमत करैत रूदल ऐठाम विदा भेल। घरो लगेमे। श्रीचने जकाँ रूदलो छगुन्तामे पड़ल रहए, तँए श्रीचनकेँ देखिते पुछि देलकै- "आँइ हौ श्रीचन भाय, मौगी सभकेँ कथीक रमकी चढ़लै हेन जे एते रौदमे माटि आनैले जाइ जाइए?"

रूदलक बात सुनि श्रीचन आरो छगुन्तामे पड़ि गेल। मनमे एलै जे हम गामपर नै छेलौं तँए नइ बुझलिऐ। मुदा रूदल तँ गामेपर रहए। ई किए ने बुझलक? फेर सोचलक जे जखन घरवाली माटि लऽ कऽ औत तँ पुछि लेबइ। मन असथिर भेलइ। मुदा रूदलक मुँहक रंगसँ बुझि पड़ै जे केते भारी काज स्त्री बिना पुछिनहि कऽ लेलकै..!

भीतरसँ खुश मुदा ऊपरसँ गम्भीर होइत श्रीचन रूदलकेँ कहलक-

"आँइ हौ रूदल भाय, तोरा भनसियासँ मिलान नै रहै छह जे बिनु पुछनहि चलि गेलखुन?"

श्रीचनक मनक बात नइ बुझि खिसियाकऽ रूदल बाजल- "की कहियह भाय, मौगीपर विश्वास नइ करी। जखन अप्पन काज रहतै तँ हँसि-हँसि बजतह मुदा जखन तोरा कोनो काज हेतह तँ कहतह जे माथा दुखाइए!"

मुँह दाबि श्रीचन मने-मन खूब हँसैत, मुदा रूदल तामसे भेर भेल जाइत। विदा होइत श्रीचन बाजल- "आब जाइ छिअ, भाय। मौगी सभक किरदानी देखि हमरा किछु फुरबे ने करैए।"

सह पाबि रूदल गरैज उठल- "बड़ बुधियार मौगी सभ भऽ गेल। जब एतेक बुधियार अछि तँ चलए तँ हमरा संगे कोदारि पाड़ैले, तखन बुझबै!"

थोड़ेक दूर आगू बढ़ि श्रीचन रूकिकऽ बाजल- “भाय की करबहक, आब मौगीए सभक राज भेलइ।”

“हमरा कोन राज-पाटसँ मतलब अछि, हर जोतै छी, कोदारि पाड़ै छी, तीन सेर कमाकऽ अनै छी, खाइ छी। एते दिन पुरुखे चोर होइ छेलए, मुदा आब मौगियो चोरनी हएत। भने जहल जाएत आ पुलिसबासँ यारी लगौत!”

श्रीचन बढ़ि गेल, मुदा रूदल अप्पन दुनू हाथ माथपर लेने सोचिते रहल। सभकियो माटि आनि-आनि अप्पन-अप्पन अँगनाक माटिक ढेरीपर रखलैन। घामे-पसीने सभ जनानी तर-बत्तर। कनीकाल सुसतेलाक बाद दिआरी बनबैले मुंगरी, लोढ़ीसँ माटि फोड़ए लगल। मेहीसँ माटि फोरि, इनार-कलसँ अछींजल भरि-भरि आनि, माटिमे दऽ सानए लगल, सुखल माटिमे पानि पड़िते सोन्हगर सुगन्ध सौंसे गाममे पसैर गेल। गामक हावे बदैल गेल। जहिना साँझूपहरमे सिंगहार-रातिरानी फूलसँ वातावरण महमहा उठैए तहिना माटि-पानिसँ जन्मल सुगन्ध गामकेँ महमहा देलक।

माटि सानि, छोट-छोट दिआरी सभकियो बनबए लगल। दिआरी बना, पुरान साफ सुती वस्त्रकेँ फारि-फारि दहिना हाथक तरहत्थीसँ जाँघपर रगैड़-रगैड़ टेमी बनौलक। दिआरीमे करुतेल दऽ टेमी सजौलक। दिआरी सजा कियो फुलडालीमे, कियो चङेरीमे, कियो छिपलीमे आ कियो केरा पातपर राखि नहाइले गेल। अजीव दृश्य! नव उत्सव! नव जिज्ञासा! नव आशा सभक मनमे।

सुरुज डुमब तँ नहि छल, मुदा निच्चाँ जरूर उतैर गेल छल, गाछ परक रौद बिला गेल छल, सभ अप्पन-अप्पन गोसाँइ घर जा सिरा आगूमे दिआरी नेसलक, दिआरी नेस एकटँगा दऽ आराधना करए लगल जे आएल लक्ष्मी पुनः पड़ाए नहि। गोसाँइकेँ गोड़ लागि सभकियो गामक देव स्थान दिस विदा भेल। गाममे अजीव दृश्य बनि गेल।

अप्पन-अप्पन आँगनमे तँ सभकियो असगरे-असगर छल, मुदा आँगनसँ निकैलते, माने देवस्थान दिस विदा होइते, संगबे सभ भेटए लगलइ। संगबे मिलिते सभकियो जइ स्थान दिस जाइत रहए ओइ देवताक गीत गाबए लगल। सौंसे गामक सभ रस्तामे एक नहि, अनेक समूह गीत

गबैत मगनसँ देवस्थान पहुँचै गेल। सभक मनमे जमीनक खुशी तँए सभ देवतोकेँ मुस्कियाइत देखैत। सभक मनमे नचैत जे एकसँ एक्कैस हुअए...।

खेत पाबि गामक सभ गरीब-गुरबाक मनमे दिआरीक इजोत जकाँ आशाक दीप बरए लगलैन। हजारो बर्खसँ पछुआएल गरीबीमे एका-एक जेना आड़ि पड़ि गेल। सभकियो नव-नव योजना मनमे बनबए लगला। जइसँ जिनगी दुखक बेड़ीकेँ टपि सुखक सीमामे पएर रखलक। नव जिनगी जीबैक उत्कंठा सभक मनमे जागि गेल। ❑

बारहम पड़ाव

खेत भेटलासँ भजुआ-परिवारक सभ समांगक विचारो बदलल। नबो बापूत बैस विचार करैत रहए जे जहिना रामाकान्त काका हमरा सभकेँ रखि लेलैन तहिना हमहूँ सभ समाजक एक अंग बनिकऽ रहब। सभसँ पहिने रामाकान्त काका, सुबुध, शशि शेखर आ मास्टर साहैबकेँ अपना ऐठाम भोजन करेबैन। मुदा अखन तकक जे अपना सभक चालि-ढालि रहल अछि, ओकरा तँ अपने बदलए पड़त। अँगना-घर आ दुआर-दरबज्जाक जे छिछा-बिछा अछि से नीक लोकक बइसै-जोकर नइ अछि। सभदिन अपनासभ एहनेमे रहलौं तँए रहै छी मुदा नीक लोक एहेन जगहमे केना औता? देखिये कऽ मन भटैक जेतैन, तँए पहिने सभ समांग भोरेसँ दुआर-दरबज्जा आ अँगना-घरकेँ चिक्कन-चुनमुन बनाबह। मरदो आ मौगियो जे भदौस जकाँ नुआँ-वस्तर बनौने रहै छी, ओकरो बदलह। जखन अप्पन काज करै छी तखन जँ फटलो-पुरान आ मैलो-कुचैल कपड़ा पहिरै छी तँ बड़बढ़ियाँ। मुदा जखन किनको नौत दऽ कऽ खाएले बजेबैन तखन एहेन बगए-बानिसँ काज नइ चलत।

भजुआक जेठ बेटाक सासुर दरभंगा बेला मोड़पर अछि। जखन ओ सासुर जाइत आ ओइठामक रहल-सहन, बात-विचार देखैत तँ मन जरूर आगू-मुहेँ बढ़ैक कोशिश करैत मुदा गामक जे गरीबीक अवस्था अछि ओ सभ विचारकेँ दाबि दइ। मुदा तैयो दरभंगाक देखल परिवार नजैरमे रहबे करइ। भजुआक जेठ बेटा–झोलिया, सातो भाँइक भैयारीमे सभसँ जेठ अछि। तँए, सभ भाँइ झोलियाक बात मानैए। झोलिया बाजल-

“सातो भाँइक बीच रामाकान्त बाबा सात बीघा जमीन देलखुन। पाइ तँ एक्कोटा नइ लेलखुन। दुनियाँमे केकरा के एना दइ छइ। जँए हुनका मनमे हमरो सभक प्रति दया एलैन तँए ने। तहिना हमहूँ सभ हुनका ओते पैघ बुझि आदर करबैन। गामेमे भाड़ापर कुरसी, समेना, शतरंजी, जाजीम, सिरमा सभकिछु भेटैए। जहिना बरियाती-ले लोक भोजनसँ लऽ कऽ रहै तक, सभ

बेवस्था करैए तहिना अपनो सभ करब।"

झोलियाक विचार सुनि छबो भैंयो आ बापो-पित्ती, सभकियो मुड़ी डोला समर्थन देलक। झोलिया फेर बाजल-

"बाउ, तूँ रामाकान्त बाबा ऐठाम चलि जैहह। हुनका चारू गोरेकेँ नतो दऽ दिहौन आ संगे-संग बजेनौं अबिहौन। एम्हर दू भाँइ भाड़ापर सभ सामान आनि जोगार करिहह। दू समांग बजारसँ खाइक सभ सामान कीनि अनिहह। सभकियो अपना काजमे भोरेसँ लगि जैहह।"

दलानपर बैस रामाकान्त आ हीरानन्द चाहो पीबैत रहैथ आ गामेक गपो-सप्प करैत रहैथ। गामक गप-सप्प करैत रामाकान्तक नजैर बौएलाल आ सुमित्रापर गेलैन। गिलास रखि रामाकान्त हीरानन्दकेँ कहलखिन-

"महेन्द्र बौआ कहने रहैथ जे छअ मास सिखा-पढ़ा दुनू गोरेकेँ पठा देब मुदा अखन तक किएक ने आएल.?"

हीरानन्द बजला-

"कोनो कारण भेल हेतै तँए ने अखन तक नइ आएल। ओना, चिकित्सा कठिन विद्या छी। सुढ़िआइमे किछु समय लगबे करतै।"

दुनू गोरे गप-सप्प करिते रहैथ कि तैबीच भजुआ पहुँचल। लगमे अबिते भजुआ रामाकान्तकेँ गोड़ लगलकैन, रामाकान्तकेँ गोड़ लागि हीरानन्दोकेँ गोड़ लगलकैन। हीरानन्दकेँ गोड़ लगिते ओ आसिरवाद दैत पुछलखिन-

"भज्जु भाय, नीके रहै छह किने?"

"हँ मास्टर बौआ! हमरा तँ गामसँ भागैक नौबत आबि गेल छेलए! मुदा, काका नै भागए देलैन।"

हलचलाइत रामाकान्त पुछलखिन-

"से की, की भेल?"

गाममे बसैक खिस्सा भजुआ कहए लगलैन-

"ऐ गाममे पहिने हम्मर जाति नै रहए। मुदा डोमक काज तँ सभ गाममे जन्मसँ मरण धरि रहै छइ। हमरा पुर्खाक घर गोनबा रहइ। पूभरसँ कोसी अबैत-अबैत गोनबो लग चलि आएल। अखार चढ़िते कोसी फुलेलै।

पहिलुके उझूममे तेहेन बाढ़ि चलि आएल जे बाधक कोन गप जे घरो सभमे पानि ढुकि गेल। तीन दिन तक ने माल-जाल घरसँ बहराएल आ ने लोके। पीह-पाह करैत सभ समय बितौलक। मुदा पहिलुका बाढ़ि रहै, तेसरे दिन सटैक गेल। हम्मर बाबा दुइये परानी। ताबे हम्मर बाउ नै जन्मल रहइ। बाढ़िक पानि सटैकते दुनू गोरे दसोटा सुगर आ घरक सामान लऽ गामसँ विदा भऽ गेल। जखन गामसँ विदा भेल तँ दादी बाबाकेँ कहलकै, अनतए केतए जाएब। हमरो माए-बाबू जीविते अछि, ओतै चलू। बबो मानि गेल। दुनू परानी अही गाम देने जाइत रहइ। गाममे अबिते सुगरकेँ चरैले छोड़ि देलकै आ अपने दुनू परानी सुसतए लगल। तहिया ऐ गाममे डोम नइ रहै, तँए गामक बेदरा-बुदरी सभ सुगर देखैले जमा भऽ गेल। गामोमे हल्ला भऽ गेलइ। गामक बाबू-भैया सभ आबि हमरा बाबाकेँ कहलकै जे अही गाममे रहि जा। हमर बाबा रहि गेल। गामक कातमे एकटा परती रहइ। ओही परतीपर सभ बाबू-भैया एकटा घर बना देलकइ। ओइ दिनमे परती नमहर रहइ। मुदा चारूभाग जोता खेत रहइ। चारूभागक खेतबला सभ परतीकेँ छाँटि-छाँटि खेतमे पियबैत गेल। परती छोट होइत गेलइ। रहैत-रहैत घर-अँगना आ खोबहारे भरि बँचलै। मुदा तैयो दिक्कत नै होइ। हमर बाउओ भैयारीमे असगरे। मुदा हम दू भाँइ भेलौं। जखन दुनू भाँइ भीन भेलौं तँ घराड़ियो बँटा गेल आ गिरहतो। मुदा तैयो गुजरमे दिक्कत नै हुअए। अखन दुनू भाँइक बीच सात टा बेटा अछि। चारि टा हमरा आ तीनटा भाएकेँ। गुजर तँ कमाकऽ कऽ लइ छी मुदा घरक दुख तँ अछिए।"

भजुआक खिस्सा सुनि रामाकान्त बजला-

"आब तँ बहुत खेत भेलह?"

"हँ काका, आब केतेको पीरही आनन्दसँ रहब! अखन घर तँ नहि बन्हलौं हेन मुदा खेती केनाइ शुरू कऽ देलिऐ।"

बिच्चेमे हीरानन्द पुछलखिन-

"सबेरे-सबेरे केम्हर चललह, भज्जु भाय?"

भजुआ निधोक भऽ बाजल-

"रातिमे सभ समांग विचारलक जे जहिना रामाकान्त काका अपनो सभकेँ समाजक अंग बना खेत देलैन तहिना अपनो सभ हुनका नौत दऽ कऽ

खुऐबो करबैन आ धोती पहिरा विदाइयो करबैन। सहए नौत दइले एलौं हेन?"

नौतक नाओं सुनिते रामाकान्त बजला-

"कहियाक नौत दइ छह? हीरानन्दो जेथुन। आ सुबुध-शशिकेँ सेहो कहि दहुन।"

"हँ काका, अहींटा केँ थोड़े लऽ जाएब। हिनको सभकेँ लऽ जेबैन। ऐठाम तँ अहीं दू गोरे छी। शशि भाय आ सुबुध भाय नै छैथ। ताबे अहाँ दुनू गोरे नहाउ-सोनाउ, हम ओहू दुनू गोरेकेँ बजौने अबै छिऐन।"

हीरानन्द बजला-

"औझुके नौत दइ छह?"

"हँ, मास्टर साहैब!"

रामाकान्त बजला-

"बड़बढ़ियाँ! शशि तँ पोखैर दिस गेलखुन, अबिते हेथुन। ताबे सुबुधकेँ कहि अबहुन।"

भजुआ सुबुध ऐठाम विदा भेल। चाह पीब सुबुध दुनू बच्चाकेँ पढ़बै छला। भजुआकेँ देखिते पुछि देलखिन-

"भज्जु भाय, केम्हर-केम्हर?"

प्रणाम करैत भजुआ कहलकैन-

"भाय, अहीं ऐठाम ऐलौं हेन। रमाकान्त काका आ मास्टर सहाएब एक्केठीम बैसल छला, हुनका सभकेँ तँ कहि देलिऐन आ अहूँकेँ कहैले एलौं हेन।"

"की कहैले एलह?"

"नौत दइले एलौं हेन।"

"कोन काज छिअ?"

"काज-ताज नइ कोनो छी। ओहिना अहाँ चारू गोरेकेँ खुअबैक विचार भेल।"

भजुआक बात सुनि सुबुधक मनमे द्वन्द्व उत्पन्न भऽ गेलैन। मनमे प्रश्न

उठलैन, भजुओ तँ अही समाजक अंग छी। जहिना शरीरमे नीक-सँ-नीक आ अधला-सँ-अधला अंग अछि, जइसँ शारीरिक क्रिया चलैए तहिना तँ समाजोमे अछि। मुदा शरीर आ समाजकेँ तँ एक नै मानल जाएत। समाजकेँ जाति आ सम्प्रदाय ऐ रूपेँ पकैड़ नेने अछि जे सभ सभसँ ऊपरो अछि आ निच्चो अछि। एकदिस धर्मक नाओंपर सभ हिन्दू छी, मुदा तहूमे रंग-बिरंगक जाति भीतरमे अछि! एक जाति दोसर जातिक ने छूअल खाइए आ ने कथा-कुटुमैती करैए! तेतबे नहि, हिन्दूक जे देवी-देवता छैथ ओहो बँटाएल छैथ! जइ देवी-देवताकेँ एक जाति मानैए! दोसर नै मानैए। जँ मानितो अछि तँ ने हुनकर पूजा संग मिलि करैए आ ने संगे परसाद खाइए! भरिसक हृदयसँ प्रणामो नहियेँ करैए। देवतोकेँ मने-मन अछोप, शूद्र इत्यादि बुझै छैथ! जँ प्रश्न हल्लुक-फल्लुक रहैत तँ कोनो बात नहि, मुदा अछि तँ जड़ियाएल! एहेन ने हुअए जे नान्हिटा प्रश्नक चलैत समाजमे विस्फोट भऽ जाए। समाजक लोक ऐ दुनू प्रश्नक बीच तेना ने बन्हाएल अछि जे जिनगीक सभसँ पैघ वस्तु एकरे बुझैए। जखन कि, छी नहि। मुस्कियाइत सुबुध भजुआकेँ कहलखिन- "ताबे तूँ रामाकान्त काका ऐठाम बढ़ह, हम नहेने अबै छी।"

भजुआ विदा भेल। सुबुध मने-मन सोचिते रहला जे की कएल जाए? तर्क-वितर्क करैत सुबुधक मन धीरे-धीरे सक्कत हुअ लगलैन। अन्तमे ऐ निष्कर्षपर पहुँच गेला जे जाधैर ऐ सभ छोट-छीन बातकेँ कड़ाइसँ पालन नै कएल जाएत, ताधैर समाज आगू-मुहेँ नै ससरत। समाजकेँ पछुआइक मुख्य कारणमे एकटा ईहो कारण छी! तँए एकरा जेतेक जल्दी हुअए तोड़ि देनाइ उचित हएत। ई बात मनमे अबिते सुबुध नहाइले गेला। नहाकऽ कपड़ा पहिर रामाकान्त ऐठाम विदा भेला। जाबे सुबुध रामाकान्त ऐठाम पहुँचैथ ताबे रामाकान्त शशि शेखर आ हीरानन्द नहाकऽ कपड़ा पहिर तैयार रहैथ। सुबुधकेँ पहुँचते हीरानन्द बजला-

"सुबुधो भाय आबिए गेला। आब अनेरे बिलम्म करब उचित नहि।"

सुबुध बैसबो नै केलाह। सभकियो लगले ओइठामसँ विदा भऽ गेला। आगू-आगू रामाकान्त, पाछू-पाछू सभ। थोड़ेक आगू बढ़लापर हीरानन्द भज्जुकेँ पुछलखिन- "कथी सभक खेती केलह हेन, भज्जु?"

मजबूरीक स्वरमे भज्जु कहए लगलैन- "भाय, अपना बरद नइ अछि। कोदाइरो ने छेलए मुदा छौड़ा सभ जोर केलक आ दस गो कोदारि

कीनि अनलक। सभ बापूत भोरे उठै छेलौं आ खेत तामए चलि जाइ छेलौं। पनरह दिनमे सभ खेत तामि लेलौं। बड़बढ़ियाँ, जजात अछि। ऐ बेर हएत तँ बरदो कीनि लेब।"

"जखन खेत भेलह तँ बरद किए ने कीनि लेलह?"

"एक्केटा दिक्कत नइ ने अछि। बरद कीनितौं तँ बान्हितौं केतए? खाइले की दैतिऐ? जँ सभ काज–बरद कीनिनाइ, घर बनौनाइ, खाइक जोगार केनाइ–एक्केबेर शुरू करितौं तँ ओते काज पार केना लगैत? तँए एका-एकी सभ काज करब!" "बड़ सुन्दर विचार केलह!"

गप-सप्प करैत सभकियो भजुआ ऐठाम पहुँचला। घरक आगूमे दू कट्ठा जमीन। ओइमे समियाना टँगने। एक भाग कुरसी लगौने। दोसर भाग शतरंजी, जाजीम, तकिया लगौने। मरदसँ मौगी धरि, भजुआक सभ समांग, नहाकऽ नव वस्त्र पहिरने। जहिना बरियातीक बेवस्था होइ छै। तहिना बेवस्था केने।

बेवस्था देखि चारू गोरे, माने रामाकान्त, सुबुध, हीरानन्द आ शशि शेखर, क्षुब्ध भऽ गेला। किनको बुझिए ने पड़ैन जे डोमक घर छिऐ। चारू गोरे चारू कुरसीपर बैसला। कुरसीपर बैसते भजुआक एकटा बेटा शरबत अनलक। सभसँ पहिने रामाकान्त दू गिलास शरबत पीब ढकार करैत बजला- "आब पान खुआबह।"

शरबत बँटाइते छल कि बिच्चेमे भजुआक पोती चाह नेने आएल। हाँइ-हाँइ कऽ शशि शेखर शरबत पीलैन। स्टीलबला कपमे चाह। शुद्ध दूधक बनल। ने अधिक मीठ आ ने फिक्का। चाहक रंगो तेहने। तैपर कॉफी चक-चक करैत। चाह पीबैत-पीबैत रामाकान्तक पेट अफैर गेलैन। भरियाएल पेट बुझि रामाकान्त बजला- "ई तीनू गोरे कुरसीपर बैसता, हम ओछाइनेपर पड़ब।"

कहि उठिकऽ ओछाइनपर जा रामाकान्त पड़ि रहला। पान आएल। सभकियो पान खेलैन। मुँहमे पान सठबो ने कएल छेलैन आकि जलखै करैक आग्रह भजुआ केलकैन।

भजुआक आग्रह सुनि रामाकान्त कहलखिन-

"हम ओछाइनेपर खाएब। हुनका सभकेँ टेबुलपर दहुन, मुदा

थोड़ेकालक बाद।”

भजुआक सभ समांग दासो-दास। जखनसँ चारू गोरे एला तखनसँ भजुआक परिवारमे नव उत्साहक लहैर उमड़ल। की मरद, की स्त्रीगण सभ उत्साहित। ..जे स्त्रीगण सदिखन झगड़ेमे ओझराएल रहै छल, तेकरा सभक मुँहमे हँसी छिटकैत। मनुक्खे ऐ दुनियाँक सभसँ पैघ कर्ता-धर्ता छी किने। ई विचार जेना सभक मनमे नाचि रहल छल।

भजुआक पोती, जेकर मात्रिक दरभंगा छिऐ आ ओतै बेसी काल रहबो करैए, हाइ स्कूलमे पढ़बो करैए, ओकर संस्कार आ काज करैक ढंग देखि सुबुध आ हीरानन्द, दुनू गोरे आँखिए-क इशारामे गप करए लगला। इशारेमे सुबुध हीरानन्दकेँ कहलखिन- “जँ मनुक्खकेँ नीक वातावरण भेटै तँ ओ किछु कऽ सकैए, चाहे ओकर जन्म केहनो गिरल परिवारमे किएक ने भेल होइ।”

सुबुधक बात सुनि हीरानन्द कहलखिन-

“ई सभ ढोंग छी जे लोक कहैए जे पूर्व जन्मक कर्मक फल लोक ऐ जन्ममे पबैए। हँ, जँ एकरा ऐ रूपेँ मानल जाए जे अही जन्मक पूर्व पक्षपर पछातिक जिनगी निर्भर करैए, तखन एक-तरहक विचार हएत। देखियौ जे यएह बच्चिया, भजुआक पोती केतेक बेवहारिक अछि। अही परिवारमे तँ एकरो जन्म भेल छै मुदा अगुआएल इलाका आ अगुआएल परिवारमे रहने केहेन अगुआएल अछि। की पैघ घरक बेटीसँ कम अछि?”

चूड़ा, दही, चिन्नी, केरा, अचार, डलना तरकारीक संग पाँचटा मिठाइ सेहो जलखैमे आएल। चारू गोरे भरि मन खेलैन। जलखैये केलाक बाद सभकियो अस-बीस करए लगला। हाथ धोइकऽ रामाकान्त बिछानेपर ओंघरा गेला। मुदा गप-सप्प करै दुआरे सुबुध, हीरानन्द आ शशिशेखर कुरसीए पर बैसल रहला। एम्हर सभ समांग भज्जुओ जलखै कऽ सरियाती जकाँ बैसल छल। सुबुध पुछलखिन-

“जखन एते समांग छह, तखन माल-जाल किए ने पोसने छह?”

नबो समांगमे झोलिया सभसँ होशगर। अपनो सभ समांग झोलियाकेँ गारजन बुझैत। सुबुधक सवालक उत्तर झोलिया दैत बाजल-

“मास्सैब, अखन तक हमरा सभक परिवारमे सुगर पोसल जाइत

रहल अछि। मुदा सुगर सिरिफ खाइक जानवर छी। आन काज तँ ओकरासँ होइ नइ छइ। ने हर जोतल जाइ छै आ ने दूध होइ छइ। छोट जानवरक दुआरे गाड़ियो नहियेँ जोतल जेतइ। जेकरा नूनो-रोटी नै भेटै छै ओ मौसु केतए-सँ खाएत। तैयो हमसभ पोसै छी। अप्पन पोसल रहैए तँए पाबैन-तिहारमे कहियो काल खाइयो लइ छी। खेनिहारक कमी दुआरे नेपाल जा-जा बेचै छेलौं। नेपालमे अपना ऐठामसँ बेसी लोक खाइए। किएक तँ सुगरक मौसु खस्सी-बकरीसँ बेसी गरम होइ छइ। अपना ऐठामक मौसम सेहो गरम अछि। सुगर मुख्यतः ठण्ढ इलाकाक खेनाइ छी। मुदा तैयो सुग्गरे पोसै छेलौं, किएक तँ गाए-महींस जँ पोसबो करितौं तँ हमरा सभक दूध के कीनैत?"

झोलियाक बात सुनि सुबुध पुछलखिन- "सेहो तँ नै देखै छिअ?"

झोलिया बाजल- "पहिने जेरक-जेर सुगर रहै छेलए। पोसैयोमे असान होइ छेलए। एक्के गोरेकेँ बरदेलासँ साए-पचास सुगर पला जाइए। भोरे किछु खा कऽ सुगरकेँ खोबहारीसँ निकालि चरबैले चलि जाइ छेलौं। घरपर खुअबै-पिअबैक कोनो जरूरते नहि। साल भरि पोसै छेलौं आ सालमे एकबेर नेपाल लऽ जा बेचि लइ छेलौं। पौंरुकाँ साल डेढ़ साए सुगर लऽ कऽ बाउओ आ कक्को नेपाल गेल। ओइठीम मंगल दिन-के हाट लगै छइ। ओइ हाटमे सभसँ बेसी सुगर बीकै छइ। बड़का-बड़का पैकारसभ ओइ हाटमे रहैए। हाटक एक भागमे हमरो सुगर छल। एक भाग बाउ बैसल आ दोसर भाग काका। एकटा पैकार पान-सात गोरेक संग आएल। दाम-दीगर हुअ लगलइ। दाम पटि गेलइ। सभ सुगरक गिनती करिकऽ, एकटा पैकार रहल आ बाँकी गोरे सुगर हाँकिकऽ विदा भेल। ओ पैकार हमरा बाउओ आ कक्कोकेँ कहलक जे चलू पहिने किछु खा-पी लिअ। हमरो बड़ भूख लगल अछि। एकटा दोकानमे तीनू गोरे गेल। जलखै करए लगल। जलखैमे किछु मिला देने छेलइ। खाइते-खाइते दुनू गोरेकेँ निशाँ लगि गेलइ। लटुआ कऽ दुनू गोरे दोकानेमे खसि पड़ल। तैबीच की भेलै से बुझबे ने केलक। दोसर दिन नीन टुटलै तँ ने ओ पैकार आ ने दोकान। किएक तँ दोकान हाटे-हाटे लगैत रहइ। दुनू भाँइ कानैत-खिजैत विदा भेल। ने संगमे एकोटा पाइ आ ने खाइक कोनो वस्तु। भूखे लहालोठ भेल कहुना-कहुना कऽ डगमारा आएल। डगमारा अबैत-अबैत दुनू भाँइ बेहोश भऽ गेल। डगमारामे हम्मर एकटा कुटुम अछि। दुनू भाँइक दशा देखि ओ कुटुम गुम्म भऽ गेला। किछु फुरबे नै

करैन। बड़ीकालक बाद दुनू भाँइकेँ होश भेलइ। होश अबिते दुनू भाँइ पानि पीलक, जखन कनी मन नीक भेलै तँ नहाएल। नहाकऽ खेलक। खा कऽ सूतल। सुतिकऽ उठलाक बाद आरो मन नीक भेलइ। दू दिन औतै रहल। तेसर दिन गाम आएल। ओइ दिनसँ सुगर उपैट गेल।"

अचम्भित सुबुध पुछलखिन- "अपना घरमे रुपैआ-पैसा नै छह?"

झोलिया बाजल-

"थोड़बे रुपैआ अछि जे बाबा बाउकेँ देने रहै आ कहने रहै जे जब हम मरब तँ ऐ रुपैआसँ भोज करिहेँ। रुपैआ गनल नइ अछि। बाँसक चोंगामे, सुगरक खोबहारीमे राखल अछि।"

हलचलाइत रामाकान्त कहलखिन-

"नेने आबह तँ। देखिऐ केते रुपैआ छह?"

सातो चोंगा भजुआ सुगरक खोबहारीसँ निकालि रामाकान्तक आगूमे आनिकऽ रखि देलकैन। फोंकगरहा बाँसक पोरक चोंगा, एक भाग गिरहेसँ बन्न आ दोसर भागमे कसिकऽ लत्ता कोंचने। सातो चोंगाक लत्ता निकालि-निकालि रामाकान्तक आगूमे रुपैआ उझैल देलकैन। एकटा रुपैआ उठा रामाकान्त निहारिकऽ देखलैन तँ बुझि गेला जे ई चानीक रुपैआ छी। रुपैआक ढेरीपर सभ अप्पन-अप्पन आँखि गड़ौने। रामाकान्त हीरानन्दकेँ कहलखिन-

"मास्सैब, ऐ रुपैआकेँ गनियौ तँ।"

कुरसीपर सँ उठि हीरानन्द रुपैआ लग आबि गनए लगला। सातो चोंगा मिला सात साए चानीक रुपैआ छल। सात साए चानीक रुपैआ सुनि सुबुध मने-मन हिसाब जोड़ए लगला जे एक रुपैआक कीमत पचहत्तैर रुपैआ होइए। एक साएसँ पचहत्तैर साए भेल। सात साएसँ बाबन हजार पाँच साए हएत। अगर एक जोड़ बरद किनत तँ पाँच हजार लगतै। एकटा बोरिंग-दमकल लेत तँ पनरह हजारमे भऽ जेतइ। जँ तीन नम्बर ईंटा लऽ कऽ ओकरा गिलेबापर जोड़ि, ऊपरमे एसबेस्टस दऽ कऽ सात कोठरीक घर बनौत तँ पच्चीस-तीस हजारमे भऽ जेतइ। अपनो सभ समांग कमाइते अछि आ सात बीघा खेतोक उपजा हेतइ। साले भरिमे बढ़ियाँ किसान-परिवार बनि जाएत। जखन कि अछैते पूजीए लल्ल अछि! सभ कथुक दिक्कत

छै..! विचित्र स्थिति सुबुधक मनमे उठि गेलैन। एक नजैरसँ देखैथ तँ खुशहाल परिवार बुझि पड़ैन आ दोसर दिस देखैथ तँ ने रहैले घर आ ने खाइ-पीबैक समुचित उपए..!

मुदा एकटा गुण भजुआक परिवारमे सुबुध जरूर देखलैन, आन गामक डोम जकाँ ताड़ी-दारूक चलैन ऐ परिवारमे नइ अछि। सिरिफ बुझै आ बुझबैक जरूरत अछि।

नमहर साँस छोड़ैत सुबुध भजुओ आ भजुआक सभ समांगोकेँ कहए लगलखिन- "भजु भाय, हमसभ समाजकेँ हँसैत देखए चाहै छी, कनैत नहि। तँए केकरो अधला होइ से नहि सोचै छी। सभक नीक होइ, सभक परिवार हँसी-खुशीसँ चलैत रहइ। सभक बेटा-बेटीकेँ पढ़ै-लिखै आ रहैक नीक घर होइ, दवाइ-दारू दुआरे कियो मरए नहि, तँए हम कहब जे ऐ रुपैआकेँ रास्तासँ खर्च करू। ओना, बाबू श्राद्धक भोज-ले कहने छैथ, सेहो थोड़-थाड़ कऽ लेब, जँ एते दिन नै केलौं तँ किछु दिन आरो टारू। पहिने घर, बरद आ बोरिंगमे खरच करू तखन जे उपजा बाड़ी हएत तँ भोजो कए लेब।"

सुबुधक विचारक समर्थन करैत रामाकान्त कहलखिन-

"भज्जु, बड़ सुन्दर विचार देलखुन हेन सुबुध। जिनगीकेँ बुझह जे जिनगी केकरा कहै छै आ केना बनतै। से जाधैर नै सिखबह ताधैर अहिना वौआइत रहि जेबह।"

भजुआ तँ चुप्पे रहल, मुदा झोलिया टपाक-दे बाजल-

"बाबा जे कहलैन ओ गिरह बान्हि लेलौं। अहाँसभ हमरो छोट भाए बुझू। जाबे हमर परिवार रहत आ हमसभ रहब, ताबे अहाँ सभक संगे-संग चलैत रहब।"

झोलियाक विचार सुनि हीरानन्द खुशीसँ झूमि उठला। हँसैत बजला-

"भज्जु भाय, अहाँ तँ आब बुढ़ भेलौं तँए नवका काज दिस अहाँक नजैर नहियोँ जाएत, मुदा बेटा-भातीज सभ जुआन अछि, नव काज दिस बढ़ए दियौ। जाधैर लोक समैयक हिसाबसँ नव काज दिस नहि बढ़त ताधैर समैयक संग नै चलि पौत। नहि तँ बाढ़िक पानि जकाँ समय आगू बढ़ैत जाएत आ खढ़-पात जकाँ मनुक्ख आरा लागि-लागि कात होइत जाएत।

तँए समयकेँ पकैड़ कऽ चलैक कोशिश करू। आब अपनो सभ भाँइ मिलाकऽ सात बीघा खेत भेल। सात बीघा खेतबला बढ़ियाँ गिरहस्त तखने बनि सकैए जखन ओ खेती करैक सभ जोगार कऽ लिअए। पानिक बिना जजाति नै उपैज सकैए। तहिना बरदोक जरूरी अछि। खेतक महत्व तँ तखने हएत जखन ओकरा उपजबैक सभ जोगार कऽ लेब। बहुत रास रुपैआ अछि, ऐ रुपैआक उपयोग जिनगी लेल करू।"

गप-सप्प चलिते छल कि हहाएल-फुहाएल डॉक्टर महेन्द्र आ बौएलाल पहुँच गेला।

महंथ जकाँ रामाकान्त ओछाइनपर पँजरा तरमे सिरमा देने पड़ल रहैथ। महेन्द्रकेँ देखिते सभ अचम्भित भऽ गेला। महेन्द्र आ बौएलाल सोझे रामाकान्त लग पहुँच गोड़ लगलकैन। महेन्द्रकेँ आसिरवाद दैत रामाकान्त बजला-

"ऐठाम किएक एलह। कनीए कालक बाद तँ हमहूँ सभ ऐबे करितौं। गाड़ीक झमारल छह, पहिने नहैतह-खैतह आराम करितह। हम कि केतौ पड़ाएल जाइ छेलौं जे भेँट नै होइतियह"

महेन्द्र डॉक्टरक नजैरसँ चुपचाप पिताकेँ देखि रहल छला। पिताकेँ देखि मने-मन अपसोच करए लगला जे गलत समाचार पहुँचल। मुदा किछु बजला नहि। तैबीच महेन्द्र आ बौएलाल दिस इशारा करैत भजुआ, झोलियाकेँ कहलक-

"बौआ, पहिने दुनू गोरेकेँ खुआबह।"

महेन्द्रो आ बौएलालोकेँ खुअबैक ओरियान झोलिया करए लगल। ओरियान तँ रहबे करइ। लगले परैस दुनू गोरेकेँ खुऔलैन। दुनू गोरे खा कऽ घर दिस विदा भेला। पाछूसँ कुशेसरी महेन्द्रकेँ शोर पाड़ि कहलकैन-

"चाचाजी, पान-सुपारी लऽ लिअ।"

कुशेसरीक आग्रह सुनि दुनू गोरे रस्तेपर ठाढ़ भऽ गेला। झटैक कऽ कुशेसरी, तस्तरीमे पान-सुपारी नेने, लगमे पहुँचलैन। लगमे पहुँच अपना हाथे पान सुपारी नै दऽ तस्तरीए महेन्द्रक आगूमे बढ़ौलकैन। पान सुपारी देखि महेन्द्र बजला- "बुच्ची, हम तँ पान नै खाइ छी। अगर घरमे इलायची आ सिगरेट हुअ तँ नेने आबह।"

कुशेसरी चोट्टे घुमिकऽ आँगन आएल। आँगन आबि सिगरेटक पौकेट, सलाइ आ इलायची नेने पहुँचल। उत्तर-मुहेँ घुमि महेन्द्र ओरियाकऽ सिगरेट लगौलैन जे कहीं पिताजी ने देखि लैथ। दुनू गोरे गप-सप्प करैत विदा भेला। कुशेसरीकेँ देखि महेन्द्र अचम्भित नै भेला। किएक तँ मिथिलाक गाम-ले कुशेसरी अचम्भित लड़की भऽ सकै छेली मुदा मद्रास-ले नहि।

महेन्द्रकेँ गामसँ एकटा गुमनाम पत्र गेल रहैन। ओइमे लिखल छेलै जे अहाँक पिताजी बताह भऽ गेला! अन्ट-सन्ट काज गाममे कऽ रहल छैथ! तँए समय रहैत हुनका इलाज नइ करेबैन तँ निच्छछ पागल भऽ जेता..!

पत्र पढ़िते महेन्द्र घर अबैक विचार केलैन। भाए रवीन्द्रसँ विचारि लेब जरूरी बुझि महेन्द्र एक दिन रूकि गेला। दोसर दिन महेन्द्रक भाबो सुजाता, महेन्द्र, बौएलाल आ सुमित्रा, चारू गोरे गाड़ी पकैड़ गाम विदा भेला।

गाम अबिते महेन्द्र पिताकेँ नै देखि मने-मन आरो सशंकित भऽ गेला। माएकेँ पिताक सम्बन्धमे पुछलैन। माएकेँ मात्र एतबे पुछलैन जे 'बाबू केतए छैथ?'। माए सभकिछु कहलखिन। एटैची रखि महेन्द्र बौएलालक संग सोझे भजुआ ऐठाम चलला। डॉक्टर सुजाता घरेपर रहि गेली। गामक परम्पराकेँ बुझबैत साउस सुजाताकेँ मनाही कए देलखिन जे अहाँ नै जाउ।

चारि बाजि गेल। खाइक इच्छा ने रामाकान्तकेँ आ ने आरो किनको रहैन। भानस भऽ गेल। जेते बिलम्म हएत ओते वस्तु सुआदहीन बनत। तँए भजुआ चाहै छल जे गरम-गरम खेनाइ सभकियो खाइथ। मुदा भूख नै रहने चारू गोरे टाल-मटोल करए लगला। असमंजसमे भजुआ रामाकान्तकेँ कहलकैन- "काका, भानस भऽ गेल अछि। जएह मन मानए सएह...।"

ढकार करैत रामाकान्त उत्तर देलखिन-

"जलखैये तेतेक कऽ लेलौं जे एक्कोरत्ती जगह पेटमे नइ अछि। अखनो मन असबिस कऽ रहल अछि। हँ, तखन चलह मुँह छुता ली।"

भजुआ कहलकैन- "जेतबे मन मानए तेतबे...।"

चारू गोरे उठिकऽ आँगन गेला। सौंसे आँगन चिक्कैन माटिसँ टटके नीपल, तँए माटिक सुगन्धसँ अँगना महमह करैत। आँगन तँ छोटे मुदा बेसी लोकक दुआरे पैघ बुझि पड़इ। कम्मल चौपेत कऽ बिछौल छल। थारी, लोटा, बाटी, गिलास चमचम करैत। लगै जेना आइये कीनिकऽ अनलक हेन।

भोजनक विन्यास देखि रामाकान्त क्षुब्ध भऽ गेला। की पवित्रता! की सुआद! मने-मन रामाकान्त सोचैथ जे अगर खूब भूख लागल रहैत तँ खूब खइतौं। मुदा भूखे ने अछि तँ खाएब केना।

भोजन कऽ चारू गोरे विदा हुअ लगला। विदा होइसँ पहिने झोलिया रंगल चँगेरामे चारि जोड़ धोती आनि चारू गोरेक आगूमे रखि देलकैन। धोती देखि रामाकान्त कहलखिन-

"झोली, तूँ सभ गरीब छह। अपने-ले घोती रखि लएह। तूँ पहिरौलह हम पहिरलौं, भऽ गेलइ।" ❑

तेरहम पड़ाव

डॉ. महेन्द्र मद्रासमे चारि बजे भोरे उठि जाइ छला आ अप्पन जिनगीक लीलामे लगि जाइ छला मुदा गाममे पाँचो बजेमे महेन्द्रकेँ कड़गरे नीन पकड़ने रहलैन। एना किए भेलैन? रामाकान्त भिनसरे उठिकऽ महेन्द्रक कोठरीमे जा कऽ देखलखिन तँ ओ ठर्र पाड़ैत घोर नीनमे सूतल छला। नै उठेलखिन। मनमे एलैन जे बापक राजमे बेटा अहिना निसचिन्त भऽ रहैए। लोटा लऽ कलम दिस विदा भऽ भेला।

छअ बजे भिनसरमे महेन्द्र जगला। जगिते मनमे प्रश्न उठलैन एते कड़गर नीनक की कारण? की मिथिलाक माटि, पानि, हवाक गुणक प्रभाव छी वा काजक कमी रहने एना भेल? अही गुनधुनमे महेन्द्र छला कि तैबीच जुगेसर चाह लऽ कऽ पहुँचलैन।

एम्हर रामाकान्त टहैल-बुलि कऽ दिशा-मैदानसँ होइत टोलक रास्ता पकैड़ घुमला। टोलमे प्रवेश करिते, रास्ता कातेक चापाकलपर मुँह-हाथ धुअ लगला।

कलक बगलेमे मंगलक घर। रामाकान्तकेँ मंगल देखि चुपचाप अँगनासँ बेंतबला कुरसी आ टेबुल आनि डेढ़ियापर लगौलक। मुँह-हाथ धोइकऽ रामाकान्त अपना घर दिस चलला कि रास्ता कटैत देखि मंगल टोकलकैन-

“काका, कनी एक रत्ती अहूठाम बैसियौ।”

मंगलक बातकेँ रामाकान्त कटलैन नहि, मुस्कियाइत आबि कुरसीपर बैसला। कुरसीपर बैसते मंगलकेँ कहलखिन-

“बड़ सुन्नर कुरसी छह! कहिया बनौलह?”

“आठम दिन छौड़ा दिल्लीसँ आएल। वएह अनलक।”

मंगलक बेटा रबिया, अँगनामे चाह बनबैत रहए। चाह बना तस्तरीमे बिस्कुट, नमकीन भुजिया आ चाहक गिलास नेने अबि रामाकान्तक आगूमे

टेबुलपर रखि, गोड़ लागि कहलकैन- “बाबा, कनी चाह पीब लियौ।”

रबियाक बात सुनि रामाकान्त सोचए लगला जे यएह मंगला छी जे बिहाड़िमे जखन घर उधिया गेल रहै तँ अपनो सबतूर आ मालो-जालकेँ रहैले घरक समस्या भऽ गेल रहइ। अन्तमे अपने ऐठाम सात दिन रहल छल। मुदा आइ वएह मंगला छी जे केहेन सुन्दर घरो बना लेलक अछि आ कुरसियो टेबुल केतेक नीक छइ। वाह..!

मुस्कियाइत पुछलखिन-

“बेटा केतए नोकरी करै छह, मंगल?”

“दिल्लीमे काका। बड़ बढ़ियासँ रहैए।।”

रामाकान्त भुजिया-बिस्कुट खा पानि पीब चाह पीबैत रहैथ कि तैबीच रबिया आँगन जा जर्मनी मेड एकटा पौकेट रेडियो नेने आबि रामाकान्तक आगूमे रखैत कहलकैन- “बाबा, ई अहींले अनलौं हेन।”

रेडियो देखि रामाकान्त बजला-

“ऐ सभक सख आब ऐ बुढ़ाड़ीमे की करब। रखि ले। तूँ सभ अखन जुआन-जहान छँह, छजतौ। हम लऽ कऽ की करब।”

दहिना हाथसँ रेडियो आ बामा हाथे रामाकान्तक गट्टा पकैड़ हाथमे दैत रबिया कहलकैन-

“बाबा, अहींले किनने आएल छी।”

रामाकान्त चाह पीब, कुरसीपर सँ उठि घर दिसक रास्ता पकड़लैन। आगू-आगू रामाकान्त पाछू-पाछू मंगल हाथमे रेडियो नेने घरपर तक चलि आएल।

एक बाँस सुरुज ऊपर उठि गेल छल। महेन्द्र दलानक ओसारपर बैस, ब्रश करैत रहैथ। तखने पान-सात टा बच्चिया माथपर पथिया आ हाथमे लोटा नेने पहुँचल।

डॉ. महेन्द्र ब्रशो करैत रहैथ आ अबैत-जाइत सभकेँ चुपचाप देखियो रहल छला।

लोटा पथिया ओसारपर रखि एकटा बच्चिया महेन्द्रक लगमे आबि पुछलकैन- “बाबा कहाँ छथिन?”

बच्चियाक प्रश्नक उत्तर महेन्द्र नै देलखिन, किएक तँ नइ बुझल रहैन। सभक पथिया आ लोटाकेँ निहारि-निहारि देखए लगला। कोनो पथियामे कोबी, कोनोमे टमाटर, कोनोमे करैला तँ कोनोमे भँट्टा, तैसंग लोटामे दूध सेहो छल। देखि महेन्द्र सोचए लगला जे ई की भऽ रहल अछि? किए ई सभ ऐठाम अनलकहेँ..?

महेन्द्र गुनधुनमे पड़ि गेला। कोनो अर्थे ने लगैन। मन घुरियाए लगलैन। कनीकालक बाद पुछलखिन- "बौआ, ई सभ किए अनलह?"

एकटा ढेरबा बच्चिया, जे बजैमे चड़फड़, कहलकैन-

"बाबा अप्पन सभ खेत हमरे सभकेँ दऽ देलखिन। अपना-ले किछु ने रखलखिन तँ खेथिन की? तँए..!"

बच्चियाक बात सुनि महेन्द्र गुम्म भऽ गेला। सोचए लगला जे हम बेटा छिऐन। हुनकर चिन्ता हमरा हेबा चाही। सुआइत कहल गेल अछि जे 'जेहेन करब तेहेन पएब..!'

मुँहपर हाथ नेने महेन्द्रक मनमे उठलैन- अनेरे लोक ऐ दुनियाँकेँ अप्पन आ आन बुझैए। जेकरा-ले अहाँ करबै, ओ अहूँ-ले करबे करत। चाहे अप्पन हुअए आकि आन। सोचिते रहैथ कि पिताजीकेँ अबैत देखलैन। पिताकेँ देखिते महेन्द्र ओतएसँ उठिकऽ कुरुर करए कल दिस बढ़ि गेला।

रामाकान्तपर नजैर पड़िते सभ बच्चिया ओसारपर सँ उठि गोड़ लागए आगू बढ़ल। रामाकान्तक नजैर लोटामे दूध आ पथियामे तरकारीपर पड़लैन। सभ सामान देखि बजला- "बच्चा, एते किए अनलह। अच्छा आनियेँ लेलह तँ आँगनमे रखि आबह।"

सभ बच्चिया अप्पन-अप्पन पथिया-लोटा लऽ जा कऽ आँगनमे रखि आएल।

डॉ. महेन्द्रक अबैक जानकारी गाममे सभकेँ भऽ गेलैन। एका-एकी लोक आबि-आबि अप्पन-अप्पन रोगक इलाज करबए चाहलक। मुदा महेन्द्र तँ नियारिकऽ नै आएल छला तँए ने जाँच करैक कोनो यंत्र अनने रहैथ आ ने दवाइ। मुदा तैयो बौएलाल आ सुमित्राकेँ बजा अनैले जुगेसरकेँ कहलखिन। जुगेसर बौएलालकेँ बजबए गेल। जेते जाँच-पड़ताल करैक यंत्र, चीड़-फाड़ करैक सामान्य औजार बौएलाल आ सुमित्राकेँ कीनि देने रहथिन

ओ सभ सामान नेने दुनू गोरे पहुँचल। बौएलाल महेन्द्र लग बैसल आ सुमित्रा सुजाताक संग दरबज्जाक पाछूक ओसारपर बैसली। जनिजाति सुजाता लग जाँच करबैले जाए लगली आ पुरुख महेन्द्र लग आबए लगला।

चारिए-पाँच गोरेकेँ महेन्द्र जाँच केलैन कि तैबीच चारि-पाँच टा रोगीकेँ खाटपर लदने नेने अबैत देखलखिन। ओ सभ दोसर गामक छेलइ। खाट देखि महेन्द्रकेँ भेलैन जे भरिसक हैजा-तैजा भऽ गेलइ। ओसारपर सँ उठि महेन्द्रो आ बौएलालो निच्चाँमे ठाढ़ भऽ गेला। खाटोबला आबि गेल। सभ कुहरैत रहए। केकरो कपार फुटल तँ केकरो डेन टुटल आ केकरो मारिक चोटसँ देह फुलल।

अपना लग कोनो दवाइ महेन्द्रकेँ नै रहैन। हाँइ-हाँइ महेन्द्र बौएलालकेँ ड्रेसिंग-पलश्तरक सभ सामान आ दवाइक पुरजी बना बाजारसँ जल्दी अनैले कहलखिन। साइकिलसँ बौएलाल खूब रेसमे विदा भेल।

रामाकान्त रोगी लग आबि एकटा खाट उठौनिहारकेँ पुछलखिन-

“केना कपार फुटलै?”

डरसँ कँपैत ओ कहलकैन-

“मारिसँ कपार फुटलै।”

सुनिते रामाकान्त महेन्द्रकेँ कहलखिन-

“बौआ, सभक इलाज नीक जकाँ कऽ दहुन।”

कहि ओसारपर बिछौल बिछानपर बैस, खाट उठौनिहार सभकेँ शोर पाड़लखिन। सभकियो लगमे आबि बैसलैन। पुछलखिन-

“मारि कखन भेलह?”

“खाइ-पीबै रातिमे।”

“तब तँ खेनौं-पीनौं नै हेबह?”

“नहि।”

भूखल बुझि रामाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन-

“पहिने सभकेँ खेनाइ खुआबह।”

पनरह-बीस गोरेक जलखै तँ घरमे छेलैन नहि। जुगेसर सुमित्राकेँ शोर

पाड़ि कहलक- "बुच्ची, काकी तँ बुढ़े छैथ आ कनियाँ अनभुआरे। झब-दे बड़का बरतन चढ़ाकऽ खिचड़ी बनाबह। वेचारा सभ रौतुके भूखल अछि। हमसभ सामान जोड़िया दइ छिअह।"

जहिना जुगेसर सुमित्राकेँ कहलक तहिना सुमित्रो भानसमे जुटि गेल। सुजाता सेहो बीच-बीचमे आबिकऽ देखैत रहथिन।

जहिना बौएलाल निछोह साइकिल हाँकि बाजार गेल तहिना लगले सभ सामान कीनि चलियो आएल। बौएलालकेँ अबिते महेन्द्रो आ बौएलालो सभ रोगीकेँ पहिने दर्दक सुइया देलखिन।

सूइ पड़िते कनीए कालक बाद कुहरनाइ बन्न केलक।

खिच्चड़ि आ अल्लुक सन्ना बना सुजातो आ सुमित्रो रोगी लग एली। मन शान्त होइते, सभक खून लगलाहा कपड़ा बदैल, खिच्चड़ि खुआ इलाज शुरू भेल। तीन गोरेकेँ कपार फुटल रहै आ दू गोरेकेँ डेन टुटल रहइ। सुजाता आ सुमित्रा दुनू गोरेक पलश्तर करए लगली। महेन्द्र कपारमे स्टीच करैत रहैथ। बौएलाल दौड़-बड़हामे लागल छल। कखनो किछु अनैत तँ कखनो किछु।

दू घन्टाक बाद सभकियो निचेन भेला। तखन रामाकान्त पुछलखिन-

"मारि किए भेलह?"

नोर पोछैत जोखन कहए लगलैन-

"मकशूदनक बेटी सितिया भाँटा बेचए हाट गेल रहइ। सतरह-अठारह बर्खक उमेर हेतइ। नमगर कद। दोहरा देह। चाकर मुँह। गोल आँखि ओकर छइ। पौंरुके साल दुरागमन भेलइ। ओना, हाट ओकर माए करै छै मुदा पान-सात दिनसँ ओ दुखित अछि। डेढ़ कट्ठा खेतमे भाँटा केने अछि। खूब सहजोर फड़लो छइ। भाँटाकेँ जुआइ दुआरे सितिया छाँटि-छाँटि कऽ नमहरका भाँटा तोड़लक। एक छिट्टा भेलइ। भँट्टोकेँ बेचब आ माए-ले दवाइयो कीनब जरूरी छेलइ। दवाइक पुरजी साड़ीक खूटमे बान्हि लेलक जे घुमैत कालमे दवाइ किनने आएब। हाटमे भँट्टा बेचि दोकानमे दवाइ कीनिकऽ असगरे विदा भेल। गोसाँइ डुमि गेल रहइ। खूब अन्हार तँ नहि, मुदा झलफल भऽ गेल छेलइ। धीरे-धीरे रास्तो चलनिहार पतराए लगल छल। हाट गेनिहार तँ साफे बन्न भऽ गेल छेलइ। मुदा हाटसँ घुमनिहार गोटे-गोटे

रहबे करए। पाँतरमे जखन सितिया आएल तँ पाछूसँ ललबा आ गुलेतिया सेहो साइकिलसँ अबै छल। गुलेतिया ललबाक नोकर छी। ललबा बापक असगर बेटा अछि, बीस-पच्चीस बीघा खेत छइ। बच्चेसँ बहसल तँ अछिए। दुनू गोरे दारू पीब अन्ट-सन्ट बजैत घर दिस अबैत रहए। जखन दुनू गोरे सितियाक लगमे आएल तँ ललबा बाजल-

"गुलेती, शिकार फँसलौ!"

ललबाक बात सुनियोँ कऽ सितिया किछु नै बाजल। मुदा मनमे आगि सुनगए लगलइ। आरो डेग नमहर केलक। आगू बढ़ि ललबा साइकिलसँ उतैर, रास्ताकेँ घेर साइकिल ठाढ़ कऽ देलकइ। साइकिल ठाढ़ कए जेबीसँ सिगरेट आ सलाइ निकालि, लगा कऽ पीबए लगल। सितियाक मनमे शंका भेलै मुदा डेराएल नहि। साइकिल लग आबि रास्ताक बगल देने आगू टपि गेल। आगूमे ललबो आ गुलेतियो ठाढ़ भऽ सिगरेटो पीबैत आ चढ़ा-उतरीक गप्पो-सप्प करैत फेर आगू बढ़ल। मुँहमे सिगरेट रखि ललबा साए रुपैआक नोट अप्पन ऊपरका जेबीसँ निकालि सितिया दिस बढ़ौलक। रुपैआ देखि सितियाक देह आगिसँ लह-लह करए लगलइ। मुदा ने किछु बाजल आ ने रूकल। लफरल आगू बढ़ैत रहल। सितियाकेँ आगू बढ़ैत देखि ललबो पाछूसँ हाथमे रुपैआ नेने बढ़ल। दुनू गोरेकेँ पछुअबैत देखि सितिया ठाढ़ भऽ गेल। ओ अप्पन माथ परक छिट्टाकेँ दहिना हाथे आरो कसियाकऽ पकैड़ सोचलक जे छिट्टेसँ दुनूकेँ चानिपर मारब। भीतरे-भीतरे तामस सितियाकेँ उठले रहइ। तैबीच ललबा दहिना हाथे नोट सितिया दिस फेर बढ़ौलक। लगमे ललबाकेँ देखि, मौका पाबि सितिया तेना कऽ रुपैआपर थूक फेंकलक जे रुपैआपर तँ कम्मे मुदा ललबाक मुँहपर बेसी पड़लै। मुँहपर थूक पड़िते ललबा सितियाक बाँहि पकैड़ खिंचए चाहलक। पहिनहिसँ सितिया छिट्टाकेँ पकैड़ अजमेने रहबे कहए। धाँइ-धाँइ दू छिट्टा ललबाकेँ लगा देलक। दुनू गोरे दुनू बाँहि पकैड़ सितियाकेँ घिंचलक। छिट्टा नेनहि सितिया रास्ताक निच्चाँ, खेतमे खसि पड़ल। खेतमे खसिते हिम्मत करिकऽ उठि दहिना तरहत्थीक मुक्का बान्हि, मुक्को आ दहिना पएरो अनधुन चलबए लगल। मारिक डरसँ गुलेतिया कात भऽ गेल। मुदा ललबा नै मानलक। ओहो अनधुन मुक्का चलबए लगल। गुलेतियाकेँ कातमे देखि सितियोक जोश बढ़लै। ललबा दारू पीनहि रहए, तिलमिलाकऽ खसल। जहाँ ललबा खसल आकि सितिया एँड़े-

एँड़ मारए लगल। तही-बीच हाटसँ तरकारी बेचनिहारिक जेर अबैत रहइ। तरकारी बेचनिहारिक चाल-चुल पाबि सितियाक जोश आरो बढ़ि गेल। एक तँ समरथाइक शक्ति सितियाक देहमे दोसर, इज्जत बँचबैक प्रश्न, बाघ जकाँ सितिया मारैत-मारैत ललबाकेँ बेहोश कऽ देलक। ताबे तरकारियो बेचनिहारि सभ लगमे आबि गेली। सितियाक काली रूप देखि हसीना पुछलकै- "बहिन, की भेलौ?"

सितिया बाजल-

"अखन किछु ने पुछ। ऐ छुतहरबाक खून पीब लेबइ।"

बजबो करैत आ अनधुन एँड़ो देहपर बरिसबैत रहल। चारि गोरे सितियाकेँ पकैड़ कात करए चाहलैन। मुदा चारूकेँ झमारि सितिया पुनः आबिकऽ दस लात ललबाकेँ फेर मारलक। फेर चारू गोरे हसीना, जुलेखा, रेहना आ खातून घेर सितियाकेँ पँजियाकऽ पकैड़ घिंचने-तिरने विदा भेली। अबैत-अबैत जखन गामक कात आएल कि सितिया फेर चारू गोरेकेँ झमारि, अप्पन डेन छोड़ा ललबाकेँ मारए दौगल। मुदा रेहना आ खातून दौग कऽ सितियाकेँ आगूसँ घेरलक। हसीना आ जुलेखा सेहो दौग कऽ आबि पकड़लक। सितियाक मन क्रोधसँ उफनैत रहइ। मनमे होइ जे ललबाक खून पीने बिना नै छोड़ब, चाहे फाँसीपर किए ने चढ़ऽ पड़ए। चारू गोरे सितियाकेँ पकड़ने घरपर पहुँचल। सौंसे गाम घटनाक समाचार बिहाड़ि जकाँ पसैर गेल। गाम डोल-माल करए लगल। तनावक वातावरण बनि गेल। राति भारी भऽ गेल छल। गामक बुढ़बा चोट्टासँ लऽ कऽ नवका चोट्टा धरिक चलती बढ़ि गेलइ।

..तैबीच चारि गोरे ललबाकेँ खाटपर टाँगि सेहो अनलक। ललबाक बेहोशी तँ टुटि गेलै मुदा कुहरनी धेनहि रहइ। ललबाक पितियौत भाए डॉक्टरकेँ बजा ललबाक इलाज करबए लगल। स्लाइन लगा डॉक्टर बगलमे बैस पानिक गति देखैत रहए। तैबीच ललबाक पितियौत भाए गाममे लाठीक संगोर करए लगल। जेते गामक मुँहगर-कन्हगर लोकसभ छल से सभ ललबाक पक्ष लेलक। अप्पन मजगूत पक्ष देखि ललबाक बाप बाजल-

"जखन इज्जत चैलिए गेल तखन सम्पैतिए रखिकऽ की करब।"

'दुर्गा-महरानी की जय' कहि पनरह-बीसटा गामक हुरदंगहा, लाठी

लऽ सितिया ऐठाम विदा भेल। रास्तोमे सभ जय-जयकार करैत रहए।

मकशूदनक टोल मात्र बारह परिवारक। गरीब घरक टोल तँए समांगो सभ मरदुआरे। मुदा तैयो जेतेक पुरुख छल ओहो सभ, लाठी लए-लए गोलियाकऽ बैस विचारलक जे इज्जतक खातिर मरि जेनाइ धर्म छी, तँए जे हेतै से हेतै मुदा पाछू नइ हटब। दोसर दिस, टोलक सभ जनिजाति सेहो तैयार होइत निर्णय केलीह जे जाधैर तँ पुरुख ठाढ़ रहत ताधैर अपनासभ कातमे रहब मुदा पुरुखकेँ खसिते अपनो सभ लाठी उठाएब। एक तँ सितियाक देहमे आगि लगले रहै, ई बात सुनिते आरो धधैक गेलइ। बाजल-

"जेते जुआन बेटी छँह आ जुआन पुतोहु, सभ अप्पन-अप्पन साड़ीकेँ कसिकऽ बान्हि ले आ माथोमे साड़ीए-क नमहर मुरेठा कसिकऽ बान्हि ले, जइसँ कपार नै फुटौ। बुढ़िया सभकेँ छोड़ि देही। मड़ुआ बीआ पटबैबला जे पटै घरमे छौ से निकालि कऽ एकठाम सभ रख आ देखैत रही जे की सभ होइ छइ। जहिना सभ बहिन मिलि मरब तहिना संगे संगे सभ बहिन जनमो लेब।"

टोलक जेतेक छोट बच्चा छल, सभकेँ घरक बुढ़-बुढ़ानुस लए-लए टोलसँ हटि गाछीमे चलि गेला। दोसर हँसेरी टोलक लग आबि बोली देलक। बोली सुनि सितियाकेँ होइ जे असगरे सभसँ आगू जा हँसेरीकेँ रोकी। मुदा लड़ाइमे अनुशासन आ निर्णयक महत्व बढ़ि जाइत अछि किने। तँए सितिया आगू नहि बढ़ि ठाढ़े रहल। टोलक लोक, अपना तागत भरि हँसेरीकेँ रोकलक। अनधुन लाठी दुनू दिससँ चललै। पाँच गोरे घाइलो भेल मुदा हँसेरी घुमल नहि, बल्कि धन आ इज्जत लूटैक खियालसँ आगू बढ़ैत रहल। अप्पन समांगकेँ खसल आ हँसेरीकेँ आगू बढ़ैत देखि मुरेठा बन्हने आगू-आगू सितिया आ तइ पाछू टोलक सभ स्त्रीगण सेहो पटै लऽ कऽ हँसेरीकेँ रोकलक। की बिजलोका चमकै छै, तहिना गामक बेटी अप्पन चमकी देखौलैन! वाह रे मिथिलाक धी..! मिथिला सिरिफ कर्म भूमिए आ धर्म भूमिए टा नहि, वीर भूमि सेहो छी। चारि आदमीक कपार असगरे सितिया ढाहलक। चारू खसलै। खूनक रेत चललै। हँसेरीमे हूर भेलइ। सभ पाछू-मुहेँ पड़ाएल। ई सभ थोड़ेक दूर धरि रेवाइड़ कऽ घुमि गेल। अप्पन सभ समांगकेँ उठा-उठा सभ अनलक। मुदा दोसर दिसक लोककेँ अप्पन समांग अनैक साहसे नइ होइ छेलइ। होइ जे कहीं हमहूँ सभ अनैले जाइ आ हमरो

सभकेँ ओहिना हुअए। बड़ीकालक बाद चोराकऽ अपना समांग सभकेँ ओहो सभ लऽ गेल। गाममे दुइये टा डॉक्टर। सेहो डिग्रीधारी नहि, गमैया प्रेक्टिशनर। सेहो दुनू ललबे ऐठाम रहैथ। रातिमे केतए जइतौं। दोहरा कऽ आक्रमणक डर सेहो रहए। सभ ततमतमे पड़ल रही। मुदा जेहो सभ घाइल छल, ओकरो मुँह मलिन नै भेलइ। मनमे खुशी होइत रहइ। तँए दर्दकेँ अङेजने रहए। इन्होर पानि करिकऽ सभकेँ स्त्रीगण सभ ससारए लगली, कपारक फाटल जगहमे सिन्नुर दए-दए कपड़ासँ बान्हि खून बन्न केलक। भरि राति कियो सूतल नहि। भिनसरमे डॉक्टर महेन्द्रक जानकारी भेल जे गाममे छैथ। तँए एलौं हेन।"

जोखनक बात सुनि रामाकान्त बमैक उठला। ठाढ़ भऽ जोर-जोरसँ बाजए लगला- "जदी कियो अप्पन इज्जत-आबरू बँचबैले हमरा कहत तँ हम अप्पन सभ सम्पैत ओइ पाछू फुकि देब। मुदा छोड़बै नहि। बौआ, जेते तोरा हूनर छह तइमे कोताही नै करिहक। खेनाइ-पीनाइ, दवाइ-दारू सभ कथुक मदैत कऽ दहक। फेर ऐ धरतीपर जन्म लेब। ई कर्मभूमि छिऐ। मनुक्ख ऐ धरतीपर किछु करैले अबैए। सिरिफ अपने टा नहि, आनो जे कर्मनिष्ठ अछि, ओकरो जहाँ धरि भऽ सकत मदैत करबै। जोखन, जे भऽ गेल से भऽ गेल मुदा सुनि लएह, जहिया-कहियो कोनो भीड़ पड़ह, हमरो एकबेर खोज करिहह। जाधैर घटमे प्राण अछि ताधैर जरूर मदैत करबह।"

बेर टगैत चारि टा बच्चिया अपना आदमी सभ-ले खाएक लऽ कऽ पहुँचली। एक कठौत भात बड़का डोलमे दालि आ छोटका डोलमे तरकारी लेने, तैसंग खाइ-ले केराक पात आ दूटा लोटा सेहो अनने छेली।

चारू बच्चियाकेँ देखि रामाकान्त पुछलखिन-

"बुच्ची, खाएक किए अनलह।"

रामाकान्तक बात सुनि सितिया कहलकैन-

"बाबा, हमरा सभकेँ नइ बुझल छेलए तँए अनलौं।"

"अच्छा, अनलह तँ सभकेँ पुछि लहुन जे खाएब आकि घुरौने जाएब।"

सितियाक संग रामाकान्त गप-सप्प करिते रहैथ कि बिच्चेमे जोखन कहलकैन- "काका, यएह सभ बच्चिया मारिकऽ ओइ पाटीकेँ भगौलक।"

अकचकाइत रामाकान्त बजला- "आँइ! यएह सभ छी! वाह-वाह! तोरे सभ सन-सन बेटी ऐ धरतीक मान रखि सकैए।"

बिहाड़ि जकाँ जोखनक बात, रामाकान्तक दरबज्जा आ आँगनसँ लऽ कऽ गाम धरिमे पसैर गेल जे सितिया सभ मर्दक हँसेरीकेँ अनधुन मारबो केलक, कपारो फोड़लक आ गामक सीमान धरि खिहारबो केलक।

समाचार सुनि गामक स्त्रीगण-मरद सभ उनैट कऽ ओइ बच्चिया सभकेँ देखैले आबए लगला। अजीव दृश्य बनि गेल।

श्यामा आँगनसँ सुमित्रा दिया समाद पठौलैन जे कनी ओइ बच्चिया सभकेँ अँगना पठा दियौ जे हमहूँ सभ देखब।

दरबज्जापर आबि सुमित्रा रामाकान्तकेँ कहलकैन। अँगनाक समाद सुनि रामाकान्त चारू बच्चियाकेँ कहलखिन- "बेटी, कनी आँगन जाइ जाह।"

चारू बच्चियाकेँ संग केने सुमित्रा आँगन विदा भेल। ओसारपर ओछाइन ओछा श्यामो आ सुजातो बैसल छेली। आगू-आगू सुमित्रा आ पाछू-पाछू चारू बचियो आएल।

चारू बच्चिया श्यामा आ डॉक्टर सुजाताकेँ गोड़ लगलकैन। एकाएकी गामक स्त्रीगण आ गामक बेटीसभ सेहो अँगने जा-जा सितिया सभकेँ देखए लगली। श्यामा अपने लगमे चारू बच्चियाकेँ बैसौने रहथिन। सुजाता निहारि-निहारि चारूकेँ ऊपरसँ निच्चाँ धरि, देखैत रहली। ..अजीव शक्ति चारूक चेहरामे बुझि पड़ैन। चारू बचियो आँखि उठा-उठा कखनो श्यामापर तँ कखनो गामक स्त्रीगण सभपर दइ छेली। सभक मनमे खुशी रहितो, मुहसँ हँसी नै निकलै छेलैन। जेना खुशीक पाछू अदम्य उत्साह, अदम्य साहस आ अत्यन्त जोश सभक चेहरापर नाचि रहल छल। चारूक विशेष आकर्षण सभकेँ अपना दिस घीचि रहल छल। जेहो स्त्रीगण कनी हटिकऽ ठाढ़ भऽ देखै छेली, ओहो सहैट-सहैट सितियाक लगमे आबए चाहैथ। श्यामा सुमित्राकेँ कहलखिन-

"सुमित्रा, एहेन लोककेँ आँगनमे कहिआ देखबीही, तँए बिना किछु खिऔने-पिऔने नै जाए दहुन।"

श्यामाक बात सुनि सुजाता उठिकऽ अप्पन आनल मद्रासी भुजियाक

डिब्बा, घरसँ उठेने एली। भुजियाक डिब्बा देखि सितिया बाजल- "बाबी, लगले खा कऽ विदा भेल छेलौं। एको-रत्ती खाइक छुधा नइ अछि।"

तैबीच रामाकान्त चारू गोरेकेँ बजबैले जुगेसरकेँ अँगना पठौलखिन। जुगेसर अँगना आबि सभकेँ कहलक। उठिकऽ चारू गोरे श्यामाकेँ गोड़ लागि विदा हुअ लगल। आसिरवाद दैत श्यामा कहलखिन-

"भगवान हमरो औरदा तोरे सभकेँ देथुन जे हँसैत-खेलैत जिनगी अहिना बितैत रहह।"

चारू गोरेकेँ अँगनासँ निकैलते सभकियो विदा भेल।

चारिक अमल। रौदक गरमियो कमए लगल। डॉ. महेन्द्र जोखनकेँ कहलखिन-

"ऐठाम रोगी सभकेँ रखैक जरूरत नइ अछि। घरेपर साँझ-भिनसर बौएलाल जा-जा कऽ सूइया दऽ-दऽ औत। गोटी सेहो लगातार चलबैत रहब। पनरह-बीस दिनमे पूरा ठीक भऽ जाएत।"

सभकियो विदा भेल...।

साँझूपहर, रामाकान्त आ जुगेसर दरबज्जापर बैस मद्रासेक गप-सप्प शुरू केलैन। मुस्कियाइत जुगेसर बाजल-

"काका, एकबेर आरो मद्रास चलू।"

नाक मारैत रामाकान्त बजला-

"धुर बुड़िबक! गाड़ीमे लोक मरि जाइए। ऐठाम केहेन निचेनसँ रहै छी। ओम्हर ने गाड़ी-बसमे शान्ति आ ने रस्ता-पेराक ठेकान। सड़क धऽ कऽ चलू। तहूमे सदिखन लोकेक धक्का लगैत रहत। केहेन सुन्दर अपना सभक गाम अछि जेतए रस्ताक कोन बात जे आइरे-धुरे, खेते-पथारे जेतए मन हुअए तेतए जाउ। ने गाड़ी बसक धक्काक डर आ ने पैरमे काँटी-शीशा गड़ैक चिन्ता। जेकरासँ मन हुअए तेकरासँ गप करू, कुशल-समाचार पुछि लियौ। ओइठाम तँ जेना मुँहमे बकारे नै रहए, तहिना बौक भेल रहै छेलौं।"

व्यंग्य करैत जुगेसर कहलकैन-

"केहेन ठण्ढा घरमे रहै छेलौं। ने नहाएले केतौ जाए पड़ै छेलए आ ने पर-पैखाना-ले?"

रामाकान्त- "धुर बुड़ि! ओइठाँ जँ दुइयो मास रहितौं तँ कोढ़ि भऽ जइतौं। उठैयो-बैसैयोमे आसकैते लगैत रहए। सच पुछ तँ एते दिन रहलौं मुदा ने कहियो भरि मन पानि पीलौं आ ने एक्कोबेर झाड़ि कऽ पैखाना भेल। सभदिन जेना कब्जियते बुझि पड़ए। जखने पानि मुँह लग लऽ जाइ कि मन भटैक जाइ छेलए।"

फेर मुस्कियाइत जुगेसर कहलकैन-

"अंगूरक रस पीबैमे केहेन लगैत रहए! बिसैर गेलिऐ?"

अंगूरक रस सुनि थोड़ेक असथिर होइत रामाकान्त बजला-

"लोक कहै छै जे अंगूरमे बड़ तागत छै मुदा अपना सभक जे केरा, आम, बेल, लताम इत्यादि अछि, ओते तागत अंगूरमे केतए-सँ औत। अंगुरेक शराब बनैए मुदा अपना ऐठामक भाँगक परतर करतै। अंगरेजिया शराब सनसना कऽ मगजपर चढ़ियो जाइत अछि आ लगले उतैरियो जाइए। मुदा अप्पन जे भाँग अछि ओ रइसी निशाँ छी। ने अपराध करैले सनकी चढ़ौत आ ने एको मिसिया चिन्ता आबए देत।"

रामाकान्त आ जुगेसरक गप-सप्प सुजाता सेहो, अढ़मे ठाढ़ भऽ सुनि रहल छेली। तखने हीरानन्द आ शशि शेखर सेहो टहलैत-बुलैत एला।

दुनू गोरेकेँ बैसते रामाकान्त हीरानन्दकेँ कहलखिन-

"मास्सैब, खेतक झंझट तँ सम्पन्न भेल। बड़बढ़ियाँ भेल। एकटा बात कहू जे जेते लोक गाममे अछि सभ अप्पन गाम कहैए किने?"

हीरानन्द बजला-

"हँ। ई तँ कोनो नव बात नइ अछि। अदौसँ कहैत आएल अछि आ आगूओ कहैत रहत।"

"जखन गाम सभक छिऐ तँ गामक सभकिछु ने सभक भेलइ?"

"तइमे थोड़े गड़बड़ अछि। हँ! गड़बड़ ई अछि जे अखन तक जे बनैत-बनैत समाज आ गाम अछि ओ टुटैत टुटैत खण्ड-पखण्ड भऽ गेल अछि। तँए एक-एककेँ जोड़िकऽ समाज बनबए पड़त जे लगले नइ भऽ सकैए।"

हीरानन्द बजिते रहैथ कि उत्तर दिससँ सुबुध आ दच्छिन दिससँ

महेन्द्र आ बौएलाल सेहो पहुँचला।

रामाकान्त बौएलालकेँ कहलखिन-

"बौएलाल, आब तँ तूँ डॉक्टर बनि गेलेँ मुदा तैयो ऐठाम सभसँ बच्चा तोंही छँह। जो, चाह बनौने आ।"

डॉक्टरक नाओं सुनि महेन्द्रो आ हीरानन्दो मने-मन खुश भेला। किएक तँ दुनू गोरेक पढ़ौल बौएलाल छिऐन। मुस्कियाइत बौएलाल चाह बनबए विदा भेल। रामाकान्त सुबुधकेँ कहलखिन-

"सुबुध, जमीनक ठौर तँ लगि गेल, खाली पोखैर बँचल अछि। शशि नौजवानो छैथ, पढ़लो-लिखल छथिए आ लूरियो छैन्हे। पोखैरमे माँछ पोसथु।"

सुबुध बजला-

"बड़ सुन्दर विचार अपनेक अछि, काका। हमहूँ यएह सोचै छेलौं जे गाममे तँ दुइये टा चीज- माटि आ पानि अछि। तँए दुनूकेँ एहेन ढंगसँ उपयोग कएल जाए जे जहिना एक गोरेकेँ पाँचटा बेटा भेने पाँच गुना परिवार बढ़ि जाइ छै तहिना खेतो आ पानियोँक हुअए। जँ ढंगसँ मेहनत आ नव तरीका अपनौल जाएत तँ मनुक्खे जकाँ ओहो पाँचो गुनाक रफ्तारसँ किएक ने आगू बढ़त। जँ एहेन रफ्तार पकैड़ लिअए तँ गामकेँ बढ़ैमे देरी थोड़े लगत। बीस बीघासँ ऊपरे गाममे पानि अछि जे बैशाखो-जेठमे नइ सुखैए। अगर जँ महाग-अकालो पड़ि जाएत तैयो बोरिंगक सहारासँ उपैज सकैए। अखन तक सभ पोखैर ओहिना पड़ल अछि। सौंसे पोखैरकेँ केचली-घास छाड़ने छइ। ने नहाइ-जोकर अछि आ ने माछ-मखान उपजबै-जोकर। जे इलाका माछ-मखानक छी, ओइ इलाकाक लोककेँ माछ-मखान नै भेटै ई केते लाजक बात भेल। ऐ लाजक कारण की हमसभ नै छी? जरूर छी। भलेँ हरसीकार-दीरघीकार लगा अपनाकेँ निर्दोष साबित कऽ ली, मुदा दोषी तँ छीहे। देखै छी, किछु सुभ्यस्त परिवारकेँ तँ माछ-मखानक कोन बात जे अहूसँ नीक-नीक वस्तु भेटैए, मुदा विशाल समूहक गति की अछि? खाली जितिया पाबैनमे माछसँ भेँट होइ छै आ कोजगरामे दूटा मखान देखैए! तँए मनुक्खकेँ खुशहाल बनैले वस्तुक पर्याप्तता जरूरी अछि। जँ वस्तुक कमी रहत तँ खुशहाली औत केना?"

सुबुध बजिते रहैथ कि बौएलाल चाह नेने आएल। चाह देखिते कियो कुरुर करए उठला तँ कियो तमाकुल थुकरैले उठला। जुगेसर चाह बँटए लगल। एक घोंट चाह पीब हीरानन्द महेन्द्रकेँ पुछलखिन-

"डॉक्टर साहैब, केतेक दिनक छुट्टीमे आएल छी?"

हीरानन्दक प्रश्न सुनि महेन्द्र असमंजसमे पड़ि गेला। मने-मन सोचए लगला जे केना चिट्ठीक चरचा करब। चिट्ठीक बात तँ सोलहन्नी झूठ निकलल। जँ बेसी दिनक छुट्टीक चरचा करब तँ सेहो झूठ हएत। धड़फड़ाएले आएल छी। की कहिऐन आ की नइ कहिऐन।

विचित्र स्थितिमे महेन्द्र पड़ि गेला। मुदा बिच्चेमे जुगेसर बाजल-

"ऐंह मास्सैब! डाकडर साहैब तँ आला भऽ गेला। कोनो चीजक कमी नै छैन। जखन अपना गाड़ीमे चढ़ाकऽ बुलबै छला तँ बुझि पड़ै छल जे इन्द्रासनमे छी।"

हीरानन्दक बात तर पड़ि गेलैन। मने-मन ओ सोचि रहल छला जे महेन्द्र भरिसक पिता दुआरे गुमकी लधने छैथ।

सभकियो चाह पीब-पीब गिलास बौएलालकेँ देलखिन। सभटा गिलास लऽ बौएलाल अखारैले कलपर गेल। तैबीच सुबुध महेन्द्रकेँ कहलखिन-

"महेन्द्र भाय, गामक लोककेँ जे देह देखै छिऐ तइसँ की बुझि पड़ैए? बुझि पड़ैए ने जे किछु-ने-किछु रोग सभकेँ पछारने छइ। तँए सभकेँ जाँचि कऽ इलाज कए दियौ।"

सुबुधक प्रश्न महेन्द्रकेँ जँचलैन, बजला-

"अपनो विचार अछि। चारि-पाँच दिन जँचैमे लगत। सभकेँ जाँचि, जहाँ धरि भऽ सकत तहाँ धरि इलाजो कइये देबइ। आइ तँ भरि दिन दोसरे ओझरीमे ओझरा गेलौं, मुदा काल्हिसँ ऐमे लगि जाएब।"

तैबीच शशि शेखर पुछलकैन-

"डॉक्टर साहैब, बुड़हा जे अप्पन सभ खेत बाँटि देलैन तइले अपनेकेँ..?"

शशि शेखरक बात सुनि महेन्द्र मुस्कियाइत बजला- "दू भाँइ छी। दुनू

भाँइकेँ पिताजी डॉक्टर बना देलैन। ऐसँ बेसी एक पिताकेँ पुत्रक प्रति की बाँकी रहि जाइए जे किछु कहबैन। खेतक बात अछि, हम थोड़े खेती करए आएब। तखन तँ जे खेती करैबला छैथ जँ हुनका हाथमे गेलैन तँ ऐसँ बेसी उचित की होएत। बाबाक अरजल खेत छिऐन, जेकर हकदार तँ पितेजी छैथ। जँ अप्पन सम्पैत लूटाइये देलैन तइसँ हमरा की। ओनाहितो वैरागी पुरुषकेँ रागी बनाएब पाप छी।"

पुनः शशि शेखर पुछलखिन-

"मद्रासमे केहेन लगैए?"

महेन्द्र जेना किछु मोन पाड़ए लगला तहिना थोड़ेक रूकिकऽ किछु अखियासैत बजला-

"जहिया डॉक्टरीक शिक्षा पेलौं तहिया नीक बुझि मद्रास गेलौं। मुदा अखन गामक सिनेह हृदयकेँ तेना पकैड़ लेलक जे की कही। जहिना छातीमे लगल तीरसँ चिड़ै छटपटाइए तहिना बुझू जे छटपटा रहल छी। होइए जे मद्रासक सभकिछु छोड़ि-छाड़ि अहीठाम रही। मुदा केतए-सँ जिनगीक लीला शुरू कएल जाए, ई गम्भीर प्रश्न अछि। अही प्रश्नक बीच मन ओझरा गेल अछि। स्पष्ट उत्तर नइ भेट रहल अछि। किएक तँ ऐ प्रश्नक उत्तर दृष्टिकोणक मुताबिक भिन्न-भिन्न भऽ जाइए।" ❑

अन्तिम पड़ाव

गामक दुखताहक दुख जाँचि दवाइ दइक समाचार गाममे पसैर गेल। काल्हि भिनसरसँ सभ टोलक दुखताहकेँ बेरा-बेरी जाँचो हएत आ दवाइयो देल जाएत।

भिनसर होइते ओइ टोलक लोक आबए लगला जइ टोलक पार छेलैन। पुरुखक जाँच डॉक्टर महेन्द्र करैथ आ स्त्रीगणक जाँच डॉक्टर सुजाता करैथ। डॉक्टर महेन्द्रक सहयोगी बौएलाल छल आ सुजाताक सहयोगी सुमित्रा छल।

तीन दिनमे सौंसे गामक रोगीक जाँच कऽ दवाइ सेहो दऽ देल गेल। लोकक बीच एहेन खुशी दौग आएल जे बुझि पड़ैत गामसँ बीमारीए पड़ा गेल। सभक मनक खुशी एक्के रंगक रूप बना नाचए लगल। सभक मनमे एहेन खुशी जे आब ने हमरा देहमे कोनो रोग अछि आ ने मरब। खुशीक नाच एहेन छल जेना रोग देखिये कऽ भागि गेल होइ। मुदा जिनगीमे इहेटा रोग तँ नहि अछि, आरो बहुत तरहक रोग अछि। ओना, ई मनक बात भेल। जँ ई मनक बात छी तखन वास्तविक बात की अछि, से तँ लोकेमे देखए पड़त।

सभदिन भलेसराकेँ देखै छेलिऐ जे दुखताहे अछि। ओ काज-उद्यम करब सेहो छोड़ि देने छल, मुदा आइ बड़का छिट्टामे छौर-गोबर नेने खेतमे फेकैले जाइत रहए। रास्तामे सोनमा पुछलकै तँ बाजल-

“आब देहमे कोनो दुख नइ अछि। जाइ छी छाउरो फेंक लेब आ गरमा धानो काटि कऽ नेने आएब।”

तहिना तेतरो बहिंगामे गाँथि दूटा धानक बोझ कन्हापर उठेने अबैत रहए।

सोनमाक मनमे नाचए लगलै जे एना केना भेल? देखै छी जे लहेरियासराय असपतालमे छअ-छअ मास रोगीकेँ लोहाबला खाटपर रखि,

सुइयो पड़ैए आ गोटी-दवाइ सेहो खाइ-पीबैले देल जाइए, तैयो मरि जाइए। मुदा ऐ गामक दुखताहक दुख केना एतेक आसानीसँ पड़ा गेल? अजीव भेल! ओह! भरिसक दुख केकरा कहै छै से बुझबे ने करै छी।

गुनधुनमे पड़ल सोनमाक मनमे उठल जे जखन बुझबे नै करै छी तखन बुझब केना? जँ अपने सोचौ चाहब आ जँ गलतीए सोचा जाए, तखन तँ गलतीए बुझब। गलती बुझब आ नइ बुझब, दुनू एक्के रंग भेल। बिनु बुझलो काज लोक करए लगैए आ गलतियो करबे करैए। भलेँ दुनूक फल अधले होइ मुदा करै तँ अछिए। एहेन स्थितिमे अपने की करी? जेकरा बुझै छिऐ जे फल्लाँ बुझनिहार अछि, जँ ओकरो नइ बुझल होइ आ झूठे अन्ट-सन्ट किछु कहि दिअए। तखन तँ आरो ओझरीमे पड़ि जाएब। तेतबे नहि, जे बुझनिहारो अछि आ ओकरा पुछिऐ आ जँ ओ गलतीए कहि दिअए, तैयो तँ ओहिना रहि जाएब। मुदा तोहूमे तँ एकटा बात अछि जे ओ कहए आ हम करी, मुदा तेकर फल जँ गलत हुअए तखन दोखी के हएत? तब की करब? आब उमेरो ने अछि जे स्कूलोमे जा कऽ पढ़ब। धिया-पुता सभ स्कूलमे पढ़ैए...। गुनधुन करैत सोनमाक मनमे उठलै जे जखन स्कूल जाइबला रही तखन किए ने पढ़लौं? पढ़लौं केना नहि, स्कूलमे नाओं लिखौने रही। पाँच क्लास तक तँ पढ़बो केलौं। तखन छोड़ि किए देलिऐ? छोड़लिऐ आकि मास्टर मारिकऽ छोड़ा देलक? मास्टर मारिकऽ किए छोड़ा देलक। जखन छअ क्लासमे गेलौं आ अंगरेजीक मास्टर आबिकऽ पढ़बए जे बी.यू.टी. 'बट' आ पी.यू.टी. 'पुट', तहीपर ने कहने रहिऐ जे अहाँ गलती पढ़बै छिऐ। से कोनो गलती तँ नइ कहने रहिऐ। जब गलती नै कहने रहिऐ तब ओ मारलक किए? नै पढ़बैक मन रहै तँ ओहिना कहितए जे तोरा नै पढ़ेबौ, स्कूलसँ चलि जो। मारलक किए? जँ मारबो केलक तँ हमरा मनकेँ तँ बुझा दइतए। अप्पन मन मानि लइत। मन मानि लैत, भऽ गेलइ। से तँ नइ केलक। तँए ने हम मुरुख रहि गेलौं। नहि तँ हमर की हाथ-पएर कोनो पातर-छितर अछि जे दरोगा नहि बनलौं। हमर जे दरोगाक नोकरी गेल से ओ मास्टर हमरा देत, जे मारिकऽ स्कूल छोड़ा देलक? धिया-पुतामे सएह भेल, चेतनमे सेहो तहिना देखै छी। आब केना जीब?

तर्क-वितर्क करैत सोनमाक मनमे शंका भेलै जे भरिसक हमरो ने तँ बतहा दुख पकैड़ लेलकहेँ.! मुदा केकरासँ पुछबै, के कहत? सभकेँ तँ सएह

देखै छिऐ। की हम भरि जिनगी हरे जोतैत रहब, घोड़ापर चढ़ि कऽ शिकार खेलैले कहिया जाएब..?

दुनू हाथ माथपर लऽ सोनमा गाछक निच्चाँमे बैसल गुनधुनमे पड़ि मने-मन सोचि-विचारि रहल छल। जहिना आमोक गाछ रोपल जाइ छै तहिना तँ खएरो-बगुरक गाछ रोपल जाइ छइ। मुदा आममे मीठहा फल फड़ै छै आ खएर-बगुरमे काँट होइ छइ। जखन कि रोपैक इलम तँ एक्के रंग अछि। ओना, अनेरुओ गाछ होइए। आमोक गाछ अनेरुओ होइए आ खएरो-बगुरक होइते तँ अछि।

साते दिनक छुट्टीमे महेन्द्र गाम आएल छला जे आइ आठ दिन बित गेलैन। मद्रास अबै-जाइक रास्ता सेहो पाँच दिनक अछि। छुट्टी बढ़बए पड़तैन। काल्हि भोरुका गाड़ीसँ चलि जेता, ई बात सुबुधोकेँ बुझल छेलैन। तँए सुबुधक मनमे उठलैन जे महेन्द्र बच्चेक संगी छी मुदा भरि मन गप एक्को दिन नै केलौं। काल्हि भोरमे चैलिए जाएत। तँए आइये भरि समय अछि। सुबुध अप्पन सभ काज छोड़ि महेन्द्रसँ गप करए एला।

दरबज्जापर बैस डॉ. महेन्द्र अप्पन पितासँ कहैत रहथिन- "बाबू, गामक जेतेक रोगीकेँ जँचलौं ओइमे एक्को गोरे पैघ रोगसँ, जेना टी. वी., कैंसर, एड्स इत्यादिसँ ग्रसित नइ अछि। आश्चर्य लगैए जे, जे बीमारी शहर-बाजारमे धरहल्लेसँ होइए, तेकर नामो-निशान गाममे नइ अछि। बहुत खुशीक बात छी।"

महेन्द्रक रिपोर्ट सुबुधो सुनलैन। 'खुशीक बात' सुनि रामाकान्त पुछलखिन-

"तखन जे एते लोक बीमार अछि से कोन रोग छी?"

मुस्कियाइत महेन्द्र बजला-

"साधारण रोग। जे बिना दवाइयो-दारूसँ ठीक भऽ सकैए। अगर ओकर खान-पान सुधैर जाइ तँ ई सभ रोग लोककेँ नै हेतइ। आधासँ बेसी रोगी ओहन अछि जेकरा कोनो रोग नहि, सिरिफ शंका छइ। मुदा जँ ओकरा दुइयो-चारि टा गोली नै दितिऐ तँ मन नै मानितै। तँए पुरजो बना देलिऐ आ आलासँ छातियो जाँचि लेलिऐ आ दू-चारि टा गोलियो दऽ देलिऐ।

महेन्द्रक बात सुनि रामाकान्तो आ सुबुधो मने-मन हँसए लगला। हँसी

रोकि सुबुध महेन्द्रकेँ पुछलखिन- “महेन्द्र भाय, काल्हि तँ तूँ चलि जेबह, फेर कहिया भेँट हेबह कहिया नहि, तँए तोरेसँ गप-सप्प करैले अप्पन सभ काज छोड़ि एलौं हेन। जिनगीक तँ ढेरो गप अछि मुदा तूँ डॉक्टर छिअ आ हम शिक्षक छेलौं जे आब नइ छी। मुदा रोगक कारण बुझैक जिज्ञासा तँ जरूर अछि। तँए अखन रोगेक सम्बन्धमे किछु बुझए चाहै छी।”

“की?”

“पहिल सवाल बताहेक लएह। जखन बताह दिस तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे जेतेक मनुक्ख अछि सभ बताह अछि।”

धड़फड़ा कऽ रामाकान्त बिच्चेमे पुछि देलखिन- “से केना?”

सुबुध कहलकैन-

“काका, जे एक नम्बर प्रशासक छैथ, जे एक इलाकासँ लऽ कऽ देश भरिक शासनमे दक्ष रहै छैथ, ओ परिवारक शासनमे लटपटा जाइ छैथ। तहिना देखै छी जे, जे बड़का-बड़का हिसाबी गणितज्ञ छैथ ओ जिनगीक हिसाबमे फेल भऽ जाइ छैथ। तहिना देखै छी जे बड़का-बड़का इंजीनियर छैथ ओ परिवारक नक्शा बनबैमे चूकि जाइ छैथ। नेताक तँ कोनो बाते नहि। किएक तँ जहिना गोटे साल मानसुन अगते उतैर खूब बरसैए जइसँ बेंगक वृद्धि अधिक भऽ जाइ छै तहिना ओकरो छइ।

मुस्कियाइत रामाकान्त बजला-

“हँ, ठीके कहै छहक!”

“तेतबे नइ काका, कियो ताड़ी-दारू पीबैक पाछू बताह अछि, तँ कियो धनक पाछू। कियो पढ़ैक पाछू बताह अछि, तँ कियो ऐश-मौजक पाछू। कियो खाइ पाछू बताह, तँ कियो ओढ़ै-पहिरैक पाछू बताह। कियो काजेक पाछू बताह रहैए, तँ कियो अरामेक पाछू। केकरो खेले-कुदक पाछू बताह देखबै, तँ केकरो नाचे-तमाशाक पाछू। एते बताहक इलाज केतए हएत? तेतबे नहि, एकरंगक बताह दोसरकेँ बताह कहै छै आ दोसर तेसरकेँ कहै छइ। तहिना कियो शरीरक रोगसँ दुखित अछि वा रोगी कहबैए तँ कियो अन्नक अभावसँ, तँ कियो वस्त्रक अभाव वा घरक अभावसँ दुखी अछि। तहिना कियो कोनो उकड़ू बात सुनलासँ दुखी भऽ जाइए। ऐ दृष्टिए जँ देखल जाए तँ केते लोक निरोग अछि? तेतबे नहि, जँ एक-एक बेकतीमे देखल

जाए तँ कए-कए टा रोग धेने बुझि पड़त। मुदा ई सभ ऊपरी बात भेल। मूल प्रश्न अछि जे वसन्त-ऋृतुक गुलाब जकाँ जिनगी सभदिन केना फुलाइत रहत?"

'गुलाबक फूल जकाँ जिनगी केना फुलाइत रहत' सुनि डॉक्टर महेन्द्र नमहर साँस छोड़लैन। आँखि उठा सुबुधक आँखिपर देलखिन। सुबुधक नजैर-सँ-नजैर मिलिते जेना महेन्द्रकेँ बुझि पड़लैन जे सुबुध अथाह समुद्रमे हेल रहला अछि आ अपने छोट-छीन पोखैरमे उग-डुम कऽ रहल छी। ई बात मनमे अबिते महेन्द्र माए-बाबूसँ लऽ कऽ अप्पन भैयारी होइत धिया-पुता दिस नजैर दौड़ौलैन। केतेक आशासँ पिताजी हमरा दुनू भाँइकेँ पढ़ौलैन मुदा हम हुनकासँ केते दूर हटिकऽ रहि रहल छी। एते दूर हटल रहलापर केना हिनकर सेवा कऽ सकबैन? जखन कि आब हिनका सभकेँ सेवाक जरूरत दिनो-दिन बेसीए होइत जेतैन। उमेरो अधिक भेलैन आ दिनानुदिन बढ़ितो जेतैन। जेते उमेर बढ़तैन तेते शरीरक अंग कमजोर होइत जेतैन। जेतेक अंग कमजोर हेतैन तेतेक शरीरक क्रियामे रूकाबट सेहो औतैन। जइसँ केतेको नव-नव रोग शरीरमे प्रवेश करतैन। जेते रोग शरीरमे प्रवेश करतैन, तेतेक कष्ट हेतैन...। की ओइ कष्टक जिम्मेदार हम नै हएब? हएब। मुदा तइले करै की छी? किछु नहि! अखन हमसभ दुनू भाँइ आ दुनूक पत्नी सेहो जुआन छी, मुदा किछु दिनक उपरान्त तँ हमहूँ सभ हिनके जकाँ बुढ़ हएब। कोनो जरूरी नइ अछि जे हमरो सभक बेटा हमरे सभ लग रहत। अखन तँ हम देशेमे छी। अन्तर एतबे अछि जे देशक एक छोरपर माए-बाबू छैथ आ दोसर छोरपर अपने छी। मुदा आइक जे हवा बहि रहल अछि जे आन-आन देश जा लोक नोकरी करैए आ जीवन-यापन करैए, जँ कहीं हमरो संगे सएह हुअए तखन की हएत..?

महेन्द्रक चेहरा उदास हुअ लगलैन। भितरे-भितर मन वौआए लगलैन। वौआइत-वौआइत जेना सुनसान जंगलमे महेन्द्र चलि गेला आ ओइठाम डर हुअ लगलैन तहिना हुनका देहसँ पसेना निकलए लगलैन। किछुए कालक बाद बुझि पड़लैन जे देह शक्ति विहीन भऽ रहल अछि। पसेनासँ तर-बत्तर होइत महेन्द्र सुबुधकेँ कहलखिन- "सुबुध भाय, जिनगीक अजीव रास्ता अछि। जेते मनुक्ख ऐ धरतीपर जन्म नेने अछि, ओकरा तँ जिनगी बितबए पड़तै। मुदा जिनगीक रास्ता एहेन पेंचगर अछि जे बिरले

कियो-कियो बुझि पबैए, बाँकी सभ औनाइते रहि जाइए।”

मुस्कियाइत सुबुध बजला-

“महेन्द्र भाय, अहाँ तँ डॉक्टर छी। पढ़ल-लिखल लोकक बीच सदिखन रहबो करै छी। अहाँ किए एहेन बात कहि रहल छी? हम तँ जाबे मास्टरी केलौं ताबे धिया-पुताकेँ पढ़ेलौं आ जखन नोकरी छोड़ि गाममे रहै छी। गाममे जेहेन समाजमे छी से तँ देखबे करै छी।”

महेन्द्र बजला-

“भाय, अहाँ जे बात कहलौं ओ तँ आँखिक सोझमे जरूर अछि मुदा अहाँमे मनुक्ख चिन्हैक लूरि आ जिनगी चलैक रास्ताक ज्ञान जरूर अछि। अहाँ अपनाकेँ छिपा रहल छी।”

महेन्द्रक बात सुनि रामाकान्तकेँ मनमे उठलैन जे, जे आदमी घरसँ हजारो कोस दूर हटि कमाकऽ एते बनौलक ओ अपनाकेँ एतेक कमजोर किए बुझि रहल अछि? मुदा दुनू संगीक बीच नहि आबि रामाकान्त गुम्मे रहला। बैसले-बैसल एक नजैर महेन्द्रकेँ देखैथ आ एक नजैर सुबुधकेँ।

अपनाकेँ छिपाएब सुनि सुबुध बजला-

“महेन्द्र भाय, जइ प्रश्नक बीच अहाँ ओझरा रहल छी ओ प्रश्न ओतेक ओझराएल तँ नइ अछि, मुदा असानो नइ अछि। सिरिफ आँखिमे ज्योति आनि देखि-देखि कऽ चलैक जरूरत अछि।”

दलानक आँगन दिसक भितुरका कोठरीमे बैस सुजाता खिड़की देने सभकेँ देखबो करै छेली आ गपो-सप्प सुनै छेली। हुनकर मन कखनो-कखनो प्रसन्न सेहो होइ छेलैन आ कखनो-कखनो करुएबो करैन। मुदा किछु बाजैथ नहि। बाजब उचितो नहियेँ बुझि पड़ैन। ओना, पढ़ल-लिखल रहने, कखनो-कखनो बजैक मन जरूर होइ छेलैन। मुदा किछुए दिनमे साउस मिथिलाक रीति-रेवाज आ बेवहारक सम्बन्धमे तेना कऽ बुझा देलकैन जे ‘मद्रासक सुजाता’, ‘मिथिलाक सुजाता’ बनि गेली। जइसँ मुँहपर नुआँ राखब तँ उचित नहि बुझैथ मुदा बाजब-भुकबपर नजैर जरूर राखए लगली। किनकासँ कोन ढंगे बाजी, केते आवाजमे बाजी, कोन शब्दक प्रयोग करी, ऐ सभ बिन्दुपर नजैर अबस्स राखए लगली जइसँ सुजाताक बोली संयमित भऽ गेल रहैन। ओना, ऐठामक चालि-ढालि अखन पूर्णरूपेँण अंगीकार नै

कऽ सकली अछि मुदा अंगीकार करैक पूर्ण चेष्टा तँ कइये रहली अछि।

सुबुधक उट-पटाँगों बातसँ महेन्द्रकेँ दुख नइ होइत रहैन। हल्लुको बातमे ओ गम्भीर रहस्यक अनुमान करए लगैथ।

महेन्द्रक गम्भीर मुद्रा देखि सुबुधकेँ बुझि पड़लैन जे आब ओ गम्भीर बात बुझैले उताहुल भऽ रहल छैथ तँए जिनगीक गम्भीर बातकेँ खोलि देब उचित होएत। बजला- "महेन्द्र भाय, अपना गाममे सभसँ अगुआएल परिवार अहाँक अछि। चाहे धन-सम्पैतमे हुअए वा पढ़ाइ-लिखाइमे। मुदा कनी गौर करिकऽ देखियौ जे एतेक धन-सम्पैतिक उपरान्तो धनेक पाछू घरसँ हजारो कोस हटिकऽ रहै छी। अहीं कहू जे केते धन भेलापर मनमे संतोष हएत। मुदा ऐ प्रश्नक दोसरो पक्ष अछि, ओ अछि, 'विश्व-बन्धुत्व'क विचार। अपनो ऐठामक महान-महान चिन्तक ऐ विचारकेँ सिरिफ मानबे टा नहि केलैन बल्कि बनबैक प्रयासो केलैन। ओना, सैद्धान्तिक रूपमे विश्व-बन्धुत्वक विचार महान अछिए मुदा जेतेक महान अछि ओइसँ कनियोँ कम, बेवहारिक बनबैमे, आसानो नहियेँ अछि। लोक अप्पन गामक वा आन गामक देवस्थानमे दीप जरबैसँ अर्थात् साँझ दइसँ पहिने अपना घरक गोसाँइक आगूमे दीप जरबैए, जे उचिते नहि गम्भीर विचारक दिग्दर्शक सेहो छी। तहिना सभकेँ अपना लगसँ जिनगीक लीला शुरू करक चाहिऐ। अपनासँ आगू बढ़ि समाज, समाजसँ आगू बढ़ि इलाका, इलाकासँ आगू बढ़ि देश-दुनियाँ दिस सदैव बढ़ैत रहक चाहिऐ। जँ से नहि कऽ कियो अप्पन परिवार-समाज छोड़ि आगू बढ़ैए, तखन केतौ-ने-केतौ गड़बड़ जरूर हेतइ। जहिना दुनियाँमे समस्याग्रस्त मनुक्ख असंख्य अछि तहिना तँ ओइ समस्यासँ मुकाबलो करैबला मनुक्ख असंख्य छैथ। एक्के आदमीक केलासँ तँ दुनियाँक समस्या नै मेटा सकत। तँए, जे जेतए जन्म नेने छैथ ओ ओतइ इमानदारी आ मेहनतसँ कर्ममे लगि जाइथ।"

सुबुधक प्रश्नकेँ स्वीकार करैत महेन्द्र बजला- "हँ! ई दायित्व तँ मनुक्खमात्रक छी।"

सुबुध बजला- "जखन ई दायित्व सभ मनुक्खक छी, तखन अपने गाममे देखियौ- ऐ सालसँ, जखन सभकेँ खेत भेलै, थोड़-बहुत खुशहाली गाममे आएल। मुदा ऐसँ पहिने तँ देखबे करै छेलिऐ जे ने सभकेँ भरि पेट

खेनाइ भेटै छेलै, ने भरि देह वस्त्र आ ने रहैले सुरक्षित घर छेलइ। ओना, अखनो नै छै आ ने रोग-वियाधिसँ बँचैक सुरक्षित उपाय भेलैए।"

बिच्चेमे डॉक्टर महेन्द्र बजला-

"हँ से तँ ठीके।"

"आब अहीं कहू जे हमर-अहाँक जन्म तँ अही समाजमे भेल अछि। की हम ओतेक कमजोर छी जे गाम छोड़ि पड़ा जाइ? माने जेतए पेट भरत ओतए चलि? जँ कियो अप्पन गाम-समाजकेँ छोड़ि पड़ाइए तँ ओकरा कायर-कामचोर छोड़ि की कहबै? मुदा तैयो लोक जाइ किए अछि? एकरो कारण छइ। एकर कारण छै अधिक पाइ कमाएब वा कम मेहनतसँ जिनगी जीब। मुदा कम मेहनत आ आसानीसँ जिनगी जीब ताधैर सम्भव नइ अछि, जाधैर मेहनतसँ देशकेँ समृद्धिशाली नहि बना लेब। जँ किछु गोरेकेँ समृद्धशाली भेने देशकेँ समृद्धशाली बुझब तँ ओ बुझब नेने-नेने गुलामीक जंजीरमे बान्हि देत। कोनो देश गुलाम नै होइए, गुलाम होइए ओइ देशक मनुक्ख आ गुलाम होइए ओकर जिनगीक क्रिया। पाइबला सभक जादू समाजमे ओइ रूपेँ चलि रहल अछि जे जहिना हम-अहाँ पोखैरमे कनी बोर दऽ बनशी पाथि दइ छिऐ आ नमहर-नमहर माछ खाइक लोभे ओइमे फँसि जाइए तहिना मनुक्खोक बीच चलि रहल अछि। जेकरा नजैर गड़ा कऽ देखए पड़त।"

सुबुधक विचारकेँ महेन्द्र मुड़ी डोला मानि लेलैन। मुदा मुड़ी डोलौला पछाइतो मनमे किछु शंका रहबे करैन। जे हुनकर मुँहक हाव-भावसँ सुबुध सेहो बुझि गेला। तँए, पुन: सुबुध अप्पन विचारकेँ आगू बढ़बैत बजला-

"महेन्द्र, अपना ऐठामक दशा देखियौ। जेकरा अपनासभ क्रीम ब्रेन कहै छिऐ, ओ छैथ वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर इत्यादि। ओसभ आन-आन देश जा अप्पन बुधिकेँ पाइबलाक हाथे बेचि लइ छैथ। भलेँ किछु अधिक पाइ कमा लौथु मुदा ओ ओइ धनिककेँ आरो धन बढ़बै छैथ जे नव-नव मशीन, नव-नव हथियारक अनुसन्धान करबाकऽ पछुएलहा देशपर आक्रमण करैए वा बेपारीक माल बेचि आरो पछुअबैए। एकटा सवाल आरो मनमे अबैत होएत। ओ ई जे अपना देशमे ओतेक साधन नइ अछि जे ओसभ अप्पन बुइधिक सदुपयोग कऽ सकता तँए, अप्पन बुइधिक

सदुपयोग करैले आन देश जाइ छैथ। मुदा हमरा बुझने ऐ तर्कमे कोनो दम्म नइ अछि। आइ धरिक जे दुनियाँक इतिहास रहल अछि ओ यएह रहल अछि जे सम्पन्न देश सदिखन कमजोर देशकेँ, माने पछुआएल देशकेँ लूटैत रहल। चाहे लड़ाइक माध्यमसँ होइ वा बेपारक माध्यमसँ होइ। जइसँ जेहो सम्पैत-साधन ओइ देशकेँ रहैए, ओहो लूटा जाइए। जखन ओ लूटा जाएत तखन आगू-मुहेँ केना ससरत?"

माथ कुड़ियबैत महेन्द्र बजला-

"तखन की करक चाही?"

सुबुध बजला-

"आँखि उठाकऽ देखियौ जे दुनियाँमे कियो बिना अ-आ पढ़ने विद्वान बनि सकल अछि वा बनि सकै छैथ? जँ से नहि, तखन पछुआएल देश वा पछुआएल लोक केना बिना कठिन मेहनत केनहि आगू बढ़ि जाएत? तँए पछुआएल देशक लोककेँ ऐ बातकेँ बुझए पड़तैन। जँ से नइ बुझि अगुएलहाक अनुकरण करता तँ पुनः गुलामीक बाटपर चढ़ि जेता। केते लाजक बात छी जे हम अपने बनौल हथियारसँ अपने घाइल होइ। आब दोसर दिस चलू...।"

डॉक्टर महेन्द्रक चेहरा दिस देखैत पुन: सुबुध बाजए लगला- "अपना ऐठाम जे पारिवारिक ढाँचा अदौसँ रहल अछि ओ दुनियाँमे सभसँ नीक रहल अछि। आइक चिन्तनमे दुनियाँ परिवारवाद दिस बढ़ल अछि। जे हमरा सभक संयुक्त परिवारक धरोहर रूपमे अछि। मनुक्खक जिनगी केतेटा होइ छै, ऐपर नजैर दियौ। तीन अवस्था तँ सभक होइ छइ। बच्चा, जुआनी आ बुढ़ाड़ीक। ऐमे दू अवस्था बच्चा आ बुढ़ाड़ी एहेन अछि जइमे सभकेँ दोसराक मदैतिक जरूरत पड़ैए। जेकर पूर्ति एकाकी परिवारमे सम्भव नहि अछि। आइक जे एकाकी परिवार बनि गेल अछि, ओ कुम्हारक घराड़ी सदृश अछि। जहिना कुम्हारक घराड़ी बेसी दिन धरि असथिर नै रहैए तहिना एकाकी परिवारक हाल अछि। बाप-माए केतौ, बेटा-पुतोहु केतौ आ धिया-पुता केतौ रहए लगल अछि। मानवीय सिनेहक जेना कोनो मोल नहि, तहिना ओ नष्ट भऽ रहल अछि, आ सभकियो निफिकिर छी। सभकियो जनै छी जे काँच बरतन जकाँ मनुक्ख होइए। कखन की ऐ शरीरमे भऽ जाएत तेकर

कोनो गारंटी नहि। स्वस्थ अवस्थामे तँ मनुक्ख केतौ रहि जीब सकैए मुदा अस्वस्थ-लाचारीक अवस्थामे तँ से अत्यन्त कष्टकर भऽ जाएत। तोहूपर तँ नजैर दिअ पड़त।"

सुबुधक विचार महेन्द्रकेँ झकझोरि देलकैन। देहमे कम्पन आबि गेलैन। बोली थरथराए लगलैन। कनीकाल धरि असथिर भऽ मनकेँ थीर केलैन। मन थीर होइते महेन्द्र बजला-

"सुबुध भाय, भलेँ हाइ स्कूल धरि संगे-संग पढ़लौं मुदा जिनगीकेँ जइ गहराइसँ अहाँ चिन्हलौं, से हम नै चीन्हि सकलौं। सच पुछी तँ आइ धरि अहाँकेँ साधारण हाइ स्कूलक शिक्षक मात्र बुझैत रही मुदा ओ हमर भ्रम छल। संगी रहितो अहाँ गुरु छी। कखनो काल, जखन एकान्त होइ छी, अपनो सोचैत रहै छी जे एतेक कमाइ छी, मुदा तैयो दिन-राति खटैत-खटैत बेचैने किए रहै छी, कखनो चैन किए ने भऽ पबै छी? कोन सुखक पाछू बेहाल छी से बुझिए ने रहल छी। टी.भी. घरमे अछि मुदा देखैक समय नइ भेटैए। खाइले बइसै छी तँ चिड़ै जकाँ दू-चारि कौर खाइत-खाइत मन उड़ि जाइए जे फल्लाँकेँ समय देने छिऐ, नै जाएब तँ आमदनी कमि जाएत। तहिना सुतैयोमे होइए। मुदा एते फ्रिसानीक लाभ की भेटैए तँ सिरिफ पाइ। की पाइए जिनगी छी..?"

महेन्द्रक बदलल विचार सुनि, मुस्कियाइत सुबुध बजला-

"भाय, पाइ जिनगी चलबैक साधन मात्र छी, नइ कि जिनगी। पाइक भीतर एते पैघ दुर्विचार छिपल अछि जे मनुक्खकेँ कुकर्मी बना दइए। कुकर्मी बनलापर सभसँ पहिने मनुष्यत्व समाप्त भऽ जाइ छइ। जइसँ चीन-पहचीन सेहो बिला जाइ छइ। तेतबे नहि, अपराधिक वृत्ति सेहो ओकरामे पनपए लगैए। अपराधिक वृत्ति मनुक्खमे एलापर पैघ-सँ-पैघ अपराधमे स्वत: ओ धकला जाइए। तँए, अप्पन जिनगीकेँ देखैत परिवार आ समाजक जिनगी देखब, जिनगी छी। तँए, मनुक्ख मात्रक सेवा लेल सदिखन तत्पर रहक चाही, जहाँ धरि भऽ सकए, तेतेक करबो करी। मुदा कर्मक दुनियाँ बड़ कठिन अछि। एतेक कठिन अछि जे कर्मठ-सँ-कर्मठ लोक रस्तेमे थाकि जाइ छैथ। मुदा ओ थाकब हारब नहि, जीतब छी। जे समाज रूपी गाछ मौला गेल अछि तेकरा जड़िमे तामि-कोरि-पटा कऽ नव जिनगी देबाक

अछि। जइसँ ओ अनवरत फुलाइत रहत। ऐ काजमे अपनाकेँ समर्पित कऽ देबाक अछि।"

सुबुधक संकल्पित विचारसँ महेन्द्रक विचार सक्कत बनए लगलैन। आँखिमे प्रखर ज्योति आबए लगलैन। दृढ़ स्वरमे पितो आ सुबुधोकेँ कहलैन-

"दुनू गोरेक बीच बजै छी जे सालमे एक्को दिन ओहन नै बँचत जइ दिन हमरा चारू गोरेमे सँ कियो-ने-कियो गाममे नै रहब। ओना, मद्रासोमे अज-गज बहुत भऽ गेल अछि, ओकरो छोड़ब नीक नै हएत मुदा परिवारो आ समाजोकेँ नइ छोड़ब। मद्रासक कमाइ परिवारो आ समाजोमे लगाएब। अखन तँ ओतेक अनुभव नइ अछि मुदा चाहब जे समाजमे जे कोनो बीमारी अछि, तेकरा दूर करैले जे खरच हएत ओ पूरा करब। जहिना पिताजी समाजकेँ खाइक ओरियान कऽ देलखिन तहिना हमहूँ स्वस्थ समाज लेल सेवामे लागि जाएब। समाजकेँ कहि दियौन जे जिनका किनको कोनो रोग बीमारी होइ ओ आँखि मुइन कऽ ऐठाम चलि अबैथ। हुनकर इलाजक सेवा जरूर हेतैन। ऐ बेर बिना निआरे गाम आएल छेलौं तँए किछु लऽ कऽ नहि एलौं। मुदा कहै छी जे जहाँ धरि रोग जँचैक औजारक जोगार भऽ सकत ओ मद्रास जाइते हम पठा देब। तत्काल अखन भावो गामेमे रहती। बौएलाल आ सुमित्रा सेहो रहबे करत। आब जे आएब ओ बेसी दिन-ले आएब। आ ऐठाम आबि अधिक-सँ-अधिक लोककेँ चिकित्साक ज्ञान करा गामसँ रोगकेँ भगा देब। समाज हम्मर छी आ हम समाजक छिऐ।" ❑

(2004 इस्वी)